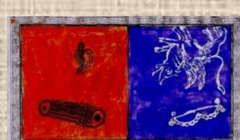
ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह ३७० म अंक १५ मई २०२३ (वर्ष १६ मास १८५ अंक ३७०)

[विदेह (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) www.videha.co.in]



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्



विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।



Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a

peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

Font/ Keyboard Source: https://fonts.google.com/ , https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts , https://keyman.com/

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

Videha e-Journal: Issue No. 370 at www.videha.co.in



समानान्तर परम्पराक विद्यापति- *चित्र विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री पनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनूमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्।

अक्खर खम्भा (आखर खाम्ह)

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥ *(कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।)*

मात्र आखर रूपी खाम्ह निर्माण कऽ उठेयत (*गद्य-पद्य रूपी*) मंच जँ नै बान्हल जाय तँ ऐ त्रिभुवनरूपी उत्तम खेतक कीर्तिरूपी लत्ती कोना पसरत।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. -Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः

: :

अनुक्रम

ऐ अंकमे अछि:-

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६९ पर टिप्पणी

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भमे

२.२.रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जीक संक्षिप्त परिचय

२.३.प्रमिला मिश्रा- रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' क व्यक्तित्व

२.४.भीमनाथ झा- लोकजीवनक समर्पित आलोक

२.५.विजय कुमार मिश्र- रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'जीक संग साक्षात्कार

२.६.साक्षात्कार- दिनेशचन्द्र गोयल

२.७.अशोक-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुँहा'

२.८.लालदेव कामत-डा० रामभरोस कापड़ी "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व

२.९.अजय अनुरागी- मैथिली भाषाक साहित्यकार 'भ्रमर' हुनक विश्राम पुस्तक प्रकाशन

२.१०.अश्विनी कुमार आलोक-रामभरोस कापड़ि भ्रमरः भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु

२.११.चंद्रेश-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' : विचार, संवेदना आ चेतना

२.१२.डा.राजेन्द्र विमल-रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'- प्रयोग आ प्रतिक्रिया

२.१३.डा.रामदयाल राकेश- पुस्तक जे हम पढ़ल-[illegible] कथात्मक संसार

२.१४.दिनेश यादव-लोक मैथिली कर निरूपित 'भ्रमर'

२.१५.चंद्रेश-विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार 'भ्रमर'

२.१६.अयोध्यानाथ चौधरी- "भ्रमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व

२.१७.अजित कुमार झा-घरमुहाँ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समरसताक दस्तावेज

२.१८.रमेश रञ्जन-एकटा आर वसन्त : तात्कालीन समय आ समाजक प्रतिनिधि नाटक

२.१९.विनय भूषण-हृदयक आश जगबैत अमनक गजल

२.२०.आशीष अनचिन्हार-कलंकित चान

२.२१.विनीत ठाकुर-बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सुखन स्वनुप:नामरत्नास कार्यते अमन

२.२२.डा. योगानन्द झा-ऐया अएलौं अपन समाज: विहंगम दृष्टि

२.२३.गजेन्द्र ठाकुर- नाम रत्नास कार्यते 'अमन' पर एकटा समग्र दृष्टि

२.२४.नित्यानन्द मण्डल-अपन नज्म नज्माएल नामरत्नास सन

३ अंकक अन्यान्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

३.२.जगदीश प्रसाद मण्डल- शॉर्ट कट रास्ता (लघुकथा)

३.३.नन्द विलास राय- सँगरठवा

३.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- ३१-३५ म खण्ड

३.५.कुमार मनोज कश्यप-अन्हार सऽ लड़ैत

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१९)

३.७.संतोष कुमार राय 'बटोही' मंगनौना (धारावाहिक उपन्यास १२म खण्ड)

३.८.आचार्य रामानन्द मण्डल-जाति बनाम जातिवाद/ धरम संकट मुक्त

३.९.डा. किशन कारीगर-यूनुस्खानी गुर्गा यूनुस्खान बँटा उकौत

३.१०.लाल देव कामत- कथाकार नन्द विलास राय जी क कथा पोथी 'असल पूजा'/पोथी समीक्षा- "समिया रायनि"

३.११.कुन्दन कर्ण- मैथिली बीहनि कथा- नीड

३.१२.आशुतोष कुमार झा- जीवनक सीख

४.पद्य खण्ड

४.१.राज किशोर मिश्र-डंक रूप

५. अनुलग्नक

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

५.विदेह ई बाजार

६.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

७.विदेह मिथिलाक खोज

८.विदेह मिथिला नक्श



ॐ द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः पृथ्वी शान्तिराप: शान्तिरोषधय: शान्ति वनस्पतय: शान्तिर्विश्वे देवा: शान्तिर्ब्रह्म

ওঁ দ্যৌ: শান্তিৰন্তৰিক্ষ ꣳ শান্তিঃ পৃথ্বী শান্তিৰাপ: শান্তিৰোষধয়: শান্তি ৰনস্পতয়: শান্তিৰ্বিশ্বে দেৱা: শান্তিৰ্ব্ৰহ্ম

ब्रह्मणसँ प्रार्थना जे द्युलोकमे, अंतरिक्षमे, पृथ्वीपर, जलमे, औषधमे, वनस्पतिमे, विश्वमे, सभ देवतागणमे आ ब्रह्ममे शांति हुअय।

ॐ-ब्रह्मण, द्यौ-सूर्य-तरेगण, अंतरिक्ष- पृथ्वी आ द्यूलोकक बीच, आप:- जल, विश्वेदेवा- सभ देवता, ब्रह्म- सर्जक।

ব্র্হ্মণসঁ প্রার্থনা জে দ্যুলোকমে, অংতৰিক্ষমে, পৃথ্বীপৰ, জলমে, ঔষধমে, রনস্পতিমে, রিশ্বমে, সভ দেরতাগণমে আ ব্র্হ্মমে শাঁতি হুঅয।

ওঁ-ব্র্হ্মণ, দ্যৌ-সূর্য-তৰেগণ, অংতৰিক্ষ- পৃথ্বী আ দ্যূলোকক রীচ, আপ:-জল, রিশ্বেদেরা- সভ দেরতা, ব্র্হ্ম- সর্জক।

ॐ, स॒हस्रंशीर्षा॒ पुरुंषः। स॒ह॒स्रा॒क्षः स॒हस्रंपात्।

ওঁ, স↓ হস্রা↑ শীর্ষা↓ পুৰু↑ ষঃ। স↓ হ↓ স্রা↓ ক্ষঃ
স↓ হস্রা↑ পাৎ।

स भूमिं ग्वंग वि॒श्वतों वृ॒त्वा। अत्यंतिष्ठद् दशाङ्गु॒लम्॥

স ভূমিঁ↑ Ẇ রি↓ শ্বতো↑ বৃ↓ ত্বা। অত্য↑ তিষ্ঠদ্ দশাঙ্গু↓ লম্॥

हजार माथ, हजार आँखि, हजार पएर संग विश्वकेँ आच्छादित केने अछि, दस आंगुरक गनतीक वशमे नै अछि ओ।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः
सहस्रपात् ॥ सभूमिँसर्व्वतस्पृत्वा
त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥

पद्भ्यागँ् शूद्रो अंजायत॥

প↓ ড্যাগ্ঁ↑ শূ↓ দ্রো অ↑ জাযত॥

पएरसँ शूद्रक उत्पत्ति भेल॥

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्।

প↓ ড্যাং ভূমি↓ র্দিশঃ↓ শ্রোত্রা↑ ↑ ৎ।

मुदा पएरेसँ भूमियोक उत्पत्ति।

❀ (White Florette- innocence and purity)

☸ (Wheel of Dharma)

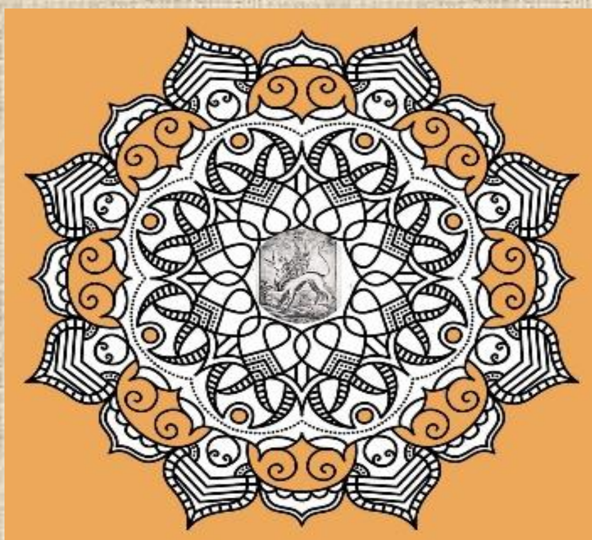
卐 (Swastik)

꣼ (सिद्धिरस्तु, सिद्धम সিদ্ধিরস্তু, সিদ্ধম Devanagari Anji)

Ẇ (Gwang ग्वंग- two small circles connected by u and a dot placed over it, used in reference of Vedic texts)

𑓆 (Tirhuta Anji, Ankush of Ganeshji, placed at the beginning of something)

𑓆



१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

१.२.अंक ३६९ पर टिप्पणी

१.१.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

नाम रंगास कायति 'ब्रमन' विशेषांकम किछु लोटकँ हुनका मधेस आह्वालनसँ झ३लासँ दिक्कत छन्हि, स ऊ नवना नै दगा, स नयाला दिसम छथि आ रानगा दिस। मुदा समानान्दन धानाकँ गकन आदगि छै। स काना विशेषांकसँ कम नवना नै आयल।

नाम रंगास कायति 'ब्रमन' सर्वहाना वर्गकँ गनिमा दलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जागिनादी नंगमंच लोलकन आ ना३ युक्त शब्दावली अयन स्नैयस्कि झूमन वला नाटक म दs नहल छल, गखन ब्रमन जी ऽ्ी कलन्हि, स आन महत्वपूर्ण छल।

नायपूनसँ गोहाटी गक ऊ ब्रमण कनौग छला। ब्रमण कनौवला ब्रमन।

2

HONOUR KILLING OF GANGESH UPADHYAYA (FIRST BY RAMANATH JHA, THEN BY UDAYANATH JHA 'ASHOK' *(A PARALLEL HISTORY OF MITHILA AND MAITHILI LITERATURE, WHY TODAY ITS NEED BEING FELT MORE INTENSELY?)*

I was not surprised, though I must have been when I saw a monograph on Gangesh Upadhyaya, whose copyright is being held by Sahitya Akademi, the author of the monograph is Udayanath Jha 'Ashok'. I thought that Udayanath Jha 'Ashok', who has been given Bhasha Samman also, by the same Sahitya Akademi, would do some justice. But truth and research seem elusive in Sahitya Akademi monographs, at least that I found in this monograph.

I searched and searched through chapters, that now the author will show courage. But the author like Ramanath Jha seems ashamed of the roots and offspring of Gangesh Upadhyaya. He tries to confuse the issue, but there is no confusion now at least since 2009. But in 2016 Sahitya Akademi seems to carry out the casteist agenda. Udayanath Jha mockingly pretends to search his name, lineage etc, where nothing is there to search for, yet he could not muster the courage, to tell the truth, and ends up just repeating the facts in 2016 that Dineshchandra Bhattacharya already has published way back in 1958.

The honour killing of Gangesh Upadhyaya by Prof. Ramanath Jha is being taken forward by Sahitya Akademi, Delhi in a most hypocritical way.

Ramanath Jha's obscurantism *vis-a-vis* Panji is evident from one example. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila". (1958)

"*The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila----- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name-----...As there is no other reference to Gangesa we can assume that the family dwindled into insignificance again and became extinct soon after his son's death.*" [1958,

Chapter III pages 96-99), which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha, and he seemed thankful to him.

The following excerpt from Our Panji Prabandh (parts I&II) is being reproduced below for ready reference:

-

मलानाज हनसिंहदन- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिनीश्वन ठाकुनक वर्ण-नत्नाकनम हनसिंहदन नायक आकि नाजा छलाह। 1294 ई. म जन्म आ 1307 ई. म नाजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. म हानिक वाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रवन्धक व्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकानिक स्थापक, मैथिल व्राह्मणक हेतु गुणाकन झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकनदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हनसिंहदनक पूनजासँ- आ ई हनसिंहदन नान्यदनक वंशज छलाह, जे नान्यदन कार्णाट वंशक १००९ शाकम स्थापना कन नहथि- नन्देद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाक १२४८ तदनुसान १३२६ ई. म पञ्जी-प्रवन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रानम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपम (थोड वृद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महानाज माधव सिंहसँ १७६० ई. म आदेश कनवाए पञ्जीकानसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन कनवओलन्हि।

ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल नहि १७०० शाके माने १७७८ ई. महाराज माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files. *Sh. Anshuman Pandey [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjikara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panji records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014].*

Later these Panji Manuscripts were uploaded to

Videha Pothi at **www.videha.co.in** and google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

ORIGINAL PANJI REFERENCES ARE PLACED BELOW:

DOOSHAN PANJI- THE BLACKBOOK

४९.

१८८/२	वर्मकानिधी	माण्डन	दरनियाम	झादन

तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश	छादनगंगेशक	नाँओ	न्यायकारक-मातृक (अस्पष्ट)	गंगेश
	वल्लभा	स्वाओ	महेश्वर	
			जीव	

२१//१० छादनसँ तत्त्व विन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ तत्त्व चिन्तामणि कारक

गंगेशक वल्लभा धर्मकारिणी पितृ पक्षाऊ पञ्च वर्ष व्यतीत तत्त्व चिन्तामणि कारक गंगेशोपाध्याय- **धर्मकारिणी माताक सन्तानक लागिम छलहि**

छादन सँ तत्त्व चिन्तामणि कारक म०म० गंगेश

"तत्त्व चिन्तामणि कारक म. म. उ. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन पञ्जीसँ उपलब्ध"।।

पितृ पक्षाऊ पंच वर्ष व्यतीत गंगेशोपाध्यायः तत्त्व प्राचीन लेखनीयः कृताय

दत्तानन्द पञ्जी ३९-२ छादनसँ जगद्गुरु गुरु गंगेश सुताय वटेश्वरीयामसँ जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

दनानह्व यञ्जी ३३९-३ जगदगुरु गंगेश सुत सुयन दौ रुण्डानिसमसँ रुनादिय दौ.।। पुत्र सुताव गोना जजिनाल सँ जीव यन्नी ७ सुत सह्वगदि रुवश्वना। अत्रस्थान सुयनत्रातृ हनिशर्म्मा दानिति क्वाचित् जजिनाल ग्राम

दनानह्व यञ्जी ३०=७ छादनसँ उपायकानक म.म. पा. वर्द्धमान सुताव खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ यन्नी गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सुयन/ हनिशर्म्मा

Gangesh, the author of the Tattvachintamani, wrote one text equivalent to 12,000 texts. Now come to the fact mentioned in the Panji- it clearly states that Gangesh of Tattvachintamani was born five years after the death of his father and he married a tanner, so why did Ramanath Jha hide this from Dinesh Chandra Bhattacharya? Vardhamana, son of Gangesh, calls Gangesh *sukavi kairavakananenduh*. But the conspiracy under which the poems of a famous scholar like Gangesh are not available today is clear from the example given above. Vasudev of Bengal was a classmate of Pakshadhar Mishra of Mithila, he came to study in Mithila, passed the *shalaka* examination and received the title of *sarvabhaum* Vasudeva memorised

the *tattvachintamani* of Gangesh and the *nyayakusumanjali karika* of Udayana. Pakshadhar and other Mithila teachers did not allow writing (copying) *tattvachintamani*. Raghunath Shiromani, a disciple of Vasudeva, took the right of certification after he defeated his guru Pakshadhar Mishra in a scriptural debate *(shastrartha)*. The *Navya Nyaya* school was founded in Navadvipa by Vasudeva-Raghunath. Pakshadhar Mishra was a contemporary of Vidyapati (distinct from the Padavali writer who was of the pre-Jyotirishwar period) who wrote in Sanskrit and Avahatta. And the arrival of Mithila students of Bengal from Bengal stopped after Raghunath Shiromani. Gangesh Upadhyaya enjoyed *'param guru'* as well as *'jagad guru'* titles, the highest titles of the time and as per Panji only Vacaspati Mishra II was the other person who enjoyed the title of *'paramguru'*. The extinction of Navya-Nyaya School from Mithila, as described above, was a revenge of nature against the honour killing of Gangesh Upadhyaya and his family.

[Translation of the Maithili Short Story,

'Shabdashastram' (based on the true Panji records of Gangesh Upadhyaya) was done by the author Gajendra Thakur himself: published as 'The Science of Words' Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

3

Kamlanand Jha has written a book on Nagarjun (Maithili's Yatri) where he credits him with giving a new direction to Maithili literature. Chandradhar Sharma Guleri wrote 'Usne kaha tha', a marvellous short story in Hindi, the best one of its time. But his literary corpora is very little in quantity, so if anyone tried to give him credit for giving direction to Hindi short story writing would make himself a laughing stock. And Yatri's Maithili literary corpora is even thinner than Guleri's. Moreover, Rajkamal Chaudhary calls him of the medieval age (Rajkamal Monograph, Subhash Chandra Yadav, Page no 14). He wrote Chitra (25 poems). He wrote, rather hurriedly published his 'Patrahin Nagn Gachh' (44 poems) for Sahitya

Akademi Award in Maithili, which he got in 1968. After that he stopped writing in Maithili, so how can he influence anybody when after getting the award one stops writing in that language? This is one example of his instability so far as his ideology is concerned. He became a Buddhist monk when he left for Sri Lanka and became a Brahmin again when he returned after a 2nd sacred thread ceremony performed in his village. This is another example of his instability so far as his ideology is concerned. Kamlanand Jha does not know Maithili literature. His comments should be exposed, as he tries to give a bad name to the great tradition of Maithili literature. There were mainstream writers, but there were writers of parallel tradition also (see below Annexures 1 & 2). He has confused the Sanskrit and Avahatt Vidyapati Thakkurah with the Padavali writer pre-Jyotirishwar Vidyapti. He should read the writing of Vijay Kumar Thakur, a leftist historian, who has given ample light on pre-Jyotirishwar Vidyapati. [*My article on Vidyapati in Prabandh Nibandh Samalochna Vol.II (available in Videha Archive) covers all these, the logo of Videha is*

the photograph of Pre-Jyotirishwar Vidyapati, sketched by Panak Lal Mandal, recipient of Videha Samman for fine arts.]

Annexure 1

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारूछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रियर्सनकँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता कएलन्हि। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

१

न्यायक रचन कचहरी नाम।

सब अन्याय रचल गहि ठाम॥

सत्य वचन बिरल जन भाष।

सब मन धनक हरन अभिलाष॥

कपट रचल कत कातिक काटि।

ककर न कत मर्यादा छाटि॥

एन कवि 'चन्द्र' कबहनी घूस।

सए सहमत ककना क दूस।

२

नतिया दिन दुनगतिया ह एाला!

गैया जगतक मैया ह एाला

कटय कसैया हाथ

हाकिम एल निनदैया ह एाला

कतय लगायब माथ

बनसा नहि एल सनसा ह एाला

अनसा क७ गेल मह

नतिया दिन दुनगतिया ह एाला

जन तन जिबन संदह

मुखिया ब७ ब७ सुखिया ह एाला

अन्नबक दुखिया ताल

क सह कान कनखिया ह एाला

सुखिया विनती टाल

३

अस्त्र शस्त्र नाक आव मामिलाक मानि।

राज्ञ राज्ञकँ पढ़ैछ नित्य नित्य गानि॥

0क्क लोक हक्क याव साधु कँ उजानि।

दैव ज ललाट लेख क सकैछ टानि?

चाही नहि धन, ललितनाम, यकवान जिलवी,

मनोविनोदक हेतु अमनयि सदन न टवी।

ज्ञी अन्दन अभिलाष हमन कनुधामयि दवी

रकि राव सँ सगत अर्हिंक यदयंकज सवी॥

अन्न महग, उगमग अछि रानत, हयत काना निश्काना

उन्दन यश्चिम भूमि अगम्या यर्वत असह गुमाना।

धर्म-विनाशी सहसह कनज्ञछ, कुमत कथा निश्काना

कनथु कृया जगजननी दवी महिसीवाली तारा॥

मिथिला की छलि की भय गेलि,

याज्ञवल्क्य मुनि, जनक नृपतिवर

ज्ञान देकि सँ गेलि।

वाचस्पति मिश्रादि जगद्गुरु

निर्जित बौद्ध समलि

स शारदा स्वर्ग जनि गेली

बढ़ल कुविद्या काली।

वर्णाश्रम विधि ककनहु नुचि नहि

श्रुति श्रद्धाकँ तेलि

पूजा पाठ ध्यान जपमुद्रा

सरटा वंचन खलि।

कहु कविवद्ध कवहुनी दिनदिन

बढ़ल राग कन जलि,

कलह कनाय धर्म धन नाशे

कलिक दनिद्रा चलि।

४

भय हरण छल ध्यान हे शिव!

शोधन नियति, धर्म अवनति देखि कत हिय करब कल्याण॥

साधु समाज राजसँ पीड़ित अति हर्षित-चित चोर।

अकुलीन लोकँ धनिक परिपूरित कुलीन समादर थोड़॥

धर्म सुनीति प्रीति कतहु नहि, खलहिक चलती जान।

कन्द-मूल-फल सहो अब दुर्लभ अन्न भेल दुर्लभ दान॥

किछु गुरु साधन बनि नहि पड़ती थाकल मन, मति हीन।

कह कवि चन्द्र हरण दुख मरण दायक कृपा शिव दान॥

७।

सुमरु सुमरु मन! शंकर समय भयंकर जानि।

कठिन हृदय नहि कलुषित शासन कलि नृप जानि॥

करब शिव करुणाकर सेवित नहि जन हानि॥

एकहि कल्पतरु जानह परम पारसमणि खानि॥

काहु विषयमे न लागह त्यागह अनुचित मानि।

सुखसौं अन्त विलसबह 'चन्द्र' चढ़ि रजधानि॥

ANNEXURE 2

१

चुनीलालक अकाली कविता /अकाली कवित्त

चुनीलालक फसली वर्ख १२८१ (ई. १८७३-१८७४)सनसालक (अकाली कविता

[ग्रियर्सन [(मैथिली क्रेस्टोमैथी एण्ड वोकाबुलरी)

साल एकासिक वर्णन सुनु चौदिस पड़ल अकाल /
गेल बनिसाए खिन्न ओ सालककहाँ लगि कहवौं हाल /
भादिमि आदि थीक बनिसाएकजहिँ एला गहिँ गेला /
म्रिगिसिना मन पूजल मनानथइ मीसा किछु गेला /
अनदरा आतम्मन रानीगनजा हैं बहु डान /
पूख पूख नाखल धनी कनगेल बनखा कन डान /
पूनर्वसु थिक बड पूनीताडाहि बडा कसनस /
विआ विडानक ज किछु डयटलधनि बनिसल असनस /
मघा गेल मंगाहिआ कल्लनजगहनि क नै जान /
पूनवा पून यछ नै नाखलककना कनब बखान /
उत्तरा आङु जाय घन वैसलसयौं लै नै बून /
हथिआ शूंग मूँड दै मूनलगनिकौं लागल घून /
चिनना चिन मिन नै नाखलडाहि गेल डाकू धानी /

नाक नंगोलहि सरे नठ्न्दाम नूकौलहि खागी /
जागिष यदिसाधि स्गोल-साधि /यदि ज जन उलाह-
नखागधिग वीजसौं डाआकिस्गनि कौं कव /्वी वाल
श्रीनाम कृयागगि डाह्य न जानथिजाहि कृया सर काज /
यानिक प्रश्न कवौं जौं पूछिउहिसह्य करैग हाुहि लाज /
जहिखन नदी नाल नै स्नलगहिखन नौदी सनगी /
विना जल जग किछ नै उयजलदगध स्ल छथि धनगी /
ग नन नौदीक आगम वूसलज छल कृषि किसान /
दैव वयङ्क यङ्क नै नाखलजाि कटौलक धान /
कादा मउआ जका न उयजलनै उयजल किछ साम /
गम्ह्ी गह्वनि खगहि सूखाजलस्ल निधागा नाम /
मगिुनम क कन नङ्काकहौं जाु कँ सगि /
सूखल यगाल हाल नै डागहुँसगनहुँ लागल आगि /
धृक जीनन डाु नृयगि ुह्रकँज नाकल गहि यानि /
जीना /जन्द् निकल यूस्मीम-गाकँ ह्य नै आनि
ननीन खढी जौ चीन /नाय जका नै उयजल-
घनस्ल अव वीन दूनदिन /नागी-घन साव कनै नन-
धनिक लाक सर मनहि मगन छथिनाखथि वहूगा ठनि /
हसाथि नूयैया घन कै नाखथिमहगी स्ल अव सन /
कडा कूनथी खग मास् वसाहलजाहि कौि छल अयना /
कगक जना हनिनासन ०नलरगग वहूग कै / सयना
कगक जना मिलि जनन वसाहलनिनधन वैसल गकु /
स्ल धनन्दिनि दुु हसिल जगआडान मकु नाहि /
काल यजल गिनह्नगिम सगीगँ ुी वहि गेल हाना /

घनरौंकि मकॢ कन लाना /नानी-घन मगन कनै नन-
मालिक ङौन महाजन सरकँघन ढनी अन्न-घन /
लाक वृसाङान ङाहा नकै छथिमुँह गनीवक सन /
समै दखि वनिआँ सर सनकलतँ लगौलक टङ्डी /
सून्न दाकान सहनम यनि गेलसून्न रल सर वङ्डी /
सूखल गाग वाग रौ लटयटकाक वाग अव सहना /
नन नानी सर सान गआगलविकनी रल अव गहना /
मँगटीका खुटी ङौ गङकीनकमून्नी नै नाक /
कटसनि विछिआ ङौ मिमिमिआँवाझवङ्ङ ङौ वाक /
वङ्डहान, हँकल ङौ सिकङीङौन घमौनिक दाना /
सूगि, ननग्रह ङौ यचखँङीलशुनी रल निदाना /
गायन दर्वजाग नै वचलकनम रल निखङ्ङ /
गमघैल, अङ्ढआ ङौ यिकदानीनै गसला ङौ गङू /
वाटी, वङ्डा ङौ यनवङ्डारराजन कनैक थानी /
माधन सीढि सङ्गि सावननानै वचल घन माङी /
धन संयगि घन किछ्छ नै वचलसरटा यङि गेल वंधक /
गैङा रुख छूटल नै ककनाङहन यट रल खंधक /
दैव अंश अवगनल कम्यनीजा यन नाम सहाङ /
मिथिलायून वृङन जव लागयस सूनि यहँवल धाङ /
खनिद अनाज जहाजहिँ वामलरनी कनि कनि वाना /
सदन गिलंगा ङाआ यन रनीङौन ङालाॢगि गाना /
हाजीयूनम लाख हजानमकै लाखन हॢ यटना /
वाजिगयून सूलगानयून गेलानै जानग हौं कगना /
गाङी, वैल, छकङ, ङँट विहागङवहग हॢ सर दाना /

मिसन कहेआ कँ याखनन मयहिलुक अ3ी (0काना /
श्री लक्ष्मीश्वन सिंह नृयगिमहानाज मिथिलश /
अचल नाज द7ंगाश्रीयगि हनहिं कलश /
गा3ी वेल लाखन हजाननाकँ यन घ3न /
यहिलुक (गाला मधुवन, सौ3ा जहना /औन अ3न
वनीयही, औ यचमहलाकुश्नोल औ कमोल /
हनिहनयुन, यि3ानुश्च वननीकाकाँ वनिऔल कानज /
वानि याखनि, विनसायन वननीय(ष्ोल का नै जान /
ननहद, सनिसा 3ा स्टयुना, गा साँ दजिघ 3जान
संमानयुन, महनैल, कहोलीम(धयुन हफ्ज खास /
वनीयुन, कमान, ननीहि3ावननी हुलयनास /
समना हफ्ज जगजानिग जगममहथा औन वश्चीन /
दुहवी औ महिनाथयुनऔन जैनगन गक हफ्ज दौन /
वलदवयुन औ ढंगा वननीमिनजायुन लघु हाट /
सीवीयटी औ कयसीआसदन (गाला सौना0 /
गुनवाकँ यनवनसी हाकिमकन गिनहुम आक /
नै गा मनग कग नन नानीवाल वच सुखा क /
कग मुनदा गनदा मे मिलग असंख जीव चल /जागा
सन समधी कँ संगा न लक्ष्मननी वचग जलदागा /
सटकँ सट 3यश्च ऐ (गलयाखन औ स3क धुन /
नहि (गल ब्राह्मण सागी यश्चिगकायथ यश्चिमा 0कुन हनक /
क3ा 3ानसिअन नाम लिखा3ालक3ा माहनिन टैंट /
धर्मकार्यम लुटथि नुयेआगँ स्ल सट कन टैंट /
क3ा जमानग दैकँ ववलाहजिनका अमला / नही

ककरा मानि कँ थिए गाउँहितगनीह जनक एही /
ककनहुँ गानए गाए सुखाउलवहुए हाअय चलाना /
माएुथिए घन यनिजन नानयवावू एलाह जहलखाना /
ककनहुँ घन रहल खानाएलासीरहट माहर्निन घाँठ /
कउ अदालएिम तितिआ॰॰ ठथिककनहुँ उयनीह माँठ /
ओएना सुनि हाकिम निसिआउल /एँ लागल जन एीका
नाक नंएोलीह सरे माहर्निनलागल चुनक टीका /
जाए, विकीआ,लौकिक नंशककिनिआमंए सकुल /
गाठी, वाँस, वेल ओ महिसिजएह कैल रकफूल /
एाहि नूथेआ सौं कना एजनलै कानट सौं नीन /
एँ कानन वहुए घन मएतराअ॰॰ रनीजा रीन /
आओ लाट वहादुनओ दतिरंगा धाम /
वावू ओ ववुआन सहिए मिलिकीह कुमेटी खान /

......

......

......

ओह सरट संए वेए कैजाय कुमेटी रहल /
अजव कान सनकान कएिनहुए यहुँचल नल /
वाजिएपूनसँ सतक निकालैआय सैतिह सैती /
हहया एंतक यूल वद्याओआओ चौनही चौनी /
धर्मीधीन, वलवीन, कम्पनीजानए ह॰॰ जएदीशन /
लछमी साएन क याखनिमएाहि कीह ॰॰सटीसन /
वता लाट कलकाफनालश्रीदुएी हाओ संए /
आएना क छाटा लाल वहादुनवेए सरट ओकनंए /

झाट कमिश्नर और कलक्टरवालहिं बाप नअंट /
एहि याचा इजलास यन बेकसंग जाए एहि जंट /
खबरि गेल अखबार मौमैथिल क एहि हाल /
सुनहु रिनंगी अनध देकँमटहु दुख क जाल /
हुकुम दीह्न दाउ लाट कासुनहु हमार बेन /
मदति करहु रआआनकावेन क्षा बेक हो /
वएा लाट दाउ बीन उठाएसाहेव औ जरनैल /
मजर मजिस्टर और कलक्टरसंगजाए करनैल /
दस दससौँ अन्न मंगाउलदीह्न सरकारि क दाम /
महामुँग, गहुम औ चाउरवजरा और वदाम /
तीली, यटना औ रटसारदीली औ अजम /र
आगना और काह्नयून ढाकाजहाँ अन्न क ढर /
रएह नमाना अन्न गिरहुगिमलादि गाठी और बेल /
गज, तुरंग, गदहा औ छकड़ासंग सियाही छैल /
छत्री औ येठान मागल सरवाँकावीन रजपूत /
सारा बनि नजाए हएइजैस हनूमन्द दूत /
आगे सरहन उा मैनायलटरन नीन जमान /
बनछी औ रनुआनि गहे कर गहे गीन /कमान
चढि तुरंग यन करै कनाइजमादार हाए संग /
सारा बनि न जाए हइगखनूक रंग दखि /
करए काम सर धामभटूर अर सर लूट /
ढाहि रीत गाछी सहिएवाबे सतक औ यूल /
जिल यटर औ रटसारप्रगन्ना महिसीन /
एहाँ बसहिँ एक सज्ञानएहि घर जा लक्ष्मी दोत /

श्री ज्ञानिका प्रणादित्धर्म /्मधीन वृद्धिमान
गह्सीलदान कानट क खासाजानहिं सकल जह्वान /
वावू ईश्सनी प्रसाद दियोटीसा मधूवनम आछ /
हुकुम दीह्न सुयननठंटकँटाल टाल ह्वाछ जाछ /
मन यँचा मनगन रै लिछवह्ना लिछ खेनाण /
धय धय अंगनज वहादुनसरकँ ज्ञटल गाण /
गनिव, गनी, गुनवा, कनू ऊ, ऊैव्राह्मण द /ग असीस
श्री नघुनाथ वरे वदसाहीगदी लाख वनीस /
रूगुन लाल कवि वनना हैँछरु नोदी क ह्वाल /
गोनमिंट गोननल वहादुनगिनह्गि नाखहिँ वहाल /

२

नाधाकृष्ण चौधनी (मिथिलाक ईगिहास) (निह्दह यटानम उयलब्ध(

"१११० क अकाल मिथिलाक ईगिहासम अद्धितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकँ एक दम्म कम्म रुऽ गेल छल। १८१३-जकन म यून: एकटा डाह्न अकाल मिथिलाम रुल छल १४ निननध हमना रूगुनी लाल कनिक अकाली कनिन्हसँ रटईये, अकाली कनिन्ह अप्रकाशिग अछि। अकालकँ दुन कनवाक ह्गु आ मझनकँ नाजी दवाक ह्गु गाहि काल नलगाठीक याजना चलाउल गेल जकना सम्वन्धम रूगुनीलाल लिखैग छथि-

'कम्यनी अजान जान कलनका वनाय शान।

यनन का छकाय मैदानम धनाया हे।
छाठा हे अठदान वठा वीच धाय धाया।
सरलाग रुटाजाग कगाजाग खठा हे।
गानकी अयानकान खवनि दग नान नाना।
वग गया टिकसदान नल की उनाङ्गी हे।
कनग हे अनान (भान यीछ कग लगग छाना।
जान की धमाक स मशीन की वठाङ्गी हे।
कम्यूसन यरुनदान काथी सव अजवदाना।
काङ्गला रन कनल कान धूआँस उठाया हे।
वाजा ओक वजन लाग हाथी असा।
यिकन लाग जैसा जा वढनदान वैसाधन याया हे।
गंगार्क रनल धान उगनि गया रुनुन यान गाठीकी।
अजवकान कविन्ह यरु वनाया हे।'"

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अयन मंगाय editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

१.२.अंक ३६९ पर टिप्पणी

नवानारायण मिश्र

प्रिय कथाकार आदरणीय श्री अशोक जी क विशेषांक लेल शुभकामना! ई कार्य कोना लोकप्रिय मैथिली पत्रिका केँ कऽ सकल, से नीक कार्य निरन्तर होइ पत्रिका कऽ सकल एतदर्थ उक्त टीम केँ सेहो बधाइ। जय मैथिली।

महत्त्व

कथाकार अशोक पर केन्द्रित ई विशेषांक एकटा महत्त्वपूर्ण काज थिक जकर हम प्रशंसा करै छी, आ आशा करै छी जे एकर हाते कायी.समूल्य रहि सकैत अछि। पुन: हार्दिक अभिनंदन !

डा धनाकर ठाकुर, प्रारुसन मतिसिन नानागरी, ९८४३३१६८६१, ९४३०१४११८८dhanakar@gmail.com

साहित्यिक रूपेँ आब प्रचलित कथाकार अशोक पर विशेषांकक सूचना एक विद्वान द्वारा देखि पढ़ल त हुनकहि सर्वस्पर्शी रचना पनिर्जनि

लेल धन्यवाद देल ओ ई एक माँकेँ विशेषांकक यात्रा पूरलन्हि,परञ्च खेललायन आनन्दहुँ अनेक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व पर विशेषांकक जानकारी देखि प्रसन्नता भेल। कथाकार अशोककेँ रचनाकार अशोकक रूपमे प्रस्तुत करक सफल प्रयासमे हुनक जानकारी भेटल संक्षिप्त आत्मकथ्यसँ काफी सूचना भेटल ई लिखबाक मैथिली ढंग ओ काशी कहैत छथि काशीकेँ जाय हम अपन जीवनकालक उपनाखंडमे नियोजनक उत्कर्ष लेल प्राफेसर मतिसिन बनल, किछु मास पूर्वहिं अयलहुँ अछि । काशीसँ करिहान हाऽऽग अशोकक पाटलिपुत्र हुनका एक बालकनिसँ कनि हुन कथाकार जीवनक अनुरूप बना देलकैन्हि जकर अन्तिम औपन्यासिक दुखान्तिका हुनक पत्नीक आत्मसीयुम सुदीर्घ संघर्षक बाद मृत्युकेँ जनुन समरण, जकर आशा उषा किरणजी संग रमानाथ झाजी कर छथि, हमर एकमत अनुराध ओ ताहूनकेँ ई बखसैत कारण ताहून एक निजीह प्राणी हाऽऽग अछि; हम एहि लेखनकेँ पढबाक कारणमात्र एक बेर हुन आत्मसीयु अपना नाम पर देती देल एक अक्षत मधुमहीकेँ देखय हुन एक बेर जायब यद्यपि कनीय रजितंर ताँहुनकेँ सर निर्देश देय चुकल छी। घण्टा -३८ घण्टामे सम्प्रह लेखकक उन्नीशटा हुनका पर लेख पीन परिचयात्मकक बाद यानी बाऽऽस लेख पढि लेब एक कठिन कार्य हम कलहुँ अछि किन्तु हमर येह पाठकीय गति अछि आउार गम्भीर लेखनीय ओ दुर्गति सहा करा सकैत अछि तथापि स्थालीपुलाक न्यायसँ अवलोकित समग्र मूल्यांकन ऽऽी अछि ओ अशोकक कथासंसार मिथिलाक गामक भूगोल ई संसारक बीचक पाठक अछि ओ ई एक ग्रामीण दृष्टिपहिसँ नहि राजधानीमे कार्यरत निरागीय उपक्रममे सहा देखलाह, भोगलाह। हिनक चानि दशकमे

कथासंग्रह कम छनि जकर कारण हम बुझैत छी साहित्यिकीय प्रासारण-पुनर्पाठ नहि भऽ सकब मुख्य कहल। हमरा सभ 'भागवत' पढ़ल अछि ओ ओकर समीक्षा सेहो कएने लिखल हएत जाहिमे हुनक एक पात्र द्वारा अंग्रेजीक लम्बा कथनकेँ कृत्रिम वर्णन छलियन्हि जखन कि कथाकार अशोकसँ कथासमीक्षक हमरा नीक लगलाह,ओना ई बात अलग जे घटना कथानाविशेषमे हमर आधुनिक कथा 'ओ' पर किछु बाजयसँ छिटकि गेलाह। हिनक कथासभ हम अति उत्कृष्ट त नहि मानैत छी किन्तु जखन बहुत सामान्यकेँ पुनर्मुद्रित कयल गेल त अशोकजीकेँ बहुत पहिल सम्मानक पात्र बुझक छल। पहिल विशेषांकक सूचना देखल नहिएहुँ त एहि विशेषांक लेल हम सेहो लिखल नहिएहुँ। हम अशोकजीकेँ एहलाक बुझैत छी ओना सभ लेखक हुनका प्रति श्रद्धावान देखौलाह अछि। हस्तलिखित हिनक एक मित्र हमरहि जकाँ कारहुँ अखनहुँ लिखैत छथि कारा नहि स देखि प्रसन्नता भेल। अशोकजी मार्क्स निरर्थ पानी मार्क्सवादी विचारधाराक नहि देखाइत छथि एहि विशेषांकक बहुलांश लेखक द्वारा। हमरा सभ ओ हरिमोहनी उद्धरणीय आधारभूमि पर उपजल एक कथाकार लागल छलाह जिनक अनेक अधुना प्रतिमान कारपारेट जगतक आंग्लभाषाप्रेमी मानसिक दास, जिनका द्वारा सामाजिक समरसता वा उन्मेषक प्रयास भेनहि कथाकार अशोक कयलन्हि ओ पलायनक विस्तृत आयामक एक अंशमात्र। महिला लिखिकाद्वयमे कल्पना झा हुनक संयोगवश भेल अखबारी व्यंग्य लेखन पर सेहो प्रकाश देत अछि जाहि पर हिरानाथ झाक लेख कहित अछि । कल्पना झा संगहि 'पाखनिस्ट्रम' आजादीक बाद घटल २४ लाखसँ ६ लाख भेल संख्या लेल तजागोसन, कुपासनक विकल्प

अशोकक बातेँ अछि से नीक लागल। ई वैवाहिक बलात्कारसँ भेल गर्भ पर मौन छथि ई "स्वाधीन" कथामे आयल अछि किन्तु आगा मा एहि पर टिप्पणी करैत अशोकक पक्षक नारीवादी समर्थनमे किन्तु कि ओहो विवाहक संगहि बलात्कार नहि ई हम विवाह करब, काम सुखायबाग करब किन्तु गर्भ धारण नहि करब ई सामाजिक बदलाव नहि व्यवस्थाक संगहि बलात्कार भेल ई एक बाल-बच्चादार लेखकक विशेषता नहि त्रुटि मानक चाही। दिलीप कुमार झाक लेख यथास्थितिवादी छनि ई ओ लिखलाह से सभ नीक आओर ओहो मैथिली समीक्षाक दयनीय अवस्था बातेँ अछि। अजीत कुमार झा तेतीगामक सभ कथा पर गहनहि टिप्पणी कएलाह अछि जखनकि एहि विशेषांकक एक लेखक प्रभावहक संदर्भ देलाह अछि ई ककरहुँ सभ कथा नीक नहि लिखाइत छनि। कुमार राहुल किछु हस्तक्षेप जरूर कएलाह अछि। 'हत्याओमे लिखायल' 'हामूलावद्ध ' किन्तु की अशोक नव लीक द' पयलाह अनुभवित नहि जाइत अछि। मार्क्सवादकेँ अस्तित्ववादसँ (वा तार्किकवादसँ सेहो) विवाद कहाँ ठीक? (हमर लिखित राजनीतिक सिद्धांत 'आध्यात्मिक मार्क्सवाद" क चर्चा एत अनावश्यक)। मित्र हवाक नात लालदेव कामतक अशोकक प्रशंसा ओ पृष्ठभूमि पर नीक विवरण, विशेषतः गारपुरा कथाक किन्तु ओहो समीक्षात्मक नहि। शिवशंकर श्रीनिवास व्यथित छथि ई अशोक शहरी कथाकार नहि ग्रामीण क्षेत्र पर सेहो लिखैत छथि आओर ओही सांसम हुनक वैश्विक विवरणक? एहि भूमंडलीकरणक युगमे जहन मिथिला सेहो अछि प्रश्न ई ग्रामीण वा शहरी नहि अछि; एखन प्रश्न एकहि ई की बढैत शहरीकरणमे गाम लोकक जीवनमे बाँचत से धूमधाम अंग्रेजीक प्रयोग करैत यात्र अशोककेँ

लीकसँ हटल नहि चाहैत अछि। जगदीशचंद्र ठाकुर सेहो हमरहि आयामे चाहैत शिल्पमे मैथिली पर अशोकक मौन चाहैत छथि। अस्त्रिन-अंकित पात्र रामहि हुनक कथाकेँ कारहुँ शिवनाथ-गौरी सनहुँ आधुनिक हनिमाहनी अशोकक कहाँ चलैत अछि (हमरहुँ कथाक कमली-नमियासन सन नहि)। नारायणजी अशोकजीकेँ किनष्ठप्रयासंभूक्त मानलाह अछि किन्तु ई उत्कर्ष तक नहि गेल गेलहि अपकर्षहुँ नहि। सहपाठी शैलेन्द्र अशोकक कलाकार पक्ष पर केन्द्रित छथि आओर लगैत अछि ओ कथाकार अशोकक मूल्यांकन नहि कएलाह। शिवकुमार मिश्र सेहो अशोकजीक सांगठनिक सहयोग पर लिखलन्हि जे उत्तम किन्तु अशोकजीक सर्वोत्तम सहयोग कथा गोष्ठीमे हमरा जनैत रहल अछि। आशीष अनचिन्हार मैथिल महासभाक दृष्टिकोणसँ नहि अशोकजीकेँ नहि पढ़ैत छथि यद्यपि ओहिमे अपन दृष्टिकोण रखबासँ स्वयं सेहो मुक्त नहीं आओर ई बात नहि बिसरि जे समाजक सापेक्ष बदलाबमे शताब्दी लगैत छैक दशक नहि आओर सामाजिक समरसता धैर्यक अपेक्षा करैत अछि तथापि हिनक अपेक्षा स्वागत योग्य। मुन्नाजी अशोकजीक साहित्यिक कार्यकर्ता निर्माण पर नीक प्रकाश देलन्हि अछि जकर अशोकजी वस्तुतः अधिकारी, सरकारी अधिकारी होइतहुँ मंच-माला-माइकसँ निस्पृह। श्रीधरम् अशोकजीकेँ गतिशील कथाकार स्थापित करय लेल विधवाक दु:ख पर 'नांत' कथामे हुनक वेदना रखैत छथि ओना 'स्वाधीन' कथाक पूर्वलिखित दृष्टिकोण रखबासँ दूर छथि। ई सभ संकेत दैत छथि जे संस्मरणात्मक अशोकजीक समीक्षाक रूप हुनक कथालेखनसँ ऊपर हो।

उषा किरण खान

बहुत बधाइ! सामग्री सँ समृद्ध अंक बुझाइये। विदेहक विशेषांक अशोक जी पर आबय बला रहय से बुझल छल तें अइका प्रती दैह रहल! कथाकार मे अशोक, व्यंग्यकथा मे बटुक भाइ, उपन्यासकार मे साकेतानंद आ कवि मे महाप्रकाश हमर प्रिय रहलाह अछि। ई लोकनि विपुल नहिं लिखलनि मुदा जतबा बुझैलनि हमरा व्यक्तिगत रूप सँ। आन सब शेष अपना अपना तरीका सँ प्रभावित कएलाह अछि। शिवशंकर जी क कथाक लोकल हमरा सन मिथिला कहना मैत्र लैंत कम प्रायः जानकारी बढबैत अछि त अशोक जीक कथा मिथिला सँ बाहरक (काशी क) प्रासंगीक स्थान देत अछि। अशोक जीक स्वयं परिचय पढलौं आ तखन हुनक परिवेश जानि कथाक उत्स बुझबा मे आयल। अशोक जी हठवतिया कथाकार नहिं छथि। तें सटीक समीचीन कथा साफल लिखै छथि तकर बड नीक विश्लेषण दिलीप कुमार झा कएलन्हि अछि। आशा झा बड नीक विश्लेषण कएलनि मुदा विस्तार नै देलीह। बुझि पडैत अछि आगाँ देतीह।

नारायण जी

मैथिलीम ककरा हाते कायीक पत्रिका नहैत ई पत्रिकक रूपम किएक न हाअय कथाकार अशोकजीक विशेषांक छापा नाटिस लबा लल हमर हार्दिक बधाइ।

बैकुंठ झा

विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तित्व पर विशेषांक निकालब महत्वपूर्ण काज। एहि लेल साधुवाद अहाँक

अनिरुद्ध ठाकुर

स्वागत ! अहि आयोजन लेल विदेह टीम कँ बहुत बहुत बधाई।

प्रफुल्ल कोलख्यान

बधाई आ शुभकामना। नीक लागल। बड नीक लागल

दिलीप कुमार झा

नीक प्रयास। अह्लादकारी अंक। बधाई संपादक मंडलकेँ।

-
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भ

२.२.नाम प्रकाश कार्यी 'अमन' जीक संक्षिप्त परिचय

२.३.प्रतिभा मिश्रा- नाम प्रकाश कार्यी 'अमन' क व्यक्तित्व

२.४.भीमनाथ झा- लोकजीवनमयन समकित आलोक

२.५.विजय कुमार मिश्र- नामप्रकाश कार्यी 'अमन'जीक संग साक्षात्कार

२.६.साक्षात्कार- दिनेशचन्द्र गोयाल

२.७.अशोक-नामप्रकाश कार्यी 'अमन'क उपन्यास 'घनमूँहा'

२.८.लालदेव कामत-डा० नाम प्रकाश कार्यी "अमन" : एक व्यक्तित्व

२.९.अजय अनुरागी- मैथिली भाषाक साहित्यकार 'अमन' हुनक विश्राम पुस्तक प्रकाशन

२.१०.अश्विनी कुमार आलोक-नामप्रकाश कार्यी अमनः भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु

𑓒.𑓑𑓑.𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒹𑒬-𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒁𑒧𑒩' : 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩, 𑒮𑓀𑒫𑒹𑒠𑒢𑒰 𑒂 𑒔𑒹𑒞𑒢𑒰

𑓒.𑓑𑓒.𑒛𑒰.𑒩𑒰𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒫𑒱𑒧𑒪-𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 '𑒁𑒧𑒩'𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 '𑒒𑒢𑒧𑒴𑒯𑒰𑒿'- 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰

𑓒.𑓑𑓓.𑒛𑒰.𑒩𑒰𑒧𑒠𑒨𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒏𑒹𑒬- 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒖𑒹 𑒯𑒧 𑒣𑒜𑒪-𑒬𑓂𑒩𑒲 [illegible]𑒏 𑒏𑒟𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩

𑓒.𑓑𑓔.𑒠𑒱𑒢𑒹𑒬 𑒨𑒰𑒠𑒫-𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑒩 𑒫𑒱𑒦𑒴𑒞𑒱 '𑒁𑒧𑒩'

𑓒.𑓑𑓕.𑒔𑓀𑒠𑓂𑒩𑒹𑒬-𑒫𑒱𑒫𑒱𑒡𑒫𑒩𑓂𑒝𑒲 𑒂 𑒥𑒯𑒳𑒩𑓀𑒑𑒲 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 '𑒁𑒧𑒩'

𑓒.𑓑𑓖.𑒁𑒨𑒼𑒡𑓂𑒨𑒰𑒢𑒰𑒟 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲- "𑒁𑒧𑒩"𑒏 𑒥𑒯𑒳𑒂𑒨𑒰𑒧𑒱𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫

𑓒.𑓑𑓗.𑒁𑒖𑒱𑒞 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰-𑒒𑒢𑒧𑒴𑒯𑒰𑒿: 𑒧𑒡𑒹𑒬𑒲 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢 𑒂 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒩𑒮𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒹𑒖

𑓒.𑓑𑓘.𑒩𑒧𑒹𑒬 𑒩𑓀𑒖𑒢-𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒂𑒩 𑒫𑒮𑒢𑓂𑒞 : 𑒞𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒮𑒧𑒨 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱 𑒢𑒰𑒙𑒏

𑓒.𑓑𑓙.𑒫𑒱𑒢𑒨 [illegible]-𑒆𑒩𑓂𑒖𑒰𑒏 𑒂𑒬 𑒖𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒁𑒧𑒩𑒏 𑒑𑒖𑒪

२.२०.आशीष अनचिन्हार-कलंकित चान

२.२१.विनीत ठाकुर-बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सूक्ष्म स्नन्य:नामरत्नास कायेत भ्रमण

२.२२.डा. योगानन्द झा-रैया अछैत अयन सामाज: विहंगम दृष्टि

२.२३.गजेन्द्र ठाकुर- नाम रत्नास कायेत 'भ्रमण' पर एकटा समग्र दृष्टि

२.२४.नित्यानन्द मण्डल-अयन नक्षम नक्षाएल नामरत्नास सन

२.१.प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भ

प्रस्तुत विशेषांकक संदर्भ

विदेह द्वारा लेखकपर विशेषांक 'जीवैत मुदा उपेक्षित' शृंखला शुरू कएल गेल छल 2015 सँ जकरा आब "विदेहक जीवित मैथिलकर्मी, संगीतकर्मी, साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी-रंगमंच-निर्देशकपर विशेषांक शृंखला" नामसँ जानल जाइत अछि। दिसम्बर 2022 मे विदेह "रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक" प्रकाशित करबाक सार्वजनिक घोषणा कएलक आ प्रस्तुत अछि ओही विशेषांक। एहि सूचनाकेँ एहि लिंकपर देखि सकैत छी-घोषणा। मैथिलकर्मीसँ हमर सरोकार आशय जिनकर काज मिथिला-मैथिली-

मैथिली लेल कोनो माध्यमसँ भेल हो। ओ संगठनकर्ता सेहो भऽ सकैत छथि, आन भाषाक लेखक सेहो। तहिना संगीतकर्मी सभ गीत-संगीतसँ जुड़ल लोक।

एहन श्रृंखलाम, एहि विशेषांकसँ पहिने विदेह ७ टा विशेषांक प्रकाशित कऽ चुकल अछि आ एहिठाम आब हम कहि सकैत छी जे ई एकटा चुनौतीपूर्ण काज छै। अनेक संकट केर सामना करए पड़ैत अछि लेख एकत्रा करएमे। मुदा संगहि ईहो हम कहब जे संकटसँ बेसी हमरा लग समर्थन अछि। हँ, ई मानएमे हमरा कोनो दिक्कत नहि जे जाहिक लेख केर उम्मेद करैत रहैत छी हम ताहिक नै आबैए, जाहिक लोक लिखबाक लेल गछैत छथि से सभ अंत- अंत धरि आबि चुप्प भऽ जाइत छथि। आ एकर कारणो छै, किएक ई लागै छनि जे आलेखन लिखब से हम अपन रचना किए ने लीखि लेब, किएक लग पाथिए नै रहै छनि, जखन कि हम सभ पाठककेँ विकल्प चुपम पाथीक पी.डी.एफ छापल सेहो देबाक लेल तैयार रहैत छी। किया विदेहक समालोचना चुपसँ दुखी छथि, तँ किएक मित्रकेँ विदेहसँ दिक्कत छनि तँए ओ नहि देता। बहुत लोक तँ विदेहमे एहू लेल रचना नै पठबैत छथि जे कहीं हमरा अकादमी वा धनी संस्था सभ न देखि लिए। अकादमी आ संस्था सभ विदेहकेँ अपन अपन शत्रु मानि बैसल अछि आ पुरस्कारक ईच्छा रखनिहार तँए विदेहमे रचना नै पठबै छथि। एकरा हम संकट बुझै छिऐ जे सभ हेसबुकपर लंबा-लंबा लेख वा कमेंट टाइप कऽ लै छथि सेहो सभ विदेह लेल हाथसँ लिखल पठबैत छथि। जे सभ कहिया काल हेसबुकपर टाइप कऽ लीखै छथि तिनकर आलेख हम सभ टाइप

करैत छी। जिनकर रचना टाइप करैत छी तहिना स्वतः हुनकासँ टाइप करबाक लेल चाहि जाइत छै। खगता पड़लापर करबइ त संकटसँ बची समर्थन अछि तेँ आइ पहिलसँ लऽ कऽ नवम विशेषांक धरि पहुँचलहुँ हम। 2015 सँ लऽ कऽ 2023 कर मध्य धरि 9 टा विशेषांक प्रकाशित भेल मन बरखम एकटा। निश्चित समर्थन बरी भेल हमरा। जखन कि विदेहक ऐ 9 विशेषांक कर अलावा आना विषयपर विशेषांक प्रकाशित भेल अछि। एकर अतिरिक्त ऐठाम बात संभावनायक अछि जे विदेहक हमर विशेषांक अभिनंदनग्रंथ हवासँ बाँचि गेल अछि। मुख्यधारा जकाँ विदेहकेँ अभिनंदनग्रंथ नहि चाही। अभिनंदनग्रंथ अहू दुआरे नै चाही जे ओहिसँ लेखक वा जिनकापर निकालल गेल छनि तिनकाम सुधारक गुंजाइश खत्म भऽ जाइत छै। तेँ विदेहक विशेषांकम आलोचना-प्रसंशा सब हएत।

एहन नै छै जे नामरूपास कायति 'अमन' जीपर लिखल नै गेलै मुदा ओ सब एकठा नै भऽ सकल छै तेँ ओकर प्रयास भऽ गेल छै। एहि संदर्भम हम कहि सकै छी जे विदेहक ऐ प्रस्तुत विशेषांक एहन पहिल प्रयास अछि जाहिम ऐ बुझबाक प्रयास कएल अछि जे नामरूपास कायति 'अमन' जीक रचना करैत छनि। ऐ अलग बात जे हम सब कतेक सफल वा असफल भेलहुँ से पाठक कहता। एहि विशेषांक कर अनुभाग विदेहक आन विशेषांक जकाँ अछि। संग-संग ऐ क्रम न तँ ओहक वरिष्ठता कर पालन कएल आ न रचनाक गुणवत्ताक। हँ, एकर ध्यान जरूर राखल गेल छै जे पाठकक रसभंग नहि होइन आ से विश्वास अछि जे रसभंग नै

छलनि।

पाठक जखन एहि विशेषांकक पढ़ताह तँ हुनका वर्तनी ओ मानकताक अभाव लगतनि। वर्तनीक गलती जे थिक से साफ-साफ हमर सभहक गलती थिक जे हम सभ संशोधन नै कऽ सकलहुँ मुदा ई ध्यान राखबाक बात जे विदेह शुरुएसँ हुनक वर्तनी वला लेखकक स्वीकार करैत एलैए। तँइ मानकता अभाव स्वाभाविक। एकर बाद बहुत वर्तनीक गलती रहल गेल अछि जे कि हमरा सभहक गलती अछि। मैथिलीमे किछुए एहन पत्रिका अछि जकर वर्तनी एकरंगक रहैत अछि आ ई हुनक खूबी छनि मुदा जखन ओहो सभ कोनो विशेषांक निकालै छथि तखन वर्तनी तँ ठीक रहैत छनि मुदा सामग्री अधिकांशतः बासिये रहैत छनि। ऐतिहासिकताक दृष्टिसँ कोनो पुरान सामग्रीक उपयोग वर्जित नै छै मुदा साठियो जे 72-80 पन्नाक कोनो प्रिंट पत्रिका होइत छै ताहिमे लगभग आधा सामग्री साभार रहैत छनि, तेसर भागमे लेखक केर किछु रचना रहैत छनि आ चारिम भागमे किछु नव सामग्री रहैत छनि। मुदा हमरा लोकनि नव सामग्रीपर बेसी ध्यान दैत छियै। एकर मतलब ई नहि जे वर्तनीमे गलती होइत रहै। हमर कहबाक मतलब ई जे संपादक-संयोजकक कोनो ने कोनो स्तरपर समझौता करए पड़ैत छै से चाहे वर्तनीक हो कि, मुद्राक हो कि विचारधाराक हो कि सामग्रीक हो। हमरा लोकनि वर्तनीक स्तरपर समझौता कऽ रहल छी मुदा कारण सहित। प्रिंट पत्रिका एक बेर प्रकाशित भऽ गेलाक बाद दोबारा नै भऽ सकैए (भऽ तँ सकैए मुदा तेँ पाइ लागि जेतै) तँइ ओकर वर्तनी यथाशक्ति सही रहैत छै। इंटरनेटपर

सुविधा छै जे बीचमे (कम्प्यूटरसँ प्रिंट होबाक अवधि) ओकरा सही कऽ सकैत छी मुदा सामग्रिए बसिया भेल तँ सही नेपाली तहिना नव अध्याय नै खुजि सकल तँए हमरा लोकनि नेपाली बला मुद्रायन समझौता कएलहुँ। हमरा लोकनि कएलनि, कयलनि ओ करलनि तीनू शुद्ध मानैत छी, एतेक शुद्ध मानैत छी ओकर व्यवहार तीनू रूप होइत जाए। आन शब्दक लेल एहन बुझू।

रमनजी नेपालक मैथिलीकेँ प्रतिनिधित्व करै छथि तँ आलेख नेपाल दिससँ सेहो आएल अछि तँए भाषा संबंधी किछु बात देखल जाए जे कि मात्र स्थानीय पाठक लेल अछि-

१) स्थानीय पाठक कोना लेखक लेल जेहन आदरसूचक शब्दक प्रयोग देखैत-पढ़ैत एलाह अछि से नेपालक आलेखमे नहि होइत आ नेपालक मैथिली लेल ई सामान्य बात होइ।

२) स्थानीय पाठकसभकेँ किछु शब्दक अर्थ नहि लगतनि आ एहि लेल हुनका विदेहयन उपलब्ध नेपालीय मैथिली मैथिली साहित्यकेँ पढ़ए पड़तनि।

३) हाथकेँ बदलबामे सेहो बहुत नाम दिक्कत भेल छै जाहियन हम सभ काज कऽ रहल छी।

उम्मेद अछि जे पाठक विदेहक आन विशेषांक जकाँ एकरा पढ़ताह आ पढ़ि एकर नीक-बेजाएपन अपन सुझाव देताह। विदेह अनतिहु पाठकक विशेषांक कर पाछाँ नव "स्वतंत्रता" कर नामसँ प्रकाशित भेल उम्मेद जे हरिश्चम नामभोस कायठ 'रमन' जीयन कहित एहि

विशेषांक कोन पोथी रूप सेहो आएत।

विदेह द्वारा विशेषांक शृंखलाम प्रकाशित भेल आन विशेषांक सम्बन्धक लिंक एतऽ अछि ओहिमे ओ अंकक लिंक देल गेल)
-(अछि ताहि अंकपर क्लिक करबै तँ ओ अंक खुजि जाएत

१) अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांक ०१ नवम्बर २०१५ अंक १८९

ई विशेषांक २०२० म पोथी रूपम सेहो आयल अछि। लिंक अछि:

स्मृतिरेखा- अनिरुद्ध ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अनिरुद्ध ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप]

२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक ०१ दिसम्बर २०१५ अंक १९१

३) रामलोचन ठाकुर विशेषांक ०१ अप्रैल २०२१ अंक ३१९

४) राजनन्दन लाल दास विशेषांक ०१ नवम्बर २०२१ अंक ३३३

५) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक १५ जून २०२२ अंक ३४८

६) केदारनाथ चौधरी विशेषांक १५ अगस्त २०२२ अंक ३५२

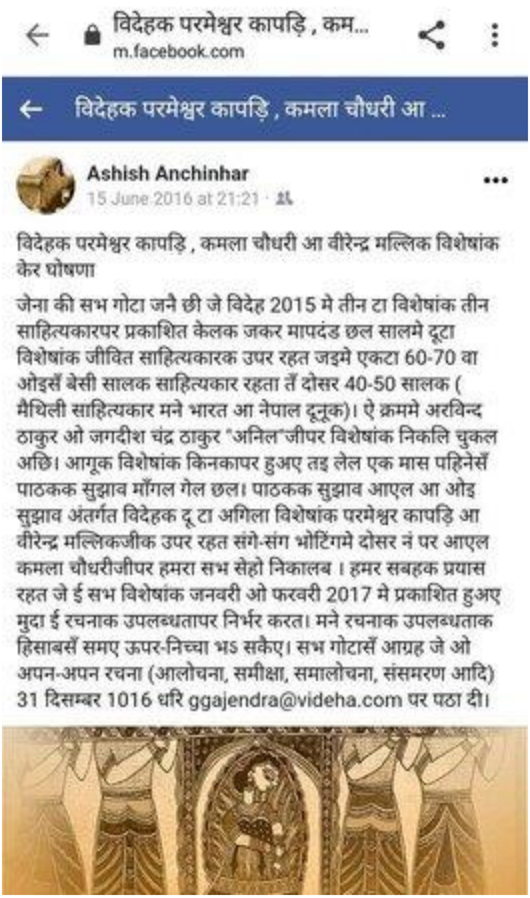
७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक ०१ नवम्बर २०२२ अंक ३५७

८) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक १५ नवम्बर २०२२ अंक ३५८

९) अशोक विशेषांक ०१ मई २०२३ अंक ३६९

मई मे भेल ओ काज हम सभ कऽ सकलहुँ जकर विवरण मुदा किछु एहनो घोषणा छै जे कि हम सभ नै कऽ सकलहुँ जेना २०१६ मे हम सभ परमेश्वर कापड़ि, कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा कएलाक कऽ नहि प्रकाशित कऽ सकलहुँ। पाठक एहि घोषणाकेँ एहि लिंकपर देखि सकै छथि- सूचना

बादमे विदेहक "वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक" (जे कि प्रकाशित नै भऽ सकल) लेल वीरेन्द्र मल्लिक जीक साक्षात्कार जे नवनारायण मिश्रजी से विदेहक ३३१म अंकमे प्रकाशित भेल पाठक एकरा एहि लिंकपर पढ़ि सकै छथि- १ जनवरी २०२२ अंक ३३१



विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कम...
m.facebook.com

विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कमला चौधरी आ ...

Ashish Anchinhar
15 June 2016 at 21:21

विदेहक परमेश्वर कापड़ि , कमला चौधरी आ वीरेन्द्र मल्लिक विशेषांक केर घोषणा

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह 2015 मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा 60-70 वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर 40-50 सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक दू टा अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि आ वीरेन्द्र मल्लिकजीक उपर रहत संगे-संग भोटिंगमे दोसर नं पर आएल कमला चौधरीजीपर हमरा सभ सेहो निकालब । हमर सबहक प्रयास रहत जे ई सभ विशेषांक जनवरी ओ फरवरी 2017 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना (आलोचना, समीक्षा, समालोचना, संसमरण आदि) 31 दिसम्बर 1016 धरि ggajendra@videha.com पर पठा दी।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२.नाम स्नास कायिउ 'अमन' जीक संजिप्त यनिवय

नाम स्नास कायिउ 'अमन'जीक संजिप्त यनिवय

ओहि0ाम प्रस्तुत अछि नामस्नास कायिउ 'अमन'जीक संजिप्त यनिवय। ओहि यनिवयक अधिकांश तथ्य यहिनसँ सार्वजनिक अछि। अधिकांश स्वाटा अमनजीसँ प्राप्त स्ल अछि। नयालम विक्रमी संवत वलैत छै, ज००0ाम ००नै लिखल छै ., स विक्रम संवत वर्ख अछि आ उ०० लल मात्र अंक लिखल छै। तँ०० ज०० 0ाम मात्र अंक छै स संवत वर्ख स्ल आ ताहिमसँ 57 घटा दन अंग्रेजी वर्ख ००ी. आवि जाओत। उदाहनध लल अमनजीक जन्म संवत 2008 म छनि जाहिमसँ 57 घटलायन 1951 अवैत अछि, अर्थात अमनजीक अंग्रजी जन्म वर्ख 1951 ००ी. स्ल। ओनाहित याथी प्रकाशन नर्षकँ सहा वदलि सकैत छी।



नाम- नामरुनास कायति 'ञमन'

माणा : दुखनी दवी

यिणा : नाम गुलाम कायति

स्थान : वघवौआ, जिला- धनुषा, जनकयुन अंचल, गाविस वघवौआ, वार्ड नं.-1 (नयाल)

जन्म तिथि : 2008 साल, साउन, 22 गते (स्कुलक सर्टिफिकटम 5 मई 1951)

शिक्षा : त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम.ए., बी.एड. (मानद)।

वृत्ति: यत्रकारिता, रुाषा,साहित्यक सवा

नव जिम्मवानी: अध्यक्ष:मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान,मधेश

प्रदेश,जनकपुरधाम, धनुषा,नेपाल

ईमेल आइडी: bhramar.2010@gmail.com , मो.नं. 9854020889.9807677001

प्रकाशित कृति मौलिक: (एखन धरि भ्रमरजीक जतेक मौलिक पोथी प्रकाशित भेलनि ताहिमेसँ अधिकांश विदेह पोथी डाउनलोडपर राखल गेल अछि आ एहिठाम ओ पोथीक लिंक देल गेल अछि ताहि पोथीक नामपर क्लिक करबै तँ ओ पोथी खुजि जाएत)-

काव्य:

1) बन्न कोठरी औनाइत धुआँ कविता संग्रह: 2029

2) नहि, आब नहि दीर्घ कविता 2036

3) मोमक पघलैत अधर गीत, गजल

4) अप्पन अनचिन्हार कविता संग्रह: 1990 ई.

5) भयो अब भयो नेपाली अनुवाद बस अब नहीं हिन्दी अनुवाद

6) अरिपनियाक चान गजल संग्रह 2070

7) युद्धभूमिक एसगर यात्रा कविता संग्रह, 2017 ई.

कथा संग्रह:

1) गामा संगे जयबौ न कुजवा (1987 ई(.

2) ह्गली उयन वहेग गंगा 2065

3) ७ष्टीरायनस कथा संग्रह 2076, 2019 ञ्ञी

उयन्यास:

1) घनमूहाँ 2069

नाटक:

1) नानी वङ्कनी : 2045

2) ७कटा आउान वसन्द : 2052

3) महिषासुन मुर्दानाद ७वं अन्य नाटक : 2054

4) ग्रमनका उत्कृष्ट नाटकहनु नयाली अनुवाद 2064

5) रैया अ७ले अयन सानाज नाटक 2067

6) ७कटा आउान वसन्द ७वं अन्य नाटक संग्रह 2069, सामा प्रकाशन, नयाल

7) सुलीयन ञ्ञाग ७वं अन्य नाटक, नाटक संग्रह 2072

यात्रा संस्मनध:

1) चीन ज हम दखल 2070

2) सीमाम आन-यान 2073

शोध आलेख संग्रह:

1) जनकपुरधाम र यस उप्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू : 2056 साल

2) राजकमलको कथा साहित्यमा नारी : 2064 साल

3) लोकनाट्य : जट-जटिन : 2064 :

4) Cultural heritage of Janakpur 2062

5) मैथिली लोक संस्कृति आलेख संग्रह 2066

6) गनाङ्लीका फांट देखि हिमालका काख सम्म आलेख संग्रह, प्रकाशक: साझा प्रकाशन, 2067

7) मिथिलाको सपूत : राजा सलहेस, 2075, प्र. रान

8) मैथिल लोक संस्कृति : विविध आयाम नेपाली आलेख संग्रह 2075, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान, नेपाल

विविध:

1) आजको धनुषा : 2039, जनकपुर लोकचित्र : 2046

2) समयको अन्तराल पछ्याउँदै आलेख संग्रह, 2066

3) ओकान यन (निबन्ध संग्रह)

4) समय-सन्दर्भ निबन्ध संग्रह 2068

5) अहाँ जे कहलहुँ, अन्तर्नाद संग्रह 2071

6) कोनाक संत्रासमे डम्हायल जिनगी (लकडाउन डायरी) (2020 ई०)

सम्पादन:

1) मैथिली पद्यसंग्रह : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान : 2051

2) लावाक धान कविता संग्रह 2051

3) त्रिशूली स्व. माथुर द्वारा लिखित खण्डकाव्य 2049

4) नेपालक मैथिली पत्रकारिता: 2044

5) मैथिली लोकनृत्य: राज रंगिमा एवं स्वनुप नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान 2061

6) अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल: 2065

7) हम डोन गुम दिल्ली कविता संग्रह 2066

8) मैथिली नाटक-संग्रह नाटक संग्रह 2067

9) महाकवि विद्यापति आ नेपाल निबन्ध संग्रह साझा प्रकाशन, का०माण्डू, नेपाल, 2068

10) मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन, 2069

11) लोकनायक सलहेस निबन्ध संग्रह 2069

12) लोकनायक सलहेस, द्वितीय खण्ड निबन्ध संग्रह 2070

13) लोकगाथा नायक दीनाभद्री-निबन्ध संग्रह 2070

14) अवधी संस्कृति विविध आयाम निबन्ध संग्रह, 2070

14) साहित्य रत्नक अन्वेषी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', 2073

प्रधान सम्पादक: गामघर साप्ताहिक मैथिली; आँजुर मैथिली त्रैमासिक

सम्मान:

1) नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान द्वारा प्रदत्त प्रथम मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार द्वारा सम्मानित : 2052

2) विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा मिथिला विभूति सम्मान, 22 दिसम्बर, 1996 ई.

3) लेखन प्रकाशन, पटना द्वारा लेखन सम्मान, 3 नवम्बर, 2007 ई.

4) मैथिली साहित्य परिषद ◌़, जनकपुर द्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार',

5) अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुम्बई द्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान, 22 दिसम्बर, 2006 ई.

6) मधुरिमा नेपाल द्वारा 'मधुरिमा सम्मान',

7) चेतना समिति, पटना द्वारा यात्री चेतना पुरस्कार 2011 ई.

8) सामा प्रकाशन द्वारा 'सामा लोक संस्कृति पुरस्कार 2068

9) नेपाल विद्यार्थी संघ, साहित्य पुरस्कार 2069

10) नायपुर, छत्तीसगढ़, संगत द्वारा मिथिला विभूति सम्मान 2069

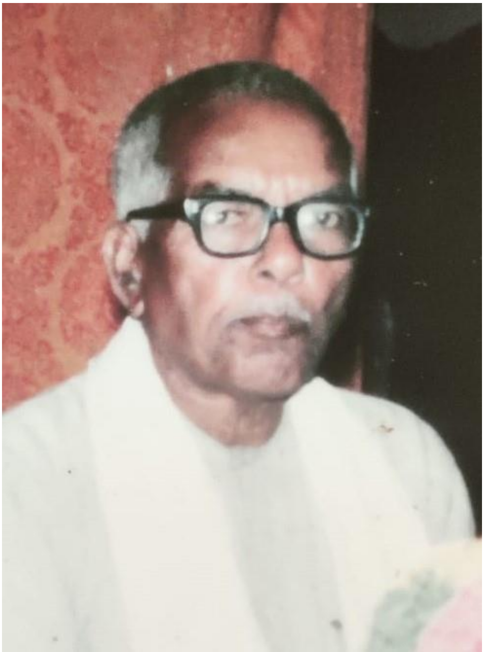
11) मैथिल समाज, नहिका द्वारा सम्मानित मधुबनी, बिहार 8, अप्रिल 2018 ई.

12) करुणलाल दासं सिनेमा कथा पुरस्कार 2070 जे0 21 गते, घनमूलाँ उपन्यासक लेल

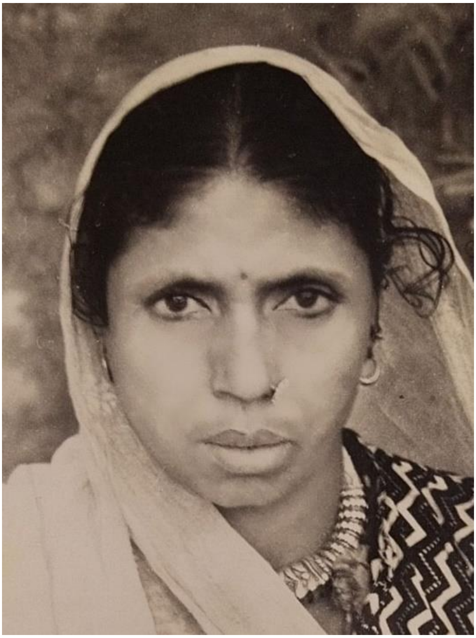
13) गंकी धूमां वसुन्धरा पुरस्कार प्राप्त 2071 आदि दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त।

पत्रकारिता: 2027-28 सं वदेही साप्ताहिक, जनकपुरधामसं पत्रकारितामे प्रवेश। तकरावाद कान्तिपुर, गोरखापत्र, नागरिक, अन्नपूर्णा। यहि दैनिकसभम, अनलाइन सभम, साहित्यिक पत्रिका मधुपर्क, गरिमा, परिचान, शिशुक नवना लगायत अनेकहु पत्र-पत्रिकामे लेखन।

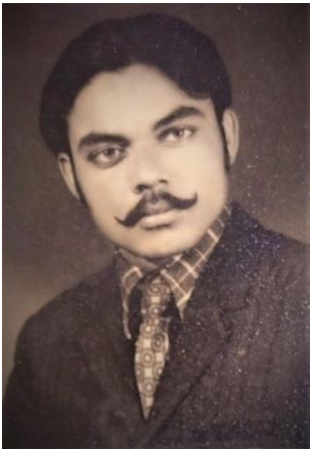
विशेष: पूर्व अध्यक्ष सामा प्रकाशन, ललितपुर, पूर्व सदस्य, प्राज्ञ परिषद, नेपाल, प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी।



𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 1-𑒩𑒰𑒧𑒑𑒳𑒪𑒰𑒧 𑒏𑒰𑒧𑒞𑒱 (𑒩𑒧𑒢𑒖𑒲𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰)



चित्र 2-दुखनी देवी (अमनजीक माता)



चित्र 3-अमनजी युवावस्थाम



चित्र 4-रामनजी अपन पत्नी दुलरीया देवीक संग



चित्र 5-बामासँ दहिना (पहिने पुरुष आ तकर बाद महिलाक निर्देश)- अमरजी, हुनकर पत्नी, सातम डॉ0 बालक नाम नारायण कर्ण, आठम छोटका बालक संदीप कुमार आ नवम माझिल बालक प्रदीप कुमार, सबसँ अंतिम जमाय मनोज चौधरी। अमरजीक छोटकी पुतोहु अनिशा, पाता निलक, डॉ0का बालकक पत्नी निर्मला देवी, तकराबाद अमरजीक बेटी प्रमिला कुमारी आ अंतम मझिली

पुनह अंशु कुमारी निवास पर आदिती, पापा अंकित आ कानाम पर साजी।



चित्र 6-अमरजीक एकटा आन पारिवारिक चित्र (नाम उपरम देखि चीन्हल जा सकैए)

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒍।

२.३.𑒣𑓂𑒩𑒰𑒧𑒱𑒬𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰- 𑒩𑒰𑒧 𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒏𑒰𑒣𑒛𑓃𑒱 '𑒦𑓂𑒩𑒧𑒩' 𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫



𑒣𑓂𑒩𑒰𑒧𑒱𑒬𑒰 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰,𑒬𑒼𑒡𑒰𑒩𑓂𑒟𑒲

𑒩𑒰𑒧𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒏𑒰𑒣𑒛𑓃𑒱 '𑒦𑓂𑒩𑒧𑒩' 𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫

𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒧𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒏𑒰𑒣𑒛𑓃𑒱 '𑒦𑓂𑒩𑒧𑒩' 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 𑒮𑒰𑒗𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒢,𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒣𑒩𑒱𑒭𑒠 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨, 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒑𑓂𑒖𑒰𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢,𑒯𑒰𑒪 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒏𑓂𑒭 𑒧𑒡𑒹𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒑𑓂𑒖𑒰

प्रतिष्ठान, मधेश प्रदेश, वरिष्ठ साहित्यकार तथा पत्रकारक जन्म धनुषा जिल्लाक साबिक बघचौरा गाउँ पालिका ४ सम्प्रति हंसपुर नगरपालिका २ बघचौरा पूर्वटोलमे एकगोट सम्पन्न परिवारमे भेल छलनि। पिता स्वर्गीय रामगुलाम कार्यी आ माय स्वर्गीया दुखनी देवीक छोट सन्तानक रूपमे जन्म ग्रहण कएने रमनक एकगोट भैया , एकगोट दिदी आ एक गोट बहिनी छनि। दिदीक ८६,८७ वर्षक लगभगमे ,किछुमासपूर्व देहावसान भ' गेलनि। पिता रामगुलाम कार्यी बघचौरामे मात्र नहि परोपट्टामे प्रतिष्ठित समाजसेवीक रूपमे चिह्नल जाइत छलाह। ओ तत्कालीन बघचौरा गाउँ पञ्चायतक लगातार तीन बेर प्रधानपञ्च निर्वाचित भेल छलाह। पचासो बिगहा खेत, फूलबारी, पोखरी, इनार सहित बघचौरा आ जनकपुरधाममे सुविधा सम्पन्न पक्की घर छलनि। हुनका गामवासीसभ आदरसँ ' अधिकारी ' मालिक कहि क सम्बोधन करैत छलनि।

रमनक बाल्यकाल

धनुषा जिल्लाक बघचौरा गाममे विक्रम सम्बत जन्म २००८ साल श्रावणमे जन्म ग्रहण कएने रमनक प्रारम्भिक शिक्षा गाममे भेल छलनि। गाममे एकटा सम्पन्न तीनहत्था कठ्ठाइ साहुक दलानपर खुजल मधुकनही निवासी गनेशलाल कर्णक चटिसारमे हुनका दुनू राइतिकजवनदम्भी पठाओल गेल नहिन्हि। आनाकानी कएलापर नाकर बहादुरक कहि पाठशालामे गेला त मुदा काना बहुत जल्दीए आबि गेला। इ क्रम किछु दिन चललै। एकर कारण नहैक मायक दुलार,खान पीन,खलधुप। आ जखन मन लाग लगलैक त पाछा

घूमि क नहि देखलक। गुरूजीबला खाँधि,विरंगनहाआदि ओ गुड्डियाँसं हाड्डा पाटी दूआड्डा धरि चलल तकरा बाद पंचायतक यादव मिडिल स्कूलमे नाम लिखाओल गेल आ तखन ओतहि पढ़ैत तीन क्लासक बाद आगाँ पढ़बाक लेल जनकपुरक सरस्वती हाइ स्कूलमे नाम लिखाओल गेलनि । तकरा बाद ओतहिसं मैट्रिक आ नाना बहुमुखी कैम्पससं मैथिली विषयमे प्रथम श्रेणीमे एम.ए. कएल । बाल्यकालहिसँ पढ़य लिखयमे होसियार तथा नाकपट्ट रलाक कारणे हुनका सरगोट लेस प्रेम करैत छलनि। आर्थिक, सामाजिक आ शैक्षिक रूपसँ हुनक परिवार समाजमे प्रतिष्ठित छल तेँ हुनक बाल्यकाल सुखमय छलनि। अध्ययनक क्रममे जनकपुर आएलाह आ अपन सुधनसँ उत्पन्न अवस्थित पूर्णेनी घरमे नहि अध्ययन करए लगलाह। घरसँ खाद्य समग्री अबैत छलनि आ रानस बनबालल रेनसिया सङ्ग राखल गेल छलनि।

ग्रामक शिक्षा

सबसं पहिल गामक चटिसारमे अ आ इ ई एस ल खाँधि विरंगनहा सब सिखलनि,पढ़लनि। तकराबाद पंचायतक बट्टी मिडिल स्कूलमे तीन वर्षा धरि पढ़लाह। तकराबाद गाममे आएल एकटा गामविकास अधिकारीक उत्प्रेरणासं बाबूजी हुनका दुनू भाइक जनकपुर सरस्वती हाइ स्कूलमे नाम लिखा देलकनि। जनकपुरमे अपन पक्की मकान छलनि। एकटा रेनसियाक संग ओ जनकपुरक आवासपन नहि सरस्वती माध्यमिक विद्यालयसँ एसएलसीधरिक शिक्षा प्राप्त कएलनि आ प्रवीणता प्रमाणपत्र (आइ .ए.), स्नातक (

बी.ए.) आ स्नातकोत्तर (एम.ए.) धरिक अध्ययन रामस्वरूप रामसागर बहुमुखि क्याम्पस, जनकपुरधामसँ प्राप्त कएलनि। डा. धीरेन्द्रक सद्प्रयाससँ राराब क्याम्पसमे सुरू भेल मैथिली स्नातकोत्तर विषयक ओ पहिल बैचक छात्र छलाह आ प्रथम श्रेणीमे स्नातकोत्तर उत्तीर्ण कएने छलाह। स्वर्गीय रामगुलाम कार्की आ स्वर्गीय दुखनी देवीक तेसर सन्तानक रूपमे जन्मग्रहण कएने हिनक पिताक नाम छनि सुकुमार कार्की, दिदीक छलनि दाया देवी (जनिक हालमे स्वर्गवास भ' गेलनि) आ बहिनक सारानन्दी देवी। हिनक विवाह किसानानस्थाम धनुषा जिल्लाक भगवानपट्टी गाममे दलीया देवीसंग भेल छनि। हुनका तीनगोट पुत्र आ दुगोट पुत्री छनि। ज्ये० पुत्र रामनारायण कार्की जनकपुर एक्सप्रेसक सम्पादक छथि आ राजनीतिमे सेहो संलग्नछथि तँ माझिल प्रदीप कार्की नेपाल खाद्य संस्थानमे कार्यरत छथि। छोट संदीप कार्की उच्च कोटिक कम्प्यूटरक ग्राफिक एक्सपर्ट छथि आ अपन व्यवसाय करैत छथि। दुनू बेटीक विवाह भ' गेल छनि।

साहित्यमे अएबाक प्रसंग।

सरस्वती हाइस्कूलमे अध्ययनरत रहल समय हुनका सम्पर्क भेलनि डा. धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' संग। ओ हुनक घरक पासमे डेरा ल' रहैत छलाह आ राराब क्याम्पसमे अध्यापन करैत छलाह। डा. धीरेन्द्रक सम्पर्कमे अएलाक पश्चात् हुनक आकर्षण साहित्यदिसि भेलनि। यद्यपि पत्र पत्रिका, साहित्यिक उपन्यास तथा कथा कविताआदि पढ़बाक रूचिमे हुनकामे पहिनहिसँ छलनि। ओ हिन्दीक

पुस्तक,पत्र पत्रिका पढ़बामे रुचि बढ़ैत छलन्हि। पहिने डा. धीरेन्द्रक प्रेरणासँ मैथिलीमे लिखए लगलाह। हुनक पहिल रचना बालकथा अछि ईमानदार बालक जे कथा तत्कालीन समयमे प्रतिष्ठित मैथिली साप्ताहिक मिथिला मिहिरक १९६४ ई. मे प्रकाशित भेल छल। तहिया हुनक उमेर १२ वर्षमात्र छल। तहिएसँ ओ अपन नामक पाछाँ 'अमन' लिखब शुरू कएलनि।

अमनक व्यवसायिक जीवन

त्रिभुवन विश्वविद्यालयक आंगिक क्याम्पसक रूपमे रहल रामस्वरूप रामसागर बहुमुखि क्याम्पस, जनकपुरसँ मैथिली विषयमे प्रथम श्रेणीमे स्नातकोत्तर (एम ए) कएने छलाह अमन। मुदा ओ सरकारी सेवामे नहि गेलाह। त्रि.वि.वि. मैथिली शिक्षण विभागक तत्कालीन अध्यक्ष डा.धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' हुनका बेर बेर प्राध्यापन पेशामे अएबाक बास्ते आग्रह कएने छलाह मुदा ओ विश्वविद्यालय सेवामे जएबाक अपेक्षा पत्रकारिता, स्वतन्त्र लेखन, अध्ययन, अनुसंधान आ यात्रामे रमल रहबाक निर्णय कएलनि। आर्थिक रूपसँ सबल तथा व्यापारसँ सम्बद्ध परिवारक होएबाक कारणे ओ स्वतन्त्र पेशा अर्थात् पत्रकारिता आ स्वतन्त्र लेखन विधा चुनलनि।

अमन २०२६०२७ सालमे वैदेही साप्ताहिकक कार्यालय प्रतिनिधिक रूपमे पत्रकारिता प्रारम्भ कएने छलाह। २०४६ सालक राजनीतिक परिवर्तन पश्चात् देशमे बहुदलीय प्रजातन्त्र स्थापना भेल। निजी क्षेत्रसँ सेहो ब्रोडसिट पत्र पत्रिकासभक प्रकाशन शुरू भेल।

राजधानीसँ प्रकाशित होइत पत्र पत्रिकामध्य कान्तिपुर पब्लिकेशनक कान्तिपुर दैनिक सेहो छल। एम्हर २०५९ सालसँ कान्तिपुरक जनकपुर संवाददाताक रूपमे काम कएलनि। कान्तिपुर प्रकाशन गृहक शुरूक ७ वर्षधरि ओ ओहि पत्रिकाक जनकपुर समाचारदाताक रूपमे काज कएलनि ।

कान्तिपुर राष्ट्रिय दैनिकसँ पहिनहि ओ मैथिलीक पत्रकारिताक क्षेत्रमे स्थापित भ' चुकल छलाह। प्रकाशक सम्पादकक रूपमे हुनक पहिल पत्रिका मैथिलीमे छल जकर नाम छल अर्चना (२०३० साल)। ई पत्रिका दश वर्षसं ऊपर चलल। मैथिली संसारमे मिहिर बाहेकक पत्र कम्मे छल वा नगण्य छल। एहनमे अर्चना अपन पात्रता कायम राखि नेपाल भागक सभकेँ रचनाकारक आगाँ लएबामे महत्वपूर्ण भूमिकाक निर्वाह कएलक। ◌् डा. धीरेन्द्रक शब्दमे एकर सम्पादक श्री एमनक स्वच्छ दृष्टिक कारणेँ, अपन श्रीगणेश कालखण्डमे ई महत्वपूर्ण भ' गेल अछि। अर्चना ओहि समयक प्रकाशन छल जहिया नेपाली बाहेकक पत्रक दर्ता नहि कएल जाइत छलैक। तखन मैथिली सामयिक संकलन कहि एकर प्रकाशन होइत छल। अनेक बाधा व्यवधानक बाद अर्चना चौदह पन्द्रह वर्ष निकलल। नेपालक पहिल आ एखन धरि एक मात्र मैथिली साहित्यक इतिहासकार डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन अपन नेपालक मैथिली पत्रकारिता:एकटा सर्वेक्षण शीर्षक आलेखमे लिखै छथिअर्चना(२०३०,फागुन)क मुख्य उद्देश्य नेपालमे हेराएल,भोतिआएल,अनचिन्हार मुदा प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार लोकनिक स्वस्थ साहित्यक मैथिली संसारक आगाँ राखब छलैक। दोसर ओ नियत प्रकाशन धरि अपन घोषित उद्देश्यक संग

अनुरूप चलि रहल अछि। हुनका लग अर्चनाक बारह वर्षक जीवन यात्राक (२०३०२०४१)उपलब्धि ६२टा अंक प्रत्यक्ष अछि। अर्चना भ्रमरक एकल प्रयास आ साहसिक प्रयास चलि रहल अछि। ई अर्चनाक माध्यमे नेपालक मैथिली रचना,भाषायी सामर्थ्य एवं रचनाधर्मिताक यथासमय प्रस्तुत करबामे सफल भेल छथि। साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त मैथिली पत्रकारिताक इतिहास पुस्तकमे श्री अमरजी लिखने छथिअर्चना नेपालमे एकमात्र एहन पत्रिका अछि जे मातृभाषाक अर्चनामे अपन सम्पूर्ण शक्ति समर्पित कएने अछि। अर्चनाक एखन धरिक योगदान उल्लेखनीय अछि। ३

तकराबाद नेपाली मासिक अंजली आ मैथिली त्रैमासिक आंजन। विसं २०३९ सालसँ हुनक सम्पादन आ प्रकाशनमे शुरू भेल छल गामघर मैथिली साप्ताहिक जे आइ धरि निरन्तर प्रकाशित होइत आबि रहल अछि। ई देशक पहिल मैथिली समाचार पत्र अछि जे करीब ३९ वर्षसँ निरन्तर प्रकाशित भ रहल अछि। एहि साप्ताहिक मार्फत मैथिली आ नेपालीक अनेको साहित्यकार आ पत्रकारक जन्म भेल अछि। स्थानीय नेपाली दैनिकसभ सुप्रभात (२०७४) क प्रबन्धक सम्पादक सेहो ओएह छलाह। सम्प्रति जनकपुर एक्सप्रेस (२०७७) क सेहो प्रकाशन कएने छथि।

पत्रकारिता,स्नातक लेखनसंगहि ओ नेपाल सरकारक साझा प्रकाशनक अध्यक्ष रूपमे सेहो काज कएने छथि। साझा प्रकाशनक इतिहासमे ओ पहिल मधेसी अध्यक्ष भेलाह। नेपाली भाषा आ नेपाली

कर्मचारीसभक खलबला रहल साझा प्रकाशनक ओ अपन एक वर्षक कार्यकालमे कायापलट क' देने छलाह। पहिल बेर नेपाली वाङ्मयक इतर भाषा मैथिलीक पुस्तक सेहो हुनक कार्यकालमे प्रकाशन भेल छल। नेपाली साहित्यकारसभक चित्रक संग मैथिलीक महाकवि विद्यापतिक चित्र सेहो प्रकाशन करौलनि। साझा प्रकाशनक अध्यक्ष पदपर आसीन रहैत काल हुनका नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषद सदस्य नियुक्त कएल गेलनि। तकराबाद ओ साझा प्रकाशनसँ राजिनामा द' प्राज्ञपरिषद सदस्यक रूपमे चारिवर्ष काज कएने छलाह। प्राज्ञक रूपमे ओ मैथिली लोक संस्कृतिपर उल्लेख्य काज कएलनि आ करबौलनि। हुनक संयोजनमे सलहेस, दीनाभद्री, जटजटिन सदृश्यक लोकगाथा,लोकनाट्यसभक विषयमे अध्ययन अनुसंधान, लेखन आ प्रकाशन भेल। ई लोक साहित्यक अनुसन्धानक हेतु सन्दर्भ सामग्रीक रूपमे नेपाल भरिमे मान्य अछि।

एमन भाषा, साहित्य, संस्कृतिसंगहि साहित्यक प्रायः सम्पूर्ण विधामे धुरन्धर लिखैत आएल छथि। एकरा अतिरिक्त ओ उच्चकोटीक फोटोग्राफर आ चित्रकार सेहो छथि। एखनधरि एमनद्वारा लिखल गेल मैथिली ,नेपाली,हिन्दी आ अंग्रेजी भाषाक करीब ४० गोट पुस्तक प्रकाशित भ' चुकल अछि। हुनक एकटा पुस्तक अछि मिथिलाक लोक जीवनः लोक सन्दर्भ जकर विमोचन जनकपुरमे भेल जाहिमे पटनासँ डा. रमानन्द झा रमण,कोलकातासँ अशोकजीजी,दरभंगासँ डा. भीमनाथ झा,बंगलोर लगायत काठमाण्डूसँ

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कुलपति गंगा प्रसाद उप्रेती आएल छलाह। हुनक लेखनी एखनहुँ चलिते रहल छनि।

मानसम्मान

एखन मैथिलीसँगहि नेपाली साहित्यक सेहो प्रसिद्ध साहित्यकार छथि। साहित्यक प्राय ०४ सम्पूर्ण विधामे ओ निरन्तर सृजनारत छथि। एहि कारणे ओ मैथिली आ नेपाली दुनू साहित्यदिसक पुरस्कार आ सम्मान प्राप्त कएने छथि। नेपाल राजकीय प्रज्ञाप्रतिष्ठानद्वारा प्रदत्त प्रथम 'मायादेवी प्रज्ञापुरस्कार२०७२ (रु.१०००००)'सँ ओ पुरस्कृत छथि। तहिना विद्यापति सेवा संस्थान, दरभङ्गाद्वारा 'मिथिला विभूति' सम्मान, लेखन प्रकाशन, पटनाद्वारा 'लेखन सम्मान', नेपाल मैथिली साहित्य परिषद्, जनकपुरद्वारा 'वैदेही प्रतिभा पुरस्कार', अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन मुजफ्फरपुरद्वारा 'मिथिलारत्न' सम्मान प्राप्त कएने छथि त मधुरिमा नेपालद्वारा 'मधुरिमा सम्मान', रचना समिति, पटनाद्वारा यात्री चेतना पुरस्कार, साझा प्रकाशनद्वारा साझा लोक संस्कृति पुरस्कार२०६८ आ नेपाल सरकारद्वारा स्थापित विद्यापति पुरस्कार कोषद्वारा वर्ष २०६९क मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार२०६९ सेहो प्राप्त कएने छथि। २ लाख राशिक उक्त पुरस्कार मैथिली साहित्यमे प्रदान कएल जायवला सर्वाधिक राशिक पुरस्कार अछि। (२०६९),रायपुर(छत्तीसगढ,भारत)द्वारा मिथिला विभूति सम्मान(२०६९) मैथिल समाज ,रहिका(मधुवनी ,बिहार,८ अप्रिल २०१८ई.) नेवारी भाषा साहित्यक संस्था केशलाल वाखं सिनेया

कथा पुरस्कार(२०१० ई० २१ गत), हुनक घरमुहाँ उपन्यासक लेल रु. पचास हजारक गंकी धुस्वाँ वसुन्धरा पुरस्कार प्राप्त(२०११) लगायत दर्जनो सम्मान, पुरस्कार प्राप्त। एकरा संगहि हुनका पार्वती प्रतिष्ठान, सिसौटिया सर्लाहीद्वारा 'पार्वती सम्मान'सहित दर्जनो सम्मान आ पुरस्कार प्राप्त छनि।

सामाजिक क्षेत्रमे सक्रियता

रामभरोस कापड़ि'भ्रमर'क मुख्य परिचय एकटा साहित्यकार आ कुशल पत्रकारक छनि मुदा ओ सामाजिक आ राजनीतिक क्षेत्रमे सेहो ओतबे सक्रिय छथि ताहिबातक जानकारी बहुत थोड़ लोकक छनि। साहित्यिक स्रष्टाक रूपमे ओ मैथिली भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक सेवा क' रहल छथि त' विभिन्न संघ संस्थामे संलग्न रहि भाषा,साहित्य, कला,संस्कृतिक संस्थागत विकासमे सहयोग क' रहल छथि। तहिना राजनीतिक क्षेत्रमे सेहो हुनक अहम योगदान छनि। तत्कालीन कठौना गाउँ पञ्चायतक उपाध्यक्ष रूपमे निर्वाचित भ' ओ गाम पञ्चायतक विकास निर्माणमे अहम योगदान देने छलाह त अपन पुर्खौली गाम बघचौरामे अवस्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयक व्यवस्थापन समितिक अध्यक्ष रूपमे ओ विद्यालयक शिक्षाक गुणस्तर बढ़ेबामे अहम योगदान देलनि।

ओ मैथिली साहित्य परिषद, नेपालक अध्यक्ष, तराई जनजाति अध्ययन प्रतिष्ठान, जनकपुरक अध्यक्ष, जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, क अध्यक्ष, दीनानाथ भगवती समाज कल्याण गुठी, जनकपुरक सचिव, पत्रकार महासंघ, धनुषाक राष्ट्रिय पार्षद आदिक रूपमे सेहो

उत्कृष्ट काज कएने छथि। काठमाण्डूमे आयोजित सार्कस्तरीय कवि गोष्ठीमे मैथिली भाषाक प्रतिनिधित्व सेहो कएने छलाह।

मधेस आन्दोलनमे योगदान :४

पत्रकारितासंगहि ओ मधेश आ मधेशीक विचार, समस्या आ समस्या समाधानक उपायआदिपर निरन्तर चिंतन मनन करैत रहैत छथि। २०६३ सालक मधेश आन्दोलनमे ओ अपन पत्रिका गामघर तथा जनकपुर एक्सप्रेस दैनिकक माध्यमसँ आन्दोलनक पक्षमे जनमत बनैबामे अहम योगदान देलनि। ओ स्वयं सेहो आन्दोलनक पक्षमे सडकपर उतरलाह आ अधिकारविहीनसभक अधिकार सुनिश्चित करैबामे सक्रियता देखौलनि। ओतबे नहि,मधेश आन्दोलनक समयमे राष्ट्रीय मिडिया आन्दोलनक गलत व्याख्या क रहल छल, ओ एकरा नेपालसँ अलग होएबाक आन्दोलनक रूपमे प्रचारित करैत छल, तखन विचार भेलै जे ओ[illegible]यानक सम्मतियाक बात अवगत कराओल जाए। समस्या ठीक नहैक जे ओ सभ ककरा कहल पर विश्वास क सकैत अछि। तखन तय भेलैक जे रामनजी उपयुक्त पात्र होयताह आ हुनकासँ सम्पर्क कएल गेल। ओ तत्काल स्वीकार क लेल नहि। आ तखन घनघोर वर्षाक बीच पटना गेलाह राति दू बजे। मधेश आन्दोलनक कमाण्डर उपेन्द्र यादवजीसँ लगातार सम्पर्कमे छलाह। दोसर दिन भोर अपन सम्बन्धक प्रयोग क मिडियाक [illegible] बजाओल गेल। हुनका चिन्ता छलनि जे ओ सभ कतेक [illegible] करैत अछि। मुदा जखन अति संवेदनशील सूचना पर मिडिया पर्सनसभक जे प्रतिक्रिया भेल ओ अद्भुत छल। एकाक रूपमे रामनजी मधेश आन्दोलनक [illegible]

सुनौलकनि आ स्पष्ट कयलनि जे ओ आन्दोलन अलगावक नहि ड्रताजक अछि जे दू नम्बरसँ एक नम्बरक नागरिक बनि देशक मूलधारमे आब चाहैत अछि जकरा अदौसँ अलग रखबाक बात होइत आएल छल। यत्रकान सम्मेलनक सफलता तखन वूमम आएल जखन हुनका अखबारमे ओ समाचार लगभग प्रथम अखबारमे आएल।

प्रथम मधेस आन्दोलनक अनुरूप आ आन्दोलनक नामपर समाजमे पसरल साम्प्रदायिक द्वन्द्वक निरुत्साहित करैत सामाजिक सद्भावक सङ्गहक आधार बना डा. एकटा उपन्यास लिखलनि घनमुँहा। जकर मुख्य विषयवस्तु मधेश आन्दोलन अछि। एहि उपन्यासक हिन्दी, भोजपुरी आ नेपाली भाषामे अनुवाद सेहो भ' चुकल अछि। एही उपन्यासपर हिनका पचास हजार टकाक गंकी धूम्नाँ वसुन्धरा पुरस्कार पुरस्कार भेटल छन्हि।

रूबी आ स्वराज

भ्रमण व्यक्तिगत जीवनमे निक निकुण खायबला आ व्राण्डत करता पहिरनिहार व्यक्ति छथि। आर्थिक रूपसँ सक्षम परिवारमे जन्मल भ्रमणक बाल्यकालक ई सौख एखनहुँ विद्यमान अछि। संङ्गे मार्शल, कम्प्यूटर, ड्रामा इनक दोसर सौख थिक। कैमरामे नीक फोटो खिचब आ एहि फोटोसभक सृजन राखब इनक विशेषता छनि। एकर अतिरिक्त डा. फिल्म निर्माण, फिल्म लेखनआदि कलामे सेहो नियुक्त छथि। डा. अध्ययन आ भ्रमण करबामे सेहो विशेष

नुचि नखेंग छथि। ओ नयाल आ रानासंगहि चीनक सङ्ग व्रमध कण्न छथि।

संदर्भ-

१) अजय अनुनागी ः लाकान्द्न तटकम ः अनलाइन यत्रिका। प्रकाशन ःकात्तिक २, २०७६

२) गामघन साप्ताहिक,२०४१ चैत १ गतक अंक सं।

3) मैथिली यत्रकानिताक इतिहास: श्री चन्द्रनाथ मिश्र अमन,मैथिली अकादमी,यटना

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.४.रीमनाथ झा- लोकजीवनयन समकाल आलोक



रीमनाथ झा-संपर्क-7482066855

लोकजीवनयन समकाल आलोक

श्री अमनजीक साहित्यवास वढ़ुहिसिला छनि। कोना खाँ ओकरहिसिला हाठ्ठ छै, कोना दूरहिसिला छै जे वउ उपजाउ गारिम गसना हसिल सूगनिअ जाठ्ठ छै। उाहन खाँ 'सानाक टूकउी' कहवे छै।

मुदा, हिनक खेतमे कतौं एहन फसिल छैक जे रोपनिसक ई उपजल नहि होइन्ह, उपजैत नहि होइन्हि। ओहो सूतल छथि ई कहना उर्वर भूमि एकरएक दिन ऊसर भऽ जाइ छै, जखन ओकर नमी सूखा जाइत छै। मुदा, हिनक खेतक नमी तँ दिनानुदिन बढ़िते गेल जाइत देखै छियनि। एहन जमीनक की कहबै? धानक टुकड़ी, मकैक टुकड़ी, मारीक टुकड़ीज कहि लियौ, सभ छजै। तँ न, वन् उनचासो बसात बहि जाउ, गैया हिनक चासक पचासो गाछ सभ झूमि लहलहाइत देखै छियनि।

कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, यात्रा संस्मरण, रिपोर्ताज, शोध, समीक्षा, टिप्पणी, जीवनी आदिआदि, सकल ज्ञानसँ अनवरत चलि रहल छथि, तकर ठाम एखन बहुत दूर छनि। बीचक जगहकँ लगातार रेतैत चलबाक छनि। स ओ कऽ रहला अछि। हम एकरा मध्यान्तर सेहो मानैत छियनि। अपने पूछब किएक? हम कहब तकर प्रमाण थिक ओ पोथी 'मिथिलाक लोकजीवन ओ लोकसंस्कृति'। जे दिन मे जेऽ ओ पढ़लनि अछि, जे ओ देखलनि अछि, जे ओ सिखलनि अछि, जे ओ लिखलनि अछि, तकर फलक तँ लगातार विभिन्न पोथी सभमे देखबैत आबि रहल छथि। एहि कृति संग्रहक नीवाओ आनिकऽ राखि देलनि अछि। अर्थात एहि पोथीकेँ लेखकक एतेक दिनक कार्यकौशलक 'निचोड़' मानि सकै छी।

एहि पोथीक रचना सभक लेखनचक्र चारि दशकसँ उपरक होयबाक चाही। एतावता जाहि जाहि दिशामे जेतेक दूर धरि हिनक बौद्धिक

प्रवेश दऽ सकलनि अछि, एकर (0)ास साक्ष्य तँ अनेक ठाम कृति प्रस्तुत कयने अछि।

एतऽ विवेच्य विषयक संकेत मात्र करबाक प्रयास कयल अछि

विषय

साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, प्राकृतिक, शास्त्रीय एवं लोकपक्षीय अछि, जकर विचारक केन्द्रमे नेपालदेशान्तर्गत समस्त मिथिलाञ्चलीय भूगोल आबि गेल अछि। लेखकक दृष्टिक व्यापकता तँ विषयक विविधता, विवेचकक सूक्ष्मता, शोधक स्पष्टता, अभिव्यक्तिक निर्भीकता एवं तर्कक अकाट्यता पाठीसँ प्रमाणित भऽ जाइत अछि।

विद्वान लेखक मध्यकालीन गीतक उद्भावक विद्यापति व्यक्त कयने छथि तँ तिरहुतिया गीतक पालयन संग स्पर्श कयने छथि। एक दिस मिथिलाक पारम्परिक कीर्तनियानाचनाक खोज कयने छथि तँ दोसर दिस शिशुगीतक विभिन्न रूपक दर्शन करबैत छथि। मृत्युगीतक परम्परामे पावस, होरी आ वसन्तक उल्लास बँटैत छथि तँ गंगाक पावनताक संग एवं कमलानदीक सांस्कृतिक महत्त्वसँ परिचय करबैत छथि। अपन लोकसंस्कृतिक वैशिष्ट्य प्रकाशनक क्रममे लोकचित्रकला, लोकनृत्य, (मिथिला आ जटाजटिन) एवं लोकदेवता (सलहेस दीनाभद्री एवं राजा देवथनी) क चरितचर्चा कयने हुनका लौकिक महत्त्व देखबैत छथि। तहिना, धनुषाक मकर, मूलन, ज्ञातशीतल, श्रीपंचमी, परिक्रमा, छठि तथा रामनवमी सन मिथिलाक विशिष्ट पावनितिहानकेँ सामाजिक समरसताक प्रतीक मानैत

छथि। धार्मिक स्थलमे जनकपुर, अहल्यास्थान एवं दुहबी गढीक विशेष उल्लेख रहल अछि। जनकपुरक एक सुविख्यात जानकी मन्दिर (नौलखा) क निर्माणसम्बन्धक विस्तृत प्रमाणक अभाव मानैत ताहि दिस अनुसन्धानक हेतु विद्वान सरकार आ जनताक ध्यान आकृष्ट करैत छथि। ऐतिहासिक घटनाक क्रममे कनिष्क आ हर्षवर्धन केँ मिथिला आ नेपालसँ सम्बन्धकेँ सप्रमाण पुष्ट कयने छथि।

नेपालमे भेटल विद्यापतिपदावलीक प्रसंग उठाय ताहिपर पाँच शोध अनुसन्धानमूलक निबन्ध लिखने छथि, जाहिमे उनकर खोज एवं तकर व्यापक अध्ययनक आह्वान कयल गेल अछि। हुनक अतिरिक्त लोककवि घाघ, कवीश्वरचन्दा झा, कविचूडामणि मधुप, महाकवि यात्री एवं लोकगाथा उद्धारक काव्य विमर्श उपयोगी अछि। मैथिली कविता एवं पत्रकारिताक संगहि साहित्यमे नारी विमर्शपर हुनकासँ विचार कयल गेल अछि। तहिना, एक निबन्धमे भानुभक्तक रामायण आ लालदासक रमेश्वर चरितक तुलनात्मक अध्ययन महत्वपूर्ण अछि। एकर अतिरिक्त नेपालस्थ मैथिलीक सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय भाषानीतिक संगहि शिक्षानीतिक समस्याकेँ प्रमुखताक संग उजागर कयल गेल अछि।

अन्तमे ईहो कहब जे संवेदनशील साहित्यकार द्वारा प्राकृतिक आपदा भूकम्प आ कोरोनाक त्रासदीकेँ साहित्यमे समेटबाक दायित्वक कारण छोड़ल जा सकैत छल, जाहिमे सम्पूर्ण मानवता तबाह भऽ गेल !

ओगानना निषयनस्थुक संकासँ स्पष्ट होऽ॒ॢठ जे समीक्षा पाथी सए नर्गक पाठकक अपजा पूर्ध कनवाक पाथ्या नखो अछि। सामान्य पाठककँ ओगवा जनगव प्राप्त कनवा लल साग घाटक पानि पीवऽ पतिगनि। अनूसाद्मस् उा स्लानयियास् गंरीन अध्यागभ्मक विन्दनक हेतु अनक विद्ध स्टगनि ओनं दूनका लाकनिमं स्नूवि निषयक आन अधिक जिस्लासा जगौगनि।

सएसँ लाएाक्षिग गँ द्नू पानक 'अमन' प्रमी पाठक हायगा जनिका अपन प्रिय साहित्यकानक अस्निव नूयक दर्शन हायगनि। अनक दगम वसल प्रवासी मैथिल समाजक उा लाकनि, जे सए अपन मिथिलामैथिलीक गनिमामय अगीग ओनं उज्ज्वल नर्गमानक गुधगान गँ सूनैग छथि, किन्तु अपन धनाहनक जानि नहि सकल नहथि, गनिका सएक हेतु गँ ऽ॒ॢी पाथी मिथि मिथिला ताऽ॒ॢनक्षनी कही सैह थिकनि। हर्ष अछि जे अमनिकाक मिथिला संटन अपन प्रकाशनक श्रीगधेश सर्वथा उपयूक्त पाथीसँ कयलक अछि।

अपन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com**पर पठाउ।**

२.७.विजय कुमार मिश्र- नामरज्ञास कायति 'अमन'जीक संग साक्षात्कार



विजय कुमार मिश्र

नामरूपास कायति 'अमन'जीक संग साक्षात्कार

१. नाम रूपाससं अमन काना बनलहुं?

(१) ई गप थिक हाईस्कूलक। जखन मैट्रिकक परीक्षाम फाँर्म भरवाक समय अबैलैक त किछु मित्र कहलनि जे नाम बदलि भरवैक से स्थायी भऽ जाएत। हम 'अमन' उपनामसं गद्य पद्य लिखैत रही। तैं जं एकना फाँर्मम लिखदवैक त 'अमन' हमर स्थायी उपनाम भऽ जाएत। आ तहिये लौल सं हम एकना लिखत रही। मुदा हमर प्रधानाध्यापकके ई नहि पचलनि। ओ एकना कटैत हमरा निक जकां डपटानलनि सए चारुता है कि कविए वन जाएं..।

यद्यपि ओना हमर नाम त काटि देल गेल, मुदा हमर मोनमे उठल जे लऊ रहए से एकटा संकल्प रूपमे रूपान्तरित होइत 'अमन' उपनामक संग रचनाशील रहल। आ आइयो हमर संग एहि तरहेँ जुड़ल अछि जे मैथिली मे जँ 'अमन' कही त प्रायः लोक हमरा बुझैत अछि।

२. नाटक,रंगमंच,गीत आदिक नाम खास साहित्यसृजनक अमनक कोना बनलहुँ?

(२) हम कहियाकल छी शुरुएसँ 'अमन' लिखैत रहलहुँ। प्रायः तहिया हमरा लागल रहए 'अमन'सँ जेना राग रंगक बोध होइत छैक ओ हमर काँच मोनपर हावी भऽ गेल छल। तेँ गीत हो, नाटक हो अथवा साहित्यक अन्य विधा..। हम निरन्तर 'अमन' उपनामक संग लिखैत रहलहुँ।

३. सुनल अछि लोक गीत आ अन्य गीतक कैसेट सेहो कयने छी। ओकर परिणाम कहू?

(३) हम बच्चेसँ गीतक प्रति आकर्षित रहलहुँ। हाइस्कूलमे रहैत आठ वर्षक एकटा गीत संग्रह 'जवानीक दिन' नामसँ निकालने छलहुँ। जे रतन सुमन पर एकटा गायक द्वारा गाओल जाइत छल। बादमे हमर बहुत गीत प्रसिद्ध भेल। नेपाली फिल्म 'सीता'मे हावी गीत खूब चर्चित अछि। तहिना मैथिली टेलीफिल्म 'एकटा आओर बसन्त' मे दूटा गीत फिल्मांकन भेल जाहिमे 'सखी हे साओनक बून्न मिसी काहे लोकप्रिय रहल। किछु वर्ष पूर्व 'अनियन' नामसँ

६ गोट गीतक एलबम बहार कएलहुँ आ हिन्दिया एलबम क रूपमे श्रोताबीच पसीन कयल गेल। हमर अपन यूट्यूब चैनल अछि 'म्युजिक मिथिला' जाहिमे हमर आन आन गीत सब राखल अछि।

४. अपन साहित्य साधना,कला आ सांस्कृतिक साधनाक दस्तावेजी झलक देबाक आवश्यकता कखन बुझलहुँ?

(४) नेपालमे पुस्तक प्रकाशनक अवसर नहि रहैक। जहिया हम लिखब शुरू कयने रही ओहि समय गनल गुनल लेखक रहथि। ताहूमे पूर्णकालिक त नहिये। सब कतौ ने कतौ रोजगारीमे लागल छलाह। हम ओ कि ताहिसं मुक्त रही, पूर्णकालिक लेखक रहलहुँ। आ आइ प्रयास सं अपन पुस्तक प्रकाशित भS सकल अछि आ से निरन्तर रहत। हमर सदैव मान्यता अछि अपन चिन्तन मननक दस्तावेजी रूपमे राखि देबाक चाही। पाठकक तकर मूल्यांकन करए देबाक चाही। अपनसं अपन लेखन वा व्यक्तित्वक माथ पर चढा क राखब उचित नहि।

५.साहित्य, सिनेमा आ समाजक सरोकारक नकारल नहि जा सकैछ। एहिमे फिल्म निर्माताक भूमिका कतेक रहबाक चाही?

(५) साहित्य सिनेमा आ समाज एक दोसराक अभिन्न थिक। एक दोसराक बिना ककरो काज नहि भS सकैछ। साहित्य जहिना समाजक दर्पण कहल अछि, सिनेमा सेहो सामाजिक सद्भाव आ प्रेमक स्थापित करबाक माध्यम होइछ। तखन जखन साहित्य अपनबाट

छौड़ाक गलती करैत अछि, सिनेमा सेहो नीक सन्देश प्रसारित नहि कऽ रहैत अछि। तेँ फिल्म साहित्य आ संस्कृति संग लऽ चलबाक सामर्थ्य रखनिहार होयबाक बादो आ गरिम साहित्य ओकरा अर्थ प्रदान करैत अछि।

६.मिथिलाक लोक अवदानक संरक्षण करबाक लेल फिल्म निर्माणक महत्व कतेक ?

(६) हम पहिने कहल अछि समाजक खुजल बिम्ब थिक फिल्म। एत मिथिला आ मैथिल समाजक जीवन पद्धति, ओकर व्यथा कथा, हास परिहास संस्कृति संगीतक संग फिल्म बनत त ओकर महत्ता अपने आप समाजमे स्थापित भऽ जाएत।

७. फिल्म निर्माणक दृष्टिएँ पुनौराधाम,जनकपुरधाम आ सीतामढ़ी यथेष्ट शूटिंग मानल जाइछ। माता जानकी कहाँ धरि एहि लोकेशनमे जगह पौलनि अछि ?

(७) देखू ई त जानकारीक विषय भेल जे माँ जानकीक जन्मस्थली संस्कृति परिवेशमे फिल्म निर्माणक कतेक संभावना छैक आ तकर उपयोग कतेक कयल गेल अछि। ओना फिल्मकार लोकनि एहि लोकेशन पर निरन्तर शूटिंग करैत अएलाह अछि। भेल ओकर विषय वस्तु, माँ सीताक जीवनपर आधारित नहि हो। नेपालीमे फिल्म बनल छल सीता। मुदा ओ जनकपुरक पृष्ठभूमि पर लोककथाक संग पैघ बजटक फिल्म छल। हमर गीत एही फिल्ममे राखल गेल छल। आइ काल्हि जनकपुरधाम जानकीमंदिर लगायतमे एकटा नेपाली

फिल्मक शुटिंग एकमास सं भऽ रहल अछि। नाम अछि भागलपुर गीता। मुदा कथा किछु आर छैक। काल्हिए पूर्णाधाम गेल रही। उत कहल गेल जे एम्हर शुटिंग होइत रहैत अछि। कोना रितिया अथवा भर्ट फिल्म आदिक। मात्र नामायधकालीन चरित्रक लऽ फिल्म बनल हो से हमरा ज्ञात नहि अछि।

८.नयालक फिल्म उद्योग आ आ का0माध्यम गायक गायिकाक संग गीतक स्थान अछि। उहिसं मिथिलांचल कहाँ धरि लाभान्वित भेल अछि ?

(८) नयालम नीक फिल्म उद्योग छैक। हं, एकनालल कोना फिल्मसीटी नहि भऽ पौलक अछि। तएँ एकर शुटिंग एहिना बौआ बौआ कऽ कयल जायत अछि। ढेरा कलाकार छथि, दर्जना गीत बनैत अछि। एकसं एक गायक छथि मुम्बइ धरिजा कऽ फिल्मक प्रासस होइत छैक। स्थानीय गायक गायीकासं गीत गवाउल जाइत छैक। जँ कि उदितनारायणजी नयालीए छथि तं कही हुनका सं गीत गवाउल जाइत छन्हि। तखन एहि इण्डस्ट्रीजसं मिथिलाञ्चलक की उपलब्धि त गोलमाल शब्दम कही त शून्य। कोना स्थान विशेषयन शुटिंग कऽ लव अथवा कोना मिथिलाञ्चलक कलाकारक छोट मोट भाल दऽ उपकृत कऽ देव समग्रनूयं 'लाभान्वित'क श्रेणीम नहि आनल जा सकैछ। हं तखन एक आधटा फिल्म आएल अछि जनून जाहिम मधेशक चरित्रकं आगां लावि कथाक उाजन दल गेल अछि।

९.आधुनिकताक अनर्गल प्रभाव आ अपसंस्कृतिक परिदृश्य सिनेमाक दोषी मानल अछि। एहना स्थितिमे मैथिली फिल्म निर्माण कोना होयबाक चाही ?

(९) आधुनिकताक नामपर जाहि तरहें फिल्मक कथानक आ अभिनय पक्षकें नजरअंदाज कऽ देल गेल अछि, ओ सर्वथा चिन्तनीय विषय अछि। तखन दर्शककें अपना दिश घिचबाक लेल आ बाक्सऑफिस पर पाइ असूलक लेल मात्र एकर उपयोग भऽ रहल अछि। एहन स्थितिमे ओ बनैत रहत त नीक फिल्मक गुंजाइश कम भऽ जाएत। भोजपुरी फिल्मक बढैत ढंगक पाछांक कथासं मैथिली फिल्म निर्माता लोकनिकें शिक्षा लेबाक चाही, नक्काल करक नहि, ओहिसं ओ कोना नकारात्मक गन्ध अबैत छैक त बचि कऽ रहबाक लेल। हमरा सभक अपन समाजमे बहुत एहन विषय अछि। तकर उठान कऽ दर्शक बीच आयल जा सकैत छैक। तकरा लेल व्यवसायिक निर्माता, निर्देशकक जरूरति छैक जे मैथिलीमे नहि अछि। किछु बनल, चलबो कयल मुदा ओ टिकल त सम्हरल नहि।

१०.अपन महत्वाकांक्षी साहित्य आ सांस्कृतिक यात्राक मुख्य मुख्य अंशक वर्णन करी?

(१०) साहित्य आ संस्कृति हमरा सभक प्राण अछि। जाहि परिदृश्यमे हम काज करैत छी ताहिमे त आर एकर जिम्मेदारी बढि गेल छैक। हमसभ एहि एकरा आगां लयबाक लेल प्रतिबद्धतापूर्वक लागल।

जहिया कहिया साहित्य सभाक अभियान शुरू करत नहि तहिया मात्र अपन साहित्यिक इच्छा पूर्ति लेल उत्साहित भऽ लागल रही। बादमे जखन हम ई अनुभव कएलहुँ, मैथिली भाषा, साहित्यमे हमरा सन लोकक काज करब कठिन छैक आ संख्या सेहो नगण्य छैक त ई हमर सीमित भऽ गेल। जाति पाति आ वर्ग विभेदक जालमे फँसल मैथिलीक सभ वर्ग उत्पक भाषाक रूपमे स्थापित करबाक एकटा लगन हमर महत्वाकांक्षाक आगा बढ़ौलक आ संभवतः तकरे परिणाम स्वरूप हम विनम्र समाजसँ प्रतिष्ठित व्यक्तित्व आ संस्थासँ सम्मानित भऽ गेल रहलहुँ अछि।

भेल हमर अभियान देरीसँ मान्यता प्राप्त कैलक आ तकर कारण एकला चला कर बाध्यता रहल। मुदा जखन स्वीकृत भेलहुँ त तहन सम्मान आ अवसर अबैत गेल। हमर ई एहन साहित्यिक आ संस्कृतिक यात्रा हमरा नेपालक बहुत प्रतिष्ठित संस्थान 'साझाप्रकाशन'क पहिल मधेशी अध्यक्ष बनौलक, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद् सदस्य बनौलक आ एखन मधेश प्रदेश सरकार द्वारा गठन कएल गेल 'मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्षक रूपमे काज करबाक अवसर प्रदान कएल गेल अछि। कहबाक जरूरति नहि, जाहि साहित्यिक आ सांस्कृतिक यात्राक लेल हम विनम्र निजी स्तर पर लागल रहलहुँ, आब सरकारी स्तर पर ताहूसँ नीक ढंगसँ, उचित प्रक्रियासँ एहि उत्पक लेल काज कऽ सकब।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.६.साक्षात्कार- दिनेशचन्द्र गोयल



साक्षात्कार- दिनेशचन्द्र गोयल

मैथिली पत्रकारिता ऐनामे अपन अनुहार देखि देखि खुश होइत रहल करैत छी:वरिष्ठ साहित्यकार,सम्पादक श्री राम भरोस कापड़ि भ्रमर

आजुक दिनमे श्री राम भरोस कापड़ि भ्रमर कोनो परिचयक मोहताज नहि छथि। विक्रम सम्वत २००८ सालमे स्व. रामगुलाम कापड़ि आ स्व. दुखनी देवीक सन्तानक रूपमे धनुषा जिल्ला,बघचौरा गाममे जन्म लेने श्री भ्रमरक एखन धरि तीन दर्जन विभिन्न विधाक पुस्तक प्रकाशित छन्हि त जनकपुर एक्सप्रेस दैनिक(नेपाली),गामघर साप्ताहिक(मैथिली) आ आँजुर त्रैमासिक(मैथिली)क प्रधान सम्पादक,प्रकाशकक हैसियतसँ संलग्न छथि। नेपालीय मैथिलीमे सशक्त हस्ताक्षरक रूपमे स्थापित श्री भ्रमर सम्पूर्ण मैथिली संसारमे अपन उपस्थितिक मजबूतीक संग राखि

चुकल छथि। एखन हिनक रचना रूप मैथिली संसार देखलक अछि एकटा सफल गीतकारक रूपमे। हिनक अनेकन गितिया एलबम हालमे बहार भेल अछि जे काफी चर्चित भ' रहल अछि। ई अनेको विधामे लिखैत छथि मुदा मूलरूपसँ ई कवि छथि आ एखन धरि हिनक तीन गोट कविता संग्रह प्रकाशित छन्हि आ चारि गोट कवितासंग्रहक सम्पादन कएने छथि।

वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार रामभरोस कापड़ि "भ्रमर"सँ पत्रकार दिनेशचन्द्र गोयाल क बीच भेल बातचितक सारसंक्षेप एत' प्रस्तुत अछि।

1. मैथिली पत्रकारिता कहिया सँ प्रारम्भ कयल?

-हम २०३० सालमे अर्चना पत्रिकाक प्रकाशन कयल, जे अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषदक प्रकाशन रहैक आ हम सम्पादक रही। बादमे हमर प्रकाशन कर पड़ल जे एक दशकसँ उपर धरि जारी रहल।

2. मैथिली पत्रकारिताक चुनौती आ सम्भावना कहुन बुझना जाइछ?

-मैथिलीमे पाठकक अभाव छैक। पत्रिका बिकाइत नहि छैक। जे कष्ट उठाय लगानी आ प्रयाससँ निकालैत अछि त ओकरा स्थानीय सहयोग भेटैत नहि छैक। ओँ कि पत्रिका क बाजार नहि छैक, व्यवसायिकरूपेँ लाभ आब नहि भेटैत अछि। परिणामतः मैथिली पत्रिकारिता अवरुद्ध भ' क' रहि गेल छैक। बहुतो मिथिलाआवाज सन पत्रिका कतेको टाकाक चूना लगा गेल प्रकाशकक, मिथिलाक गढ़मे

ससरि नहि सकल। जेहो धरि सम्मानक गप अछि कोनो तेहन उल्लासमय नहि। यएह कारण बहुत बेसी नहुँ आ अपनाम अपन मुँह देखि देखि प्रसन्न होइत नहुँ।

3. मैथिली पत्रकारितामे एखनुक बेस चुनौती होइत। हुनि साहित्यिक पत्रकारिता तेहन कोना आकर्षित होइ?

-कहलहुँ नहि, अपनाम अपन अनुदान देखि देखि खुश होएबा लेल।

4. आँगन केँक वर्ष सँ प्रकाशित होइत अछि?

-वि.स.२०४७ सऽ शुरू ए दश वर्ष धरि चलल। हुनि बन्न ए गेल स पुनः २०७१सँ प्रारम्भ भेल अछि आ निरन्तर जारी अछि।

6. पञ्चायतकालमे पत्रपत्रिका प्रकाशन करब त बड दुरूह छलै, अपने कोना तेँ आगाँ बढलियै?

-ओहि समयमे पत्रिका दर्ता करा क प्रकाशित करब दुरूह जरूर नहि। तखन अर्चनाक प्रकाशन संकलनक नियम भेल नहुँ। आ स विशुद्ध साहित्यिक मात्र। आन पत्रिकासब आयल नहि,सब मात्र साहित्यिक संकलनक नियमे। नाजारन्त्र आ नाजाक विनुद्धमे कोनो शब्द नहि आबि सकैक तकर ख्याल करब पड़ैक। जहाँधरि समाचारपत्रक बात छै त गामघर साप्ताहिकक प्रकाशनमे हमरा बड बड पापड़ बेल पड़ल नहुँ। एकदशकक अथक प्रयासक बाद तत्कालीन सीडियो दामोदर नभीक सहयोगसँ २०३८ सालमे एकर प्रकाशन संभव ए

सकल। ई आइ धरि निरन्तर जारी अछि आ मैथिलीक माइल स्थान पत्रिका मिथिलामिहिरक बाद सबसँ बेसी समय धरि नियमित चलबला पत्रिका बनि सकल अछि।

7. सरकारी प्रताडना, वा शासक बाधा अनुभव।

-प्रताडनाक त प्रश्न बाधा अनुभव नहि, मुदा शास त निरन्तर बनल रहैत छल।

8. महाकवि विद्यापति नेपाल प्रवास सम्बन्धमे अपनेक धारणा की थिक?

-बाधा नव नहि। राजा शिवसिंहक संकटकालमे महाकवि विद्यापति रानी लखिमाक सुरक्षार्थ नेपालक राजापुरादित्यक दरबारमे ल अनलखिह्न ई बारह वर्ष धरि रहलाह। एहि अवधिमे श्रीमद्भागवतक लिप्यांतर,लिखनावलीक रचना आ कतेको सुप्रसिद्ध गीतसभक प्रणयन कएलनि ई आइ इतिहासमे हुनक प्रमाणिक रचना मानल जाइत अछि। साँच कही त सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक नेपालक ई पैघ योगदान छैक।

9. नेपालमे मैथिली पत्रकारिता आ साहित्यिक अवस्था केहन बुझना जाइछ?

-पत्रकारिताक त कहिओ दलहु,तखन साहित्यक बात करी त ई पूर्णरूपेण जगजियार भ रहल अछि। लोकमे बाधा तरहं साहित्य लेखन मात्र नहि रचना प्रकाशनक जोश उत्पन्न भ रहलैक

अछि, ओहिसँ आनक प्रयास सौजन्यानी खसएबाक परम्पराक अन्त ठप्प देखि पड़ि रहल छैक।

10 अपने नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषद्मे छलौंह, प्रतिष्ठानमे मैथिलीक दिशा दशा केहन अछि?

-हम अपन अवधि रहैत जे किछु र सकल कएल, यद्यपि प्रज्ञामे मैथिलीक कोनो अलगसं बजट नहि छैक। एहना स्थितिमे लगभग आधा दर्जन मैथिली पुस्तकक प्रकाशन आ तहिना एक दर्जन जगह मैथिलीक विभिन्न विधापर संगोष्ठीक आयोजन कएलहुँ। हमरा छोड़ला आठवर्षसं उपर भ' गेल, एखनधरि कोनो कार्यक्रमक सूचना नहि अछि। हमरा प्रज्ञामे रहैत किछु गोटेक वास भ' गेल रहैनि। तखन एहना अवस्थामे हुनका सबहक आश्चर्यजनक चुप्पी रहस्यमय अछि।

11. राष्ट्रिय स्तर पर प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित आँगन मैथिली पत्रिकाक अवस्था की अछि?

-जखन हम प्रज्ञासभामे गेल रही तहिएसँ एकर प्रकाशन करबौने रही आ हमर कार्यकालमे एकटा ऐतिहासिक महत्वक विशेषाँकक प्रकाशन भेल रहैक। एम्हर प्रकाशित ठप्प रहल अछि।

12 मैथिली पाठ्य पुस्तकक अध्ययन विद्यालयमुखी किएकनै भ' रहल अछि?

-ई त पाठ्यक्रम विकास कर्ताक पूछबाक बात छी। मुदा हँ पुस्तकनीय छैक त बजार त पठबाक बात छी। स कोना विद्यालय धरि स्वीकार नहि क पाबि रहल अछि आर विद्यार्थी धरि तखनका पुस्तकम नहि छैक। मैथिली भाषाक प्रचार प्रसार एहिसं रुकल अछि, मुदा ककरा लेल धनसन।

13. अपनेक जीवनक कोनो अविस्मरणीय पल।

-हँ, २०१२ सालमे जखन पहिल मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार हमरा भेटल छल। एहि पुरस्कार नहि त एकर उनतीस वर्षपूर्वक लागि पचास हजार टाकाक रहै। ओ एहि पुरस्कार त मैथिलीमे आइयो काल्हि जना गुट बना पुरस्कार बँटबाक परम्परा विकसित भ रहल अछि, स एहिसं भिन्न सर्वथा अप्रत्याशित ओ घोषणा। तखना रोमांचित क देलक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓒.𑓑.𑒁𑒬𑒼𑒏-𑒢𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫𑒰𑒮 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒏𑒲 '𑒁𑒧𑒢'𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 '𑒒𑒢𑒧𑒳𑒿𑒯𑒰'



𑒁𑒬𑒼𑒏-𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏-8986269001

नारायण कार्की 'अमन'क उपन्यास 'घनमुँहा'

घनमुँहा उपन्यास २०१२ ई.मे प्रकाशित भेल अछि। २१म शताब्दीमे मैथिली उपन्यासक प्रकाशनमे गति आएल अछि। वर्ष २०१२मे (गौरीनाथक 'दाग', प्रदीप बिहारीक 'शेष', रुगुकर झाक 'पराती', नीरजा रेणु कर 'ईजात', मधुकांत झा कर 'ममता जागी', मनमोहन झाक 'कृष्ण सर्प'क संग अमनक 'घनमुँहा' उपन्यास आएल। एहिसँ पहिने हिनक कोनो उपन्यास नहि आएल रहए। नारायण कार्की 'अमन' नेपालमे मैथिलीक जानल-मानल साहित्यकार छथि। हिनक कविता,गीत,गजल कर संग्रह प्रकासित अछि। दू टा कथा संग्रह 'तारा संग जएबो त कुजवा' आ 'हुगली उपर बहैत गंगा' सेहो प्रकाशित छनि। नाटक आ शोध छनि। आलेख समीक्षा संग्रह छनि। पत्रिकाक संपादन लगातार कऽ रहल छथि। पोथी समीक्षा संपादन कर छथि।

घनमुँहा उपन्यास नेपालक मधेश आन्दोलनक पृष्ठभूमिमे पहाड़ी युवती आ मधेशी युवकक प्रेमकथापर आधारित अछि। कथा हो वा कविता प्रेम अमनक स्थायी भाव रहल अछि। एहि उपन्यासक संबंधमे प्रसिद्ध साहित्यकार राजेन्द्र विमल भूमिकामे लिखने छथि जे "आख्यानकार अमन अपना समयक प्रामाणिक खिस्सा आबए वला पीढ़ी दर पीढ़ी धरि सुनएबामे उत्सुक छथि। तेँ प्रस्तुत उपन्यास मूक इतिहासक मुखर सहोदर भए गेल अछि। राजनैतिक घटनाक्रमक धरातलपर कल्पनाक भद्रा, मृत्तिका, सद्दी सन आदिसँ समकालीन मधेशक जीवन्त मूर्ति तैयार कऽ समाजिक संबंध-बंधक रागमयताक रंग ढउरल गेल

अछि जे दुखदायी अछि। उपन्यास ऐतिहासिक महत्वक दस्तावेज एहु कारणेँ अछि जे ई पहिल नेपालीय मैथिली उपन्यास थिक जे समकालीन राजनैतिक घटनाक्रमपर आधारित अछि।"

मधेश उत्तम नरनिहार काका पहाड़ी परिवार ओहिठामक जीवन ओ संस्कृतिमे रचि-बसि गेल अछि। काका व्यक्ति ओ परिवारक बीच मित्रता ओ स्नेह कायम भऽ गेल छैक। मधेश आन्दोलन तीव्र भेलापर ओहिमे काका अराजक ओ हिंसक तत्त्व सक्रिय भऽ जाइत अछि। अपहरण, लूट आदिक धंधा करऽ लगैत अछि। एहि उपन्यासमे मधेश आन्दोलनक विस्तृत वर्णन अछि।

उपन्यासमे रमेश उपाध्याय एक शिक्षक छथि। ओ पहाड़ी मूल के छथि। एखन काका परिवार मधेशमे अछि। मधेश आन्दोलनकेँ ओकर सबहक समर्थन छै। आन्दोलनी ओ सरकारक बीच बहुत बेर समझौता होइत छैक। माँग सभ मुद्दा पूरा नहि भऽ पबैत अछि। किछु लोक आन्दोलनकेँ हिंसक बनबऽ चाहैत अछि। लोक सरकारी दमन ओ शोषणसँ त्रस्त भऽ गेल अछि। क्रमशः पहाड़ी आ मधेशीक बीच वैमनस्य पनपि जाइत अछि। हिंसक तत्त्व सभ आ लूट करबामे लागि जाइत अछि। एही क्रममे रमेश उपाध्याय केर बेटी किरणक अपहरण भऽ जाइत छैक।

किरण जे एक पहाड़ी मूलक अछि ओकरा मधेशी कामेश्वर सिंहक बेटा राजीवसँ प्रेम छैक। दुनू विवाह करऽ चाहैत अछि। दुनूक परिवारकेँ सेहो कोनो आपत्ति नै छैक। उपाध्याय के दस लाख फिरौती देबाक पड़ैत छनि। एहि लेल अपन मकान बेचि दैत छथि।

नाजीनकेँ ई सूझैत होइत छैक जे एहि अपहरणमे उपयोगक सम्भावना ताकल जाय छैक। ओ अपन माउसँ मीलि कामश्चन सिंहक विलकर्कँ जगबैत अछि। अन्ततः किनष मुक्त होइत अछि। नाजीन संग ताकल विचारक निर्णय इन्नु यनिलाल करैत अछि। उपाधाय जे यहाँ दिस घुनि जवाक निर्णय कल नहथि स पुनः ताडीपाम नहि जाइत छथि। एहिम हुनक मित्र जगमोहन सहयोग करैत छथिन। मकान सेहो विक्री नहि होइत छनि।

एहि उपन्यासमे यहाँकी आ मधेशी लोक सबहक बीच एकटाम नहबाक कारणे आपसी मित्रता ओ रागद्वेषक यथार्थ सेहो उजागर कए आएल अछि। संगहि उत्तक स्नायुरा आ विकास क समानान्तर विस्मित उत्तक मनुक्ख आ ताकल मनुक्खता सेहो उजागर केल। उपन्यास कहैत अछि जे वस्तुतः मनुक्ख सर्वोपरि थिक।

संघर्ष, आन्दोलन, अपहरण, लूट, प्रेम आदि घटनाक आधार लए कए बुनल ई उपन्यास रहस्य ओ रोमांचसँ भरल अछि। संपूर्ण उपन्यासमे पाठकता बनल रहैत अछि। 'घनमुँहा' नाम कल संबंधमे उपन्यासकारक कहब छनि जे "घनमुँहा" नाम मैथिलीमे एहिसँ पूर्व कतौ आएल होइक से संदेह, मुदा हमर एहि उपन्यासक केंद्रीय पात्रक मनःदशा, अपन जन्मधरतीसँ लगाव आ प्रेम आ विस्थापनक बावजूद अवसर भेटैत जन्मधरतीपर घूमबाक अदम्य उत्साह, स्फूर्ति 'घनमुँहा' शब्दकेँ सार्थकता प्रदान करैत अछि। गाँउ एकटा पाठी नूपुर ली स आग्रह"। वस्तुतः ई उपन्यास कहैत अछि जे जाति,वर्ण, परिवार बहुत मान नहि रखैत अछि। मान रखैत अछि

मानवीय मूल्य,व्यवहार, प्रेम, सदाशयता, मित्रता, मानवीय संबंध, इत्यादि। एही इत्यादि आ लगाति संग जाs लोक नहि अछि सबहक "घर" थिक। मुदा एहि घर लेल मनुक्ख आ मनुक्खता अपेक्षित अछि। एही भाव आबि कs 'घरमुँहा' मनुक्ख अपनाकेँ सार्थक बना लैत अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.८.लालदेव कामत- डा० राम भरोस कापड़ि "भ्रमर" : एक व्यक्तित्व



लालदेव कामत, संपर्क-०७६३१३९०७६१

डा० नाम देवास कायठी "अमन" : एक व्यक्तित्व

सुनामधन्य ७१ वर्षीय बघचौरा ग्राम निवासी श्री नामदेवास कायठी एक व्यक्तिटा नहिँ अपन आपमे एक संस्था सन लोक छथि। ओ बहुआयामी प्रतिभाक धनी साहित्यकार छथि। हिनक जन्म २००८ संवत्,साओन मास तदनुसार ५ मई १९५१ कँ नेपाल देशक धनुषा जिला कन गाउँ पालिका वार्ड -४ बघचौरा नामक ग्राममे भेल छन्हि। वर्तमान मेँ ओ रहैत छथि उप नगरपालिका वार्ड १ मिथिला जनकपुरधाममे,आय डा पाँच दशक सँ अहर्निश मैथिली साहित्य लेल

सेवा करैत अएलाह अछि। हिनक दादा स्व0 लाल बहादुर मण्डलजी क' पुत्री दाया रहथि आ पुत्र राम गुलाम व पुत्रवधू दुखनी देवी कैं दू पुत्र क्रमश: सुकुमार आ रामविलास एवं एक पुत्री सोनावती भेलनि। रामविलास कार्की जीक किशोर अवस्था म धनुषा जिलाक एकवारपट्टी गामक दलीया देवी कैं संग विवाह भेलनि, जाहि सँ तीन पुत्र क्रमशः राम नारायण कार्की- जनकपुर एक्सप्रेस क'सम्पादक आ राजनीति सँ सम्बद्ध, प्रदीप कार्की - नेपाल स्वास्थ्य संस्थान मे कार्यरत आ संदीप कार्की - उच्च कोटिक कम्प्युटर ग्राफिक एक्सपर्ट, एवं दू विवाहित बेटी प्रमिला छथि। कार्की जीक साहित्यिक नाम 'अमर' शब्द चर्चित छथि। बालपनमे हिनक पिता - दीआ गामक एक गिरहस्थ कन्हाई साहुक दलान पर मधुकरही निवासी गणेश लाल कर्ण जीक चटिसारमे शुरू भेलनि। हिनका ग0विगहा जमीन जग्गा आ जनकपुर टोलक उत्तरवारि कात पक्का मकान रहनि, ताहि रहिकय सरस्वती हाई स्कूल सँ मैट्रिक पास कयलाह। ओ त्रिभुवन विश्वविद्यालय का0मांडू क अन्तर्गत रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पस सँ मैथिली विषय(पहिल बैच) मे एम ए,पी एच डि0 (मानद) धरि कयने छथि। नेपालक मधेशक सरकार अपना प्रदेशम मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान'क ग0न कय लक्ष्मि ओ योजनाक मंत्री परिषद सँ मंजूरी दैत हिनका संचालन समितिक अध्यक्ष बनौलक हन्। साहित्य उपम हिनक ग0म् कृति मिथिला'क लोकजीवन; लोक संदर्भक किछु मास पूर्व जनकपुर धाममे विमोचन भेल छल। एहि सँ पूर्वहि ओ नेपाल सरकारक नियुक्तिमे साझा प्रकाशन अध्यक्ष आ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद् सदस्य र' चुकल छथि।

भाषा समृद्धि लेल अमनजी ओहुना मुख्यमंत्री लालबाबू राउत जीक ध्यान दैत एक समय बुझौने रहथिन - स्थानीय किछु संघ, संस्था क ओल माँगपत्र सहानुभूति पूर्वक विचार कयल जाय। आब मधेश सरकार अपन प्रदेशक मातृभाषा उत्थानक लेल एकर संस्कृति, कला, नाट्य, संगीत, पत्रकारिता अधिक उत्थान हेतु काज आरंभ करत। एहि दिशा क' विकासम लागल, हेरायल, नुकाएल प्रतिभा सबक खोजिकय तकर संरक्षण, सम्वर्धनक संगहि, सम्मान आ पुरस्कारक व्यवस्था कोनो प्रतिष्ठान करब करत, पुस्तकाकार प्रकाशन सेहो । पूर्वमे रामभरोस जीकेँ नेपाल विद्या मैथिली भाषा साहित्य पारम्परिक सेहो भेटल छन्हि। हिनका नाम आरो अनेक पुरस्कार भेटल छन्हि।

नेपाली आदि कवि वसकष्ठा भानुक प्रथम कविता सँ प्रभावित भावि ओ वन्न काठनी ओनाइत धूआँ रचलनि। नेपाल'क पहिल 'क' श्रेणिक मैथिली भाषा मेँ "आंजन - पत्रिका" कान विगत ३२ साल सँ सम्पादन करैत आबि रहलाह अछि। जबकष्ठा गिनहकष्ठा गनदनिकष्ठा'क इतिहास कोना लिखू हम, श्रद्धांजलि नुपँ - आजक संदर्भ भानुकेँ प्रति हिनक श्रद्धांजलि कविता पढैत पाठक निमग्न ह' जाइत छैक। हिनक दीर्घ कविता 'नहिँ आब नहिँ' पाठ करय पाथ पाठकक बुझाइ छन्हि। कथा विधाम हिनक - गाना संग जबौ न कुजवा केँ मैथिली अकादमी- पटना सँ १९८४ मेँ पुरस्कृत कयल गेल रहनि। गजल संग्रह- मोमक पघलैत अधर-१९८३, गीत गजल संग्रह अपन अनचिह्नार- कविता संग्रह १९९०, नानी बहुरनी, नाटक - एकटा और वसंत, महिषासुर मुर्दाबाद, अन्ततः कथा

संग्रह, मैथिली संस्कृति बीच, रमाउँदा- सांस्कृतिक निबंध संग्रह नेपाली मेँ आ हिनक " नहिं आब नहिं" केर मैथिली अनुवाद भेल अछि, मनू ब्राजाकी द्वारा कयल गेलनि अछि। कविता - विसरल - विसरलसन, जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिंग),लोक नाट्य : जट जटिन (अनुसंधान) छन्हि। हिनक सम्पादन कयल - मैथिली पद्य संग्रह,लावाक धान कविता संग्रह-माथुरजीक " त्रिशुली" खंडकाव्य, मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोकनृत्य: राग रंगिमा एवं स्वनुय - आलेख संग्रह वहुचर्चित भेल रहनि। हिनक प्रमुख पोथी :- पूख्र गुमिक एसगर पाड्ग, हुगली उपर बहैत गंगा, डॉ ० प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' आ नवारम्भ प्रकाशन सँ बहुराएल ' एहीनायनस पोथी , सूली पर ऽ्ऽ्लीजात प्रकाशित छन्हि। मैथिल लोक-संस्कृति विविध आयाम- र.प्र.प्र. आ मिथिलाक सपूत : राजा सलहेस - दीनाभद्री,अहाँ जे कहलहुँ,अन्हरियाक चान,लोक नायक सलहेस (द्वितीय खण्ड),समयका अन्तराल पहुँचाउँदे, सीमा के आर-पार,चीन- जे हम देखल(यात्रा संस्मरण) केर जाना नँय छैक।

हम सब मैथिली भाषी लोक नाम भ्रास कायठी ग्रमर जीक गीत रचना रितियां एलबंम निम्नलिखित सूनि कीर्ण कृत्य ह्वऽ्ऽ्त छी। यथा -:

१. अहाँ आबि की छनकय हमर कंगना

२. आउ,आउ,आउ दिल खोलिकऽ आउ

३. प्रिय प्राणनाथ सादर प्रणाम यौ

४. मवल आऽ्ी हानी हा

५. मनक रीगन दर्द रनल अछि

६. वहमूआ हा, कनि देहा नेहन कँ निदाऽ्ी

७. नूनमून नूनमून वाज येजनिया हा

८. याविन हमऽ्ी जानिया

९. नाखी कँ वद्वनम रैया ...

नाम रनास कायठी यिछनल समाज मँ शिर्ष साहित्य सनी छथि। कानू नौकठी स्कूल- कालजम नहिं कलनि। हिनक नवना संसान वातनक दुनू यान खव धूम मवन छैक आ व्यायक समृद्धिक आवनध ग्रहण कयन छैक। कानू यूस्तकालयम जकOाम अध्यापक यढवाक हिनका मादे मातृरापा अनूनाग जानि सकवाक खगोट गँ अछिया। सनासय याथीक सँग्याँ यूनना स हार्दिक शुरकामना

अयन मंगय editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउ।**

२.९.अजय अनूनागी- मैथिली रापाक साहित्यकान 'अमन' हनक विश्राम यूस्तक प्रकाशन



अजय अनुरागी

मैथिली भाषाक साहित्यकार रमन हुनक विधाम पुस्तक प्रकाशन

राम भिलास कापडि रमन मैथिली भाषा साहित्यक प्रसिद्ध साहित्यकार छथि। धनुषाक बाघचौरा गाम, जनकपुरधाम उपमहानगरपालिका वडा नम्बर १ आ हंसपुर नगरपालिका वडा नम्बर २ क ७० वर्षीय रमन अखनो साहित्यिक रचना आ पुस्तक प्रकाशनम सक्रिय छथि। ओ कहैत छथि, मैथिली भाषा साहित्यक उत्तम हम एकमात्र एहन व्यक्ति छी जे पूर्णकालिक छी।

मैथिली भाषा साहित्यक उत्तम बहुत लोक कलम चलबैत छथि मुदा हुनकर मुख्य पेशा अलग अछि। लेकिन हुनकर कहना छै जे हुनक प्राथमिक व्यवसाय मैथिली भाषा साहित्यक उत्तम लेखन छैक।

डा. धीरेन्द्रक कारणेँ साहित्यकार बनि गेलाह

जहियासँ जनकपुरक सनसाइनी हाइस्कूलमे पढ़ैत छलाह तहियासँ भारतमे प्रकाशित बाल पत्रिका पढ़बामे रुचि छलनि। भारतक पटना, कलकत्ता, दिल्ली, मुंबइसँ प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका हुनक घरक समीप जनकपुर नगरक स्टेशन पर पाथीक स्टाल पर अबैत छल । हिन्दी भाषामे बाल साहित्य पत्रिका जेना भारतक मुंबइसँ प्रकाशित पराग पत्रिका आ दरभंगासँ प्रकाशित बालक पत्रिका पढ़ैत छलाह। पढ़ैत मात्र नहि ,हुनक कविता रचना बालक पत्रिकामे छपैत छल।

ओहि समयमे अपन घर लग जनकपुर स्थित राम स्वरुप राम सागर बहुउद्देशीय कालेजमे अध्यापन करयवला प्रोफेसर धीरेश्वर झा धीरेन्द्र क संपर्कमे आबि गेलाह। ओही कालेजक राजनीति विज्ञानक प्राध्यापक रामायण प्रसाद साह हुनक घरमे किराया लऽ कऽ रहैत छलाह। डा. धीरेन्द्र ओतहि नियमित अबैत रहथि। ओही कारणे प्रोफेसर झासँ सम्पर्क रहलनि।

ओना जखन क्लास ७ मे पढ़ैत छलाह तखन हिन्दीमे एकटा कथा लिखलनि जकर नाम छल इम्तिहान बालक आ झा केँ देखौलनि। ओ कथा हिन्दीमे लिखल गेलाक कारणेँ नहि देखलनि। झा

कहलखिन जे कथा अपन मातृभाषा मैथिलीमे आनब तखन मात्र देखब। तखन मैथिली मे अनुवाद क देख देलखिन। आ प्रारम्भ साहेब एकरा पाँति दर पाँति सुधारि देलनि। आ छपबाकलेल लिखि कऽ आनि कहलखिन्ह।

एमहर संपादित कथा वापस पढ़न पत्र लिखि अनलनि। तकरा बाद श्री..मा मिथिला मिहिर नामक पटनासँ प्रकाशित साहित्यिक पत्रिकाक संपादक सुधांशु शेखर चौधरीकेँ पत्र लिखि कथा छपबाक आग्रह कयलनि। किछु दिनक बाद पत्रिकाक नवा अंकक चौपाति स्तम्भ एमहरक कथा छपल। तकरा बाद पटनाक कलकत्तासँ प्रकाशित आँखर नामक पत्रिका मे (१९६८ई.)नव हस्ताक्षरक रूप मे हिनक लिखल अनहरिया इजोरिया नामक कविता प्रकाशित भेल।

हिनका द्वारा लिखल गेल कविता आ कथा पटनाक विभिन्न साहित्यिक पत्रिका मे प्रकाशित होइत रहल। ओ डा. धीरेन्द्र नहि रहितथि त हम सम्भवतः साहित्यकार नहि ए पबितहुँ एमहरक उक्ति छन्हि।

साहित्यक रूप विधाम पुस्तक

पत्रकारिता पेशाम सङ्ग शुरुआत कयलनि आ साहित्यिक उद्यम सङ्ग लिखैत रहलाह। आब साहित्यिक रूपक विधाम मैथिली भाषाम पोथी प्रकाशित क चुकल छथि। कथा, कविता, उपन्यास, आलोचना, नाटक, निबंध, यात्रा संस्मरण सहित

सभ विधामे पोथी लिखने छथि। आजुक दिनमे ७०सँ उपर पुस्तक प्रकाशित भ' गेल छन्हि।

हिनक बन्न कोठरी औनाइत धुआँ नामक काव्य संग्रह, नहि आब नहि नामक दीर्घ कविता, मोमक पघलैत अधर नामक गीत गजल संग्रह, अपन अनचिन्हार,युद्धभूमिक ओसगर यात्रा नामक कविता संग्रह, अन्हरियाक चान गजल संग्रहक प्रकाशन भेल अछि। मैथिली भाषामे लिखल दीर्घ कविता नहि आब नहि क नेपाली भाषामे हया, अब गया शीर्षकसँ नेपाली भाषाक प्रसिद्ध साहित्यकार मनु ब्राजाकी द्वारा अनुवाद कयल गेल अछि । बाद मे ओ दीर्घ कविता नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित प्रज्ञा पत्रिकामे प्रकाशित भेल छल।

तारा संग जयबौ त कहना, हुगली उपर बहैत गंगा, ओही भायनस नामक कथा संग्रह प्रकाशित अछि। हुनक दावा छनि जे नेपालमे मैथिली भाषामे हुनक लिखल तारा संग जयबौ त कहना पहिल आधुनिक कथा संग्रह थिक। हुनक ओहो दावा छन्हि जे ओ कथा संग्रह बिहार सरकारक सरकारी संस्था मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित नेपालक पहिल आधुनिक मैथिली कथा संग्रह छैक।

हुनकर लिखल उपन्यास धनमुहाक भोजपुरीक वरिष्ठ साहित्यकार उमाशंकर द्विवेदी भोजपुरी भाषामे आ भारतक चर्चित साहित्यकार डा.प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन हिन्दी भाषामे अनुवाद कयने छथि।। भ्रमण स्वयं करैत छथि जे मधेश आन्दोलनक समयमे वर्षोंसँ जनकपुरमे

रहनिहार पहाड़ी समुदायकेँ कोना मधेश छाड़य पड़ल छल ताहि पर लिखल ई उपन्यास हुनक पहिलुक कृति थिक।

कतोक नाटक लिखने छथि। मैथिली भाषामे नारी चक्रवती, एकटा आओर बसंत, महिषासुर मुर्दाबाद, रौया अङनौ अपन समाज, सूली पर इजोत नामक नाटकलगायत दर्जनो नाटक प्रकाशित छन्हि आ मंचित होइत रहैत छन्हि। धर्मेन्द्र झा विह्वल हुनक लिखल नाटकक अनुवाद नेपाली भाषामे एमनका सर्वश्रेष्ठ नाटकहरू नामसँ कएने छथि।

एकर अतिरिक्त विभिन्न विधान संग्रह, निबंध संग्रह, यात्रा संस्मरण संग्रह सेहो प्रकाशित कएने छथि। समय समय पर कतोक पत्री आ रचनाक संपादन करैत आबि रहल छथि। एमन करैत छथि जे हुनका द्वारा लिखल गेल कविता, नाटक आ कथा नेपाल आ भारतमे स्कूल आ विश्वविद्यालय स्तरीय पाठ्यक्रममे शामिल कए पढ़ाओल जा रहल अछि।

साहित्यमे योगदानक कारण नेपालक सरकारी संस्था तत्कालीन नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वारा प्रथम मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार(रू.१००००), विद्यापति सेवा संस्थान दरभंगा द्वारा मिथिला विभूति सम्मान, लेखन प्रकाशन पटना द्वारा लेखन सम्मान सँ सम्मानित कएल गेल छथि। तहिना मैथिली साहित्य परिषद जनकपुर द्वारा वैदेही प्रतिभा पुरस्कार, अंतर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मुंबई द्वारा मिथिला रत्न सम्मान, मधुबनीमा द्वारा देल गेल नेपाल मधुबनीमा

सम्मान, रचना समिति पटनाक यात्री रचना पुरस्कार स सम्मानित भेल छथि।

तहिना सामा प्रकाशनकेँ सामा लोक संस्कृति पुरस्कार, विद्यापति मैथिली भाषा साहित्य पुरस्कार, यात्री प्रतिष्ठान सिसौटिया सलाही केँ यात्री सम्मान सँ सम्मानित कयल गेल छथि।

श्रमन नेपालक पहिल मैथिली भाषाक साहित्यकार छथि जे नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक परिषद सभा सदस्य बनबामे सफल भेलाह आ बादमे परिषद सदस्य बनलाह। तहिना सामा प्रकाशनक अध्यक्ष नूपम श्रमन पहिल मधेशी व्यक्ति भेलाह। ओ अपन छोट कार्यकालमे नेपाली भाषाक अलाव मैथिली सहित अन्य भाषामे प्रकाशन शुरु कयलनि। मैथिली बाल कथा संग्रह बगियाक गाछ हुनक कार्यकालमे पहिल बेर सामा प्रकाशन द्वारा प्रकाशित भेल। आ ओ सामा प्रकाशनसँ पुरस्कृत सेहो भेल छल।

एतबे नहि, काठमांडू आ जनकपुरमे ३ टा अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक सफलतापूर्वक आयोजन कयलनि अछि।

हुनकऽ कहब छन्हि जे मैथिली भाषामे लिखी क समाजके बदलबा या परिवर्तन करबा बहुत कठिन काम छै। हुनक कहब छनि जे प्रकाशनक अभावमे मैथिली भाषाक साहित्य नहि फलल फूलल अछि, त प्रकाशक लोकनिक अभावसँ पाठक धरि नहि पहुँचि पबैत अछि।

एमहन कहैत छथि, "एहन स्थिति अछि जे स्वयं लिखनिहार लोक स्वयं पढ़ैत छथि वा अपन गोलक लोक पढ़ैत छथि, ओकरा कीनि क पढ़बाक कोनो आदति नहि अछि। " सूक्ष्म बाँटबाक प्रवृत्ति अछि। मैथिली भाषाक जनसंख्या विशाल अछि, मुदा मैथिली भाषाक स्वीकार्यताक कारणेँ पाठक नहि अछि, एमहन कहैत छथि, "मैथिली भाषाक मानकक सहज बनाओल जाय आ जेँ मैथिली भाषामे लिखल रचनाक अनुवाद नेपाली, अंग्रेजी आ हिन्दीमे कयल जाय" त आनभाषी मे सेहो, ओकरा बाजार भेटत।"

ओ टिप्पणी कयलनि जे रचना मात्र पाठीक संख्या बढ़बाक लेल लिखल जा रहल हो त ताहिमे गुणवत्ता अभाव रहत। लिखबा लेल पहिने पढ़य पड़त। मुदा ओ कहैत छथि जे एतय पढ़बाक संस्कृति नहि अछि ताहि लेल समस्या अछि। साहित्य समाजक असली दर्पण थिक आ ओ दुख व्यक्त कयने छथि जे एही समाजक यथार्थक दर्शन करबाक लेल कम लिखल जा रहल अछि।

ओ मैथिली भाषा सहित विभिन्न मातृभाषाक विकास लेल राज्य सरकारक आगाँ आबक चाही।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१०.अश्विनी कुमान आलाक-नामरत्नास कायटि ग्रमनः स्वानग-नयालक सांस्कृतिक सतु



अश्विनी कुमार आलोक, संपर्क- 8789335785

नाटकस्मारक कार्यत भ्रमण: भारत-नेपालक सांस्कृतिक सेतु

करीब ३८ दशक पहिने हम नेपाल गेल छलौं। कोनो साहित्यिक कार्यक्रम मे देश सँ बहरा राग लेबाक ई हमर पहिल अनुभव छल। ओकरा पहिने एक बेर आरो नेपाल गेल छलौं अपन दादीक आँखिक ऑपरेशन करबाक लेल। लहान जेबाक क्रम मे ई बुझना गेल, जे दोसर देश मे जेबाक लेल कम सँ कम दु दिन चाही। मुदा ई नहिं लागल, जे लहान नेपाल मे अछि आ कि हम राजाक बिहार सँ गेल छलहुँ। ओहन घर - दुआर, ओहन नहर - सहर आ ओहन बाट - बिचार। जहिना देश अपनेंक, तहिना हमर। हम एक - दोसर सँ कोनो सामाजिक सीमा सँ सेहो निरपेक्ष नहिं छी, कियेक

त हमरा - अहाँक मध्य कुनु विवाद एहन स्तर पर नहिं आएल। हमर संबंध बेटी - रोटीक संबंध छल, घर - परिवारक संबंध छल।

नेपालक जनकपुर म ओ कार्यक्रम भारत - नेपालक दूतावास कं आपसी संबंध सँ आयोजित कैल गेल छल। हम आदरणीय प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'क संग गेल छली। तहि म दरभंगाक संस्कृत शोध संस्थानक तत्कालीन निदेशक देवनारायण यादवक आतिथ्य स्वीकार कैल, सूर्योदय होवाक पहिने बस सँ जयनगर गेलौं आ ओकर बाद नेपालक बस सँ जनकपुर। जनकपुरक एक गोट विशिष्ट सभागार म ओ कार्यक्रम दू दिनी आयोजित कल गेल छल, जकर मुख्य कर्ता - धर्ता रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' रहथि। उद्घाटनक बाद पाँच टा कवि कं काव्यपाठ सुनबाक मुख्य अतिथि मादे इच्छा व्यक्त कल गेल छल। ओ पाँच गोट कवि म एकटा कवि हमहूँ छली। तहि दिन सँ रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' सँ जुड़ल छी। हमरा मान पड़ैत अछि, जे भारत म कुनु महत्वपूर्ण मैथिली कार्यक्रम संपन्न नहिं भेल हुए, जाहि म रामभरोसजीक भूमिका नहिं हुए। विशेषक' दरभंगाक कार्यक्रम। ओ दरभंगा आ जयनगरक साहित्यिक धुरिएटा नहिं छथि, भारत आ नेपालक सांस्कृतिक संबंधक एकटा दायित्वसजग व्यक्तित्व छथि। जनकपुरक ओ कार्यक्रम सँ पहिने हुनक नाम बिहार सँ प्रकाशित होए वला अनेक पत्र - पत्रिका म पढ़ल छलहूँ। ओ मात्र कार्यक्रमक सूत्रधार नहिं छथि,सिद्धांत और व्यवहार सँ सेहो भारत आ नेपालक सांस्कृतिक समन्वयक हितचिंतक छथि। हमर आवास वैशाली जिलाक महनार म अछि आ हमर

आवास सँ कताक दुन नहोग छलाह मैथिली आ नयालीक प्रसिद्ध लाकसाहित्य विशेषज्ञ प्रफुल्ल कुमान सिंह 'मौन'। मौन जी सँ हुनक वड़ आत्मीयता छलनि,मौन जी ७ ग आवैत नहथि। मुदा मौन जी ७ग' प्रमन जी सँ हमना भेंट नहिं हेल। नयालक उहि कार्यक्रमक वाद हमन भेंट ७क वन यानाा समितिक कार्यक्रम म हेल छल, गकन वाद हुनक वटीक घन यटनाक वानिंग कैनाल गात मा। हुनक जमाय श्रीजीनिन छथि,उा यटना म वसि गेल छथि। मुदा ७हन नहिं, ज जमाय नयालक छथि। हुनक घन उाहून कता मधेपुना,मधुवनी दिस छैन। अर्थात् उा मूल नूप सँ विहानक निवासी छथि। नामहेवास कायतिक घन धनुषा । हम मौनजीक संग उहि कार्यक्रमक दौनान गेल छली। उा विशुद्ध साहित्यजीवी छथि,हानुक मनुष्य आ सजग यत्रकान। हुनक विशेषता ई अछि, ज उा संवंध वनवा आ संवंध क निर्वाण हवा म विश्वास नखैत छथि। हुनक साहित्य मैथिली आ नयाली म अयन विशिष्ट स्थान नखैत अछि। उा लाकसाहित्य क मर्मज्ञ विद्वान अछि। लाकवार्ता क संग्रह आ विश्लेषणक क्षत्र म उा मान्य विद्वान छथि। हुनक विद्वता मात्र याथीक यढ़ला सँ नहीं संयन्न हेल अछि,उा क्षत्र भ्रमण आ संगति - सहयाग सँ अयन स्थानक निर्माण क यृष्ठ कन छथि। हुनक साहित्य नयाली आ मैथिलीक समृद्धिक काज कनैत अछि। उा निःशंक नूय सँ हानत आ नयालक संवंधक समर्थन कनैत अछि। जहिना हानत आ नयालक आयसी संवंध कुनु नाजनीतिक सीमानखाक जयन अछि,तहिना भ्रमनजीक साहित्य हानत - नयालक सांस्कृतिक यनंयनाक प्रदर्शिका कनैत वुझि यड़ैत अछि। हुनक साहित्य लखनक आनंद नयाल सँ हेल,किएत उा नयालक धनुषा जिला अवस्थित वघचौड़ा गाम म जन्म ललनि। यढ़ाई

नेपालक त्रिभुवन विश्वविद्यालय मे कहलनि। मुदा हुनक पहिल साहित्य रचना 1964 ई. मे पटना सँ प्रकाशित हुअ वला प्रसिद्ध मैथिली साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर' मे छपल। ओ रचनाक नाम छल 'श्रीमानदान बालक'। तकर बाद ओ साहित्य आ पत्रकारिता कें अपन जीवन समर्पित क' देने छलथिन। हुनक पहिल पोथी मैथिलीक कविताक छल 'बन्न कोठरी औनाइत धुँआ'। एहि पोथी मे नारायण कविता 'भ्रमर' ओ विसंगतिक चर्च कैने छथि, जाहि मे मनुष्यक जीवन औनाइत छल। मनुष्य बूझैत अछि जे ओकर शोषण, दमन आ प्रताड़नाक जिम्मेदार लोक ताहि दिन धराशायी भ' जायत, जाहि दिन प्रतिकार आ क्रांतिक मशाल जरि जायत। मुदा एहन नहिं भ' सकैत अछि। मनुष्यक आगि ओकरा मे कुलबुलाइत अछि, ओकर जरबैत अछि आ ओकर देह कुनु बन्न कोठरी जकाँ विवश ठाढ़ अछि, ओकर धुँआ औनाक' ओकर प्रताड़ित करैत अछि। एहिना शोषक वर्गक व्यवसाय शोषितक विघटन जकाँ मनोदशा सँ आगाँ बढ़ैत अछि। 'बन्न कोठरी औनाइत धुँआ' मे नारायण जी जे परिस्थितिक वर्णन करैत छथि, तकर विस्तार एक छोट पैघ कविता पोथी 'नहिं, आब नहिं' मे ओ कने छथि। मनुष्य अपन पराजित जीवन सँ व्यथित अछि, बचैत अछि आ बेर बेर ओ संकल्प लैत अछि, अपन जीवनक एहि गति जिम्मेदार लोकक ओ खबर लेत, मुदा ई संकल्प कत' हुऐत अछि। एहन मनोदशाक वर्णन करबाक दौड़ नारायण जीक कविता समूचा शोषित - उत्पीड़ित समुदायकें प्रतिनिधित्व करैत छथि। हुनक आगा मैथिलीक कविताक पोथी एहि प्रकारें अपन विश्वसनीय आधार बनबैत अछि, जाहि मे जीवनक समरस समाजक निर्माण हुअ आ सभ कें समान अवसर आ

अधिकार रहैत। हुनक दु टा मैथिली कविता पोथी हुनक कवित्वक विस्तार आ ओकर आवश्यक वर्ण्य विषयक उदाहरणस्व लक' काव्यविश्लेषक लोकनिकेँ अपन महत्त्व बतबा मे सर्वथा सक्षम अछि 'मातक पघलैत अधर' आ 'अपन अनचिन्हार'। एकर बाद 'युद्ध भूमिक एसगर यात्रा' आ 'अन्हरियाक बान' हुनक कविताक ओ पोथी छल,जाहि मे एक दिस मनुक्ख प्रेम आ शृंगारक राग सहेजबाक लेल प्रयत्नशील छल, त दोसर दिस ओ जीवनक युद्ध भूमि मे अपन युद्ध एसगर लड़बाक लेल विवश छल। शिक्षा,संबंध आ रागक ह्रास करैत नवका समय मनुक्ख कें एक दोसर सँ काटक विलगबैत अछि,नामरहासजीक कवित्व ओकर चिह्नित करैत अछि।

ओ कविता लेखन सँ अपन लेखकीय जीवन शुरू कयलनि,मुदा हुनक लेखन खाली कवितेटा मे नहिं रुकल। साहित्यक अनेक तास विधा ओ समृद्ध कयलनि, जाहि मे कथा,उपन्यास, नाटक आ यात्रावृत्तक क्षेत्र विस्तृत छल।

हुनक कथा संग्रह 'ताना संग जेबा न कूजबा'क प्रकाशन बिहार सरकारक मैथिली अकादमी कैल छल। 'हुगली ऊपर बहैत गंगा' आ 'एंटी रोमांस' नामक हुनक कथाक पोथी हुनक कथाशिल्प मे ग्राम्य संवेदना आ गामक बदलैत स्वरूप कें विस्तार सँ कहबा मे सफल भेल। हुनक उपन्यास 'घरमुँहा' घर सँ निष्कासित आ संत्रस्त एक गोट जीवनक गहन त्रासदीक कथा अछि, जाहि मे व्यक्तिक घर सँ दैहिक निष्कासन भेल त गेल हुए, मुदा मन सँ ओ अपन

घन सँ वह्याओल नहोँ अछि। असल म ॐी नयालक मधेश आह्यलन यन आधानित अछि । आ यहिल उयन्यास सहो।

नामरचास कायति 'अमन' लाक संस्कृति म सामाजिक चाना हनानिहान ओकटा निश्चस्क लाक छथि। नयाली आ मैथिली म हुनक अनक नास याथी छयल अछि आ नाहि कानक सँ उा अयन दृष्टि आ निनचना सँ चमकृत कनो छलथिन। हुनक ओहि प्रकांत निह्नगाकँ अनक नास सम्मान रुटल अछि। अमन जी हिंदी, नयाली आ मैथिली साहित्य कँ अनुनाद ऊत्र म अयन निलऊक्ष यागदान देत देत नहलाहे अछि। उा रानत आ नयालक सांस्कृतिक सतु छथि।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.११.चंद्रेश-रामस्वारथ कायथ 'अमन' : जीवन, संवेदना आ चेतना



चंद्रेश-संपर्क-9430640883

रामस्वारथ कायथ 'अमन' : जीवन, संवेदना आ चेतना

इन्द्रधनुषी सात रंगक प्रतिभाशालीकेँ अपनाम समेटने-बटोरने राम स्वारथ कायथ 'अमन'क बहुविध साहित्य जनसमाजसँ जुड़ल अछि।

हिनक रचना जन-जनसँ प्रशंसित ओ परिवर्तित समय आ समाजसँ सम्बद्ध बनबैत अछि। हिनक दृष्टि शोषित-पीड़ित समाज दिस टकटकी लगौने सहानुभूति करबैत अछि। जनसमाजक हृदयक करुणा, पीड़ा, दया, प्रेम आदिकेँ उद्घाटित कऽ जनसंवेदनाकेँ मानवीय मूल्यबोधक संचारक भऽ जगबैत अछि।

जीवन-संघर्षमे डुबैत चलैत बढ़ैत-बढ़ैत काल रचनाकारक आत्मसजगता जँ मौलिक विचारधारामे कलात्मक एवं स्वाभाविक यथार्थबोधक उपस्थितिबोध अपन रचनामे प्रस्फुटित कऽ करबा दैत अछि तँ ओहन रचनाकार युग आ समयक अतिक्रमण कऽ अपन एकटा छूट इतिहास रचि नवताबोधक सरस बिलहि दैत अछि। अपन समय आ युगक अतिक्रमण कऽ हुनक विचारधारमे चलि कऽ संकटापन्न स्थितिसँ डुबैत संघर्षपूर्ण चुनौतीकेँ स्वीकारब अवश्य सजग ओ सचेष्ट रचनाकारक दायित्वबोध थिक। बहुआयामी व्यक्तित्व ओ कृतित्वक धनी भ्रमरक साहित्यिक अवदान विशेष अछि। ओ सदाबहार लेखक छथि जे रचनाकेँ सदाजीवी बनाकऽ ओहिमे अपन कलात्मकताक संग अपन वैशिष्ट्यपूर्ण विवेककेँ झाँकि पझाइत चिनगीकेँ लहका दैत छथि। जँ ओ सूक्ष्म दृष्टिक परिचायक छथि तँ ओ अपन सूक्ष्म दृष्टिक परिचायक भऽ साहित्यिक, राजनैतिक आ विचारधाराकेँ एकसंग इंगित करैत छथि। देखब, परखब आ स्पष्टतः ईमानदारीपूर्वक काज करब अवश्य एकटा चुनौती ठाढ़ करैत छथि। रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' अवश्य एहि चुनौतीकेँ स्वीकारैत अपन कलमक लोहा मनबैत छथि। लोक चेतनाक रचनाकार भ्रमर पाठककेँ समय आ संस्कृतिकेँ बुझयबाक भरिसक प्रयास करैत छथि। एहि

हनु हिनक नचना अवश्म यनम्यनाकँ नव नुयम यनिरािषिा कनैा नर्मानक दुनूक्षा यन रनिश्यसँ अन्दर्सम्बन्ध वनवैा अछि। साहित्य आ संस्कृतिसँ सम्बन्ध हिनका छात्रानस्थाहिसँ जागल। हिनक यहिल प्रकाशिा नचना 'स्वमानदान वालक' ज 1964 ई.म मिथिला मिहिनक ननाउटकाक चौयाउम आयल अछि। एकन वाद यीOिया(Oाक आO (गाट गीाक संकलन 'जवानीक दिन' 1965 ई.म प्रकाशिा रला।

नाम रनास कायउ 'अमन'क जन्म 2008 साल साउान 22 गाकS प्रमाणयत्रक अनुसानं वघचौउा, जिला- धनूषा, जनकयुन अंचल, गाविस वघचौउा, नार्ड नं.-1 म रला। ओहि गामक चौहद्दी अछि - उत्तन- मिथिलक्षन मौआटी गा.वि.स., दक्षिण- मानसिंह यट्टी गा.वि.स.। हिनक वंशावली अछि-

मनानथी कायउ

मीQ लाल कायउ

नामगुलाम कायउ ;यत्नी दुःखनी दवी

दयानती दवी सुकुमान कायउ नामरनास कायउ 'अमन' ;यत्नी- दलतीया दवी सानानती दवी

नामनानायण कायउ, प्रदीय कुमान कायउ, नगीना दवी, प्रमिला कुमानी दवी, संदीय कुमान

वघचौउा गामक नाम यउल रनैक ज ओउय वाघ वनाउन कनैा छलैक। ओहि Oामक जमीन काह-कहवैा छलैक ज अठास्ह-तीन

किलोमीटर दूरी धरि छल। हिनक जन्म सुसम्पन्न परिवारमे भेल छलनि। गाम बघौआ की कही, परोपट्टामे सबसँ धनीक घरमे। हिनक बाबूजीकेँ अड़ोस-पड़ोस जमीन, लाखक लाख लगानी, जमीन्दारीकेँ कर्ज दैत छलथिन। गामसँ बाहर सटल खेत छलनि। सोनहासँ लऽ कऽ बाढ़ धरि। बड़द खढ़केँ छल ने ठाढ़ि ठरयल ठाढ़ल छल। एहि बीचमे आनक जमीन नहि छल। एतय खेतमे सीख। एतय खेतक आनिसँ पानि पटाओल जाइत छल। पटौनी प्रकृति पर निर्भर छल। चूँ पहाड़क पृष्ठभूमि जे पहाड़ 25-30 कि.मी.बसी नहि होयत। पहिने 900 बीघा बाँधक छलैक। आब 300 बीघाक छैक जे बाढ़िकऽ पटाओल जाइत छलैक। ओना आब बाढ़क औचित्य समाप्त भऽ गेलैक। गण्डकनहरला बालिंग धँसाओल गेल छैक, मुदा सेहो उपयुक्त पता भऽ कऽ नहि छैक। आब पाइप गाछिककऽ ब्लग लगाकऽ मोटरसँ जल टानैत छैक। अर्थात् ठकुलसँ एक बीघा धरि पटौनी करयल जाइत छैक जाहिमे एक समयमे 5000 सँ 6000 टाका धरि लगैत रहैक, आब हजार लागिए जाइत छैक। धान, गहुम, पानी, सनिसा आदि मुख्य उपजा छैक। बघौआक पूब अनहरी नदी जकर चौड़ाइ 25 सँ 30 फीट आ गहराइ बस छैक। गाममे हिनक पिताक स्थिति- पाप जँ पूर्णतः सबल रहनि ने अधिकारी नामसँ सहो जानल जाइत छलाह। काना दाकान-दौनी एहन नहि जे हिनक नाम उचरला पर कठ पाइ माँगय। सबकेँ हिनक पिता पर विश्वास छलनि। ओ बघौआ गाम पञ्चायतक तीन खेप प्रधान रहलथि। ओना ओ गामक मुखिया आ तकर बाद दैत पद भऽ गेल प्रधान पञ्च। ओ गामक पञ्चैती करथि। हिनक बाबू राष्ट्रीय प्राथमिक विद्यालय बघौआ खोललथि।

ओ स्कूलमे अध्यक्ष रहलाह वा कही जँ सर्वेसर्वा येह रहथि। एहीमे मैथिलीक नवोदित प्रतिष्ठित पत्रकार ओ साहित्यकार श्रीश्याम सुन्दर कामति 'शशि' शिक्षक रहथि आ राजविराज कॉलेजमे प्राध्यापक रहलथि। ओना वर्तमान समयमे आर.आर.कैम्पस, जनकपुरमे छथि। हिनक बाबूजीक बाद हिनक ज्येठ भाय सुकुमार कामति अध्यक्ष रहलाह आ तकर बाद नामरमेश कामति 'अमर' दस वर्ष लगभग एहि पदकेँ सम्हारलनि।

नामरमेश कामति 'अमर' घरैसी-घरैया शिक्षा प्राप्त कयलनि। हिनक पहिल गुरु मधुकरही निवासी गणेश लाल जे धनगी पर रहबासँ ककहरा लिखब छलाह। अ आ सँ व्यावहारिक गणित धरि। तकर बाद निम्न माध्यमिक विद्यालय बलहीमे वर्ग 1 सँ 3 धरि पढ़लनि। ओहि विद्यालयक नाम एखन थिक माध्यमिक विद्यालय बलही जे बघचौड़ासँ 2 कि.मी. अछि। पयर आवाजाही। बहुत कठिनसँ (रेनाड़ू-अयनाड़ू)। बहादुर पकड़िकऽ लऽ जानि। पाटी आ कचना, करचीक कलम, बाँस ओछाकऽ बैसब आदि। वर्ग 4 सँ मैट्रिक अर्थात् एस.एल.सी.सरस्वती मा.वि.जनकपुर, साल 2025।

एकटा बात स्पष्ट कऽ देब उचित होयत जे 12 वर्षक अवस्थामे रघुनाथ पट्टी, मानसिंह पट्टी, ग्राम वि.स.क अन्तर्गत दलकीया देवीक संग विवाह रहलनि। पाँचम सन्तानमे तीन बेटा पुत्र आ दुटा पुत्री छनि। ई कहब अनर्गल नहि होयत जे हिनक जन्म जाहि कोठा पत्निवासमे रहल रहनि ताहिमे पढ़ाइ पर ओतेक ध्यान नहि छल। मुदा, अमर आई.ए. अर्थात् प्रवीणता प्रमाणपत्रसँ उत्तीर्ण कयलनि।

ओ बम्बईमे ई पढ़ाइक प्रारम्भ कयने छलाह स कहबाक बाद नामक व्यक्तिसँ ओतहि सम्पन्न वर्गक ओहि ठाम पढ़बैत छलाह। ओ जनकपुर ई अयलाह स युगल किशोर लालक प्रयाससँ बेद हिनक बाबूजीकेँ प्रति कऽ पढ़ौनीक लेल जनकपुर जबाक हेतु कहलनि। ओँ जनकपुरमे जगह-जमीन रहनि, एखनो छनि ओँ जनकपुरमे पढ़लनि। ओतय, डा. धीरेन्द्र सन शिक्षकक सम्पर्क भेलनि आ हुनकसँ प्रभावित भऽ अपन रचना-संसार बनौलनि।

ओ बचपनसँ हिन्दी पढ़ैत छलाह। पत्र-पत्रिका पढ़बाक हिनका शौख छलनि ई हमहूँ लिखि सकैत छी। खासकऽ लिखबाक अनुभूति ओहि समयक लोकप्रिय उपन्यासकार कुशवाहाकान्त, गुलशन नन्दा आ कर्नल रंजीतक जासूसी उपन्यास सभ पढ़िकऽ लगलनि। शिवसिंहक 'पपिहरा बाजय आधी राति' विशेष नीक लगैत छलनि। बालक, पराग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नर-नारी पत्रिका पटना आदिक पाठक ओ रहथि। हिनक लेखनमे विशेषकऽ यौनसँ सम्बन्धित नर-नारी प्रकाशित कयलक आ आयल। पूर्वक रचनाकेँ देखिकऽ हिनका नारी मनोरंजक विशेषरूप कहल जा सकैत अछि।

शिक्षा कहि देब उचित होयत ई समाज रचनाकारसँ प्रभावित रहथि। जहिना पढ़ाइमे तहिना खेल जगतमे। कहौ गँ Hero अर्थात् Healthy, Educated rich and organisation कहब ई पढ़ैत छलाह स अवस्था। जनकपुर अयलाक बाद ओ अपन गामक संग काठमाण्डू सिनेमाकेँ प्रथम पालीमे देखैत छलाह। डॉ.धीरेन्द्रक नेपाल अयलाक बाद एक नमूनक शिष्य समाज रहथि। डॉ.धीरेन्द्र ओँ

नहि रहैत छथि जे अमन नहि रहैत छथि। दुनू अगल-बगलमे रहैत छलाह। ताहूना डॉ. धीरेन्द्रक जीवनमे शिक्षाशिष्य ठेल-ठाकी छनि मुदा, अमन आ गुनगुनान पाथेय महत्त्वपूर्ण रहलनि। सर्वहारा वर्गक प्रतिनिधित्वकेँ ओ चिन्हलनि।

मैथिली साहित्य परिषद्क गठन भेल जे सचिव भेलाह नाम भेलास कार्याल 'अमन'। विद्यापति पर्व समारोह जानकी मन्दिरक प्रांगणमे मनाओल गेल। मातृका प्रसाद कोइराला, पूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल मुख्य अतिथि रहथि।

हिनका दहिना कपार पर चोटक चिह्न छनि। आम ओ तोड़ैत छलाह, संगमे खेल खेलाइत छलाह। आम लुटबाक लेल दौड़लनि जे एहि क्रममे टाटमे लागिकऽ कपार फुटलनि। ओ ओहि समयमे चतुर्थ वर्गक छात्र छलाह। तकर ओ बूझबो ने कयलनि जे कपार फूटि गेल अछि।

1968-69 मे हिनका अयन ज0 राय सुकुमार कार्यालक धनुष-बाणसँ हिनक आँखिमे बाण लागल। मायक मान्यता छनि माइक अर्थ छनि जे आइयो दृष्टि ठीक नहि अछि। सूपमे सरड़ बन्धु-जाग दऽ कऽ। ओ आरा काका मान्यता कयने रहथिन।

स्वास्थ्य जे ठीक रहनि जे बजारमे बस माटगन-ठटगन ना कहीं जे रोकना विलाउ रहथि। हुनकर दूध, घीक आ मीठा छुच्छ खाथि। सन्तुक्रम गुड़क चक्की आ सौंस टानामे बनकायल घीक भटनि स बस पावथि। डॉ. आर. एन. सिंह गणितक प्राध्यापक करैत रहनि हिनका

ई आबऽ बला समयमे ताड़ी पर तारा लादिकऽ लऽ जाय पड़त। हिनक बाबूक भट्ठी सुरजित रहनि आ खूब पीबथि। मुदा, हुनकर निधन 84 वर्षक अवस्थामे भेलनि। ओहि परिवेशमे रहितो अमर कहियो मद्यकेँ हाथ नहि लगौलनि। ओना तना भऽ कऽ चाह-पान वा कहीं तँ दु टूक सुपारियो न पबैत छथि। एहि वातावरण आ परिवेशसँ अपनाकेँ हुनाक रखने छथि।

हिनक प्रिय संगी कओ नहि रहनि। खासकऽ एहि ठामक। ओना छात्रजीवनमे मुजफ्फरपुरक कामेश्वर प्रसाद अवस्थी दस-पन्द्रह वर्षक मीत रहनि।

ओ जहिया एम.ए.कयलनि आ डा.धीरेन्द्रक कृपापात्र रहथि तँ ओ चाहितथि तँ हुनक कृपा-बलसँ मैथिली विषयक प्राध्यापक रहितथि। मुदा, ओ एहि सभकेँ नकारलनि आ पत्रकारिता दिस झुकलाह। तकर कारण छल ई आर्थिक सम्पन्नता। जँ कोनो अभाव नहि खटकलनि तँ नोकरीक विचार मोनमे नहि अयलनि। ओ मनमौजी प्रकृतिक रहथि तँ स्वतंत्र जीवन-यापन करैत रहल छथि।

2026-27 सालमे ओ वैदेही साप्ताहिक कार्यालय प्रतिनिधि रूपमे रहलाह। 2049 सालसँ कान्तिपुर राष्ट्रीय दैनिक पत्रक जनकपुर, संवाददाता रूपमे 5 वर्ष धरि रहलाह। प्रकाशक-सम्पादक भऽ ओ मैथिली 'अर्चना' पत्रिका प्रकाशित कयल। तकर बाद 'अंजली' नेपाली मासिक आ मैथिलीमे त्रैमासिक 'आंजन' प्रकाशित कयल। 2039 साल कार्तिक 4 गतेसँ गामघर प्रकाशित भेल जे नेपालसँ प्रकाशित पहिल आ एकमात्र समाचारपत्र साप्ताहिक अछि। जकर

प्रकाशन आरम्भ भऽ रहल अछि। सुप्रभात ओ नेपाली दैनिक एकर आरम्भिक सम्पादक सेहो रहथि। 'जनकपुर एक्सप्रेस' दैनिक अखबारक सम्पादन-प्रकाशन 2055 सँ सेहो करैत छथि।

पचास वर्षक इतिहासमे नेपाल सरकारक पहिल बेर साझा प्रकाशनक अध्यक्ष पद पर राजनीतिक नियुक्ति ओ ई नेपाल भरिमे 2021-22मे भेल अछि ई रामभरोस कापड़ि भ्रमरकँ बनाओल गेल। एहिना प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे नेपाल सरकार द्वारा ओ पहिल बेर मैथिली साहित्यकार भेल ई हिनक नाम एहि खातामे दर्ज छनि।

नेपालमे मानित रास उत्तम भ्रमर पहिल छथि।

1. पहिल बेर मायादेवी प्रज्ञा प्रतिष्ठान पुरस्कार 50,000 टाकाक हिनका देल गेलनि। ओ एहि लेल 2052सँ पुरस्कृत छथि।

2. 'नहि आब नहि' हिनक पहिल प्रेम काव्य छनि जे त्रिभाषामे प्रकाशित भेल अछि।

3. मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित नेपालक पहिल कथाकारक पोथी अछि 'तारा संग जबौ र कुजवा'।

4. नेपाल राजकीय प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित गोष्ठीमे 2048 सालक पुरस्कार पाँच हजार टाकाक 'सुली पर टाङल इजोत'कँ भेटल अछि।

5. काना नेपालीय नाटक 'एकटा आओर वसन्त' नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे मंचित भेल अछि। एहि पोथीक तीनटा संस्करण भऽ चुकल अछि।

6. अन्तर्राष्ट्रीय नाट्य समारोहमे एहि नाटककेँ द्वितीय पुरस्कारसँ प्रकाशित कयल गेल अछि।

7. 2067 सालमे हिनका 'पहिल लोक सामा संस्कृति' पुरुष मैथिली साहित्यकार केँ भेटल।

8. यात्री चेतना पुरस्कार चेतना समितिसँ भेटल।

9. लेखन सम्मान भेटलनि। ओ पुरस्कार लेखन प्रकाशनक हेतु थिक।

10. विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा द्वारा 'मिथिला विभूति सम्मान' भेटल छनि।

11. अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन द्वारा मुम्बईमे 'मिथिला रत्न' सम्मानसँ सम्मानित छथि।

12. 2069 क विद्यापति पुरस्कार प्राप्त कयने छथि 2 लाख टाकाक।

13. 'यात्री सम्मान' सिसौदिया सर्लाही द्वारा भेटल छनि।

एहिना आन कतिपय सम्मानसँ सम्मानित भेल छथि। सम्मानक बाद तन ऊ स्वयं देवल छथि। हिनका आब जे सम्मान भेटैत छनि से हिनक उपलब्धि अवश्य थिक। मुदा, हमरा लगैत अछि जे आब

हिनका लल सम्मान वाम यनक आँटी थिक। लखकक संग हिनक सम्पादनम नूचि नहलनि अछि। सम्पादकक सन्निनिष्ठद अछि सम्+यदन्। यैह क्रिया सम्पादन कहवैत अछि। संस्कृत यदम सम् उयसर्ग लागिकs सम्पादक शब्द वनैत अछि। कोना लखकक लिखल नचनाकँ व्याकनणक दृष्टिसँ ठीक कनव अर्थात् सर यदकँ सम् यानि ठीक कनवाक क्रिया सम्पादन थिक। कोना काजकँ यूनाकs याठकक सामाँ आनव सम्पादकक काज थिक। ओना ओ 'गामघन'कँ समाचान यत्र वनौन छथि आ 'आंङन'कँ साहित्यिक। मुदा, 'गामघनम सेहो साहित्यिक नचना प्रकाशित हs जाइत अछि। एकटा वात स्पष्टी ख्यान नखवक थिक ज साहित्य जँ यत्रकानिताम अवैत अछि तँ सानम सुगन्धि हाइत अछि। तहिना जँ साहित्यम यत्रकानिताक तत्व वसित घोंसिया जाइत अछि तँ गुउ (गावन हायवाक सम्भावना वस वढि जाइत अछि। कानण साहित्यम यत्रकानिता आविकs वसी सूचनात्मक आ तात्कालिक वना दैत अछि जखन कि साहित्य यत्रकानिताम आविकs अनूरूप सत्यकँ जगगियानकs माननीयगुण ओ दृष्टिकोणक आधान यन कहै तँ याठकक अन्तर्मनकँ अवस्स वसित स्फन धनि सकैछानि दैत अछि।

प्रमन कथा, कविता, उयन्यास, नाटक, लाकसाहित्य आ लाकसंस्कृति, साक्षात्कान, यात्रा-संस्मनण, निवन्ध, डायनी, शोध विषय आदि लिखलनि। हमना जनैत ओ मूलतः कवि आ तकन वाद कथाकान छथि। ओ वहुविधवादी छथि तँ स्वाभाविक अछि ज विभिन्न विधम हिनक नचना दम-खमक संग आयल अछि। हिनकी डविड (थाना कहैन छथि- 'सहसँ यैघ कलाकान नैह हाइत अछि ज अयन

जिनगीकेँ कलाक विषय बना लेने अछि'। एखन येह काज करैत छथि। ई स्पष्टतः लिखने छथि- जीवन एकटा गति छैक/ गतिक संग मनुक्ख आगाँ बढ़ैत अछि। संकलित ओहिमे धनि जाएब; नहि, आब नहि -अर्चना, वर्ष-8 कार्तिक 2087। हिनक पोथी 'नहि, आब नहि' यहिन कुमार अरविन्दहुनक नामसँ 'अर्चना'क 24 पृष्ठमे प्रकाशित भेल। दीर्घ कविताक रूपमे पोथी अछि। ओना हिनक पहिल पोथी कविता संग्रहक बन्न का0नी ओनाऽऽत धूआँ अछि जे 2021 सालमे आयल अछि।

हिनक नैतिक विषयक लेखनक उद्देश्य नहल अछि :-

1. विविध विधकेँ सुपुष्ट करब।

2. सामाजिक व्यवस्थाकेँ बदलबाक प्रयास करब।

3. स्वाभिमानपूर्वक अपन बातकेँ राखब।

4. ई जँ अपन वर्गक विवश लोक छथि तँ सर्वहारा वर्गक बातकेँ ध्वनित करब। अर्थात मूल्यबोधक संवाहक बनब।

5. तथाकथित वर्ग द्वारा जे चक्रव्यूहक घेरा बनाओल गेल अछि तकरा अपन लेखनीसँ तोड़ब। कही तँ कमजोर आ बेबस वर्गक बात उठायब।

6. एहन येह लकीर खीचब जकरा काटि लेखनसँ छोट नहि कऽ सकय।

7. दृश्य आ ध्वनिक सङ्ग एकटा अर्थ होइत अछि। एहि दिस ध्यान तेना रहऽ कऽ नहि जाइत अछि। तँ एकर सार्थक महत्ता उपस्थापित करब।

8. पठन, लेखन, प्रकाशन आ वितरण दिस सचेष्ट रहऽ नव पीढ़ीकेँ रचनाधर्मक बाट देखायब।

9. लेखनक हेतु भाषा आ शैलीमे नव-नव सम्भावनाकेँ खोजब।

10. नव पीढ़ीक निर्माण करब जे आत्म सजग रहऽ जनसमाजमे नव चेतना-जगबय।

ओ प्रायः बीसेक विधमे हाथ अजमौलनि। एतेक दून धनि जे समकालीन कविताक सशक्त हस्ताक्षर होइतो ओ गीत, गजल आदिक संग 'पिनामित' जे नव विध थिक सेहो लिखलनि। कथा, उपन्यास, निबन्ध आदि लिखैत ओ नाटक लिखबाक दिस अग्रसरित रहलाह। प्रस्तुत प्रतिष्ठानमे नाटक मञ्चनक बात उठल आ एकटा वरिष्ठ नाटककारक नाटक अस्वीकृत रहऽ गेल तँ मात्र सात दिनक अत्यन्त तत्कालीन उपकुलपति डा. ईश्वर बरालक आग्रह पर 'एकटा आर वसन्त' नाटक लिखायल आ मंचित भेल। एही नाटक पर फिल्म बनि नेपाल टेलिविजनसँ प्रसारित भेल।

ओ छोट-छोट नाटक प्रायः घंटा आध घंटा धरिक लिखैत छथि। 'नगाड़ी आबि गेल छथि', आ 'बौधू बाजि उठल', 'सूली पर ईसा' आदि बेस चर्चित-प्रशंसित भेल। लोकनाट्य जट-जटिन ;2064 साल, ऐया अञ्जौ अपन सानाज ;2067 साल आदि

दरभंगाक विद्यापति सेवा संस्थानक मञ्च पर सेहो जमल अछि। जनकपुरधाम आ आन ठाम जेना पटना आदिमे हिनक नाटक मंचित भेल अछि। रंगमंचसँ प्रेम आ रंगभाषा अर्जित करब श्रमसाध्य आ समय साध्य दुनू अछि।

ओ कैकटा पोथीक सम्पादन दक्षतापूर्वक कयने छथि। जेना लोनाक धान ;2050 साल, गामघरक 2046 क कार्तिक मासक आठम वार्षिक विशेषांक मथुरानन्द चौधरी 'माथुर' लिखित 'त्रिशूली' सम्पूर्ण खण्डकाव्य जे 1876 पृष्ठमे आयल अछि। 'गाम घर'मे सँ कैकटा वार्षिक अङ्क संस्कृति विशेषाङ्क' वर्ष-4, अङ्क-1, कार्तिक 2042, अक्टू-नव. 1985, मू. 25 टाका, नेपालक मैथिली पत्रकारिता 2044 साल आदि अछि। 'महाकवि विद्यापति आ नेपाल',''लोकनायक सल्हेस' दू खण्ड, लोकगाथा नायक दीनाभद्री ;2070 साल आदि सेहो चर्चित प्रशंसित अछि।

नाटक सम्बन्धमे एतेक तँ कहल जायत जे कथा, कविता, निबन्धादि जकाँ एक सृजन करबा नाटक नहि लिखल जाय तँ नीक। कारण, एहन नाटक लिखब नाटकक क्षमताक सौन्दर्यकेँ क्षति पहुँचायब थिक। कही तँ- 1. थियेटर एक्टिविस्ट 2. नियमित नाटक देखब 3. रंगमञ्चक आवश्यकतानुकूल नाटकक शिल्प, भाषा, पात्रक चरित्र-चित्रण, संवाद अदायगी, विषय- वस्तु आ बुनावटि आदि पर ध्यान केन्द्रित करब थिक। 4. दृश्य संयोजनकेँ बूझब 5. पात्रक अन्तर्द्वन्द्व आ बाह्य चरित्र-चित्रणकेँ ध्यान राखब 6. शब्दक मितव्ययिता 7. मंचीय प्रदर्शन आदि विशेष महत्त्व रखैत अछि। नाटककार एमहर एहि सभ बातकेँ नीक

जकाँ जनैत-बुझैत नाटक लिखैत छथि। संगहि गीतक परिकल्पना सेहो करैत छथि। ओना तँ ओ प्रारम्भसँ नाटकक मंचन आ सिनेमा भरपूर देखथि। ओ ऐतिहासिक नाटक 'रानी चन्द्रावती' 2045 सालमे लिखलनि। मुदा, नाटक दिस हिनक बढ़ैत रुझान हिनका प्रगति आ प्रयोगपरक नाटक लिखबाक हेतु बेस आकृष्ट कयलक। ओ तीनसँ टेलीविजन पर होइत टेलीफिल्म सभकेँ देखथि। अधुनातन दृष्टिएँ ओ नाटक लिखबा दिस प्रवृत्त भेलाह। कारण छलनि हिनक जिद्दपना ओ जिद्दपनाक फलस्वरूप कैकटा नाटक लिखने छथि। किएक तँ नेपालक मैथिली नाटककेँ नाटक बूझल नहि जाइक। शासन, जे संस्था मिलाय नाटक करय ताहिमे कोना एकटा खास व्यक्तिक मात्र नाटक खेलायल जाइक। एही वर्चस्ववादी नीतिकेँ तोड़बाक आ मानसिकताकेँ जागृत करबाक उद्देश्यें ओ एक समयमे नाटक लिखबा पर जोर देलनि। ताबे नहि, मञ्चक खगताकेँ देखैत नाट्यमंचन हेतु अपन रुचि लैत कैकटा संस्थासँ सम्बन्धित भेलाह। एतेक दूर धरि जे एहि लेल ओ संघर्षपूर्ण चुनौतीकेँ स्वीकारलनि। अपन तँ नाटक लिखिकऽ प्रकाशित करबे करथि जे आनोकेँ नाटक लिखबाक हेतु प्रेरित कऽ प्रकाशित कयलनि।

ओ प्रेमपरक अभिव्यक्ति विभिन्न विधामे बेस कयलनि। मुदा, ओ जखन कालक्रममे उदासीन भेलाह तँ हिनक रचनामे एकटा नव स्वर आयल। ओ अभिव्यक्तिमे मात्र करुणा आ दया-दान उपजयबला प्रसंग धरि सीमित नहि रहि मानवीय संवेदनाकेँ बेस जगजियार कयलनि। यैह भेल माने जे समयानुकूल अनुरूप स्वयंकेँ प्रतिपादित करबामे भेल। ओ जे बात अपन कथाक माध्यमे कहैया चाहलनि, मुदा

युद्धोः कहि नहि सकलाह स मानवीय संवेदनाकेँ आगाँ घसीटैत करैत, मानवताक परचम ०१८ छोड़ैत, देश-दुनियाक आ खासकऽ नेपालक परिस्थितिगत परिवेशक उद्घाटन क्रममे मानवीय मूल्यवत्ताकेँ समक्ष रखैत 'घनमूलहाँ' उपन्यास लऽ अएलाह। एकटा बात छैहि, कहब सर्वसिद्ध अछि जे नवका हिनका परिचयन लगलनि, लगब कयलनि ताहि पर आगाँ निबन्ध कलम चलौलनि। 'सूली पर टाँगल छैजात' निरसहुद अन्तर्राष्ट्रीय स्तरपरक नीक कवितामे परिगणित होयत तँ ताहि पर नाटक अछि।

ओ मानाश्रमा सेहो लिखलनि। टी स्कॉलवाली मुनियाँक व्यथा-कथा ओ दु गोट निबन्ध लिखलनि। छैी सत्य अछि जे मनाषानकेँ अभिव्यक्ति करबाक हेतु ओँ सम्पूर्ण आकार काना एकटा निबन्ध प्राप्त नहि हऽ सकैत छैक तँ आना-आन निबन्ध नवनाकानक नवना होयब स्वाभाविक अछि। ताहिमे श्रमन? ओ अपन नवनाकं चमकयबा हेतु आन निबन्ध तँ उपयोग करब कयलनि जे प्रचार-प्रसारक दृष्टिएँ आन भाषाकेँ सेहो चुनलनि। कहो तँ आना भाषामे अपन मातृभाषा मैथिलीकेँ पचौलनि। बहुभाषाविद् श्रमनक योगदान नेपाली, भोजपुरी आदिमे अछि।

हिनक अनुसन्धानक दृष्टि जाहि काना कानोँ वन-प्रान्तर वा स्थल-विशेषकेँ देखि-सुनिकऽ लिखबाक हेतु बाध्य कयलकनि। ओ एहि लेल वन-वन बौआयल छथि। लुम्बिनीक गौतम बुद्धक स्थलसँ लऽ कऽ दीनाभद्री, सलहेस आदि लोकगाथापरक स्थल धनि घूमि आयल छथि। ओहिना मान अछि जे गाजा सलहेसक फूलबाड़ीमे फूलाइत

ओ हानम स्कूल ज असमयम दखन छलाह। ओना ई स्कूल स्थानीय लाकाम हानम कहल जाइत अछि, मुदा ई थिक आर्कित। ओहि स्कूलकं दखित ओ यहिन अवस्थित रलाह आ गकन वाद लाकेँ मनूहान यन अगिनिक्क प्रसन्धाक लहनि घोटि आयल छलनि। सहजा आ जिज्ञासा दूनू राव दखायल छल जना ननयनक काना कल्पित नष्ठ रहि गेल हानि।

ओ विज्ञान स्राटाग्राहन छथि। हूनका स्राटाग्राही कनवाम वस नूचि छनि। नव-नव नष्ठकँ दखव, नव-नव स्थानक यनिभ्रमण कनव, नव-नव विषय-नष्ठकँ उठायव ना कही गँ ननगाक यऊधन ओ जिज्ञासु नहल छथि। ठीकसँ विटिआयव गँ हिनक नचनाकँ यढ़ि वूझि जायव जँ आलखक संगहि स्राटा सह-प्रामाणिक, यथार्थयनक आ विश्वसनीय थिक।

ओ ठन-ठाकी किगाव जहिना लिखेँ छथि स लगहग यचास धनि हायवा यन हानि। गहिना ओ ठन-ठाकी याथी कीनेँ छथि, संग्रहित कनेँ छथि, यढ़ेँ छथि। ओ स्वयं मानक साहित्यकान छथि। मुदा, जँ काहू काना सहूह हाइत छनि गँ काना न काना प्रकानं गाकि-हनिकS ना सुयाग्र आ गद्विषयक विद्वानगणसँ सम्यर्क कS अयन कलमकँ साधेँ छथि। प्रयास नहेँ छनि ज शाधयनक प्रवृत्ति हाअया 'नाजकमलक कथा साहित्यम नानी' विषयक याथी छनि। प्रायः ओ ओहि यन शाधग्रन्थ लिखवाक प्रयास कयन छथि। जँकि हिनका ताङ्गनी उयाधिक गाक आवश्यकता नहि वूझयलनि, ओना ई मानद उयाधि ओकटा संस्थासँ रहला छनि जाहि संस्थाप्रदत्त यन कगियय

𑒖𑒢 𑒁𑒨𑒢 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒰𑒿𑒧 𑒛𑒼. 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒁𑒨𑒢 𑒬𑒼𑒡 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒢𑒱𑒨𑒧𑒞𑓁 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒲? 𑒏𑒞𑒱𑒣𑒨 𑒖𑒢 𑒞𑒿 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒰𑒿 '𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩' 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒎𑒩 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒥 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮𑒴𑒮𑒏𑒧 𑒑𑒳𑒝𑒰𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒲 𑒫𑒰 𑒦𑒩𑓂𑒞𑓂𑒮𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒲 𑒞𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒢 𑒯𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒢 𑒁𑒯𑒱𑒞। 𑒮𑒫𑒰𑒪 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒮𑒢𑒲𑒨𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒿 𑒬𑓂𑒩𑒧𑒢 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒩𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒚𑒹𑒢-𑒚𑒰𑒏𑒲 𑒯𑒲𑒞-𑒧𑒲𑒞 𑒕𑒢𑒱 𑒞𑒿 𑒥𑒮 𑒬𑒞𑓂𑒩𑒳𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒼𑒮𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒍 𑒁𑒨𑒢 𑒣𑒟𑒮𑒿 𑒁𑒐𑒢𑒼 𑒙𑒮𑒮𑒿 𑒧𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒁𑒨𑒢 𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒪𑒹𑒐𑒢-𑒏𑒩𑓂𑒧𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒡𑒢𑒰 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒍 𑒁𑒛𑒱𑒑 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒖𑒢𑒻𑒞-𑒥𑒴𑒗𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒂𑒐𑒩 𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨𑒫𑒰𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒨 𑒧𑒴𑒪𑓂𑒨𑒰𑒓𑓂𑒏𑒢 𑒏𑒩𑒥 𑒏𑒩𑒞।

𑒍 𑒏𑒐𑒢𑒼 𑒁𑒨𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒧𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒿𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒢-𑒍𑒜𑓃𑒢𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒢-𑒮𑒯𑒢 𑒍 𑒪𑒹𑒐𑒢-𑒏𑒩𑓂𑒧 𑒡𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒏𑒞𑒯𑒳𑒮𑒿 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒮𑒧𑒗𑒾𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒥𑒰𑒙-𑒧𑒰𑒙𑒮𑒿 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒳𑒢𑒱 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒒𑒰𑒮-𑒣𑒰𑒞, 𑒏𑒰𑒿𑒙 𑒡𑒩𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒏𑒕𑒰𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒢𑒰𑒏 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒦𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱, 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒍𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒢𑒱 𑒞𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒦𑒩𑒣𑒴𑒩 𑒧𑒠𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒍 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢 𑒕𑒟𑒱। 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒪 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒩𑒰𑒖𑒬𑒰𑒯𑒲 𑒬𑒰𑒮𑒢-𑒏𑒰𑒪𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒪, 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰 𑒣𑒩 𑒮𑓀𑒨𑒧𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒁𑒫𑒡𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒮 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑒱। 𑒂𑒃 𑒢𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒖𑒰𑒞𑒰𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒨𑒳𑒑𑒧𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒐𑒴𑒥 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒚𑒹𑒢-𑒚𑒰𑒏𑒲 𑒏𑒱𑒞𑒰𑒥 𑒪𑒱𑒐𑒱𑒨 𑒪𑒹𑒥 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒐𑒰𑒮 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒐𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒿𑒏𑒱 𑒑𑒳𑒝𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒋𑒿 𑒍 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒩𑒔𑒢𑒰

देलनि अछि जाहि बलेँ ओ समादृत छथि, रहब करताह। हमरा ओ हुनक व्यक्तित्व-कृतित्वकेँ मूल्याङ्कित करबाक सुअवसर भेटल अछि से आब हुनक सद्यः प्रकाशित पोथी 'मिथिलाक लोकजीवनः लोक संदर्भ' पोथीक विमोचनक सुअवसर पर भेटल अछि। एहि तिथि 08.05.2022 कऽ बेलकम, जनकपुरधाम, नेपालमे ई आलेख पढ़ैत हम अपनाकेँ गौरवान्वित बुझैत छी। प्रभावशाली आ प्रासंगिक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक धनी रामभरोस कापड़ि भ्रमरक सम्पूर्ण पचास वर्ष की, रचनाकाल 58 वर्षक परिदृश्यकेँ मूल्याङ्कित करब ताक सहज नहि अछि। तेँ हुनक सम्पूर्ण साहित्यिक साधना ओ जीवन-कर्मसँ सैद्धान्तिक आ व्यावहारिक पक्षकेँ एकटा छोट-छीन आलेखमे गुम्फित कऽ लेब ताक साध्य आ सरल नहि अछि। ई हम मानैत छी जे हुनक रचनाकर्म पर जाहि ढङ्ग ईमानदारी आ वास्तविकताक संग आलोचना-प्रत्यालोचना होयबाक चाही से नहि भऽ सकल अछि। जखन कि हुनक रचना-कर्म उपेक्षित रहल अछि सेहो नहि कहल जा सकैत अछि। पैघसँ पैघ साहित्यकार हुनक रचना पर वा कही तँ पोथी पर कलम चलौने छथि। किछु जनक नजरिमे ओ खटकैत छथि तँ कतिपय भद्रजनक आँखिमे बसल छथि। साहित्य आ साहित्यकार दुनू कोटिक ओ रचना करैत छथि। किछु फरमाइशी रचना सेहो छनि। दबावमे लिखल गेल फरमाइशी रचना जँ कखनो कऽ अपन मूल्यबोध निर्धारित करैत अछि तँ बेसिये एहन रचना हलुकबैत अछि। मुदा, मुक्त भऽ आत्मसात रचना जँ कागत पर उतरैत अछि तँ निस्सन्देह फलदायी बनैत अछि। हड़बड़ी-धड़फड़ीमे लेखक बनबाक लोलें फेसबुकिया रचनाकारसभमे बेसिये साहित्यिक घातक बनैत अछि। जँकि हुनक

नचना मूल्यावाधक कसौटी यन सही उगनैा अछि गँ आल्स्या ह्लिनक नचनाभक जति आना गहींन अछि आ जमीनसँ झउल टिकल अछि। सह्मति-असह्मतिक सन्निविद्गु यन ०।८ ग्रमन अयन नचनावलं कही गँ नचनाभक यनिद्गुथकँ उत्गनवाम सऊम छथि। कालान्दनम ह्लिनक कर्म-धर्म अवश्य रनिश्यक यीढीसँ आभीय सम्बन्ध वनौन नाखन आ समयक संग संवाद स्थायित कनैा नहत। कतियय जनकँ रनिश्यम निश्वासा नहि ह्लायत जे ओहन सक्रिय नचनाकान ओतक काज कs क्रान्तिक लौ जगा दन छथि। उ जँ जीवट छथि गँ ह्लिनक आमकथा दखवाक लिलसा हमना जगल अछि। ओहि निधक याथी मैथिलीम अयल्थ अछि आ ह्लिनक ओहि निधक छूटल याथीसँ या०क लारानित्ति ह्लायत।

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन** **य०।उ।**

२.१२.डा. राजेन्द्र विमल- रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'- प्रसंग आ प्रतिक्रिया



डा. राजेन्द्र विमल

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क उपन्यास 'घरमुहाँ'- प्रसंग आ प्रतिक्रिया

कार्यकारण शृंखलामे सुगुम्फित जाहि गद्य कथानककेँ उपन्यास कहल जाइत अछि, जाहिमे अपेक्षाकृत अधिक विस्तारसँ जीवनजगतक अनुरूप कएल यथार्थकेँ कल्पनासँ रचि कए रसात्मक विचारोत्तेजक रूपमे प्रस्तुत कएल जाइछ। मैथिलीक ख्यातनामा आख्यानकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल उपन्यास 'घरमुहाँ' नेपालक मधेसआन्दोलनसँ उपजल उमड़ल जनआकांक्षा, मोहभंग, विकृति, पीड़ा, संवेदनात्मक उद्वेलन, विचार आ

जटिलताकेँ ध्यान यथार्थपरक चित्रावली उपन्यास समन्वय दर्शनसँ मर्मस्पर्शी बनि पड़ल अछि। आन्दोलन जखन एक बेर ऐतिहासिक उँचाइ ल' रहल होइत अछि तँ उग्रहिम आन्दोलनकारीक हृदय भ्रष्ट रूप द्वारा सामाजिक प्रतिष्ठाक नकली खाल उतारबाम सहल गुण्डाक सरदार कामधेनु सन आपराधिक मनोवृत्तिक व्यक्ति सभक निरन्तर प्रवेश होएत लागल छैक। हत्या, अपहरण, आतंक आ डर धमकी द्वारा ई वर्ग खास कए पहाड़ी समुदायसँ पैसाक उगाही करैत अछि। अपन अधिकार, पहिचान आ विकसित मुद्दाक एहि विचार जनक्रान्तिमे शहादत देल युवकसभक प्रथम दिन लहासपर लहास खसि रहल छै आ उम्हर ई लूटपाट पहाड़ीक दोकान सभमे आगि लगा रहल अछि, सामान लूटि रहल अछि, ओकरा सभक घरपर पाथर फेकि आतंक पसारि रहल अछि। आतंकभरल एहि वातावरणमे पहाड़ी होइत [illegible] मास्टर रमेश उपाध्याय अपना घरमे डर दुबकल रहैत छथि। मोन तँ मास्टर साहेबक होइ छन्हि जे अपन मधेसी मित्र जगमोहन अधिकारी जकाँ जुलूसमे जा जोर जोरसँ नारा लगा। आन्दोलनकेँ समर्थन दिऐक, मुदा सोचै छथि "जे उन्माद एखन युवा सभमे छै ओ की हमर (पहाड़ी) अनुरोधकेँ पचा सकत?" अहंकारसँ भरल मास्टर साहेबकेँ अपन घर ल' अनबाक विचार जगमोहनकेँ होइत छन्हि, मुदा मास्टर रमेश एहि दुआरेँ अपन मधेश आन्दोलनक अगुआ मित्र जगमोहनक घर जाएसँ अस्वीकार कए देल छथि जे कतहु आन्दोलन कमजोर न पड़ि जाइक। १ जून २००७, २७ जुलाई २००७, २८ जुलाई २००७, ७ अगस्त २००७ क' वार्ता असफल भेलाक बाद ३० अगस्त २००७क' २६ बुँदापर सहमति

होएब मुदा कार्यान्वयनमे आनाकानीसँ आश्वासनक ढेर उपर लगाए ऊपर ऐतिहासिक दस्तावेज अछि, ई उपन्यासमे प्रस्तुत भेल अछि।

मास्टर नमेश उपाध्यायक नियन्त्रिक नमिस्रा अउान सघन नखन अउान सघन भ' जाइत छैथि जखन हुनका पता चलैत छैथि जे हुनकर बेटी किनेश दक्षिणवनिया टालक कामेश्वरक बटा नाजीनसँ प्रेम करैत अछि। ताबत ओ ककरा न बूझल छैक जे गामक सम्पन्न आ सम्भ्रान्त मानल जाएवला व्यक्तित्व कामेश्वर गामक ब्याप्त हत्या, अपहरण, बलात्कार आदिमे संलग्न गिरोहक मुख्य सूत्रधार आ खलनायक अछि। मास्टर महानियन्त्रिक समृद्धमे उबरब कैत नहल छथि कि बेटी किनेशक अपहरण भेल जाइत छैथि आ दश लाख टाका फिरौतीक लेल हानसँ दिन नाति धमकी आबए लगैत छैथि। मास्टर अपन सम्पूर्ण सम्पत्ति बेचिकए निस्तारित होएबाक लेल बाध्य छथि ताबहुन कामेश्वरक एकलौता बटा नाजीन अपन बापक कुकृत्यसँ परिचित भ' जाइत अछि आ मायक माध्यमसँ किनेशक मुक्तिक लेल दबाव बनबैत अछि। कामेश्वरकेँ ओ जानि भ्रान्ति होइत छैक जे ओ उएह किनेश थिक जकरा पुत्र बना घर अनबाक मान हुनक परिवार बना चुकल अछि। बहुत बढि चुकल मास्टर नमेश उपाध्यायक उकर पनम मित्र जगमोहन आ अपहरणकारी कामेश्वर गाम घुरा अनबामे सफल होइत छथि।

आख्यानकार 'भ्रमर' अपना समयक प्रामाणिक खिस्सा आबएबला पीढी दर पीढीधरि सूनएबामे उत्सुक छथि। ओ प्रस्तुत उपन्यास मूल ऐतिहासक मूखन सहायक भए गेल अछि। राजनैतिक घटनाक्रमक

धनागलयन कल्पनाक रूद्दा, मृण्दिका, सन्दी, स'न आदिसँ समकालीन मधेसक जीवन्द मूर्गि गैयानक' सामाजिक सम्बन्ध वन्धक नागमयगाक नंग रुउन्नल गेल अछि ज हृदयदानी अछि। उपन्यास ऐगिहासिक मरुन्नक दावदान एकू कानधं अछि ज ई यदिल नयालीय मैथिली उपन्यास थिक ज समकालीन नाजनैगिक घटनाक्रमयन आधागि अछि।

नमश उपाध्याय, जगमाहुन, कामश्वन, नाजीव, किनध, वन्दा, लुखिया आदि सन नर्गीय प्रगिनिधि यात्र अछि। सम्वादम स्वारागिकगा आ सजीवगा छैक। रााषाशैलीक नाटकीयगा आ चित्राग्मकगाक कानध उपन्यास आदिसँ अन्हरागि सिनेमाक नीलजकाँ चलैग अछि, ज पाठककँ आनन्दसँ अन्धानि वन्हन नरैग अछि। यदाउी मधेसीक एकगा संवर्धनक उद्देश्यसँ प्रेरिग एहि उपन्यासक यात्रा उवउखावउ, यदाउ जंगल, खूनपतियाक जटिल यात्रा नहि, साम सपाट मैदानक सनल सनस यात्रा थिक ज सनसनाकए अयन गन्धध्वनि यहुँचैग अछि। गँ उपन्यासक संनचनाम पँच पाँच आ उमनाहरि नहि अछि। मधेस मिथिलाक आम लाकक रााषाम प्रयुक्त 'लडका', 'लरका', 'वठका', 'खूसी' आदि शब्दक सचग उपयाग उपन्यासक रााषाकँ सहज स्वारागिकगा आ अरिन्नगा प्रदान करैग अछि। आख्यानकान श्री 'उमन'क ई सघःजाग कृगि नयालीय मैथिली उपन्यास साहित्यक एक गाट उपलब्धि थिक, गाहिम सन्दह नहि।

अयन मंगव editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१३.डा.रामदयाल राकेश- पुस्तक जे हम पढल-श्री राजेन्द्रसक कथात्मक संसार



डा.रामदयाल राकेश

पुरुषक आ हम पढल-ओही रांगनसक कथाक संसार

रामभरोस कापडि 'भ्रमर' मैथिली साहित्य आ संस्कृतिक उत्तम परिचयक मुहताज नहि छथि। ओ एकसाथ कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, कवि, संस्कृतिविद आ यात्रा संस्मरण लिखनिहार छथि। एक शब्दमे कहल जाए त ओ बहुमुखी प्रतिभाक धनी साहित्यकारक रूपमे सुपरिचित व्यक्तित्व छथि। समीक्ष्य कथा संग्रह, ओहीरांगनसम संग्रहित किछु कथासभ स्मरणीय, पठनीय आ संग्रहणीय रहि सकैत छैक जकर विस्तृत व्याख्या, विश्लेषण, चर्चा परिचर्चा बहुत अर्थमे समय सापेक्ष, सान्दर्भिक आ समसामयिक संसारक विभिन्न परिस्थिति एवं दृष्टिकोणसँ कएल जा सकैत छैक। मुदा संक्षेपमे यहाँ एकर वैशिष्ट्यक उद्घाटित करबाक प्रयास कए रहल छी।

भ्रमरक कथा सभ अपन समय आ समाजक अर्थपूर्ण आख्यान कहल जा सकैत अछि। वास्तवमे हुनक दृष्टिबोध अत्यंत व्यापक अछि

आउन कथात्मक संसारक आयाम सेहो विस्तृत एवं वैशिष्ट्यपूर्ण छैक। एक आन किछु कथा महानगरीय जीवनक लेखा करैत जा सकैत छैक त दोसर दिस ग्रामीण जीवनक वा जनपदीयक जीवनक जीवंत दस्तावेज। मिथिलाञ्चलक जनजीवनक विविधरंग, विविध पक्ष, विभिन्न आयामक उद्घाटन करबामे हुनका महारत हासिल भेल छन्हि। समीक्ष्य कथासंग्रहक सभ कथा रेखांकित कर योग्य छैक आ कथा शिल्पक दृष्टिकोणसँ बजात करैत जा सकैत अछि।

कथासंग्रहक किछु कथाक परिवेश आ पृष्ठभूमि मिथिलांचलक माटि पानिसँ सम्बन्धित छैक आ मिथिलांचलक सामाजिक संरचनामे जे अभूतपूर्व परिवर्तन दिनानुदिन भेटल जाइत छैक तकर सटीक आ सांदर्भिक संकेत एवं सूचना पाठक सभकेँ दऽ सकैत छैक। कथाकार मनोयोगपूर्वक एवं महत्त्वसँ कथाक शिल्प (क्राफ्ट) तैयार करबामे निपुण देखि पड़ैत छथि।

भायनससँ युक्त संसारमे भ्रमण एही भाइनसयुक्त कथा लिखबाक साहस ओना सकैत छथि मुदा परिवेश एवं पृष्ठभूमि त जनकपुरसँ काठमाण्डुधनिक जीवनक चित्रणमे लगनशील भऽ जनकपुरमे रमाएक लालसा व्यक्त कऽ रहल छथि। हुनका पत्नीक काठमाण्डुक वातावरणमे काबारस नै भेटैत छैक तखन ओ काठमाण्डु जयबाकप्रति हुनका कोनो चाव नहि देखल जाइत छैक। दाम्पत्य जीवनमे कोनो भाइनसक प्रवेश नहि होय एकर खूब ध्यान रखैत छथि पाहिलल अपन परिश्रम पर हुनक ध्यान बेसी रहैत छैक। दु घंटाक बदला चारि घंटा खाना पकाबमे लागि जाउ कोनो बात नहि मुदा घरक भायनसक भयस

ओ यजमान रहए जाइत छथि। ई राजनरस कि ठीक ए काज शासन जनानी क खाना पकएबाकलेल नहि जाखि सकैत छैक। ई राजनरस तात्विक राजनरसँ भयानक लगैत छन्हि।

आश्रीयु कथाम दलितंगाक अत्याचारक अनुरूप आ वास्तविक वर्णनीक ववाक चित्रण भेटैत छैक। अपन वमान राष्ट्रीक यीतासँ यीतिए कथाकारक अनुभूति कल्पक दलद थैदा कबैत छैक देखू ! जीवन आ मृत्युक बीच संघर्ष करैत हमन रैया, हमन अरिदलानक...। हमना लेल आब असहनीय रहल जा नहल अछि।

'अमृत यान' कथाम कथाकार मध्यम आश्चलनक दीनान यानिन गिरानक सनस समयायन नहि पढ़। सकल घन यन्तिान आ धार्मिक चित्रम सफल देखना जाइत छथि। शासन दिश गिलना चुउा कारक सुअदगन लगैत छैक ज अमृत यानसँ कम नहि छैक। दाकान यन चारुकय दलवाला मनद एकना सनानम चारुक बूढ़ी सदाक लेल निसन जाइत छैक। कथाकारक सांस्कृतिक संवेदना कारक धनीरूप छैक गकान स्पष्ट चित्रण करबाम सफल छथि।

क्रा द्वितीय ऊछीक एकटा तिब्बाम यात्रा करनाक आनन्दानुभूति आ यौनिक आकर्षणक आनन्दक वर्णनम कथाक कथानक्रू सफल छैक।

'ब्लाउज नं. एक तीन' कथाम धऽ ब्लाउज कारी प्राजक्रम काजकएनिहान सएक हेतु बनाउल ब्लाउज छैक। यही ब्लाउजक यूनान या नन अनुरूप वर्णन ए छैह आत्मीय सम्मानक संभावनाक गलाशम मानवीय संवेदनाक वटानबाम कथाकार सफल देखना जाइत

छथि। यनाकंयन शीर्षक कथा १९९२ सालक महाभुकम्पक यनाकंयनक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल छैक। नव घनक निर्माणक यनिश्रम आ यही घनमे वासक खुशी कनका वनक यनाकम्पनसँ यनिर्निन नहि भऽ सकैत छैक। यी कथामे सहो कथाकान मानवीय संवदनाक स्रोत गयानीमे वहुत नाश सरक खनव कएन छथि आ सैनिक सुख प्रनिमे प्रसन्नताक वर्णन। यनिर्नान शीर्षक कथामे दाम्पत्य जीवनक द्वन्द्व चित्रण कएल गेल छैक आ यी द्वन्द्वक वर्णनमे कथाकान द्विविधा ग्रस्त मन स्थितिक वर्णनमे सहो सरल। यी कथाक कथानस्तुक कथानकमे मैथिली आ हिन्दीक यूट नतक कथाउयन स्वाभाविकताक निर्वाह कएन छथि।

मूनिया टी सुल मिथिलाञ्चलक जीवनमे प्रायः धटित हामनाला कथानकक कथाउयन अपना प्रतिहासँ प्रकट कनवाक लल प्रयासशील देखना जाइत छथि। गामघनमे काना चाहक दाकानमे एहन घटना प्रायः घटित हाइत नहैत छैक। दाकानयन यदि काना सून्नी छैक त ओकन दाकान खूब चलैत छैक ओहि दाकानयन खूब भीड नहैत छैक आ किसम किसिमक गहँकी अनाइती स्वाभाविक छैक। कनक गँहकी सभ चाहक लाथे आ लाभसँ वसी नमीलवालीक नूपनंग आ हावभाव यन नमना जकाँ नस चूसक लल ललाहित नहैत छैक। एकदिन ओ सून्नि अपन पति वला वच्चा सभक छाति क एकटा छौता नामधनक साथे भागि गेलै। यी गामघनक लल सभसँ वसी चर्चित धटना भऽ गेलै ओ सर्व स्वाभाविक छैक।

समीक्ष संग्रहक मासून पिस कथा छैक अन्नधन लक्ष्मी। यी कथा मध्येशक धनागतीय यथार्थक चित्रणमे सफल छैक। एकना यूवक आ

युवतीक मन स्थिति आ मनोविज्ञानक चित्रणमे वजात छैक। एकरा यनियका युवती जे थानक स्वदाम पति गर्भिणी भऽ जाइत छैक आ ओकरा ओकर अधिकसँ आदमी (धोखा दऽ दैत छैक। एहिमे ओकर वेदनाक बड़ सटिक ढंगसँ व्यक्त कएल गेल छैक। ई युवती एकटा युवकसँ प्यार आ वासना महिलासँ निजिप्त।ँ एहि कथाक मुख्य उद्देश्य छैक। गरीबीसँ आर्थिक उन्नति न व्यक्तिक जीवनमे आनि दैत छैक मुदा सामाजिक संरचनाक स्थापना कऽ दैत छैक।

मुदा ई कथाक सुखान्त बनाबक कला कथाकारक विशेषता मानल जाए सकैत अछि। सम्पूर्ण कथा वेदनासँ भरल छैक मुदा एकर अन्त सुखान्त पढ़क सराहनीय ढंग कथाकारक कलाकारिताक विशेषता छैक।

गंगा प्रसादक स्वाभिमान शीर्षकमे सुराक मार्फत गरीबीक व्यवस्थापन व्यंग्यक वाण प्रहार प्रशंसनीय कहल जा सकैत छैक।

'प्रतीक्षा' कथा ग्रामीण जिन्दगी आ शहरी जीवनक बीचक अन्तर्द्वन्द्वक चित्रण करबामे सफल मानल जा सकैत छैक। दु संस्कृति आ भाषाक कारणेँ जिन्दगी द्वन्द्वमे फँसि जाइत छैक आ सभ सुखभोगसँ वञ्चित। एकटा कहबीमे सम्पूर्ण कथाक सारांश स्पष्ट भऽ जाइत छैक लेना न देना बिन् झुझुनीक बना।

'दहेज' शीर्षक कथामे पुरान विषयवस्तु क वर्णनक माध्यमसँ कथाकार नव समस्या या ज्वलंत समस्या जे मिथिलाञ्चलक छैक तकरा बचाक वर्णन आधुनिक संदर्भमे करब हुनक उद्देश्य देखना जाइत छैक।

खातीक दृष्टिमे काज करबाक शान (शोकाग क प्रदर्शन आ दहेजक बेशी माँगसँ सम्पूर्ण मिथिलाञ्चल आक्रान्त अछि। कथा यऽ कलयैग कल्यैग कहैग छैक ज हमना हँसियासँ बेशी माँग हल मगन एकन काना सुनूनाऽ्ऽी वन यऊक लाकसहसँ नहि हलासँ सम्पूर्ण यनिवानम निनाशा हानाऽ्ऽी काना आश्चर्यक गप्प नहि छैक। कथाकानक काट सयम काक सयगा छैक देखु

"आव ग विआहम माटनसाऽ्ऽकल नहि हाऽ्ऽग गँ निआह कौंसिल। एखन घनवालीसँ वसी महत्व हऽ (गेल छैक माटनसाऽ्ऽकलक। निआहसँ पूर्व घनवालीक अनुष्ठान नहि, माटनसाऽ्ऽकल क अनुष्ठान देखऽ चाही। एहिसँ यीत, अयमान दुर्घटना सहा वसीय धटिग हऽ नहल अछि। मुदा वटावाला सरकलल धनसन।"

'उतान' कथा नया कथात्मक (शैलीम लिखल (गेल छैक। यी कथा नाटकीय (शैलीम लिखि क कथाकान एमन नव प्रयाग कनवाक काशिशम छथि। दृश दृश्यम लिखल कथाक निवाउम की छैक ग अयन धनगी यन प्रम आ संस्थान यञवाक। 'उतान' शीर्षक कथाक मुख्य कष्ट सहा नमिटस्म छै जकना वल्द सामाजिक आ यानिवानिक सम्बन्धक नकानात्मक असन देखना जाऽ्ऽग छैक। गसर्थ कथाकानक कथन सार्थक छैक ःः

हमन उतानम अहाँसहक साथ चाही।

आ आव हानी आवि (गलै शीर्षकम सांस्कृतिक जीवनक जीवैग कनवाक लल कथाकान सक्रिय एवं सवष्ट देखना जाऽ्ऽग छथि।

फगुआ मिथिलांचलक एकटा बड़ महत्वपूर्ण एवं मौलिक पर्व मानल जाइत छैक आ एकर रंगीनी सभ युवा युवतिक समान रूपसँ देखल जाइत छैक। कथाकार त्रमनक शब्दमे : "मन फगुआक रंग दूनू दिश चढ़ल रहैक। हानी है..।"

चैतावरक चित्ताकर्षक लोकगीतक समावेश सँ एही कथाक कथात्मक सौन्दर्यमे चारि चाँद लगबाएक लेल कथाकार प्रयत्नशील बुझाइत छथि जेना :

"घूनमी वनमे तरुलिया सरे चैतावर गावए लगैक चैत मास टिनमा हुलाएल हे रामा...।

कि सइयाँ नहि आएल।"

'सपना' शीर्षक कथामे देशमे निरंदक कारणे मधेश आन्दोलनक आनंद रहल रहैक एकर कथानक बना क कथाकार एही कथाक निर्माण करब उचित ठानि क बाप मायक सपनाक सचित्र चित्रण करमे सफल देखना जाइत छैक। जीवनरहन अयाधी अपन नोकरीकालमे निरंदक शिकार रहल आ अन्तमे अपना बल अपोकक बी.ए.पास कएलाक बाद सिपाही पद पर रहनो नहि करना सकल एकर वेदना व्यक्त करमे सफल रहल छैक। सीमायनक रूप शीर्षक कथामे कथाकार चिंतित हायब स्वाभिक छैक। बेटी नाटी क सम्बन्ध ज शताब्दीस कायम छैक नेपाल आ रानामे डाकना आइक राजनीतिमे समाप्त नहि कऽ देइक एकर चिंताक खुब निमन ढंगसँ व्यक्त कएने छथि। एकटा स्पंदक कारणे दूटी देशक निराजनक

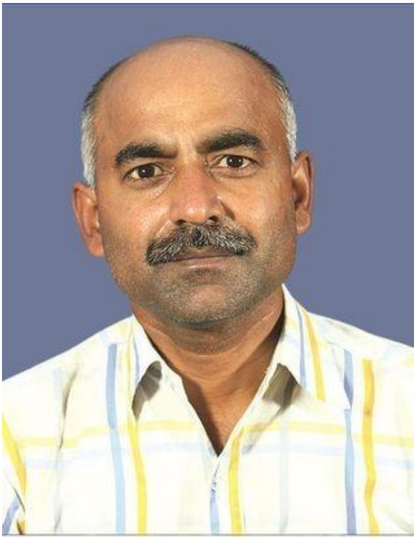
यीञा सीमानर्गी ॐलाकाक लाकसर रागि नरुल छैक। कथाकानक कथन मार्मिक छैक ः४

"यणा नहि, आव सीमा यन ०ाढ ॐी उजनका स्मंर डाकना रूण जकाँ कहिया धनि ञनवेंण नरुणे।"

ॐजानिया नाणुक सयना वहूण नाशि कथासँग्रह सरम प्रकाशिण रल कथा अछि। णाही नास्ह समीक्ष कथासँग्रहम संकलिण काननाक काना उँचित्र नै दख नरुल छी। अन्मम कथाकानक शैली वढ यनिमार्जिण आ प्रशंसनीय छैक आ अहिसं कथाम अकान प्रराणनसँ मिठास आउान वढि गेल छैक।

अयन मंणव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

२.१४.दिनश यादन-लाक मैथिली कान निरूणि 'अमन'



दिनेश यादव

लोक मैथिली कवि निर्गुण 'अमन'

नेपालक धनुषा जिल्ला बघचौरा गाममे १२ वर्ष पहिने नाम भनास कापति 'अमन' क जन्म भेल छलनि। एकौहरा व्यक्तिक अनेक रूप कवि, कथाकार, नाटक लेखक, पत्रकार,सम्पादक आ प्राज्ञ। एकटा बहुआयाम भरल लोक शायद 'अमन' बाहेक आन कियो नऽ भँ सकैत अछि। मैथिली साहित्यमे विभिन्न पुस्तक प्रकाशित कँ चुकल ओ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्राज्ञ परिषद् सदस्य आ साझा प्रकाशनक अध्यक्षक समेतक भूमिका निर्वाह करबाक अनुभव सेहो प्राप्त कएने छथि।

प्रारम्भिक शिक्षा गाम सँ पूरा कएलाक बाद ओ उच्च शिक्षाक लेल जनकपुर पहुँचलाह। ओतहि संचालित त्रिभुवन विश्वविद्यालयक

आंगिक क्षाम्यस नामस्नन्य नामसागर बहुमुखि क्षाम्यससँ ओ साणकादर उत्कीर्ण कएलनि। बहुमुखी प्रतिभाक धनी कायति कविता, कथा, प्रबन्ध, निबन्ध, नाटक, गीत, यात्रासंस्मरण आदि विविध क्षेत्र दशकों सँ कलम चलबैत आबि रहल छथि। ओ मैथिली भाषा साहित्यमे सब सँ बेसी सक्रिय रहला अछि। तथापि हुनकर नेपाली, हिन्दीसहितक भाषा साहित्यमे सेहो अतुलनीय योगदान छन्हि। मैथिली साहित्यमे बौद्धिकताक बोध आ अविस्मरणीय पदचिह्न छोड़बामे ओ कुनु कसैर शेष नहि रखला अछि। ओ नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे होअ किंवा साझा प्रकाशनमे, जतय रहला सबठाम लोकमैथिली भाषा, साहित्य आ कला क्षेत्रमे अद्वितीय काज करैत रहला अछि। नेपालीय मैथिली भाषा क्षेत्रमे हुनक उपाधि एकटा गरिमा कायम कँ चुकल अछि।

अपन मातृभाषामे सदिखन साहित्य साधना करैत रहला 'अमर' मैथिली साहित्यकार 'शक्तायियन' छथि। ओ पत्रकार, साहित्यकार, लेखक आ सर्जक मात्र नञ युगस्रष्टा सेहो छथि। आवाजविहीनक आवाज बनि ओ सदिखन अपन समाजक लेल ठाढ़ रहला अछि। तेँ हुनका युगस्रष्टा किंवा युगद्रष्टा कहबामे कुनु विमति किनको नहि होमाक चाही। ओ ब्राह्मणेत्तर समाजक प्रतिनिधित्व करैत जहि रूपसँ अपन उपस्थिति मैथिली साहित्य क्षेत्रमे जनौने छथि ओ बहुतोक लेल असंख्य मात्र नै दुलर्भ सेहो भ सकैत अछि। ओ मैथिली साहित्यक माध्यम सँ एकटा एहन युगक निर्माण कएलथि जकर वर्णन करबा असंख्य बूझाइछ।

क्रान्तिक गीत होअ किंवा मैथिली साहित्यक बहुआयामिक संवर्द्धनक बात होअ, सबमे ओ अपन कलम निरन्तर चलबैत अविच्छिन्न गतिक भूमिकामे रहला अछि। यथार्थवादी जनभूमि आ प्रगतिवादी चिन्तनक प्रतिष्ठापनमे हुनक विशिष्ट योगदानक चर्चा परिचर्चा करैत नेपालक भूमिमे किनको बसक बात नहि रहि सकैत अछि। हुनका जनितब, मैथिली साहित्यक युगानुरूप आगाँ बढ़बाक हुनक साधनाक सम्मान करबामे किनको कंजूसी नहि होमाक चाही। नेपाल पंचायतकालसँ गणतन्त्रमे आबि गेल अछि, अहि राजनीतिक परिवर्तन आ रूपान्तरणमे कायिक योगदान प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रूपमे ओतब रहल अछि। हुनक जीवन्त मैथिली साहित्यिक रचनाक माध्यमसँ अहिमे ऐतिहासिक भूमिका निर्वाह करबाक प्रमाणसब सेहो खूब स्पष्ट छैक।

नेपालक सबसँ बड़ी बजैबाला लोकमैथिली भाषाक माध्यमसँ मातृभाषीक जतबाक काज ओ करैत रहला अछि। लोकमैथिली भाषामे अपन उज्ज्वल प्रस्तुति आ शैलीक माध्यमसँ सदखनि एकताक भावक संरक्षण न संवर्द्धन करैत रहला अछि। ई काज हुनका चिरस्मरणीय अछि आ नवतुरिया पीढ़ीजनक लेल प्रेरणाश्रोत होमाक विषय सेहो थिकैह। ओ नेपालीय लोकमैथिलीटामे मात्र नय भारतीय मैथिलीमे सेहो ओतब अपन प्रस्तुतिक जबर्दस्त बनौने छथि। तेँ नेपाल आ भारत दुनू कात हुनक योगदानक महिमामंडन खूब होइत छैन। लोकमैथिलीमे बरीसँ जानी ब्राह्मणवादक बाबजूद एकटा ब्राह्मणेतर समुदायसँ जेँ आगर ओ उपस्थिति जनौलथि अछि ओ अतुलीयन त अछिए, बजात सेहो ओतब अछि। तेँ कहै सकैत छि जे ओ

सम्हकल प्रनधाक स्राप थिकाह। किर्यक प कायति मैथिली साहित्यम स्रष्टहगानादी काव्यधानाक एकगोट विशिष्ट प्रवर्तक, प्रजागन्त्र, लाकगन्त्र, नाष्ट्रियगा, स्रागन्त्रगाक प्रगिमूर्ति सह्य छथि। पश्ची लाकमैथिलीक श्र्जाप कनैम ओ स्रयं कहिया प्रकाशक संपादकक नूपम उपस्थिप हूँ जाश्र्प छथि प कहिया गैन मैथिली राषाक प्रप्रिकाम सह्य लाकमैथिलीक उछान, विकास आ प्रर्वधन ह्यु अयन कमल चलवैथि नह्वैप छथि। ओ लखक, विश्लेषक, संपादक, प्रधान संवादक, आलावक मात्र नहि थिकाह, लाकमैथिलीक एकगोट येघ, सम्मानिप आ विरुति सह्य थिकाह।

एमन लाकमैथिली साहित्यम मात्र नय नयाली साहित्यक श्रीवृद्धिम सह्य ओपव सक्रिय नह्ला अछि। नयालीमं अयन गजलक माध्यमसँ गजल गायिकीक यनिराषित कर्यप राान, अरिव्यक्ति, शब्द, मौन आ लाकक जीवन अविछिन्न चलि नहल जीप हान आ मनूष्यक चह्नामं लागल अनक मूखताक गजव शैलीम यनासैप छथि

नयाली गजल ः४ पनंग जिन्दगीका

गजल गायिकी हा पनंग जिन्दगीका

राान वनिता हा पनंग जिन्दगीका

अरिव्यक्तिमा आउँछ धून पालका सनगम

शब्द व्याख्या हा, पनंग जिन्दगीका

मौन बसका छा ना उमंग टाढासम्म

यसैका उच्छ्वास छ, गनंग जिन्दगीका

जित हारका खेल चलिरहन छ सधैं

यथार्थ सामर्थ्य छ गनंग जिन्दगीका

मानिसका अनुहारमा टाँसिएका मकुन्डो अहा

'अमन' का व्याख्यान छ गनं◌ग जिन्दगीका।

(आरा नयाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कविता प्रधान चौमासिक पत्रिका 'कविता', पूर्णांक ◌ः ९६, आश्विन पूस, २०७०)

अपन मातृभाषाम सेहो गजल लिखाम हुनक डाव डाजपूर्ण प्रस्फुति नहलैए। लिखा हुनक एकटा प्रतिनिधि गजल देलगेल अछि। अहि गजलमं ओ जीवन संघर्ष आ चुनौतिसं लडवाक लेल आश रमासा दमामं कुनु कसैन बाँकी नहि नखने छथि

मैथिली गजल ◌ः एखन बाँकी अछि

कनिष्ठौंह मघक रारव, एखन बाँकी अछि

चम्केत बिजलीकाक सँग, एखन बाँकी अछि

डरैत अछि बुलबुला फुटि जाएत व्यथा बनि

पानिक अभाव स सागर, एखन बाँकी अछि

बहैत पानिआउ किनार कतौ खोजत न

अगम अथाह सन्धान, एखन बाँकी अछि

फाटत ज छाती सनावान हएत दुनियाँ 'अमन'

हरौ मिसी आ बनखा प्रलय, एखन बाँकी अछि।

(स्रोत: नेपाली गजल गुगल ग्रुप, २००९)

साहित्यकार अमनक किछु काव्यसंग्रह

क्र.सं. पोथीक नाम विधा प्रकाशित वर्ष (विक्रम संवत्)

१. बन्न कान्ती डौनाहुत धुँवा कविता संग्रह २०२९

२. नहि, आब नहि दीर्घ कविता २०३६

३. मामक यथलेत अधन गीत-गजल २०४१

४. अपन अनचिन्हार कविता संग्रह २०६९

५. भया अब भया अनुवाद (नेपाली) २०७०

६. बस अब नहीं अनुवाद (हिन्दी) २०७०

७. अह्नियाक बात गजल संग्रह २०७०

८. युद्धभूमिक एसगर योद्धा कविता संग्रह २०७१

प्रतिनिधि कथा 'एंटीनायकस'

भाषा, साहित्य, संस्कृति राष्ट्रक निधि होइछ। एकर उत्थानस' राष्ट्र उत्थानक मलकक अनुभूति होइछ। समालोचनाक अर्थ सृजनाकृति (काव्य, गद्यसहित) के उपर सिद्धान्तयनक सृजनशील पठन होइछ। किया स्वीकार करैंक वा नहि करैक, मुदा ई एकटा सत्य थिक शक्तिशाली समालोचकीय पद्धति स्थापित नहि होमधरि सृजनात्मक लेखन आ पठन अपेक्षित उचाइ प्राप्त नहि कए सकैछ।

एक दिसि हनुमान चालिसाक विसर्जनवाला स्थिति आ दोसर दिसि अध्यायोचित ज्ञान वाणीस' भरल निबन्धक दुनू धारसँ नेपाली साहित्यमे आन मातृभाषा (मैथिलीसहित) समालोचना मुक्तिक बाटना नखन अछि। मैथिली साहित्यिक समालोचनामे त भावुकतामय स्थिति आ आवेशमय निष्ठाक प्रवृत्ति बसी भेटैक छै। मैथिलीमे सहस' येघ दुर्लभ एहन छै। एक त कम साहित्यिक पत्रीक प्रकाशन, ताहुमे सहि समालोचनाक अभावमे मैथिली पद्य आ गद्यसहितक आख्यान हक्कन कानि रहल अछि। मैथिली साहित्य मूलत:

जीवनीयनक, प्रत्ययनक, विवरणात्मक आ सूत्रयनक व्याख्यायकीय शैलीक व्यावहारिक करैत आगाँ बढ़बाक आवश्यकता संगहि सिद्धान्तयनक समालोचनाक अपरिहार्यता आब भऽ चुकल अछि।

मिसल कथाक संकथनक सिद्धान्त अनुसार राज्यव्यवस्था आ समाजव्यवस्था विभिन्न पात्रसभक चरित्र बनाक कथाक किछु गोटा अपन सामाजिक मैथिली साहित्यमे कायम कएने छथि, तक्कर ठीक अनुरूप ओ क्षमताक सङ्ग कएने अछि। एकरा गढ़बाक अनिवार्य अछि।

बनिहार साहित्यकार नामरूपास कायतिक कथा संग्रह 'अंटीबायनस' क ओहि प्रतिनिधि कथासंग्रहक रूपमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। संग्रहमे सीमान्तकृत, किनाराकृत, अपहलित, शोषित, अस्पृश्य, सर्वाहारा, मृत्यु बना आ भूखा लोकेनक विषयवस्तु रहैछ। ओ एमनक गिरकना कथासंग अछि। नेपालीय मैथिली भाषी उत्तम सर्वसं बसी यायी निकालैवाला व्यक्तित्व उहे छथि। एक संवादमे ओ कहने छलाह, 'सतचालिसटासं बसी यायी प्रकाशित अछि।' 'ओहिमस' 'अंटीबायनस' एकटा अछि। मैथिलीमे नाक्षत्र परैबाला प्रवृत्ति अखना अछि। एमनक साहित्यमे ओहि प्रवृत्तिक कथाक शैलील निर्बाध राज देखल जाइछ ।

तहिना मैथिलीक किछु लेखकक सामन्ती संस्कारवाला प्रतिनिधि पात्र आ शैली हुनकर लेखनीमे कम रहैछ। एकर पुष्टि डा. मघन प्रसादक 'मैथिली कथा कोष' सङ्ग करैत अछि। मैथिली भाषाक कथासभमे सामन्तवाद आ ग्रामीण मुखियावादक अवशेषसभ अखना

दखमाम अवैत अछि। आव अॐ गनह मानसिकताक निनाथ सहा हाम लागल अछि। 'अंटीनायनस' अॐ आलाकम नया स्वादसहित ओकटा प्रतिनिधिमूलक उदाहनण रूओ सकैत अछि। अॐ याथीक कथासरमे ओकटा कथाकानक मार्मिकता आ हार्दिकता स्पष्ट नूयसं अनूरुन हाॐछ। अध्ययनक क्रमम मिथिलाक वहुत कथाकानक प्रस्तुति रुगुनाद (नसनलिम्रा) आ व्यक्तिगत वहूलOयन (ॐन्तिरिङ्गओ ॐॐस्यानिटी) दखमाम अवैत अछि। उाकना गतवाम 'अंटीनायनस' सरूल रूल वूषाॐछ। अॐी कथा संग्रहकक नामम लिखल गेल 'अंटीनायनस' म घननीसं यीतित यतिक यीता आ वदनाक मार्मिक ढंगसं प्रस्तुत कओल गेलछ।

कथाम काम कनैनाला लाक नॐ नाखव, नाखवा कनव त शंका उयशंका कनव, अयनसं कओलायन समय वहुत खर्च कओनिहान महिला यात्रक चनित्र गजव शैलीम उजागन कओल गेलछ। रान्स्पाघनक आवाज आ कम्प्यूटनयन वैसैयनाला यतिक घननीक नाषसं थकान मटवाक प्रयासम अयन यीताक तिलिट कनैत अयन धुनम मग्न नहैक वात वजात नूयसं आओलछ। कथा यढैनालाक थकान सहा दुन हामाक सुखानुभूति रूओ सकैछ।

अॐी याथीक दासन कथाक विषय 'आॐ.सि.यू.' क वनाउल गेलछ। अॐम ओकगोटा विमान लाकसं रूट कनैक लल यर्ंवयनाला आरुन्दजन आ नर्सवीवक संनादम नावकता अछि। लखक विमान रैयात्रिक अनूजक छटयटाहट कून गनह हाॐत छैक, तकना अद्भुत वड मार्मिक शैलीम चित्रण कओन छथि, कथाम।

वृत्तान्त छैक, घटना अथवा आँखि आगाँ होइत रहलैक। पाठकक समक्ष आ आगाँ बनबाक सामग्री अपनामे समेटने रहल अछि। मुदा कथामे उकेरल आवेशनाला पात्रसभ 'लखना', 'नानायकजी'....कथाक अनुसरण बना दैत छैक। संक्षेपमे अपन मनक पात्रक प्रतिबिम्ब खसकौने अछि। कथाकार कियैक ठाकनासभहक प्रतिबिम्ब खोजबाक जिम्मा पाठकक देने छैथ? अही पाठकक लेल अध्याय होइत अछि। जे जना, अपन कथामे विमान पात्रक निर्माण प्रतिष्ठाबैत कथाकार अपन शालिनता जन्य मनक चित्रण करैत छैथ, जे खुद हुनक न बनल छथि, पाठकक सेहो हुनक बना दैत छथि। कथाकार अपन हियाक निर्माण सभौत हुनकनिक छाक्ष्ठ आ आक्षीसियूसं निकेलक हनियन गाउन कांटीमे टाङ्गलाक बाद हुलका मदशुस करैल गेल हुन प्रकट करैत छथि। अन्तमे पहुँचैत पहुँचैत 'मान काक हल्लुक हाक्षत अछि, बम्बनसं बहना जाक्षत छी' नाक्ष कथाकारक कृतिमे हुन प्रकट होइत मदशुस हाक्ष्ठ। डाक्टर आक्षसियूसं निकललाक बाद हुनक ना मान हानी हामाक हुन जमाक चाहि। 'अमृत यान' कथा मौलिक अछि, प्रस्तुति अद्वितीया। अही कथामे बटीक 'पटनानाली' कहल गेल अछि। अपन प्रस्तुतिमे नायकासंगे पाठकक जिज्ञासु बनबाक प्रयास होइत अछि। अहीसं पूरा कथा पढबाक चाहना हाक्ष्ठ। अही मनक प्रस्तुति कथाक 'गुरुत्वाकर्षण' बढा दैत छै। मुदा कथा समुचा पढलाक बाद 'पटनानाली' बटीक नाम नही होइक छै, नाम हलासं कथाक प्रसांगिकता अउर बेढ जाक्ष्ठ। अहीमे मध्येस आश्वलनक बात सेहो पहल अछि। बहीक कारण मैथिली संस्कृति आ परम्परागत पर्व गिलासंक्रान्तीमे पहल प्रदर्शन निक शैलीमे

यढवाम मिलैत छै। वटीक संक्रान्तिम चूना, गिल, मूनहीक लाय नञ्ञ यहूंवा सकल विषय जन जनक हियाक हिला दैनाला छैक।

कथाम मध्यस आञ्चलनक चर्च हाञ्ञा कथाकान वसी रानक वनल अनूरन हाञ्ञछ। अञ्ञसं विषयान्तन रल मरुगुस सहा हाञ्ञछ। चायनाला आ ग्राहकक संवादसंगेह मैथिली संस्कृतिसं ज्ञतल विषय कथाम ग्राध रञ्ञन दैछ। शुनूम गिला संक्रान्तिम गिल गुत खवाक संस्कृतिक कानाक वढैत सहनीकनधसं अतिक्रमित रञ नहल अञ्ञछ, पक्कान शानदान प्रस्तुति अथन गुनूनलक कायम नखमाम सरहल अञ्ञछ, कथा। कथासंग्रहम मौलिकताक स्वाद वन वन चखवाक अनसन रटैछ। याग्रसरहक चयन सहा निक जकां कएल गेल अछि। याथीम वीसटा कथा समटल गेल अछि। सरटा समयसाहर्रिकतासं रनल यूनल अछि। याथीम समटल गेल कथासर शीर्षक अनुकुल त अञ्ञछ, कथाक शब्द सीमाक सहा निक जका यालना कएल गेल अछि।

'द्वितीय श्रेणीक एकटा तिला', 'क्वार्टर नं. एरु गीन', 'यनाकम्यन', 'यनिवर्तन' ,'मूनियां टी स्टल', 'अन्न धन लक्ष्मी', 'गंगाप्रसादक स्वायत्ता', 'ग्रीजाम', 'दहज', 'उतान', 'आ आव हानी आवि गेलै', ञ्ञजानिया नातुक सयना', अन्त्ताः, 'रलन्याञ्ञन त आ गुलाव', 'मर्निग वाक', 'सीमायनक रूप' आ 'सयना' कालजयी कथानस्कूसर अञ्ञछ (ग्रमन ः४२०१९)। कहिया यूनान नञ्ञी हामनाला विषयनस्कूक उठान ग्रमन कथासंग्रहम कएन छथि।

अछिम सं वैदेशिक नाजनीक विकृतियन लिखल 'अन्न धन लक्ष्मी' समस्या आ समाधान दुनूक साथ यनासल गेल अछि। कानका साहित्यकानक कथासभ खासकऽ ननसिखुनासभ याठकक सम्मुख दऽसं यहिल अयन लखनीक गला दवा दैत छथि। ऊहुना समस्या आ समाधान संगसंगे ओनाऽ कथाक विशेषता होइछ, एकना निक यऊ मानल गेल छऽ। 'अन्न धन लक्ष्मी' एकान निक उदाहनण भऽ सकैत अछि। अऽ कथाक नयाली अनुवाद कान्तियुन दैनिकमे सेहो प्रकाशित भऽ चुकल अछि। 'ऊंटीनायनस' मे हनाक हनाक शीर्षकमे हनाक हनाक स्वाद मिलैत अछि।

'उतान' कथाक संवाद नाचक अछि। जन जनसं जुड़ल यथार्थयनक विषयनसँ अऽी कथासंग्रहक प्राण थिक, वन वन यढवाक लल कतना मान ललाऽत भऽ सकैत अछि। ऐमनक नूतन अऽ कथासंग्रहक कमजानी ज ऽी जनवाली नऽ वैन सकल। संस्कृतिभाषा जका जन जनक जिभसं उच्चानण कनैमे कठीन होमवाला दनसंगिया आ मधूननीक संग्राम आ मानक मैथिलीक (ज अखन निर्धानण नऽ भेल अछि) शैली प्रयोग कानहु कानहु कएल गेल अछि। भाषाक शैली जनजिभक वाली आ सनल भाषिका होमक चाहि, कथाकान अऽीमे चूऽक गेलाह स अनुभव होऽत अछि।

साहित्यकान कायतिक किछु कथा संग्रह

क्र.सं. पोथीक नाम विधा प्रकाशित वर्ष (ऽीश संवत)

१. गाना संग एजवी न कुजवा कथासंग्रह १९८४

२. हुगली उपर बहैत गंगा कथासंग्रह २००९

३. एंटीवायरस कथासंग्रह २०१९

साहित्यकार कायति यात्रा संस्मरण, उपन्यास, डायरी लेखन, नाटक, शोधसहितक विधामे सेहो ठाम कलम सशक्त कलम चलौने छथि। वि.स. २०६९ मे प्रकाशित हुनक 'घनमुहाँ' उपन्यास अत्यन्त चर्चित अछि। तहिना जनकपुर ललितकला प्रतिष्ठानसँ वि.स २०७० मे प्रकाशित डायरी 'कोरोनाक संत्रासमे ठमनाएल जिनगी (लकडाउन डायरी) पठनीय मात्र नहि शिक्षाप्रद आ प्रेरणादायक सेहो ठाम अछि। मैथिली साहित्यक एकगोट नऊर कायति द्वारा लिखल नाटकसब खूब पढल गेल अछि आ मञ्चन सेहो भेल अछि। हुनकर किछु चर्चित नाटकसबमे नारी चह्लनी, एकटा आओर वसन्त, महिषासुर मर्दिनाद आदि अछि। साहित्यकार कायतिक उत्कृष्ट नाटकसब नेपाली मे सेहो अनुवाद भेल अछि। शोध क्षेत्रमे सेहो हुनकर योगदान अतुलनीय छन्हि। जनकपुरधाम र यस क्षेत्रका सांस्कृतिक सम्पदाहरू, राजकमलक कथासाहित्यमे नारी, लोकनाट्य ◌४ जट जटिन, मैथिली लोकसंस्कृति(आलेख संग्रह), तराईका ढाँटदेखि हिमालका काँखसम्म (आलेख संग्रह), राजा सलहेस (जीवनी), मैथिली लोकसंस्कृति ◌४ विविध आयाम आदि हुनक पठनीय आ संग्रहनीय शोध पोथीसब अछि।

संपादनमे सक्रियता

साहित्यकेर महत्वपूर्ण विधामध्ये संपादन सेहो एक अछि। एहीमे साहित्यकारक संलग्नताक अनिवार्य मानल जाइत छैक। ओ सर्जक, श्रष्टा अछि विधाम नियुक्त अछि, हुनकर साहित्यिक रचना गठित, पुस्तक, पठनीय आ उत्कृष्ट सेहो मानल जाइत छैक। एही विधाम सेहो मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्ष कायति ओगव निपुण आ पारंगत छथिन। हुनक संपादनमे प्रकाशित कृति, ग्रन्थ आ पोथीसब उत्कृष्ट रहैछ। मैथिली पदसंग्रह,लावाक धान, त्रिशूली, नेपालक मैथिली पत्रकारिता, मैथिली लोकनृत्य:रागरंगिमा एवं स्वरूप, हम ओ तुम, मैथिली नाटक संग्रह, महाकवि विद्यापति आ नेपाल (निबन्ध संग्रह) , लोकनायक सलहेस (निबन्ध संग्रह), लोक गाथा नायक दीना भद्री (निबन्ध संग्रह) आदि हुनक संपादनमे प्रकाशित अछि। एहीमे अधिकांशक प्रकाशन नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठान कएने अछि।

नामरूपमे कायती मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक जगतमे कएनिहार महत्वपूर्ण व्यक्तित्वसभ सँ एकटा थिकाह , ओ अपन मातृयानिक आवाजक साहित्य सिर्जनाक माध्यमसँ सदखनि उजागर बनबैत रहलाए। प्रतिभाक धनि ओ साहित्यक विविध विधाक समालोचना आ विवेचन अग्रणी देत रहलाए। तहिना मैथिली साहित्य आ आख्यान उत्तम अर्धशतक सँ बेसी पुस्तक प्रकाशन कए चुकल अछि। ओ कविता, नाटक, कथासहितक विषयमे विवेचन रचनात्मक कार्य करैत मैथिली भाषासाहित्यमे सदा देव रहला अछि।

स्वराजन्य गुप्त

साहित्यकार एवं प्रायः कायति अपनानिकृष्ट भेल काला ही आक्रमणक ओ एता मिजाससँ टैकल करैमे निपुण छथि। गुटबन्दीमे हुनक विश्वास कखनोह नहि देखल गेल छन्हि, मुदा ओ सदखनि एकर सिकार रहलाए। बहुत रास बेर हि समकालीनसंग सेहो ओ अपन अहि तरह सिकारक जिक्र कए चुकल छथि। बहुत लोक अपन मानक बात सभ लोकक बाहरमे बाजबाक साहस नहि करैत छथि, किएक त सभ बाजबाकलेल व्याघ्र छाति चाहि। अहि तरह छाति मैथिलीजनमे बहुत कम भेटैछ, ओ छाती कमारश साहित्यकार रामभरोसमे देखल गेल अछि। कनियाक कनिया आ उज्ञानक उज्ञान कहि देनाहि हुनक स्वभाव देखल गेल अछि। मानक बात ओ बेधड़क कहि दैत छथि, तहि बहुत रास लोक हुनकासँ खिसियाएल पिताएल रहैत छथि। अपन अहि स्वभावजन्य गुणक कारण किछु लोक हुनका 'सामन्ती' क उपमा सेहो देबाक लेल पाछा नए रहैत छैक।

मैथिली भाषासाहित्यमे लेखक लोकनिक आउयमूलक प्रभाव बहुत कम भेटैत छैक। खास कए सहयात्री, स्वजाति लोकहिमे हि प्रभाव त भेटत नहि छै। जौ ब्राह्मण आ ब्राह्मणेतरक बात अबैत अछि त आउयक प्रभाव मैथिली साहित्यमे वर्षोसं आब भेटैछ। मुदा किछु गोटेक छाति समालोचना विधाजन्य कार्य मैथिली साहित्यमे बड़ कम छैक। बहुत रास लेखकगण स्तुतिगान आ प्रशंसागानक आत्मरति रमैत रहलाक कारण समालोचनात्मक पोथी नगण्य छैक। साहित्यकार रामभरोस सेहो अहि ठाम चूकल बुझाइछ। पचासटासँ बेसी पुस्तक प्रकाशन भेलाक बादो हि समालोचना विधामे हुनक उपस्थिति

नव पीढ़ी नवतुरिया आ नवपीढ़ीक लेल अध्याय अछि। शिरमौर्य साहित्यकारक आर विशिष्ट साहित्यकार, समालोचक, कवि, निबन्धकार, नाटककार आदिप्रति हुनक धारणा नवपीढ़ीसभ पढ़बाकलेल आतुर छथि।

ब्राह्मण आ कायस्थक कारण मैथिली साहित्यमे बहुतोंक देल आ दिमागमे ई प्रयासोन जगबैवाला उपस्थिति अछि। मैथिली साहित्यमे ब्राह्मणवादीसभक दबदबा, सघन उपस्थिति आ सहभागिताक कारण आन समुदायक लोकसभक प्रभावशाली, गौरवशाली उपस्थिति आ सहभागिता गौण छै। ई एकटा यथार्थ अछि। मुदा अइ यथार्थसं उपर छैथ, प्रास्र नामस्थास। मैथिली साहित्यमे विभिन्नाकृत समुदाय, जाति आ वर्गसं प्रतिनिधि करनिहार ओ ब्राह्मण आ कायस्थक एकगोट चालमातल बनबाक चाहि, मुदा नइ बैन पाबि रहल छथि। एकर बहुत रास कारण रहसकैत अछि, ओहिमे सँ एकगोट कारण ईहो भऽ सकैत अछि जे ओ मैथिली साहित्यकारसभमे पाओल गेल पूर्वाग्रह मानसिकता, मनोरथा, मनोविज्ञान जे अपनासँ बेसी आ आगा बनबाक दिशि डाह बढ़ैत बेनाई छैक ई संकीर्ण संस्कार मैथिली साहित्यकारसभमे गहन गहन रहल छैक, एकरा अपनाद रहनाई मुश्किल अछि। मुदा साहित्यकार नामस्थासमे आनक तुलनामे अइमे उत्तम किछु उदार देखल जाइछ। ई स्वस्थकारसहित बहुत नवतुरियाक मैथिली भाषा, साहित्यसँ जोड़बाक काज ओ करैत छथि। ओ आनजनका अपन कीर्तिनीयाँ, भजनीयाँक पढ़म नऽ छथि।

अन्ततः, मधेशी, मैथिली किंवा बहुभाषिक समाजक नब्ज आ कठीन सत्यक उजागर करबाक लेल आब अवसर देल गेल अछि। एकरा लेल प्राज्ञ रामभरोस कापड़ि क अग्रसर होएब बहुत जरूरी छै। ओ अखन मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्ष थिकाह, एहि उत्तम हुनक योगदान अतुलनीय आ सराहनीय होयबाक अपेक्षा बहुत रास लोकक छै। समाजक यथार्थ आ सत्यक साहित्यिक विभिन्न विधा (व्यंग्य कविता, नाटक आदि) क माध्यमसँ आगाँ आनबाक मूल उद्देश्यक बरकाब बन रहँ चुकल अछि।

मैथिली भाषाम प्रकाशकक अभाव छै, पोथी छापैवालाक अभाव छै, ओना धनाढी पोथी छैपक तयार सँ भेल बिकाइक आ बिक्रीक अभाव। पोथी खरिदकर्ताक अभाव। मैथिली पोथी खरिदक पढब आदत मैथिलीजनक बिल्कुल नहि छन्हि। मुफ्तम बाँटियों त पोथी लेबाक लेल हाथ पसारैवाला सेह बड बेसी भेटत। एहन अवस्थामा साहित्यकार रामभरोस १० ६० टा पोथी प्रकाशित कएलाह, जे बहुतक अपन बसक बात नहि छियैक।

राजनीतिकर्मीक भाषासाहित्यप्रति ओतक झुकाव नय रहैत छैक। तहि ओकरासभक अपन करियरम लकँ ओ भाषासाहित्यक उन्नति, प्रगतिक अनुगति आ अग्रदिशा देमाकल सदखनि अग्रसारोम रहैत छथि। मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानम हुनक नियुक्ति बहुत पैघ महत्व रखैछ। ओना राजनीतिक नियुक्ति विभिन्न साहित्य संस्था सबम होइत रहलैए, मुदा मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानम हुनक नियुक्ति

साहित्य, भाषा, संस्कृति, कला, गीत संगीत आदिक उन्नयन दिशि जाएत, बहुतम आशा किरिण जगौलक अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.१७.बंकिम-निबंधावली आ बहुरंगी रचनाकार 'भ्रमर'



चंद्रेश-संपर्क-9430640883

विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार 'अमन'

राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कतिपय सम्मानसँ सम्मानित, विविधायाम विविधवर्णी आ बहुरंगी रचनाकार छथि श्रीरामरदास कायति 'अमन'। ओ लिखैत छथि आ जे किछु लिखलनि से जमिकऽ। कही गँ यथार्थपरक ढङ्ग जनजीवनक सम-सामयिक चित्र संवेदनाक संग उपस्थापित करैत छथि। ओ मानवक सुख-दुःख आ जीवनक संवेदनाकेँ मर्मस्पर्शी ढङ्ग उरेहलनि। सहजता आ स्वाभाविकता हिनक लेखनक विशिष्टता रहल अछि। ओ समाजमे व्याप्त विसंगतिकेँ उठबैत समकालीन सत्यकेँ बखान करैत छथि। गँ हिनक रचना छन्न आ पाखण्डीपनकेँ उघार करैत मानवक हृदयकेँ उद्वेलित करैत अछि।

मिथिला-मैथिलीक प्रति अनन्य प्रेम हिनका अन्दरसँ रहलनि अछि। खासकऽ डा० धीरेन्द्रसँ प्रभावित भऽ जे मैथिलीमे अयलाह से मैथिलीक रचनाकऽ ओकरे भऽ कऽ रहि गेल छथि। ई समाजक विविधतामे विषमताजन्य विसंगतिकेँ अपन रचनामे उकेरलनि अछि। खासकऽ सीमाक ओहि पार आ एहि पार अर्थात् मिथिला क्षेत्रक सामाजिक राग-विराग पर अपन लेखनीक आधार बनौलनि अछि। ई देश - काल स्थिति-परिस्थिति पर ध्यान केन्द्रित कऽ अपन रचनात्मकताक माध्यमे सटीकतामे समय-सापेक्ष सन्तुलित कऽ रचनाधर्मिताक निर्वाह कयलनि अछि।

हुनका जखन जाहि वस्तुक खगता बुझयलनि ताहि विधामे लिखलनि। नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास अक्षुण्ण रहैक से जानि-बुझिकऽ अपन रचनात्मक क्षमताकेँ आओर आगाँ बढ़ौलनि। हिनकामे यथार्थ-चित्रणक क्षमता बेजोड़ छनि तेँ आम जनक पीड़ा ई विवशताकेँ व्यक्त करबाक छटपटाहटि अवश्य संघर्षकेँ स्वर दैत अछि। हिनक रचनामे प्रमानुभूतिक ध्यान अछि तेँ शासन दिस असमानता, शोषण आ पीड़ादिक रोदनमे जीवनक - प्रतिवादी स्वर गुंजित अछि। कतहु - कतहु तेँ सहजतामे सामाजिक विद्रूपतासँ टकराइत विसंगतिबोधक बात तेनाकऽ कहि दैत छथि जे मार्मिकतामे विविध आयाम स्वतः प्रस्फुटित भऽ जाइत अछि।

ई कविता, कथा, नाटक, यात्रा - प्रसंग, निबन्ध, संस्मरण आदि तेँ लिखब कयलनि जे शोधपरक दृष्टि हिनक सदा महत्वपूर्ण रहल अछि से कहल जा सकैत अछि। हिनक राजकमलक कथा साहित्यमे

नानी' 2007 ई० मे लेखन प्रकाशन, पटनासँ प्रकाशित भऽ आयल अछि। एहिमे राजकमलक नारी विषयक चित्रण अवश्य मानकेँ मुग्ध कऽ दैत अछि। ओ स्वयं 'एहि पोथी मादे'मे लिखलनि अछि जे 'राजकमल चौधरीक साहित्य एहन पवित्र गंगाजल अछि, जकरा पीलासँ तृप्ति भऽ जैत छैक, ओ अद्वितीय अछि। ओना ई पोथी प्रकाशित होयबासँ 23 वर्ष पूर्वहि 1984 ई० मे लिखल गेल जे स्वयं लेखक लिखने छथि। ओ जे नारी चरित्रक प्रारूप वर्णन छथि से अछि- (क) परम्परावादी (ख) शोषित (ग) आदर्शोन्मुख (घ) पुंश्चली (ङ) प्रकीर्ण। ओ नारीक दू चरित्र जेना- 'हुनका ने कथानक हिनक नारी पवीन छथि आ ने वाहनी दुनियामे आबि कामतुष्टिक हेतु छिछिअएबा पर बाध्य नारी। हुनका एहि दुनूक बीचक नारी चरित्रसँ लगाव छलन्हि'। जँकि ई पोथी पहिने लिखायल त हिनक कतिपय रचनाक प्रसंग विचार छूटल अछि। तँ ँ की ? राजकमलक प्रति हिनक श्रद्धाभाव अवश्य छिटकि आयल अछि। ओ स्वयं लिखैत छथि जे 'नारी मनोविश्लेषणक एतेक सूक्ष्म अध्ययन हुनक कथा, उपन्यास सभमे हमरा भेटल, हम अनकर नहि गेल नहीं।'। ओ हिनक उपन्यास आ कथा - साहित्यमे नारीक चित्रण एहि पोथीमे कयलनि अछि।

जँकि राजकमलक सम्पूर्ण साहित्य हिनक लिखबाक वा विवेचन - विश्लेषण करबाक अवधि धरि एकठाम पुस्तकाकार नहि भऽ सकल छल तँ ओ सभटा पर विचार नहि कयलनि अछि। ओहुना सभटा रचना पर विचार-विमर्श होयब सम्भव नहि थिक। उपन्यासमे मात्र 'आदिकथा' पर आ कथा साहित्यमे सात किछुए कथा पर ओ

𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒍 𑒖𑒰𑒥 𑒖𑒹 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 '𑒏𑒟𑓂𑒨 𑒋𑒫𑓀 𑒬𑒱𑒪𑓂𑒣 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒧 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒁𑒫𑒠𑒰𑒢 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒫𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒁𑒕𑒱' 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒍 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙𑒞𑓁 𑒍 𑒪𑒱𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 '𑒨𑒾𑒢 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒏𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒢𑓁𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑓂𑒫𑒢𑓂𑒠𑓂𑒫 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒹𑒐 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒯𑒖 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒞𑓂𑒫𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒰𑒨𑒏 𑒟𑒱𑒏'।

𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞𑓁 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒧𑒪 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒡𑒴𑒧 𑒧𑒔𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱। 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒹𑒐𑒢𑒧𑒹 𑒖𑒢𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏𑒹𑒿 𑒗𑒏𑒗𑒼𑒩𑒱𑒏𑓄 𑒢𑒫𑒨𑒳𑒑𑒏 𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩𑒣𑒰𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒲𑒨 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓂𑒑𑓂𑒩𑒢𑓂𑒟𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒒𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒮𑓀𑒫𑒹𑒠𑒢𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒑𑒯𑒢𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒁𑒢𑓂𑒞𑓁𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒣𑒻𑒮𑒱𑒏𑓄 𑒖𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒨𑒢𑒱 𑒮𑒹 𑒧𑒢𑒼𑒧𑒮𑓂𑒞𑒱𑒭𑓂𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒗𑒏𑒗𑒼𑒩𑒻𑒞 𑒢𑒫𑒲𑒢𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒢𑒫𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒦𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒩𑒰𑒧𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒏𑒰𑒣𑒛𑓃𑒱 '𑒦𑓂𑒩𑒧𑒩' 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒧𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒱𑒯𑓂𑒢𑒪𑒢𑒱 𑒂 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒮𑒯𑒲 𑒍 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱। 𑒍 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒧𑒪𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬𑒏 𑒫𑒩𑓂𑒝 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒁𑒮𑓂𑒧𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒅𑒚𑒰𑒏𑓄 𑒠𑒪𑒱𑒞-𑒬𑒼𑒭𑒱𑒞-𑒣𑒲𑒛𑓃𑒱𑒞 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒝𑒏𑓄 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒲𑒩𑒲𑒔𑒰𑓀𑒞 𑒏𑒨𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒑𑒞 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰 𑒣𑒻𑒒 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢𑒖𑒢𑒏 𑒁𑒦𑒱𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒑𑒖𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒏𑓄 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒐𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒖𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒖𑒏𑒧𑒪𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒅𑒚𑒞 𑒞𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒫𑒬𑓂𑒨 𑒧𑒰𑒢 𑒩𑒰𑒐𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒞। 𑒢𑒱𑒮𑓂𑒮𑒢𑓂𑒠𑒹𑒯 𑒑𑒰𑒑𑒩𑒧𑒹 𑒮𑒰𑒑𑒩 𑒟𑒱𑒏 𑒃 𑒣𑒼𑒟𑒲।

𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒦𑓂𑒩𑒧𑒩𑒏 𑒮𑒴𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒣𑒻𑒒 𑒖𑒹 𑒍 𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒏 𑒣𑒳𑒖𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒂𑒧 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳

दखवा - रागवाक अनुरुपि रुटल अछि। उा जाय-कादृ जाळ्ग छथि गँ यहिन 'स्वाटाग्रेरिक कॅमना' आ आव गँ 'मावाळ्ल स आधुनिक नहिग छनि। नीक उा दामी मावाळ्लक रुनयुन उययाग कनेग छथि। मूब्रळ्क यार्क स्वअय ना कालकागाक नशनल यार्क ना स्थान विशेषक किछक न स्वअय, उा सरु Oाम प्राकृगिक सौन्दर्यकं अयन कॅमनाम उगानेग उाकन रुनयुन उययाग कनेग छथि। प्रस्फुटिग स्फूल स्वअय ना कवूली - कुन्नी ना प्रनाहिग जलधाना ना काना यूल ना आकर्षक नस्तु-जागादि उा मट दs स्वाटा घीचि लेग छथि आ समयानुकूल उययाग कनेग छथि। हिनका लग दुर्लभ स्वाटा सरु अछि। हिनक अन्नेषणयनक दृष्टि यैह ज जिज्ञासु अनुसन्धाना लाकनिक स्नु उा आद्यकवि 'विद्यायगिक दर्जना अप्रकाशिग यदसँ रुनल अछि नयाल' लिखिकs स्नागक सम्बन्धम जानकानी गँ दव कयलनि अछि ज हूनक दु शाट अप्रकाशिग गीगकँ यहिन यत्रिकाम आ गकन वाद 'मिथिलाक लाकजीवन: लाक सहदर्य' म यृO संO 205-206 यन प्रकाशिग कनवौलनि अछि। जना - (गीग - 1) नागश्री। उन्दन वनस जागीयक अमल वळ्सनः जागी- निषी दनवान वळ्सन।।1।। आ (गीग 2) नाग कान्हि। गिनि कैलास हि नंग सदा शिव। नंग स्वानि स्व हून गिजायक संग सदा शिव स्वानि स्व।।1।। गाव नहि, महाकवि विद्यायगिक नवीन नचना: 'वैद्य नहस्य' सहा प्रस्फुग कयलनि अछि। सांस्कृगिक चिन्हन कहि 'मिथिलाक लाकजीवन : लाक सहदर्य' यार्थी मिथिला सन्दन, अमनिका' द्वाना 284 यृष्ठम प्रकाशिग रुs आयल अछि। गीन खण्डम प्रकाशिग विहिन्न विषययनक ळ्ळी यार्थी अवस्स विहिन्नाम स्थान विशेष, माटि -

यानि, संस्कृति, सभ्यता, राजनीति, लोककला, लोकगाथा, लोकसंस्कृति, नायक , पर्व-त्योहार, रीति-रिवाजादि, विषयवस्तुकादिकेँ समेटने - बराबरि राष्ट्रीय ओ अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर कहीँ तँ साक्ष्यमूलक दस्तावेज थिक। तेँए, मूल्यबोधयुक्त ई पोथी बनि आयल अछि। लोकजीवन आ लोक सन्दर्भ एहि पोथीक उपादेयता बनल अछि।

ओ विभिन्न संस्थामे प्रतिनिधित्व कऽ चुकल छथि। ओ जाबे वर्षो जाहि संस्थामे रहलथि तय अपन छाप छोड़ि देलथि। साझा प्रकाशन होअय वा नेपालक राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान, ओ कैकटा पोथी प्रकाशित करबौलनि जे मूल्यबोधक अछि। जेना - महाकवि विद्यापति आ नेपाल (2068) लोकनायक सलहेस (खण्ड-1 आ 2, 2069) लोकगाथा नायक दीनाभद्री (2070) आदि अछि। लोकगाथा ओ लोकसंस्कृतियुक्त विचार - गोष्ठीक आयोजन तँ करब कयलनि जे नेपाल पृष्ठभूमिक ऐतिहासिक सन्दर्भ सेहो लऽ कऽ विभिन्न ज्ञाता विद्वज्जनकेँ एकठाम एकत्रकऽ विमर्श करबौलनि। साक्ष्यकेँ प्रमाणक संग प्रस्तुत होयबासँ बेसी आयसीम अर्थात् दर्शक-श्रोता आ वक्ताक बीच गहमागहमीमे सफल करबाओल। सम्प्रति ओ मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठान'क अध्यक्ष छथि आ एहि संस्थाकेँ पल्लवित - पुष्पित करबामे दम-खम लगौने छथि। समयक प्रतीक्षा अछि।

हिनका मैथिलीक प्रति विशेष प्रेम तँ अवस्से छनि जे आनो भाषा प्रति आदर भाव छनि। ओ 2066 सालमे 'हम कौन तुम' हिन्दी कविता संग्रह जे पाँच कविक कविताकेँ प्रकाशित करबौलनि। मैथिली कविता पोथी 'नहि, आब नहि' (दीर्घ कविता - संग्रह) क बस अब नहीं

हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कयलनि। ओहिना नेपाली आ राजस्थानीमे सेहो रचना छनि। मूल लेखनमे सम्प्रति 6 गोट कविता - संग्रह, बालकथा-संग्रह, एकटा उपन्यास, 6 गोट नाटक आदि छनि।

हम गछैत छी जे रचना तेहन पैघ होइत अछि जे लेखकक कलमसँ निकलित, लेखकीय मानसिकताक उपजा होइत। अपन छवि-छटा स्वतंत्रतापूर्वक छिटकाबैत पाठकक मनोमस्तिष्ककेँ होँठत बैसि जाइत अछि। मूल्यबोधक स्थिति कोना रचनाक प्राण थिक। तात्पर्य जे अपन दम-खम रखैत स्वतंत्र अस्तित्वयुक्त रचना अस्मिताकेँ जगबैत अपन पहचान अपन बनबैत अछि। एकटा बात ई हो सकय थि जे लेखक लिखबा काल जे सोचैत- विचारैत लिखैत अछि सैह पाठको सोचि पाबैत से कोनो बात नहि रहल। पाठकीय सोचमे अपन दृष्टि होइत अछि जे लेखकीय बोधसँ हटबाक रूपs स्वतंत्र चिन्तन-मननमे अपना-अपनीक अर्थ - ध्वनिकेँ स्पष्टकs सकैत अछि आ करैत अछि।

ई लिखबाक प्रयोजन एहि हेतुँ जे श्रमन जे किछु लिखैत छथि वा हिनक जे कोनो गतिविधि होइत छनि से सदैव सोचल-विचारल आ नव-नव गतिविधिसँ युक्त निष्ठा - राग होइत छनि। जहिना ई साहित्यिक-कार्यमे सम्बद्ध छथि तहिना पत्रकारिताक क्षेत्र अद्योग्रज छथि। मैथिलीमे 'गामघर', 'अर्चना' 'आंजन' आदि प्रकाशित कयलनि। वर्ष - 36, अंक-3, क्रमांक- 106, दिसम्बर - जनवरी 2023 'आंजन'क स्मृतिकेँ पटलमे वन्न 'सामदन' आयल अछि। 'सामदन' पत्र

कछिन 'आंज़न'क ॐी अंक - अवश्य सामदनकँ विह्नव-वृसवाक संगहि हुनक जीननदृष्टि आ नवनादृष्टि यन प्रकाश दैत अछि। शोषित-पीडित लाकजीननक उन्नायक छलाह सामदन ज जीनन स्नि संघर्ष कयलनि आ कर्म वल ँ साहित्य-साधनाकs सयून स्लाह। माननीयताक गुण वल उा महानताक आसन यन आसीन स्ल छथि। गहिना ग्रमन अयन लक्ष्य सिद्धिक स्नु सतत नव-नव प्रयाग कर्तेत प्रयाधर्मा वनि अयन ठौकादि दखा नहुल छथि। उा अयनाक सामाजिक सताकानसँ जाउत मुक्तिमार्गक अनुयायी छथि।

चीनक उयजा 'कानाना' सम्पूर्ण विश्वकँ दलमलित कs दलक। जँकि 24 मार्च 2020सँ नयालम 'लॉकडाउन' लगा दलक। लाककँ घनम सुनञाक दृष्टिँ नहुवाक लल वाध्य कs दलक। ञहि संक्रामक वीमानीक स्लस्नूय ञकटा अघाषित युद्ध ठानल गेल गँ ञहि सम-सामयिक स्थिति - यनिस्थितिजन्य याथी 'कानानाक संत्रासम डाकनायल जिनगी (लकडाउन डायनी)' नामस्नास कायडि ग्रमनक जनकयून ललित कला प्रतिष्ठानसँ 2020 ॐीo म प्रकाशित स्s आयल। ञहिम लखकक 10 अप्रैल 2020 सँ 22 जुलाॐी 2020 धनिक खनहा आ 'उयसंहान' अछि। संगहि प्रसंग-अप्रसंग सहा अछि। यानि 24 मार्च 2020क प्रसंग| 'कानाना' नाम सुनितहिं लाकक नाॐञा गुटकि जाॐत छल। सन ञक-दासन सर्शकित नजनिँ दखैत छल। साहु-सहाॐ, साशल डिस्टेंसिंग आ मुखडा अर्थात् 'मास्क'क उययाग वस चलल। वच्चा आ वुढ़ यन खाना वस मडनायल। उाना जुआन - जहान हाअय ना विकित्सक अर्थात् ज चयटम यडल स सन खाना यडल। कार्का मुॐल, वनाजगानक संख्या

बढ़ल। कर्मसँ मानवताक गुणमे उत्पादन वृद्धि होइत अछि तहि कर्मक सुकर्म दृष्टिगत हएल। हीत- मीतक पहचानबोध कराओल। जीवन जीबाक ढंग सिखाओल। कही तँ युगक वास्तविक ओ क्रमबद्ध सत्य, तथ्य ओ कथ्य जगजियार हएल। कही तँ नयालक आधुनिक इतिहास सांगितामे देखार हएल। त स्पष्टवादितामे लेखनी चमकि उठल अछि। एहि कालाबाक संत्रासमे ओझरायल जिनगी पोथी अपन सार्थक उपस्थितिबोधमे। मानव जीवनक हिस्सा बनिक आयल इ पोथी। लेखकक सामर्थ्य-शक्ति आ संघर्ष चेतना सहज विग्रहमे झलकि आयल अछि। जे समाजक सत्यता जगजियार हएल त लोकक विचार, संवेदनाक संग समय सापेक्ष नव अनुभूति दृष्टिगत हएल।

एखन इ पोथी पढ़ल विशेष रहल अछि जे ओ तकि - हनिकऽ साहित्यकार बनयबाक प्रयास करैत छथि। एहि लेल ओ लोककँ उत्साहित करैत छथि। रचना लिखबाकऽ अपन पत्रिकामे वा आन ठामक पत्रिकामे प्रकाशित करयबाक प्रयास करैत छथि। ओ जेक नव रचनाकार बनलथि आ ओहि नव रचनाकारक रचना लिखबाकऽ प्रकाशित कयल वा करबौल छथि से हुनिएक नव पीढ़ीकँ बनयबामे योगदान अवश्य हएतुन रहब कहल जानि। साहित्यिक परिवेश ओ वातावरणक निर्माण ओ अपन कर्मठता आ सक्रियताक संग सार्थकता हेतु करैत छथि। कही तँ ओ अपन पाछाँ एकटा बस पैघ जमाति ठाढ़ कऽ देलनि।

इ सत्य थिक जे हिनक जीवन-यात्राक कटु-मधु अनुभवमे बहुत बात घटित हएल अछि। हिनक आन-अवदान मानस सामाजिक आ

मनोवैज्ञानिक यञम घटित घटना- ग्रामाधिकारीक संग उरनिता ओ सदैव अपन काजम नक जकाँ ध्यान लगौने नहल छथि। सहवाक ब्ली सामर्थ्यवाध ओ अगिनिक्क नूयम अर्जित कयन छथि। किनक गँ ननयनसँ हिनक नौड्र नूय नूकायल नहि नहल अछि। जिह्वी गँ नेह ज ओ अपन मानम ज वात ि०नि लेत छथि स कोयकs छाउत छथि। उयञा, अयमान आदि ह्ललता ओ आव अंगेजिता नहि छथि। एकमात्र लक्ष्य ज कर्मवलं आगाँ वढी। मान-सम्मान गँ ओ ताक यावि नन छथि ज ढन-ढाकी प्रशक्तियन्नादि घनम ढनिआयल छनि। मिथिला - मैथिलीक नाम यन ओ धन-सम्पत्तिक यननाह नहि कयन छथि। दनादन यथी आ यत्र - यत्रादि प्रकाशित कयन छथि।

दखल जाय गँ निसङ्गह कहल जायत ज समय - साक्षक साञी वनेत अपन नचनाधर्मितावलं ञमन अपन यूगक महत्वपूर्ण हस्ताञन छथि। ओ अपन प्रतिरा वलं जीननक वीचसँ निरिन्न सामाजिक घटनादिक उ०ाकs जीनन-यञकं मजगूती प्रदान कयलनि अछि। ओ सामाजिकता आ मानवीय चिन्ताकँ अपन अनूरूति प्रवणता वलं नैतिकता आ व्लमानदानीयूर्वक उ०ाकs नचना जगतक ज स्नूय गढलनि अछि स हिनका साहित्य जगतक सिनमौन वनवेत छनि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

२.१६.अयोध्यानाथ चौधरी- "अमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व



अयोध्यानाथ चौधरी

"अमर"क बहुआयामिक व्यक्तित्व

गत वर्ष जनकपुरक प्रसिद्ध वेलकम होटलमे आयोजित एकटा पुस्तक समारोहमे बैनर पर 'लिखल' नाम रहास कार्यक्रम पचासम् कृति' देखि मन जिज्ञासा रानसँ तनिगित र' उठल। एकदम सुपरिचित व्यक्तित्व तथापि हुनका विषयमे जानकारी नव बुझबामे एल। जखन हुनका द्वारा सम्पादित- प्रकाशित" आँगन" पत्रिकाक वारिनी आ टीपनी आनन्द पृष्ठ पर ताक बन हुनकर लिखित किताबसभक खाता अलगे नहेत

छल मुदा एकर नाम किताब र' गेल हुनि तकर अंदाज नहि र' सकल छल। एहि बीच जानकारी भेटल जे हुनकर दूटा किताब एखना प्रेसमे छनि तहिसँ अपनहुँ लोकनि हुनक निरन्तर लेखन प्रवृत्तिसँ आश्वस्त र' सकैत छी। मुदा लेखनमे मात्र नहि,ओ मिथिला-मैथिली सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजन, मिथिला- मैथिली सम्बन्धित आन्दोलन आदिमे सेहो ओतब बढ़ि- चढ़िकय भागीदारी देखबैत देखल गेलाह अछि। स राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय दुनू स्तर पर। आ जनतब करावी जे तकर मूल्यांकन सेहो पूर्ण रूपमे भेल छनि। ओऽ मामलामे ओहन भाग्यशाली कम्मे भेटताह। उदाहरणस्वरूप नेपालमे मधेश प्रदेश द्वारा पहिल आ नव-गठित तीन सदस्यीय' मधेश प्रज्ञा-प्रतिष्ठान'क प्रमुखक जिम्मेवारी किछुए दिन पूर्व सम्हारलनि अछि। ओना एहिसँ पूर्वमे सेहो ओ नेपालक केन्द्रीय सरकार द्वारा गठित" नेपाल प्रज्ञा-प्रतिष्ठान" सन महत्वपूर्ण निकायक प्राज्ञ- सदस्यक रूपमे सेहो कार्य क' चुकल छथि। एतबे नहि, ओ नेपालक केन्द्रीय सरकार अन्तर्गत दासन महत्वपूर्णसाहित्यिक आ प्रकाशन सम्बन्धित संस्था" साझाप्रकाशन "क अध्यक्ष रूपमे सेहो ओ अपन तरहेँ जिम्मेवारी निर्वाह क' चुकल छथि। ई सब हुनकर कार्य- कुशलता आ चातुर्यक यथेष्ठ प्रमाण अछि।

आब आबी हुनक कृतिसब पर दृष्टिपात करी। हुनक पहिल प्रकाशित रचना" ईमान्दार बालक" नामक एकटा बालकथा छल जे1964 ई. मे मिथिला मिहिर साप्ताहिक, पटनामे छपल छल। अर्थात हुनक साहित्यिक यात्रा आइसँ54 वर्ष पहिने शुरू भेल जे एखन धरि ओहिना गतिमान अछि। हुनकासँ प्राय: एकटा निधा

छुटल नहि अछि जकरा क्रमिक रूपमे नीचाँ देबाक प्रयास कएल गेल अछि ।

हिनक कवितासंग्रहमे बन्न कोठरी, औनाइत धूआँ (2029 साल), नहि, आब नहि(2036 साल) , मोमक पघलैत अधर(गीत गजल), अन्हार अनचिन्हार(1990 ई.) , अन्हियाक चान(गजल संग्रह, 2070 साल, आ युद्धभूमिक एसगर यात्रा(2075 साल) आदि छनि । हिनक दीर्घ कविता' नहि, आब नहि' क नेपाली अनुवाद' हया, अब हया' आ हिन्दी अनुवाद' बस, अब नहीं' शीर्षकमे भेल अछि । हिनक कथासंग्रहमे नानासंग जयबौ ने कुजबा(1984 ई.), हुगली उपर बहैत गंगा(2065 साल) आ एकटी हाउनस(2076 साल) क नाम लेल जा सकैत अछि । हिनक एकमात्र उपन्यास' घनमुहाँ' (2029 साल) अछि जकर अंग्रेजीमे अनुवाद भ' प्रकाशित होयबा जा रहल अछि । हिनक एकटा' चीन जे हम देखल' (2070 साल) एकटा यात्रावृत्तान्त सेहो अछि जाहिमे चीन भ्रमणक संस्मरण अछि । हिनक कोरोना कालमे लिखल गेल एकटा लकडाउन डायरी सेहो अछि जे कोरोनाक संत्रासमे उमनायल जिनगी(2070 साल) नामसँ प्रकाशित अछि ।

ओ बहुत रास नाटक सेहो लिखने छथि जानी बहुरानी(2045 साल) , एकटा आओर बसन्त(2052 साल) , महिषासुर मर्दनाद एवं अन्य नाटक(2054 साल) तथा हैया अएलै अपन सामाज(नाटक

संग्रह2067 साल) आदि । हुनकन नाटक सरल नयाली अनुवाद' ग्रमनका उत्कृष्ट नाटकहरु(2064 साल) नामसँ सेहो प्रकाशित अछि । हुनक किछु शोध यनक पुस्तकसभ सेहो प्रकाशित अछि जेना' जनकपुरधाम न यस उपरका सांस्कृतिक सम्पदाहरु(2056 साल) , नाजकमलक कथा साहित्यम नारी(2064 साल) , लोकनाट्य: जट- जटिन(2064 साल) , Cultural Heritage of Janakpur (2062 साल। हुनक किछु आलेख संग्रह सेहो प्रकाशित छनि जेना' मैथिली लोकसंस्कृति' (2066 साल), तनाञ्जीका रांट देखि हिमालका कांख सम्म'(2067) , मिथिलाक लोकजीवन: लोक सहुर्द(2079) , समयका अन्हनाल यश्चाँउदै(2066)आदि । उा एकटा' नाजा सलहेस' (2074) नामक जीवनी सेहो प्रकाशित कयन छथि।

विविध विषयक किछु किताव सेहो लिखन छथि जेना' आजका धनुषा(2039 साल), जनकपुर लोकचित्र((2046) , एकान यन(निवान संग्रह) , समय- सहुर्द(2068 साल) आदि ।

उपर्युक्त विवरणसँ'ग्रमन'क साहित्यिक अवदानक एकटा व्यापक चित्र वनैत अछि । मुदा एहन व्यापक अछि हुनक पत्रकान व्यक्तित्व जकना सम्पूर्ण व्यक्तित्वक एकटा महत्वपूर्ण अंगक रूपम उाकना छाउल नहि जा सकैत अछि । हिनकन पत्रकानिताक इतिहास सेहो लगभग उाव पुनान अछि । उा2026 साल अर्थात लगभग53 वर्ष पहिन' वैदही' साप्ताहिकक कार्यालय प्रतिनिधिक रूपम पत्रकानिताक शुरुआत कयलनि । तकन वाद2049 सालम नयालक प्रतिष्ठित दैनिक

अखबारक प्रारम्भसँ5 वर्ष धरि जनकपुर संवाददाताक रूपमे कार्यरत रहलाह। अपन सम्पादनमे गत38 वर्षसँ नेपालक एकमात्र मैथिली साप्ताहिक 'गामघर'क सम्पादन आ प्रकाशन करैत आबि रहलाह अछि । 'आँजुर' नामक मैथिलीक त्रैमासिक पत्रिका विगत35 वर्षसँ सम्पादन- प्रकाशन करैत अएलाह अछि ।2054 सालसँ किछु वर्ष धरि एकटा नेपाली दैनिक 'सुप्रभात'क सम्पादन- प्रकाशन सेहो कयलनि । आ2055 सालसँ अद्यावधि 'जनकपुर एक्सप्रेस' नामक नेपाली दैनिक सम्पादन- प्रकाशन करैत आबि रहलाह अछि।

एकर अतिरिक्त ओ किछु पुस्तकाकार संग्रह सबहक सम्पादन सेहो कयलनि जेना 'मैथिली पद्यसंग्रह' (प्रकाशन: नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान: 2051 साल) , लावाक धान(कवितासंग्रह) , 'त्रिशुली' (स्व. मथुरानन्द माथुर लिखित खण्डकाव्य, 2049 साल) नेपालक मैथिली पत्रकारिता(2044 साल) , मैथिली लोकनृत्य: राग- रंगिमा एवम् स्वरुप(नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान(2061 साल), अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आ नेपाल(2065 साल) , हम ओ तुम(हिन्दी कवितासंग्रह, 2066 साल) , मैथिली नाटकसंग्रह (2067) , महाकवि विद्यापति आ नेपाल(सामा प्रकाशन, 2068) , मैथिली लोक- संस्कृति संगोष्ठी प्रतिवेदन(2069 साल) , लोकनायक सलहेस(निबन्ध संग्रह- खण्ड1 तथा खण्ड2 , साल2069) , दीनाभद्री(निबन्ध संग्रह2070 , नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान) ,अहाँ जे कहलहुँ(साक्षात्कार संग्रह, 2071) आदि ।

मगलव उ नाम रुमास कायति' ग्रमन 'कसाहित्यकान आ यत्रकान-दुनू व्यक्तित्व समानतूय सँ, समानान्तन नूयसँ निनन्तन गतिमान छनि। उा सर्वदा सक्रिय नहैत छथि। एकन अतिनिक्त हिनक व्यक्तित्वक एकटा आन महत्वपूर्ण यक्ष छनि- नाष्ट्रिय-अन्तर्नाष्ट्रिय स्तनक साहित्यिक- सांस्कृतिक सभा-सम्मलनम सक्रिय सहभागिता। उा निद्यायति सभा संस्थान, दनभंगाकआजीवन सदस्यकहैसियतसँ कनीव कनीव प्रतिवर्ष नयाली साहित्यकानलोकनिक टीमक नतृत्व कनैत छथि आ ताहि हिसावसँ भानतक अनक विशिष्ट शहनसवक ग्रमण क' चूकल छथि। उाहि संस्थान द्वाना प्रायाजितअन्तर्नाष्ट्रीय मैथिली सम्मलनक सफल आयाजन का0माण्डुम एक बन आ जनकयुनधामम दु बन कनवा चूकल छथि। काना सभा- सम्मलनक आयाजनम हिनकन व्यवस्थायकीय उमताक प्रशंसा कनैटा यउत। मुदा तकन लाल सहा यर्याप्त नूयम भैरि चूकल छनि आ भैटैत नहैत छनि। हिमन मगलव कार्यक समुचित मूल्यांकनसँ अछि। उा दर्जनां युनस्कान आ सम्मानसँ निभूषित भ' चूकल छथि।

सवटा प्राप्त सम्मान आ युनस्कानक विवनण उल्लख नहि क' हम किछु मात्र ऊँगित कन'चाहव, जना नयाल नाजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान द्वाना प्रदत्त प्रथम' मायादवी प्रज्ञा युनस्कान' (2052 साल), विद्यायति सभा संस्थान, दनभंगा द्वाना' मिथिला विभूति' सम्मान, लेखन प्रकाशन, यटना द्वाना' लेखन सम्मान' , नयाल मैथिली साहित्य यनिषद, जनकयुन द्वाना' वैदही प्रतिभा युनस्कान', अन्तर्नाष्ट्रिय मैथिली सम्मलन, मुम्बई द्वाना' मिथिलानत्न' सम्मान, मधुनिमा नयाल द्वाना' मधुनिमा सम्मान' , चतना समिति, यटना द्वाना' यात्री चतना युनस्कान' , सामा प्रकाशन

द्वारा' सामा लोक संस्कृति पुरस्कार(2068 साल) , नेपाल सरकार द्वारा मैथिली भाषा पर देवय जायबला सर्वोच्च' नेपाल विद्यापति भाषा साहित्य पुरस्कार' (2069 साल), रायपुर(छत्तीसगढ़, भारत) द्वारा' मिथिला विभूति सम्मान' (2069) आदि । एहि सभक अतिरिक्त राष्ट्रपति द्वारा" सुप्रबल जनसेवा श्री तृतीय" (2077 साल) आ नेपाल सरकार द्वारा गद्याख्यान/ नाटकक हेतु देल जायवला" महाकवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा पुरस्कार" (2077) विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि ।

नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक प्रारम्भक रूपमे चीन, बांगलादेश आ भारतक साहित्यिक समकक्ष संस्थासभ प्राप्त करब सेहो एकटा सौभाग्यक बात अछि । एकर बाद हुनका सम्बन्धित किछु विशेष उल्लेखनीय बातक जानकारी करावी । बहुत उल्लेखनीय बात सबमे एकटा विशेष उल्लेखनीय योगदान इहो अछि जे हुनकासँ पहिने सामा प्रकाशन मात्र नेपाली किताब प्रकाशित करैत छल, मुदा ओ जखन अध्यक्ष भेलाह त' पहिल बेर" बगियाक गाछ" शीर्षकसँ एकटा मैथिली बाल कथासंग्रह प्रकाशित करौलनि । दोसर महत्वपूर्ण बात जे पहिल बेर काठमाण्डूमे ओ अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन(2067 साल) आयोजन कैलनि जकर उद्घाटन नेपालक राष्ट्रपति आ विसर्जन नेपालक उपराष्ट्रपति कैलनि । तहिना जे काठमाण्डूमे आयोजित सार्कस्तरीय कविगोष्ठीमे ओ सर्वप्रथम मैथिलीक कविक रूपमे नेपालक प्रतिनिधित्व कैलनि । चारिम जे ओ पहिल बेर नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यक रूपमे प्रधान सम्पादकक जिम्मेवारी वहन करैत मैथिलीमे" आङन" पत्रिकाक शुभारम्भ कैलनि।

उपर्युक्त विवरणसँ मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृति तथा मैथिली पत्रकारिताम हुनक विशेष अवदान दिश संकेत करैत अछि । कारा तरहक साहित्यिक- सांस्कृतिक कार्यक्रम, सभा- सम्मेलन, गोष्ठी आदिम हुनक व्यवस्थापकीय क्षमताक प्रशंसा करबहिटा पड़त। आयोजनक सम्पूर्ण भार जेना दिमागम बैसल रहैत छनि। ककरा कोन जिम्मेवारी देल गेलै' ओकरा पर बनसि जयताह। ओ कार्यकर्ता आर निरूपाहित भ' जाइत। आ ताहिसँ ओकरासँ हुनक सम्बन्ध [illegible] आबि जाइत अछि । एकर अनुभूति जखन हिनका महिना, दु महिनाक बाद होइत छनि, तखन ओ आगे भ' क' ध्यान करताह, " की यौ, कत' गायब रहैत छी? एकदम भेट होअइ न। एना जे गायब भ' जेबै, त' काज चलतै? तावत् धरि ओहो जे विरुद्ध बनल रहैत छथि सेहो सामान्य भ' जाइत छथि आ सम्बन्धक गाड़ी पूर्ववत गतिमान भ' जाइत अछि । ई एकरा गुण कही की अवगुण?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.११.अजित कुमार झा-घनमूहाँ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समन्वयताक दस्तावेज



अजित कुमार झा- संपर्क-9472834926

घनमूहाँ: मधेशी आन्दोलन आ सामाजिक समन्वयताक दस्तावेज

विदेह अपन शृंखला मे अहि बेर एक एहन विभूति कें अपन विशेषांक निकालबाक निर्णय कएने अछि जे दूनू यानेक मिथिला, मैथिली एवं मैथिलक मध्य सांस्कृतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक क्षेत्र मे सेतुक कार्य क' रहल छथि। जनकपुर धाम बिनु मिथिलाक चर्च अधूरा अछि। मानलहुँ जे नेपाल मे ओही सब मधेशी कहाबैत छथि मुदा हमरा सब लेल त' अपन सहोदर छथि। जनकपुर धाम सँ पुनौरा

कँ भिन्न कोना मानि सकैत छी। एतहि दुनूक मध्य सीमा रेखा घीचि देल गेल अछि मुदा दुनूक अन्तर्मन मे एकहि तरहक सपना आ संस्कृति अछि आ ई सभ अहिना सम्भव नहि होइत छैक, एहि कँ लेल सेतुक आवश्यकता होइत छैक आ तहि मे सँ एक छथि नेपालक धनुषा केर बघचौरा गामक मैथिलीक लब्धप्रतिष्ठ बहुआयामी साहित्यकार श्री रामभरोस कापडि 'भ्रमर' जे वर्तमान मे जनकपुर धाम मे रहैत छथि। लगभग पाँच दशक सँ निरन्तर माँ मैथिली केर सेवा मे लागल छथि। साहित्यक लगभग सभ विधा मे उत्कृष्ट रचनाक हिनकर अपन संसार छन्हि। विदेह पर बहुत किछु उपलब्ध छन्हि जकर आनन्द निःशुल्क उठाओल जा सकैत अछि। संपादन मे सेहो निष्णात छथि। हिनक रचना संसार त' बड पैघ छन्हि मुदा एखन हम चर्चा करब हिनक उपन्यास "घरमुँहा" केर।

जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुर धाम सँ सन् 2012 मे प्रकाशित हिनक पहिल उपन्यास "घरमुँहा" मधेश आन्दोलनक व्यथा कथा अछि। अपन रचना प्रसंग मे श्री भ्रमर जी लिखैत छथि : 'मैथिली मे समालोचकक कमी छैक आ ताहूमे नेपालक रचना पर लिखबाक ककरा पलखति छैक। नेपाल मे त' आर अकाल छैक। तखन रचनाक मूल्यांकन भ' नहि सकल तेँ अपन लेखन कँ आनक आँखिए किंवा पाठकक आँखिए तौलबाक अवसर नहि भेटल।' मुदा हिनकर रचनाक मूल्यांकन त' एहि पारक वरिष्ठ मैथिली साहित्यकार सभ निरंतर करैत रहलनि अछि आ जे ई कमी रहि गेल छल तकरा पूरा करबाक प्रयास विदेह क' रहल अछि।

'अमन' जी केर उपन्यास "धनमुहा" मधेशी आन्दोलनक पृष्ठभूमि पर लिखल एक अद्भुत कृति अछि। नेपालक दक्षिणी भागक मैदानी (तराई) क्षेत्र कें मधेश आ ओहि तराई मे रहय वाला भारतीय मूल कें लोग जे मैथिली, थारू, अवधी एवं भोजपुरी भाषी छथि तिनका सब कें एखन मधेशी कहल जाइत छैक। कहबाक कोनो प्रयोजन नहि जे हिनकर सबहक खानपान, रहन सहन सब अपन सन छन्हि। मुदा एखन हिनका सब सँ संवैधानिक भेद भाव कें कारण ओहि आन्दोलनक प्रयोजन पड़लै। आखिर पहाड़ी आ मधेशी मे भेदभाव किएक? अपन अधिकार केर प्राप्ति हेतु कतेको शहीद भ' गेलाह। नेता सब कें कि छैक, पिसाइत त' अछि आम जनता चाहे ओ मधेशी होइक आ कि पहाड़ी?

जुलूस सड़क पर नारा बाजी करैत आगू बढ़ि रहल अछि आ लोकक करमान लागल छैक। जखन कोनो भी पहाड़ी केर घर अथवा दोकान देखाइ पड़ैत छैक ओहि भीड़ मे सम्मिलित उपद्रवी तत्व अपन हाथ साफ क' लैत अछि। मधेशी आन्दोलन उग्र रूप धारण क' चुकल छल। इम्हर घर कें भीतर पहाड़ी मास्टर साहेब नरेश उपाध्याय अपन घर मे अहुरिया काटि रहल छथि। स्कूल, कालेज, दोकान आ अन्य सब बन्द छल मुदा पेटक धधकैत आगि कतहु शान्त रहलै? आ ओहि कें लेल चाही रुपैया आ मास्टर साहेब कें हाथ खाली छलनि। धीया पूता कें लेल चिन्ता होइत छन्हि तेँ तैयार भ' क' घर सँ निकलि बैंक जयबाक विचार करैत छथि। मास्टर साहेब केर पत्नी सविता हिनका बैंक जाय सँ रोकबाक प्रयास करैत छथिन्ह मुदा मास्टर साहेब कहैत छथि : ' अहाँ व्यर्थ चिन्ता

रहैत छी। हमरा कड़ा किछु नहि कहला। हमर शरीर मे त' हमर विद्यार्थी अछि। ककरा हम बिगाड़ने नहि छियै त' ककरो की करत!' खिड़की सँ हुलकी मारि स्थितिक टोह लेबाक प्रयास करैत छथि आ आन्दोलनी रीत कँ उपद्रव देखि निकलबाक हिम्मत नहि जुटा पबैत छथि। मास्टर साहेब कँ अपन शरीर बचाबाक लागि नहल छलनि आ शहर मे स्कूलक घंटी सुनि रस्ता धरि जाइत छथि मुदा हिम्मत जुटा क' स्कूल पहुँचैत छथि। एक दुइ रहैत छथि किछुक त' छात्र सँ अपन मीत जगमोहन कँ आवाज सुनि हुनका बल भेटि जाइत छन्हि। सुख दुःख कर साथी अपन मीत पर हुनका पूरा भरोसा छलनि। छात्र हुनकर मित्र मध्येसी आन्दोलन मे जी जान सँ लागल छथि मुदा अपन पहाड़ी मीत मास्टर साहेब कर सुरक्षा हुनका लेल चिन्ताक विषय छल। एहि संकट कँ समय मे जगमोहन अपन मीत कँ सपरिवार अपना घर पर आबय लेल जिद्द पर अड़ल छथि मुदा मास्टर साहेब कँ रहैत छन्हि जे जौँ ओ अपन घर छोड़ि मीतक घर पर चलि जाएत त' आन्दोलनक ध्यान कमजोर भ' जैत। जगमोहन कँ पूरना दिन सब मोन पड़ैत छन्हि जे अपन मीतक लेल आन्दोलन कर नाह सँ हटय लेल सदा तैयार र' जाइत छथि मुदा मास्टर साहेब सख्त भेल अपन मीत कँ रोकि लैत छथि। जगमोहन मोन मसोसि क' नहि जाइत छथि। ओना मास्टर साहेब कँ मोन रहैत छन्हि जे एहि आन्दोलन मे ओ अपन मीत जगमोहन अधिकारी कँ साथ देथु आ सड़क पर उतरि मध्येसी आन्दोलन जिन्दाबादक नारा लगाबथि मुदा पहाड़ी छथि आ घर मे नेपाली बजैत छथि शहर मे मध्येसी सबहक कहर प्रतिक्रिया नहि होइनि से चिन्ताक विषय छन्हि।

लगभग ४० मास सँ आन्दोलन जारी छल। सबहक जीवन अस्त-व्यस्त भेल छलै। तथापि ई आन्दोलन हेतु पूँजी करब आवश्यकता होइत छैक आ अहि कार्यक बीड़ा उठौने छलथि देशक बागी टोलक कहबैका कामेश्वर सिंह। हिनक पुत्र राजीव जँ कालेज म पढ़ैत छल स अहि आन्दोलन म जी जान सँ जुटल छल। जुलुस म शामिल उपद्रवी तत्व कँ देखि राजीव कँ चिन्ता सेहो होइत छलै। सरकारक तरफ सँ वार्ता करब आश्वासन भेटैत छैक आ ई खबर सुनि मारुत साहेब कँ होइत छैक ज चिन्ता टरल मुदा सब 'बुढ़ियाक फुसि'। वार्ता विफल होइत छैक आर आन्दोलन तीव्र मुदा मारुत साहेब कँ पुना भरोसा छलनि ज एक-न'-एक दिन सरकार कँ झुकह पड़तैक आ मधेशी सब कँ न्याय भेटि क' रहतैक बाद अहि लेल वार्ताक काका दौड़ चलतैक। हिनका लेल चिन्ताक मुख्य विषय छलनि सामाजिक समरसताक ह्रास होनाइ। पहाड़ी लोग सब कँ धमकी देनाइ शुरू भ' गेल छलै आ लोग औने पौने दाम म अपन बाप दादाक बनाओल घर आ जमीन कँ बेचि पलायन करय लेल मजबूर होइत छथि।

वार्ताक काका असफल दौड़ कँ उपरांत 30 अगस्त 2007 क' 26 बूँदा पर सहमति बनि जाइत छैक। आन्दोलन बन्द होइत अछि। विजय जुलुस निकलैत अछि। मुदा नेपाल सरकार मधेशी सबहक खुशी म हेन ग्रहण लगौलक आ तकर नतीजा होइत छैक ज मधेशी आन्दोलन पुनः धधकि उठैत छैक। अनिश्चितकालीन नाकाबंदीक घोषणा होइत अछि। सातह दिनक नाकाबंदी सँ राजधानी काठमांडू म हाहाकार मचि जाइत छैक आ बाध्य

भ' क' नेपाल सरकार कँ सूचना पठौने छैक आ आठ बुँदा सहमतिक उपरांत संविधान सभाक निर्वाचनक तैयारी प्रारम्भ भऽ गेल अछि। तीन संख्या मे मधेशी चुनाव जीति क' अबैत छथि आ नेपाल मे एकटा नव अध्यायक श्री गणेश भऽ गेल छैक।

दुनू पक्षक सहमतिक उपरांत जे मास्टर साहेब मधेश जिन्दाबादक नारा लगबैत छलथि आ संगहि तीन दिनक परिकल्पना करैत छलथि से वर्तमान परिस्थिति मे अपना भ' कुहरि रहल छलथि। सम्पूर्ण मधेश मे विभिन्न समूहक नाम पर चंदा उगाही, अपहरण, धमकी देनाइ शुरू भ' गेल अछि। सशस्त्र आन्दोलनक नाम पर आम पहाड़ी कर जीवन नर्क भेल जा रहल छल। वास्तविकता त' ई छल जे सम्पूर्ण आन्दोलन गुंडा तत्व कर द्वारा 'हाइजैक' भ' गेल छैक। अपना सबहक देश मे एखन धरि जतेक टा आन्दोलन भेल अछि तकर अन्तिम परिणाम इएह भेल अछि। मास्टर साहेब कँ फोन पर लगातार दस लाख रूपैया देबाक लेल धमकायल जा रहल छन्हि। मास्टर साहेब अपन घर जमीन सब बेचि अपन परिवारक संग कोनो सुरक्षित स्थान पर पलायन करबाक योजना अपन पत्नी सविता कँ समझाबैत छथि। एतेक आसान काज त' नहि छैक अपन बाप दादाक डीह पर सँ पलायन करनाइ मुदा इतिहास गवाह अछि जे मजबूरी मे लोक की नहि करैत अछि? एखन मास्टर साहेब तैयारी मे जुटल छथि आ उम्हर कालेज सँ घुरैत काल हिनकर बेटी किरण कर अपहरण भ' गेल छन्हि। अपहर्ता दस लाख रूपैया नहि देला पर अथवा पुलिस कँ कोनो तरहक सूचना देला पर हिनकर बेटी किरण कँ जान सँ मारि देबाक धमकी देने

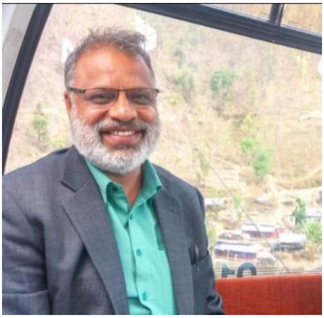
छलनि। अपन मानक व्यथा मास्टर साहेब ककरा कहितथि? हुनकर मीत जगमोहन सेहो कतहु बाहर निकलल छलथि।

किरण कर प्रेमी नाजीर कें एहि बातक किछु पता लगैत छैक त' ओ अपन स्तर पर खोजबीन करैत अछि आ अपहर्ता सबहक पहिचान करय मे सफल होइत छैक आ मास्टर साहेब सँ भेंट करय अबैत छथि त' जगमोहन सँ ज्ञात होइत छन्हि जे ओ अपन घर बेचि क' अपन परिवारक संग सम्पूर्ण बस सँ काठमांडू लेल विदा भ' गेलाह। ओ अपन मीत कें ऊपर भरोसा नहि क' सकलाह आ सूनसान स्थान कें लेल भारी मोन सँ प्रस्थान क' गेलाह। नाजीर, ओकर पिता कामेश्वर सिंह आ जगमोहन मास्टर रमेश उपाध्याय कें ताकय लेल निकलैत छथि। अपन प्रयास सँ कामेश्वर सिंह बस रोकबाबय मे सफल होइत छथि आ मास्टर साहेब कें बस सँ उतारल जाइत छन्हि। एहि अपहरण मे के शामिल छल आ इंसानी रिश्ता कोना तार तार भ' रहल अछि एकर अद्भुत दर्शन भेल अछि एहि उपन्यास मे जे बिनु पढ़ने नहि समझि सकैत छी। मास्टर साहेब कें घर घुरि चलबाक लेल कामेश्वर सिंह आ जगमोहन अनुनय विनय करैत छथि मुदा जखन बेघर भ' गेलाह त' आब करथु की? मुदा एहि उपन्यासक एक सुखद अन्त होइत अछि आ मास्टर साहेब कें जखन अपन घरक मादे सही जानकारी भेटैत छन्हि तखन घर घुरय लेल मानि जाइत छथि आ उपराम लादल गाछीक घनमुहाँ बेल जँका मास्टर रमेश अधिकारी कर ठग हुनकर आ जी हल्लुक बुझा रहल छलनि।

अहि उपन्यासक उत्थान मे साहित्यकार श्री राजेन्द्र विमल जी बहुत सटीक लिखने छथि : "मैथिलीक ख्यातनामा आख्यानकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क पहिल उपन्यास 'घरमुहाँ' नेपालक मधेश आन्दोलन सँ उपजल उमड़ल जन आकांक्षा, मोहभंग, विकृति, पीड़ा, संवेदनात्मक उद्वेलन, विचार आ जटिलता केँ ध्यान यथार्थ परक चित्रावली उरेहैत समन्वय दर्शन संग मर्मस्पर्शी कृति बनैत अछि।"

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१८.रमेश रञ्जन-एकटा आर बसन्त : तात्कालीन समय आ समाजक प्रतिनिधि नाटक



𑒩𑒧𑒹𑒬 𑒩𑒘𑓂𑒖𑒢

𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒢 𑒫𑒮𑒢𑓂𑒞 : 𑒞𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒮𑒧𑒨 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒢𑒱𑒡𑒱 𑒢𑒰𑒙𑒏

𑒏𑒄𑒉𑒏 𑒠𑒬𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝𑒏𑒹𑒿 𑒬𑒥𑓂𑒠 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒞𑓂𑒢 𑒏' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒁𑒞𑒲𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒹𑒬 𑒂 𑒋𑒯𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒮𑒿𑒑 𑒫𑒱𑒫𑒹𑒔𑒢 𑒟𑒼𑒛𑓃 𑒠𑒳𑒩𑒴𑒯 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡𑒧𑒹 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒞𑓂𑒧𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒩𑒝𑒏 𑒂𑒡𑒱𑒏𑓂𑒨 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒩𑒮 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒦𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻। 𑒯𑒧 𑒄 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒞𑒼 𑒉𑒯𑒹𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒞𑓂𑒢 𑒏' 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲।

𑒫𑒱𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒮𑒧𑓂𑒫𑒞𑒏 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒧 𑒠𑒬𑒏𑒧𑒹 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒪𑒹𑒐𑒏, 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩 𑒩𑒰𑒧𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒏𑒰𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒦𑓂𑒩𑒧𑒩 𑒉𑒏𑒙𑒰 𑒂𑒢 𑒫𑒮𑒢𑓂𑒞 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑒱। 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒩𑒯𑒻 𑒥𑒰𑒪𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒂 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒝𑒞𑒱। 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒪 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒳𑒐𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒠𑒯𑒹𑒖𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒰𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻। 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒄 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒞𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒧𑒹 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒉𑒏𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒩𑒱𑒣𑒴𑒩𑒏 𑒫𑒱𑒭𑒨 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒪' 𑒖𑒰𑒃𑒏। 𑒞𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒮𑒧𑒨 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒩𑒔𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒮𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒦𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒏𑒉𑒢𑒹 𑒩𑒯𑒻𑒏

ओही विषय तँ बहुत रास लेखक साहित्यक विभिन्न विधामे ओहि विषयमे साहित्य रचना कएलनि।

एहि नाटकक लेखन आ प्रदर्शनसँ पूर्वहु नेपालक भूमिमे महेन्द्र मलंगिया अपन पहिल नाटकक रूपमे लक्ष्मण रेखा खण्डित लेखन कएने छलाह आ ओहि नाटककेँ नेपाल आ भारतक मैथिली क्षेत्रमे व्यापक प्रदर्शन भेल छलै। स्वाभाविक छै जे जखन एकटा आन पसन्दक लेखन भेलै त नेपालक साहित्यिक परिवेशमे एहि नाटक प्रति पाठक र रङ्गकर्मी उत्सुक रहए।

ओहि कालखण्डमे हम स्वयं सेहो रङ्गकर्मसँ सक्रियतापूर्वक आबद्ध छलहुँ। हमर सम्बद्धता मिथिला नाट्यकला परिषदसँग छल। जनकपुर परिसरक सर्वाधिक प्रभावशाली ओ समूह एहि नाटकक मञ्चन दिस उत्सुक नहि भ' सकल। एकर कारण विवेचनमे नहि जाएब, मुदा एहि नाटकक पाठ हमरा पढबाक अवसर उपलब्ध भ' गेल रहए। हमरा तखन लागल रहए जे एहि नाटकमे विषयवस्तुक समसामयिकता छै। पात्र आ परिवेश मौलिक छै, संवाद चारगर आ पात्रोचित छै। मञ्चपर एहि नाटकक प्रदर्शन आवश्यक छै। किछुए दिनक अन्तरालमे एहि नाटकक प्रदर्शन कएल गेलै। जनकपुर आ काठमाण्डौमे भेल प्रदर्शन अपेक्षाकृत तात्कालीन अवस्थामे नव मानल जाएबला नाट्यकर्मी सभक समूह आकृति एहि नाटकक प्रदर्शन कएने छल। स्वाभाविक छै प्रदर्शनमे आवेश रहै मुदा प्रदर्शनमे परिपक्वताक आओर बेसी आवश्यकता रहै।

मूलतः हम ई कहऽ चाहलहुँ अछि जे ओहि नाटकक प्रदर्शन देखबाक अवसर भेटल। आब नाटक प्रदर्शनक ढाङ्ग काजक प्रदानशाली नहि, रङ्गमञ्चमे प्रयोग होमओबला विभिन्न अवयवसभ अर्थात लाइट, साउण्ड, प्रोप्स, अभिनेताक कार्य वा समग्रमे निर्देशकक कार्य काजक प्रदानशाली छलै ताहि रूपकँ विश्लेषण ओखनुक दृष्टिए थोड़ जटिल छै। मिथिला उत्तम प्रदानशाली आ कार्यक स्तरपर व्यावसायिक रङ्गमञ्च क' रहल समूहसभ सेहो प्रविधि प्रयोगक दृष्टिए कमजोर छल। अर्थात प्रविधिसँ बहुत परिचित नइ भ' पाओल छल।

जनकपुरमे विनायक बाद आकृतिमे युवा रङ्गकर्मी लोकनि आनन्द भ' उत्साहक संग कार्य क' रहल छलाह। मूलतः रङ्गमञ्च आवेश आ शौकक आधारपर सक्रिय छलै। हमरासभ अधिकांश मैथिल मिथिलाक ग्रामीण रङ्गमञ्चसँ परिचित छी। खासक' पर्व, त्योहार आ उत्सवमे गामसँ बाहर रहनिहारसभ ओहि अवसरपर नाटक करैत छलाह। जाहि नाटकक प्रदर्शन रूपकँ थोड़बा स्मरण कएल जाए त भेटि जाएत, पारसी थिएटरक रूप। ओना त बहुत रास हिन्दी नाटक होइत छलै मुदा मैथिली नाटक सेहो प्रदर्शन शैलीगत स्तरपर आमरूपमे ताहिसँ भिन्न नइ छलै। ओहि समयमे जनकपुर सन जगहपर सेहो गामसँ आएल युवा सभ छलाह, जिनक आधुनिक रङ्गमञ्चसँ खास परिचिति नइ छलनि आ ओ पारसी शैलीक नाटक करैत छलाह। ओकरा आन बसन्तक या0 यथार्थवादी नाटकक जकाँ रहितो प्रदर्शनमे आधुनिक रङ्गमञ्चक प्रविधिसँ वञ्चित रहल। या ई कही जे पारसीक प्रदर्शनात्मक शैलीक चपेटमे रहल नाटक।

एहि नाटकक पाठयन बाद कही त विषय वस्तु समाप्त नहि। नाटकक कथोपकथनमे विशिष्टता देखाओल गेल छल। मिथिलाक समाज छलै ओहि नाटकमे, अर्थात समाजक ओ विभिन्न रूप आ चित्र भेटै छै मिथिलाक एकटा गाममे ओ अत्यन्त प्रभावशाली आ सहजताक संग उपस्थित छल। जेना अभिजात्य सामन्त परिवार जकरा लग अपना जीवनपद्धतिमे आडम्बर छलै, लालच छलै आ समयक अपना मुट्ठीमे नियन्त्रित रखबाक अनवरत प्रयत्न करैत देखल जाइ छलै। निर्धन आ कमजोर छलै जकर जीवन जटिल छलै। जीविकाक हेतु सङ्घर्ष क' रहल छल। वैवाहिक आ संस्कारिक कार्यक निर्वहन सेहो चुनौतीक रूपमे छलै। ओ कहुना दायित्वमुक्त होएबाक विवशतामे रहैत छल। स्वभाविक छै जे एहिसँ सामाजिक त्रासदीक जन्म होइ जे एहि नाटकमे जनमैत छै। एहि नाटकक कालखण्डसँ आओर अतीतमे जाइ त बालविवाह, विधवाविवाह, अनमेल विवाह, बहुविवाह सन सामाजिक कुप्रथाक ओली रूपसह आन स्थानर देखाओल छै। एहन वैवाहिक प्रथासँ सामाजिक विकृतिक चरम विकृष्टता उत्पन्न होइ मुदा एहना वर्ग छलै जे एहन प्रथाक महिमा मण्डन सदा करैत छलाह। अभिजात्य वर्ग अपन अन्दर कुप्रथाक पर्दाक माध्यमसँ छकन छलाह। मुदा श्रमिक वर्ग लाञ्छित होइत छल। अर्थात लाञ्छना मात्र नहि, एहि प्रकारक्षमे कतेको परिवारक विनाश भ' जाइत छलै। एहि नाटकक नाटककार एहि द्वन्द्वक समधानिक' पकड़लनि अछि।

एकटा गरिब बाप अपना बेटीक ब्याहक हेतु व्याकुल अछि। मुदा ओकर व्याकुलता व्यक्तिगत व्याकुलता मात्र छै। बराहक दर राज अनुसार ओ दहेजक भुगतान करबामे असमर्थ अछि तँ ओ बेटीक

𑒞𑒢𑒰𑒏 𑒒𑒩 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒮𑒰𑒍 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒂 𑒏𑒱 𑒥𑒮 𑒅𑒧𑒹𑒩𑒑𑒩 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒖𑒰𑒞𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹। 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒲𑒨 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒁𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒢𑒃 𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒯𑒱 𑒥𑒲𑒧𑒰𑒩 𑒣𑒳𑒩𑒳𑒭𑒏 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻 𑒂 𑒄 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒞𑒢𑒰𑒏 𑒒𑒩𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒢𑒻𑒯𑒩𑒧𑒹 𑒩𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒰𑒡𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱।

𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒏𑒟𑒰 𑒋𑒏𑒠𑒧𑒮𑒿 𑒮𑒱𑒢𑒹𑒧𑒰𑒄 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒂𑒑𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒁𑒦𑒱𑒖𑒰𑒞𑓂𑒨 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒨𑒼𑒑𑓂𑒨 𑒅𑒧𑒹𑒩𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒍𑒯𑒱 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒓𑓂𑒑𑒮𑒿 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒩𑒧𑓂𑒦 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒻 𑒂 𑒏𑒱 𑒄 𑒏𑒯𑒲 𑒖𑒹 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒬 𑒮𑒧𑒨𑒰𑒫𑒡𑒱 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒄 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒼𑒔, 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒮𑒿 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒑𑒞𑒱𑒬𑒲𑒪 𑒂 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰 𑒦𑓀𑒖𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒍𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒨𑒱𑒏𑒰𑒮𑒿𑒑 𑒥𑒰𑒪𑓂𑒨𑒁𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒮𑒢 𑒕𑒻, 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒡𑒫𑒰 𑒯𑒼𑒋𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒍𑒏𑒩 𑒠𑒼𑒭 𑒢𑒃 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹 𑒍𑒯𑒱 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒬𑒑𑒳𑒢 𑒢𑒃 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒍𑒋𑒯 𑒠𑒴𑒢𑒳𑒏 𑒦𑒹𑓀𑒙, 𑒠𑒴𑒢𑒳𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒩𑓀𑒑𑒞𑒰, 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰, 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒲𑒨 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒟𑓂𑒩𑒲𑒪, 𑒮𑒮𑓂𑒣𑒹𑓀𑒮 𑒂 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒣𑒳𑒢𑒰𑒓𑓂𑒑𑒢𑒰 𑒣𑒳𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩𑒼𑒏𑓂𑒞𑒱। 𑒃𑒋𑒯 𑒏𑒟𑒰𑒢𑒏 𑒕𑒻।

𑒋𑒯𑒢 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒬 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭 𑒂 𑒩𑒰𑒏𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒖𑒏𑒩 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒂 𑒫𑒱𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰, 𑒮𑓀𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒂 𑒮𑒧𑒨 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒹𑒯𑒢 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒣𑒩 𑒮𑒱𑒩𑓂𑒖𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒥 𑒔𑒳𑒢𑒾𑒞𑒲 𑒞 𑒕𑒻। 𑒁𑒢𑒹𑒏𑒼𑓀 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒂𑒩𑒼𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒩' 𑒣𑒛𑓃𑒻 𑒕𑒻। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒢𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒮𑒩𑓂𑒖𑒏 𑒋𑒯𑒢 𑒂𑒩𑒼𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒩𑒫𑒰𑒯 𑒢𑒃 𑒏𑒩𑒻𑒋 𑒂 𑒞𑒿 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒋। 𑒞𑓂𑒩𑒧𑒢𑒖𑒲 𑒋𑒯𑒢 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒂 𑒠𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒿 𑒢𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒩𑒔𑒢𑒰𑒩𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒁𑒯𑒴 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒧𑒹 𑒄 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡

परिवर्तनक परिकल्पना करैत छथि। एकटा क्रान्तिकारी घटना प्रस्तुत करैत छथि। हुनक दृष्टिकोण छनि बिन्दुक जनता आ शासकीय दमनक गर्भमे क्रान्तिक जन्म भ' सकैत। रत घटना छै। जे ओहि घटनाकेँ ग्रहण करत ओएह परिवर्तनक कठिन मार्गपर आगाँ बढ़ि सकैत। परिवर्तनक संराहक बरबाम पारिवारिक पृष्ठभूमि बाधक होएबाक कथनमे जे सपना होइक मुदा एहि नाटकक माध्यमसँ क्रमर एहि मान्यताकेँ स्थापित कर'मे सफल होइत छथि जे विचारकेँ न त अतित, न त पृष्ठभूमि छेक सकैत।

एहि नाटकक सन्दर्भमे जखन चर्चा आगाँ बढ़बैत छी त हमरा यूरोपिय समाजक परिवर्तनक कालखण्डकेँ (याद संस्मरण भ' अबैत। मार्क्स जीबैत रहथि आ यूरोपिय समाजक सामाजिक, राजनीतिक घटनापर बड़ तीक्ष्ण नजरि रखने रहथि। बहुतो लेखक साहित्यकार वा कलाकर्मी लोकनि सेहो अपन सिर्जन आ प्रदर्शनद्वारा यूरोपक कठिनकालकेँ अभिव्यक्त क' रहल रहथि। ओहि क्रममे स्वयं मार्क्स कहैत छथि जे यूरोपमे पूँजीवाद आ पूँजीक नियन्त्रक द्वारा सत्ता नियन्त्रण क' लेलक अछि। राष्ट्रीयता किया अछि मुदा सत्ता त यर्थार्थतः पूँजीपतिक हाथमे छै। एहि बातकेँ अपन स्पष्ट आ प्रभावी ढंगसँ द्वारा वैचारिक वा राजनीतिक अध्येता लोकनि अपनाकेँ सम्प्रेषित नहि क' सकलाह जकर बाल्जाक अपना उपन्यासक माध्यमसँ करैत छथि। साहित्यमे तात्कालीन समयक इतिहासबोध रहैत छैक। तँ इतिहास आ साहित्य एकदोसरक परिपूरककेँ रूपम संगसँग यात्रा सेहो करैत अछि। ओना साहित्य इतिहासक सम्बन्धकेँ एकर सहजताक संग व्याख्या नहि कएल जा सकैत। तथापि एहि प्रसङ्गकेँ

एहिठाम उल्लेख करबाक इहो कारण अछि जे नाटककार ग्रमर एहि नाटकमे एहन उपकथासभकेँ सायास लओलनि अछि जे नेपालक तात्कालीन समयक एकटा ऐतिहासिक घटनाक्रमक सामान्य रेखाचित्र रहैत अछि। सामान्य कहबाक तात्पर्य ई जे एकर सघन रूप त इतिहासमे मात्र खोजल जा सकैए मुदा साहित्य कोनो [illegible] समयकेँ मुखर रूपेँ अभिव्यक्त क' रहल नहि छै जकरा साहित्यिक पाठककेँ चिन्हित कर' पड़ैत।

एहि नाटकमे नेपालक राजनीतिक परिवर्तन आ ओहि परिवर्तनक प्रभावकेँ उपकथनद्वारा प्रभावी ढंगसँ उठाओल गेल छै। खासकए विक्रम सम्वतक चालिस दशककेँ अन्तमे नेपालमे व्यापक परिवर्तन भेल। सक्रिय राजतन्त्र सीमित शक्तिकसँग मात्र अपनाकेँ कहुना सुरक्षित कएलनि। एकटा दशक मूल सत्ताक परिवर्तन कोना सामान्य घटना नहि रहइ छै। स्वभाविक एकर प्रभाव राजतन्त्र संस्थाक पृष्ठपोषक शक्तियन सहित पड़लै, शक्तिनिहितताक अनुरूपसँ ओहन शक्ति विचलित छल। परिवर्तनक आकांक्षी, समाजक श्रमिक, दलित, वञ्चित वर्ग किछु बेसिए उत्साहमे छल। राजनीतिक परिवर्तनक सामाजिक प्रभावकेँ एहि नाटकमे अत्यन्त कुशलताक सँग लाओल गेल अछि। नाटकक सामन्त पात्र वनवन एकटा बात उल्लेख करैत अछि जे जमिन्दारी चलाएब आब कठिन भ' गेलै। ओ गामक श्रमिक वर्ग जे कहिया जमिनदारक दयापर जीवन निर्वहन करैत छल आब ओहि मालिककेँ टेरनाइ छाड़ि देलकैए। सत्ता आ शक्ति जकरा लग छै तकरा नहि गुदानब त निश्चाह छै। नाट्यकार राष्ट्रिय [illegible] दल राजनीतिक परिवर्तनकेँ प्रभाव आमजन कोना ग्रहण कएलक ता

आमजन कतक सबत राजनीतिक स्फुलिङ्ग क' ललक अछि जे देशक शीर्ष सत्ताकेँ विस्थापित करबाक क्षमता प्राप्त क' ललक से स्पष्ट कयलनि अछि। एहि नाटकमे राय ताय विदित सामन्त मात्र जेना वृद्ध बाघ सन स्थितिमे अछि जे अपना गुफामे कैद अछि आ अपनहिसँ हुमकि रहल अछि। विवश, कमजोर आ कातर बाघ।

नाट्यकार एहि द्वन्द्वकेँ मात्र नाट्यरूप नहि देने छथि ओ वस्तुतः स्पष्ट नहि क' पाबि रहल छथि जे परिवर्तन जनपक्षमे छैक की नहि ! ओ नौकरशाहक गैरजिम्मेदार प्रवृत्तिक आलोचक छथि। नौकरशाह जनताप्रति विनम्र व्यवहार नहि रखैत अछि। ओ कामकेँ बदलामे अतिरिक्त रकमक असूली करैत अछि वा समग्र नौकरशाह अनियन्त्रित आ अराजक भ' गेल अछि, जकरा नियन्त्रण कएनिहार कियो देखाइ नहि दैत अछि। नौकरशाहक जनताप्रति अनुत्तरदायी व्यवहार आ गलत आर्थिक उगाहीक लेल नाट्यकार असूर्त नूतन राजनीतिक परिवर्तनकेँ जिम्मेदार मानैत छथि। मानू पहिने सबकिछु ठीक छलै, सम्पूर्ण तन्त्र अनुशासित छलै। एखन सबकिछु अराजक छै, प्रशासनसँ एहि राज्यकेँ स्थापित करबाक प्रयत्न छै। एहन प्रयत्न मारामारी करैत प्रसङ्गमे प्रयत्नपूर्वक करैत देखाइत छै। मान गाममे चोरक गतिविधि बढ़ि गेलैए त तकरा लेल राजनीतिक परिवर्तनमे खोट देखाइत छै। वृद्ध जननी ई छै जे बदलल ओ परिवर्तन मात्र सत्ता परिवर्तन नहि रहै। ओ व्यवस्थाक परिवर्तन रहै। सयौं वर्ष स्थापित मान्यता, संरचना आ चेतनाकेँ एकटा परिधिक दिस लागल गेल रहै। जे स्वतन्त्र स्वच्छन्द विचरण करैत अछि तकरा लेल सीमा निर्धारण असह्य होइत छै। तात्कालीन

सम्पादक श्रेष्ठताक मान्यता रखनिहार मूलक विरोध करबाबला अनेकाम रहैत अछि मुदा ओ शान्त विद्रोहक लेल किछु खास सरंजाम जुटा रहल अछि। मात्र साहित्यिक माध्यमसँ एहन राष्ट्रक स्थापनाकेँ खण्डनाक प्रयत्न कएल जा सकैत। वर्तमानकेँ कुत्सित देखाएब मात्र अतीत त सुन्दर छलै ताहि मान्यताकेँ स्वतः स्थापना करैत छै। साहित्यिक माध्यमसँ विशिष्ट शस्त्र निर्माण जाहिसँ राजनीतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक पुनरुत्थानकेँ पुनर्जीवन देल जा सकै। पृथक राजनीतिक परिवर्तनकेँ बाद लगभग सए देशम एहन विमर्श देखल जा सकैत। बौद्धिक आ सिर्जनात्मक रूपसँ सेहो पुनरुत्थानक प्रयत्न आ अग्रगमनक प्रतिवादक स्वाभाविक द्वन्द्व देखल जा सकैत।

एहि नाटकमे बापक प्रसङ्ग बड़ प्रभावशाली ढंगसँ राखल गेलैत। बापक विचार मात्र बानी रहैत करैत अछि। ओ एकटा वैचारिक द्वन्द्व सेहो ठाढ़ करैत अछि। गामक राष्ट्र अनिश्चितमे सामन्त आ अपराधी बिच सम्बन्धक प्रगाढ़ता एकटा नव राष्ट्र विघटनाक स्थापना करैत छै। एहि प्रसङ्गमे मध्यम वर्गक वर्गीय चरित्र सेहो बड़ ढंगसँ मुखर भेलैत। ओ परिवर्तनकेँ आधारभूत शक्ति अछि मुदा ओ ताब अवसरवादी सेहो अछि। ओ सङ्घर्ष बादक उपलब्धीक भरोसँ वैध हिस्सेदार अपनाकेँ मानैत अछि। एहिमे कोना तरहक अवरोध रहैत देख' चाहैत। ओ तत्काल लाभक हेतु परिवर्तनकेँ संस्थागत रूप' देब'सँ पहिनहिं आलोचक बनि जाइत अछि। परिवर्तन प्रतिगमनक धरातम हँसैत चलि जाइत छै। मध्यम वर्ग अपना अधैर्यताक कारण समूचा परिवर्तनकेँ संकटग्रस्त बना दैत छै।

नाटकमे एहन समस्याक कारक परिवर्तन दिस संकेत कएल जाइत छै ई नाटकक कथाक सहज विकासक्रम नहि छै। नाट्यकार अत्यन्त सहज रूपें उपकथाक माध्यमसँ मूल कथाक अङ्कक रूपमे एहन विषयकेँ दृष्टिगत करैत छथि। स्वाभाविक छै जे एहन नाट्यअवस्थिति पाठक अविश्वसनीय बुझाइत छै। एकटा आन वसन्त सेहो एहन अवस्थासँ गुजरल अछि। नाटक नायिकापर स्वाभाविक छै जे बहुतोक नजरि होइ। ओकर रूप आ यौवन बहुतोकेँ आकर्षित करैत होइ। किया स्वयं भोगक इच्छा नहियो होएत किया ओहि भोगाक माध्यमसँ आर्थिक उपार्जनक प्रयत्नमे होएत। एहनसन नाटकीय घटनाक्रममे एकटा एहन अवस्थाक निर्माण होइत छै जत' चोर, अपराधी आ कथित भलादमी नाटकक नायिकाकेँ बेचक' आकर्षक रकम उगाहीक निष्कर्षपर पहुँचैत अछि आ ताहि हेतु आवश्यक प्रयत्न सेहो प्रयोग करैत अछि।

नाटकक नायिका नाटकक प्रारम्भिसँ चरम यातना भोगि रहल अछि। नैहर, सासुर आ पुनः नैहरक दुःखपूर्ण यात्रामे ओहि यात्राप्रति दर्शक वा पाठकक सहानुभूति अर्जन करैत अछि। मुदा ओहि यात्रासँगे अप्रत्याशित घटना होइत छै। जे कि घटनाक्रमकेँ रहस्यमयी बनबैत छै। नायिकाक अपहरण आ बेचबाक प्रकरण आगू बढ़ैत छै। महिला बेचबिखनक विषय नेपालक पहाड़ी क्षेत्रक हेतु आम छै मुदा मिथिला क्षेत्रक हेतु ई अवस्था अत्यन्त अविश्वसनीय जकाँ लगै छै। नेपालमे राणा शासनक उदयसँगे ब्रीटिश शासकसँग ऐतिहासिक सम्बन्ध रहलै। भारतमे सिपाही विद्रोहकेँ दबएबाक लेल नेपालसँ सेना गेल रहै पश्चात नियमित रूपमे भारतीय सेनामे नेपालक गोर्खा

रजिमहूक नृत्य एखनो धरि कायम छै। तहिना नेपालक तात्कालीक शासक ब्रीटिश फौजक हेतु नेपालसँ यौनकर्मीक नृत्य लऽ कऽ गेल जाइत छलै ई प्रथा पहाड़क खास ठाम एखनो कायम छै मुदा मिथिला वा तराइक दुरागमन लऽ कऽ भगबाक घटना प्रायः नहि देखाइत छै। एहि नाटकमे नायिकाकेँ भगबाक सन्दर्भमे अनेक शोषकेँ हाथे भगबाक बात उल्लेख छै जे कि नाट्यकारक अप्रत्याशित परिकल्पना जकाँ बुझाइत छै। तराइक दुरागमसँ श्रम करबाक हेतु खाड़ी देशसभमे घुमा त जाइत रहल अछि मुदा युवतीकेँ लऽ जएबाक घटना खास चर्चामे नहि छै। तखन प्रश्न उठै छै जे किएक नाट्यकार एहन परिकल्पना कएलनि। महिला तहूमे कमजोर वर्गक महिलाक संग यौन शोषणक व्यापक विस्तार त एहिठामक शोषक सामन्त वर्गद्वारा होइत रहलैए। मैथिली साहित्यमे एहन घटनाक प्रधानताक कमी साहित्य छै। संभवतः एहिसँ भिन्न नाट्य अवस्थिति निर्माण करबाक लेल एकटा भिन्न घटना नाटकक हेतु आवश्यक बुझल होएताह। मुदा नाटक जाहि परिवेश आ घटनाक्रमकेँ ल' क' बुनल जा रहल छलै ताहिमे ई घटना विश्वासक उपीकरण दिस ल' जाइत छै।

ई होइक मुदा समस्याक आ सन्दर्भ कोना समाजक बदलैत नहि छै। कोन कथा कालजयी अर्थात समकालीनताकेँ जोगाक' राखत आ कोन घटना एकटा कालखण्ड प्रतिनिधि बनबा र' क' रहि जाएत तकरा निर्धारण नाटकक विषय, संरचना, शिल्प निर्धारण करैत छै। एहि नाटककेँ ई निष्कर्षपर पहुँचल जाए त बात होएत छै जे लेखक अपना समयक इतिहासक आवाजकेँ रचनामे लबैत अछि।

रचनाकारक अपन निजता सेहो ओहिमे रहितै छै मुदा ओहि कथ्यक गूँज अनुगूँज स्पष्ट छै जकरा लेखक अपना ढंगमे रूपान्तरित कएने अछि। वस्तुतः लेखक एकटा व्यक्ति अछि मुदा ओ ओही समाजसँ कोना ने कोना रूपमे शैली ग्रहण कएने अछि। एमन जी सेहो तात्कालीन समाज, संस्कृति आ राजनीतिसँ अपन रचना आ विचारधाराक आधारपर कथ्य आ शैली ग्रहण कएलनि आ एकटा नाटकक सिर्जना कएलनि। ई नाटक चारि दसकक बाद विमर्शक हेतु आकर्षित कएने अछि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.१९.विनय भूषण-इजोतक आश जगबैत एमनक गजल



विनय भूषण

ईर्ष्याक आगि जरबैत प्रेमक गजल

साहित्यक कोनो विधाक नव व्याकरणक निर्माणमे साहित्यकारक महत्वपूर्ण भूमिका रहैत अछि। समय, परिवेश आ स्थानसँ पृथक रचनाकारक रचना कम प्रभावित रहैत अछि। कविता, कथा, उपन्यास वा नाटकक स्वरूप एवं कोनो कालखंडक प्रभाव एतब कोनो नव बात नहि। रचनाकारक रचना-प्रक्रियामे हुनका आगाँ ठाढ़ रहैत अछि विशाल पाठकगण। रचनाकार ई चाहैत अछि जे ओ जे बात कहऽ चाहैत अछि ओहि बातसँ पाठकगण बूझि सकय। पाठकगणसँ जे बात ओ कहय चाहैत अछि, ओहिमे सामाजिक सरोकार संगुम्फित रहैत अछि। जखन रचनाकार अपन रचना-प्रक्रियासँ सामाजिक सरोकार सँ जुड़ैत अछि, तखन हुनक आँखिक आगू ठाढ़ रहैत अछि सामाजिक स्वरूपक विशाल, ताना-

बात। ओ समाजमे होइत सकारात्मक परिवर्तनसँ अपन सहमति अभिव्यक्त करैत अछि, संगहि समाजक किछु नकारात्मक परम्परासँ ओ अपन असहमतिसँ अभिव्यक्त करैत अछि। रचनाकारक अन्तरक जे भाव होइत अछि, से रचनामे स्पष्ट अभिव्यक्त भऽ जाइत अछि। अपन हृदयमे जनमैत अनेकानेक वैयक्तिक भावमे सार्वजनिक भाव भऽ जयबाक जे प्रक्रिया रहैत अछि, सैह प्रक्रिया कोनो साधरण लोकसँ विशिष्ट रचनाकार बना दैत अछि। मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार श्रीनारायण कर्ण 'प्रेमल' जीक रचना प्रक्रियामे उक्त भाव-बोध सँ सहजहि अनुभव कयल जा सकैत अछि। हम एकरा अपन दुर्भाग्य मानि रहल छी, जे हुनका द्वारा सृजित समस्त साहित्यिक कृतिसँ हम नहि पढ़ि सकलहुँ। पोथीक अनुपलब्धता आ अपन जटिल जीवन-संघर्षसँ एकर कारण कहल जा सकैत अछि। मुदा, विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल हुनक अनेकानेक रचनासँ पढ़बाक सौभाग्य अवश्य प्राप्त होइत आबि रहल अछि। हुनक रचना सभमे मिथिलाक गौरवमय अतीतक भाव-विह्वल वर्णन, लोकक सुख-दुखक अभिव्यक्ति मनुक्खताक संवेदनाक कठमछी अलापित होइत प्रेमसँ बचाऽ लेबाक छटपटाहटिसँ सहजहि अनुभव कयल जा सकैत अछि। एखन हुनक गजल संग्रह 'अन्हरियाक चान' हमर आँखिक सामाँ अछि। एहि संग्रहक अध्ययन-मनन हमरा अभिभूत कऽ रहल अछि। 'गजल'सँ शिल्प व शास्त्रीय-विधान पर चर्चा करबासँ पहिने हुनक एकटा उक्तिसँ उद्धृत करब हमरा आवश्यक बुझाइत अछि- 'हमरा गजल लिखबाक लेल कोनो सूत्र नहि रहए। स्पष्ट सूत्र लिखाइत रहल। हम शुरुएमे कहि दी जे हमर गजलसँ शास्त्रिय तराजू पर तौलबाक काजो नहि हो जे हमरा

नीक लागत। कारण मतला, रदीफ, काफियाक समन्वय जे जाक एऽ सकल होइ ओ स्वतः आगमन आएल शब्दक बहसँ संरक्ष एऽ सकल अछि।"

हिनक उक्त वक्तव्य आजुक 'गजल'क स्वरूप आ रचना-प्रक्रियासँ स्पष्ट करऽ मे पूर्ण समर्थ अछि। गजल पद्य-विधा वा काव्य-विधाक एकटा विशिष्ट विधा अछि। एहि मे छोट-छोट पाँतिक माध्यमसँ बहुत बात बातसँ अभिव्यक्त कयल जा सकैत अछि। एकटा गजल अनेकानेक कविताक संकलन होइत अछि। हिनक वक्तव्यक अनुसार आजुक गजलमे गजलक व्याकरणक न्यूनतम शर्तसँ सम्मिलित कयल जा सकैत अछि। 'न्यूनतम शर्तसँ हमर अभिप्राय ई अछि जे गजल-रचनाक क्रममे भावसँ सुसज्जित रखबाक लेल मात्राक गणना आवश्यक नहि अछि। हुनक शब्दमे 'बहरक व्याकरणमे हम काफिया नहि(गेलहुँआनहियनर्दसँगनिकऽ (शनम वैसएलहुँ' आइ जाहि तरहक गजल लिखा रहल अछि ओहि गजल सभसँ हिनक उक्त वक्तव्यक कसौटी पर कसल जा सकैत अछि।

जे-से हमरा हिनक गजलमे अभिव्यक्त भाव आ विचारसँ अभिव्यक्त करब हमर मुख्य उद्देश्य अछि। हिनक एहि संग्रहमे भाव आ विचारक जे विविधता अछि से चमत्कृत करैत अछि। हिनक गजलमे शाश्वत प्रेम आ मनुष्यक जीवनक सुख-दुख नीक जकाँ शब्दबद्ध भेल अछि। मिथिलाक संस्कृतिक प्रति हिनक अपार प्रेमसँ बहुत बात गजल सभमे अनुरक्त कयल जा सकैत अछि। विलुप्त होइत मनुष्यतासँ हिनक असहमति सेहो अनेकानेक गजलक मुख्य विषय

बनि गेल अछि। समाजक विकासक संग-संग लोकक जीवन-यापनक स्वरूप आ जीवनशैलीमे जाहि तरहेँ आधुनिकताक प्रवेश भेल अछि ताहिसँ गजलकार बड़ दुखी छथि। हिनक गजलमे जे मिथिलाक गौरवमय अतीत आ मिथिलाक गामक प्रति अनुराग अभिव्यक्त भेल अछि, तकरा एहि पाँतीमे बूझल जा सकैत अछि-

माटि एकर चन्दन लगा अपन माथसँ

मोक्ष भेटय जे दुर्लभ अपन गाम थिक।

जाहि धरती पर जनमि सीता एलि

अन्नपूर्णा हँसथि से अपन गाम थिक।

जनक आ जानकीक चर्चा एक दिस मिथिलाक गौरवमय अतीत दिस संकेत करैत अछि। हिनका अपन गाममे मिथिलाक दर्शन होइत अछि। एहो कहल जा सकैत अछि। जे सम्पूर्ण मिथिला हिनका लेल अपन गाम अछि। एहि गजलमे मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहासक सुगंध तँ अछिये संगहि मातृभूमि-प्रेमक प्रति समर्पणक भावसँ सेहो देखल जा सकैत अछि।

एहि संग्रहमे गजलकार प्रेमक स्वरूप आ ओकर महत्वसँ रेखांकित करबामे पूर्णतः सफल भेल छथि। प्रेमसँ स्पष्ट करबाक लेल अलंकारक पाँतीमे बिम्ब आ उपमाक उपयोग कयल गेल अछि।

ई बात सत्य अछि जे आजुक वैश्वीकरणक युगमे मनुक्खक जीवनक अवकाशक अनिवार्य तत्व सहकक ह्रास भेल अछि। जाहि तत्वमे प्रेम एकटा एहन तत्व अछि जे लोकसँ लोकसँ जोड़ैत अछि। प्रेमपाशसँ बूझाइत अछि, विशृंखलताक एहि विकट परिस्थिति सामाजिक सौहार्दिक सम्बन्धक लेल प्रेमक संबंध आवश्यक अछि। जे कहैत छथि-

आखिरी न छोड़ीस दाम वउ बाँकी छै।

सप्तत म नाशक सवाल लवय दाढ छी।

गजलकार प्रेमक अभावमे स्वयंसँ बहुत बेसी असहज महसूस कऽ रहल छथि। प्रेमम विश्वासक बहुत बेसी महत्व अछि। हुनका बूझाइत छन्हि जे विश्वासक टाँग टूटलाक बाद जीनाइ जखन किछ ककरासँ प्रेम करैत अछि, जाहिमे कोना तनक संदेहक स्थान नहि होइत अछि। हुनका बूझाइत छन्हि जे कोना कठिन समयमे जे संदिखन हुनकर मददि करबाक लेल सदैव तैयार रहताह। प्रेमम भावसँ बेसी आपसी सौहार्दक महत्व होइत अछि। जँ कोना ठोस प्रेमसँ असहज होइत देखल जाइत अछि, जाहि निश्चित रूपसँ कोना न कोना धोखाक संभावना बनैत अछि। ई धोखा लोकसँ बचेन कऽ दैत अछि। एहि परिस्थितिमे करुणाक भाव विसृत होमऽ

लगैत अछि। गजलक एहि पाँतिमे एहि भावसँ देखल जा सकैत अछि-

निश्वास जँ टूटि गेल तँ आइना कतेक ल

कत-कत बन-बन भटकैत छी जिनगी।

जखन एक बेर किओ प्रेम कऽ लैत अछि, तखन ओहि प्रेमम किछु बाध्य नहि भऽ सकैत अछि। जँ सच्चा प्रेम करैत अछि, तँ ओहि प्रेमम पूर्णतः एकाकार भऽ जाइत अछि। जखन मोन प्रेमक वशीभूत भऽ जाइत अछि तखन भाव आ शब्द गजलक अनुरूप लऽ लैत अछि। प्रेम शाश्वत भऽ जाइत अछि। 'अमन' जीक शब्दमे-

अहाँ आगाँ मे छी तन्द्रा टूटल नइए

आह! प्रतीक्षा भेल छी भ्रम टूटैए नहि

एहि ठाम एकटा आओर शेरसँ उद्धृत करब हमरा आवश्यक बुझाइत अछि-

आब तँ अपनासँ बेनाम विश्व कठिन हएत,

आन एत नगरि टिकब की खास अछि प्रिय।

प्रेमसँ अभिव्यक्त करबाक लेल जाहि भाषा, शिल्प आ शब्दक चयन प्रेमन जी कयने छथि, से अवश्ये पाठकसँ अपीलित कऽ सकैत अछि। लगैत अछि जेना प्रेम प्रेमनजीक हृदयक अभिन्न अंग भऽ गेल अछि सैह कारण हुनका अपन भाषा, संस्कृति, मैथिल आ आन दलित, पीड़ित आ उपेक्षित लोकक प्रति प्रेम करबाक लेल प्रेरित करैत छन्हि। हुनक गजलमे प्रयुक्त वाक्यांश बिम्ब आ भावक संयोजनसँ बुझबाक लेल किछु पाँतीसँ उद्धृत कयल जा सकैत अछि। जेना-

समुद्रक ढाहीमे उपजब करैत मोन

बाझ असगरिये छागी एत उघलियै काना।

एतमक समुद्रमे जखन-भावक ज्ञान-भाटा आबैत अछि तँ मोन उद्वेलित भऽ जाइत अछि। 'छागी' एत 'बाझ' एकटा अद्भुत बिम्ब अछि। सिनेह गछयक्क आम जँका सड़ैत अछि। जहिना उमनस पाकल आम नसक वृद्धि होयबाक कारणे झड़ि जाइत अछि तहिना प्रेमक पाकल आम झड़ि गेल अछि आ डहिसँ सिनेहक नस

टटकि रहल अछि। एहि बिम्बम उपमा अलंकारक अनुपम प्रयोगसँ अनुभव कयल जा सकैत अछि। हिनक शब्दम-

गछपक्कू आम जकाँ टटकै सिनेह जकर

जोगल नहि जा सकय, एहन बनल हाट डा।

प्रेम तँ सार्थक जीवनक महत्वपूर्ण तत्व अछिये, संगहि जीवनक अन्यान्य तत्व सभसँ सेहो 'अन्हरियाक चान' गजल संग्रहम सफलतापूर्वक अभिव्यक्त कएल गेल अछि। हिनक विचार म जिनगीक तरंगक गायन आ हृदयक रागक अभिव्यक्ति गजल थिक। प्रेम आ सिनेहक गीत जिनगीक महत्वपूर्ण गीत थिक। लोक व्यवहार समयसँ गुनैत हो वा अपन सुख-दुखसँ अभिव्यक्त करैत हो एहि अभिव्यक्तिम जिनगीक सार सन्निहित अछि। सुख-दुख जीवनक अनिवार्य अंग अछि, तँ लोकसँ एहिसँ ऊब नहि होयबाक चाही। हिनक शब्दम-

नरम गरम केर खेल चलैत रहत सदिखन

पचऽबाक सामर्थ्य थिक तरंग जिनगी केर।

वर्तमान मनुष्यताक महत्वपूर्ण तत्व अछि। परन्तु वर्तमान लोकसँ मनुष्य बनबैत अछि। ई विडम्बना अछि जे आइ लोक नैतिक मूल्य सँ विमुख भेल अछि। स्वार्थ आ लोभक लिप्साक कारणेँ लोकजीवन समस्त नैतिक मूल्यसँ तिलांजलि दऽ देने अछि। आपसी सौहार्द्र नष्ट भऽ गेल अछि। अविश्वास, धोखा आ लोकक स्वकेन्द्रित नहि जएबाक मानसिकतासँ ग्रसित जी बस यन्त्रवान भऽ जाइत छथि। हुनका बुझाइत छन्हि जे सब-सम्बन्धी आ हितैषीसँ जखन लोक अलग भऽ जाइत अछि तखन सत्य आ वर्तमान सब नैतिक मूल्य लोकसँ जीवन जीबाक संबल होइत अछि। एक ठाम गजलमे नैतिक मूल्यसँ सम्बन्धित उक्त भाव बहुत नीक जकाँ अभिव्यक्त भेल अछि-

बाप माय हुनकर नहि, वर्तमान नहेछ संग म

वर्तमानदानीम बड़ा लागल मीत ई नहि चाही।

एकटा साहित्यकर्मीसँ अपन दायित्वक बोध भेल अछि। ग्रमनशीलसँ यता छन्हि जे लोकक मानस अनकानक भटकाव भेल अछि। समय जहिना-जहिना करवट बदलैत अछि, तहिना-तहिना लोक अपन गौरवमय अतीतसँ विमुखऽ लगैत अछि। धोखा आ अविश्वासक अध्यात्म म लोक डोलाय लगैत अछि। जीवन-संघर्षसँ बाट पर चलैत लोकसँ किछु न किछु गलती भऽ जाइत अछि। एहि

स्थितिमे लोकसँ बेसी प्रत्याशा नहि होयबाक चाही । अर्थात आत्मविश्वासक संग गजलकार कहैत छथि-

सूतल अतीतसँ पुनि जगायब हम ।

हारिआयल बटोही ठाम पर लागब हम ।

संघर्ष जीवनक सत्य अछि । जे प्रगतिशील लोक छथि से एहि संघर्षसँ कखनहुँ विचलित नहि होइत छथि । कवि कहैत छथि जे जँ [illegible] नहि रहैत अछि, तखन अत्यानम [illegible]क खोजक लेल प्रयास करबाक चाही । शोषितसबसँ बहुत-बहुत दूर नहि संघर्षशील लोकसँ महल-अटारी, चानीक थारी, गद्दा, कृत्रिम [illegible]क भ्रम वा अहंकार आकर्षित नहि करैत अछि । अपितु श्रम, रूक्ष जीवन, टूटल एकचारी, नागिक अस्थान, अलमुनियाक पचकल-फूटल थारी आ झोपड़ीमानसँ अंग्रेजि कs समाज आ समाजक, लोकक जीवनसँ सुन्दर बनयबाक लेल संघर्षरत रहैत अछि । एहि ठामसँ एहि पाँतीमे देखल जा सकैत अछि-

ध्रुव सत्य थिक जे मंजिल पायब अहिष्ठ सदिखन

तेँ सहज सुखद एकपनियाक असवारी छनित के हमर ।

वर्तमानमे चाटुकारिता संदेह आ अविश्वासक साम्राज्य स्थापित भऽ गेल अछि। स्वार्थ मनुष्यकेँ धोखा करबाक प्रवृत्तिकेँ स्वीकार करबाक लेल बाध्य कएने अछि। मुँह पर प्रशंसा करब आ पाछाँ भेला उपरान्त उठि लोकक विध्वंस करबाक प्रवृत्ति मनुष्यक हृदयमे जगह बना लेने अछि। सामाजिक जीवन जीअऽ बला लोक संघर्षक कारणे अपन सब किछु त्यागि दैत अछि। मुदा, कुलोकक कुदृष्टि श्रमजीवीकेँ दुखित कएने अछि। जेना-

हम चली जाऽ जाहि बाटपर नित दिन

काँटक ढेर छीटय हमर अपन।

समाजक श्रमजीवी लोकक जीवनमे दुखक अंबार लागल अछि। हुनक जीवन-स्तरकेँ सुधारबाक लेल प्रत्येक समाजसेवी आ बुद्धिजीवी प्रयासरत लागल छथि। बहुत सामाजिक कार्यकर्ता आ बुद्धिजीवी करीसँ बुझि कऽ दैत अछि। गरीबक मसीहाक उपाधिसँ विभूषित लोक सेवाक नाटक कएने अछि। एहि कारणे अछि जे एखनो धनि समाजक गरीब लोक आओर बसी गरीब भेल जा रहल अछि। धनिक आओर बसी धनिक भेल जा रहल अछि। सत्य ई अछि जे एहि धनी पर जे लोक सुख आ ऐश्वर्यक भोग कएने अछि, तकर आधार एहि श्रमजीवी मजदूर अछि। कविक कलम एनक मुद्रामे कहि उठैत अछि-

महलक मनखाह गरीबीसँ नापि कऽ नै देखू

अपन टूटल बखारी अन्न भरि बाँटि कऽ तँ देखू।

अन्हरियाक चान गजल संग्रहक प्रत्येक गजलक एक-एक पाँति उद्धरणक योग्य अछि। एहि संग्रहक विभिन्न गजलमे मनुक्खक जीवनक सुख-दुख, बदलैत समाज, महत्व, दया-प्रेम-करुणाक स्थान समाजक सर्वहारा वर्गक प्रति सहानुभूति, मिथिलाक गौरवमय अतीत, सांस्कृतिक अस्मिताक संरक्षण आ अन्यान्य जीवन-मूल्य आ सांस्कृतिक चेतनाक संरक्षणक स्वरसँ अत्यंत सहज आ कलात्मक ढंग अभिव्यक्त कयल गेल अछि। आइ जखन चारूकात घृणा, द्वेष, अविश्वास, धोखा, छल-प्रपंच, स्वार्थ आ अन्यायक अन्हारक साम्राज्य पसरल अछि, तखन अमरजीक सार्थक गजलमे आशाक चानक उपस्थिति अनुभव कयल जा सकैत अछि। ई समीक्षा आओर नमहर भऽ सकैत छल, मुदा समीक्षा-आलेखक सीमासँ देखैत एखन एहि समीक्षासँ विराम दऽ रहल छी। अन्तमे अपन अतृप्त मानसँ संतोष देबाक लेल एहि पाँतीसँ उद्धृत करब आवश्यक बुझैत छी-

अन्हरियाक चान जकाँ लुक झुक करैत मन

छिटकल आसक संग नचैत उड़ैत मन।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२०.आशीष अनचिन्हार-कलंकित चान



आशीष अनचिन्हार-संपर्क-8876162759

कलंकित चान

"जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान" द्वारा वर्ष 2013 (दिस.म) श्री राम भरोस कापड़ि "भ्रमर"जीक कथित गजल संग्रह- "अन्हरियाक चान" प्रकाशित भेल अछि। जाहीक भूमिकामे भ्रमरजी स्वीकार करै छथि जे गजलक व्याकरणसँ ओ गजल नै लिखने छथि संग-संग ओ समीक्षककेँ सेहो हिदायत देने छथिन्ह जे ओ व्याकरणक तराजूपर ई गजल सभकेँ नै तौलथि। एकर मतलब ई भेल जे भ्रमरजी अपन

मानै छथि जे हुनक गजल "आजाद गजल " आ समीक्षक सँ आजाद गजलक समीक्षा करबाक लेल स्वतंत्र छथि। संग-संग सुमनजी भूमिकाक समीक्षा करबाक लेल कोनो प्रतिबंध नै लगेने छथि तँए समीक्षक भूमिकाक समीक्षा करबाक लेल सेहो स्वतंत्र छथि। ओना सुमनजी गजलमे व्याकरणक महत्ता स्थितिसँ परिचित छथि आ तँए ओ अपन सीमाकेँ देखार केलाह जे की स्वागत योग्य गप्प अछि। तँ चलू शुरू करी सुमनजीक आजाद गजलक समीक्षा आ तकर बाद हिनकर भूमिकायन। आजाद गजलक कान्सेप्ट---

जखन कोनो भाषामे कोनो खास विधाकेँ करीब 500-600 वर्ख भ' जाइत छै तखन ओहिमे परिवर्तन जरूरी भ' जाइत छै। उर्दू गजलकेँ (जँ स्थानीय फारसी गजलकेँ जोड़ि देखी तँ) करीब 500-600 वर्ख भेल छै तँए 1960-70केँ दशकमे उर्दूमे आजाद गजल आएल। एकर मतलब कहल गेलै जे गजलमे बहर कोनो जरूरी नै छै काफिया रहनाइ आवश्यक अछि (बिना रदीफकेँ सेहो गजल होइ छै से ध्यान राखब जरूरी)। ओनाहुतो बिना काफियाकेँ गजल नै होइत छै से सब जनै छथि। जँ ऐ आधारपर देखी तँ सुमनजी बहुत रास कथित गजल फेल भ' जाइत अछि मने सुमनजीक कथित आजाद गजल सेहो आजाद गजल कहबा योग्य नै अछि। किछु उदाहरण देखू (पोथीक पहिल कथित आजाद गजलक पहिल दू पाँति एना अछि)---

ई जनक कर नगरी अपन गाम थिक

ई मिथिला वैदेहीक अपन गाम थिक

मन कारिया गायब। जँ कारिया गाएब तँ गजल नामे लिखे गाएब। खाएन ओहुन-ओहुन दाब ओ यात्रीक गजल संख्या - 4,5,6,9,12,14,20,22,23,24,28,29,32,33,34,35,36,39,41 म देखल। ओना आन गजलम किछु ओहुन तँ छै जकरा कारिया नै वल्कि गुकांग कहब वसी समीचीन। ईहो मान राखब जरूरी जे ओ यात्रीम कुल 44टा कथित गजल अछि।

जँ हम नयालीय यनिसनक हिसाबसँ ओ यात्रीकँ देखी तँ हमरा ई कहबाम कोनो संकोच नै जे नाजुक निमल जीक गजलकँ अजाद गजलक श्रेणीम तँ राखल जा सकैए मुदा ग्रमनजीक गजल तँ अजाद गजलम स्थान पबाक योग्य नै अछि। साँच पतहुँ कही तँ ग्रमनजीक ओ यात्रीम संकलित सभ रचना आन विधा तँ भ' सकैए मुदा गजल, कथित गजल वा अजाद गजल कखनो नै भ' सकैए।

मुदा जत' ग्रमनजी अपन गजल मधुँक दाब स्वीकार करबाक हिम्मति राखै छथि ओतए निमलजी अपन गलतीकँ स्वीकार करबासँ हिचकै छथि। ई चारित्रिक अंतर दुनू लोकम छनि से जिनगी भरि नहि बदलनि तकर कोनो गारंटी हमरा लग नै अछि। तँ आउ आब यात्रीक भूमिकायर (चूँकि व्याकरणपर हमरा नै जबाक अछि तँ देखू ग्रमनजीक किछु बिंदु)--

1) अमनजी अपन भूमिकामे लिखै छथि जे " हमरा एखनो धरि पता नै अछि, हम कोन गजल लिखैत छी। साठि बानि दशकक साहित्यिक यात्रामे कोना गजल लिखाएल हएत...." अमनजीक उपराक्त कथन मात्र ढंग भनबाक लेल अछि। मनुख मात्र सभ बीजक हिसाब-किताब रखैए। अमनजी सत्य रखने हेता मुदा लगा। देलखिन अस्थात संख्याकेँ जान जे हमरा अपन गजल संख्या सँ पता नै अछि मन एता लिखलहुँ जे.............

2) अमन जी पुन ओहीमे लिखै छथि जे " एहि बीच हमरा मानमे आएल जे गजल जे काव्यविधामे बहुत नुयं नहत अछि............." मुदा ई काव्य विधा गजल भs सकलनि।

ई पोथीमे सभसँ आपत्तिजनक बात ई अछि जे प्रस्तुत पोथीमे "बाल-गजल" सँ संकलित अछि मुदा बाल गजलक संदर्भमे कोनो चर्चा नै बरैत अछि। ज्ञात हो कि मात्र 2012सँ मैथिली बाल गजल शब्दावली प्रचलित अछि। अनचिन्हार आखर आ विदेहक संयुक्त प्रयासक प्रतिफलन अछि ई बाल गजल मुदा अमन जी बाल गजलक संबंधमे कोनो चर्चा नै करैत छथि। जेना चर्चा कएलासँ छोट भ' जेता तेना। ओनाहुतो हम ई प्रसंगकेँ अनचिन्हार आखर आ विदेहक लोकप्रियतासँ जोड़ि क' देखैत छी। ओना अमनजी प्रस्तुत पोथीक बाल गजलकेँ तेना सभ करैत छथि भूमिकाक संदर्भमे जेना बुझाइत हो जे ओ मिथिला-मिहिरक जमानासँ बाल गजल लिखैत होथि। इतिहासकेँ अमित करैत ई पोथी कोनाक सफल हएत से कहब मुश्किल।

(ॐी आलख रूमन शब्द-अर्थ-शक्ति नामक पाथीम संकलित अछि जकना रूम मात्र ७हि लल दलहुँ ज पा0क समग्राम ग्रमनजीक नवनाकँ वूमि सकथि-लखक)

अयन मंगव्य editorial.staff.videha@gmail.com**यन य0ाउ।**

२.२१.विनीत 0ाकुर-वहुआयामी व्यक्तित्वक ७कटा सृजन स्मृत्य:नामरूनास कायि७ ग्रमन



दिलीप ठाकुर

बहुआयामी व्यक्तित्वक एकटा सुखद स्वरूप : रामभरोस कापड़ि भ्रमर

एखन मैथिली भाषाकेँ मानक स्वरूपक सन्दर्भमे नीक बहस छिड़िआएल छैक। एक दिस ई मत आबि रहल अछि जे मानक स्वरूपक नामपर मैथिलीकेँ नव्य प्रशिक्षित बजनिहारसँ दूर कएल जा रहल छैक आ नेपालमे मगही एवं बज्जिका भाषाक प्रवेश आ विस्तार एकर परिणाम थिक। एहिसँ लोक कहि रहल अछि। ठेठिया, दरभंगी कहैत कहैत आब मगही आ बज्जिकामे हूँटाए लागल अछि।

शासनमे छैक लोक जे बजैत अछि सएह मैथिली थिक। भाषा वैज्ञानिक लोकनि एकरा स्थापित कएने छथि। एहिसँ नव्य प्रशिक्षितक भाषा वितृष्णा सेहो कम होएतैक आ अनपेक्षित रूपं मगही आ बज्जिकाक प्रभाव विस्तारकेँ रोकल जा सकैत अछि।

आ एहि दुनू मतक बिचमे विगत पचास वर्षसँ मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिक सेवामे लागल एकटा एहन नाम उभरि कऽ आएल अछि जे सभ विवादकेँ कात करैत मैथिलीकेँ एकटा विवादरहितक एवं समावेशी भाषाक रूपमे स्थापित करबाक निरन्तर अभियानमे लागल अछि: रामभरोस कापड़ि भ्रमर।

नेपालीय मैथिली साहित्यक पुरोधा व्यक्तित्व भ्रमर चौसठि वसन्त पार कऽ चुकल छथि। बारह वर्षक उमेरमे मिथिला मिहिरक बालगुटकाक चौपातिमे श्रमानदान बालक कथाक प्रकाशनक संग साहित्यमे पदार्पण कएनिहार भ्रमर ब्राह्मण, कायस्थक भाषाक अनावश्यक विवादकेँ समाप्त करैत मैथिली वास्तविक रूपेँ मिथिलामे बजनिहार सभक भाषा थिक, एकर उन्नति, विकासक जिम्मेवारी सभक छैक तकर स्थापित उदाहरण बनल रहलाह अछि।

एखन धरि तीन दर्जनसँ ऊपर मौलिक, अनूदित, सम्पादित पुस्तकक रचना कऽ चुकल छथि। अर्चना (२०३० साल), अंजली (नेपाली मासिक २०४२), आँजुर (२०४७ साल) आ गामघर साप्ताहिक (२०३९ साल)क सम्पादन प्रकाशन कऽ पत्रकारिता क्षेत्रमे सेहो अपन वर्चस्व स्थापित कऽ चुकल छथि। साहित्य आ पत्रकारिताक अद्भुत समागम हिनक व्यक्तित्वमे आकंठ लब लब भरल अछि आ दुनू क्षेत्रमे हिनक व्यक्तित्व स्थापित भऽ चुकल अछि। बहुत लोक जखन भाषा, साहित्य आ पत्रकारिताक गप करैत अछि त उदाहरणक रूपमे भ्रमरजी आगाँमे ठाढ़ कऽ देल जाइत छथि।

हिनक बचपन जन्म स्थान बघवौनामे बितलन्हि। २००८ साल श्रावणमे पिता स्व. रामगुलाम कामती आ माता स्व. दुखनी देवीक दासन सन्तानक रूपमे हिनक जन्म भेलनि। धन, दौलतमे कमि नहि छलनि, मुदा जाति वर्ग आ समाजसँ आबद्ध छलाह, पढब लिखब कठिन मानल जाइत छलैक। तथापि पिता स्व. रामगुलाम कामती ओइ पंचायतमे पंच कँ रूपमे सम्मानित छलाह। कोना मगता नहि हुनिकाइ त हुनक बजा लेल जाइत छलनि आ ओ समाधान करैत रहलाह। पढनाइक नाम पर गाहि समयक देहाती पढाइ निरक्षरता आदिमे निपुण छलाह। रामायण नियमित पढथि, खेत, खलिहान आ जन बनक व्यवस्थापनमे कुशल छलाह। पचायतमे धान आ रूपैआक लगानी चलैत छलनि। स्वभाविक ठीक नीक ठाक छलनि।

स अपन धीआपूताकेँ पढएबालेल ओ उत्सुक रहथि। मुदा हुनु बालक सुकुमार कामति (उपराय) आ रमासी कामति (तहिया ठाउर नाम रहनि) बटिया बनबाल गेयान न हाथि। तखन घर पर बहादुर नामक एकटा पहाडी नोकर रहैक जे कारपत लादि हुनु रोडके गुरुजीक बटिसानमे ल जाइनि आ तखन निचाँ माटिपर, तकरा बाद पाटी पर अ, आ, इ, ई सँ निरक्षरता धनि सिखैत रहनि। बटिसानसँ नीकलि बलहौ स्कुलमे तीन वर्ग धनि पढलाह आ तखन जनकपुरक सनस्नी मा.वि.मे ४ कक्षामे नाम लिखाउल गेलनि। ओतहिसँ एस.एल.सी.आ जनकपुरक रा.रा.ब. कैम्पससँ मैथिलीमे एम.ए.क पढाइ पूरा कएलनि।

एहि बीच रा.रा.ब. कैम्पसमे हिन्दी, मैथिली पढ़एबाक हेतु भारासँ प्रो. धीरेन्द्र आबि गेल रहथि आ संयोगसँ ओ हिनक मकानक बगलमे रहैत छलाह। सम्पर्क भेलनि। बच्चेसँ ई पत्र पत्रिका पढ़ैत छलाह बालक, पराग, चन्दामामा, होइत होइत धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, सारिका आ मिथिला मिहिर। लिखबाक रुचि रहनि, भाषा निश्चय हिन्दी रहनि।

ओ एक दिन एकटा कथा लिखलनि इमानदार बालक, हिन्दी मे। प्रो. धीरेन्द्र देखलकनि आ एकटा नमहर शिक्षा देलकनि- बाउ हम हिन्दी आ मैथिली दुनू विषयमे एम. ए. छी। मुदा हिन्दीकेँ पार नहि पाबि सकलहुँ अछि। अहाँक मातृभाषा मैथिली अछि, ताहीमे लिखू।

सुमनजी संस्मरणमे सुनबैत भानुक होइत करैत छथि -हमरा नहि बुझना गेल छल मैथिली कोना भाषा होइछ आ ई हम सभ बजैत छी। हम कहने रहियनि- तँ हम कोना लिखबै मैथिली। ओ कहलनि- जेना लिखबै। अहाँ ई बजै छी सएह लिखू हम देखा देब कोना शुद्ध लिखल जाइछ।

तखन इमानदार बालकक मैथिली अनुवाद कएलनि आ तकरा लाल कलमसँ प्रो. धीरेन्द्र ई रंगलनि ओ एक्को पंक्ति सदर नहि रहल। मुदा सएह रंगलहा कतरन हुनका मैथिली प्रति चुनौती बनएलनि ई हुनक बालमनपर कठोर प्रभाव छोड़लक आ ओ तकरा बाद पाछाँ नहि देखलनि। मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ पत्रिका मिहिरक नियमित लेखक बनलाह आ मैथिलीमे निकलैत कोना पत्रिकामे हिनक रचना आदरसँ छापल जाए लागल। डा.मघन प्रसाद अपन शोधग्रन्थ

मैथिली कथा कोष(१९९६)मे सभसँ बेसी कथा लिखनिहार(१८कथा)मे हुनका नाम शामिल कएल छन्हि।

अपन साहित्यिक जीवनक एहि पचास वर्षमे आ सम्मान कम नहि भेटलनि। नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठानसँ प्रदत्त धन मायादेवी प्रज्ञा पुरस्कार (२०७३ साल)मे रू. ५०,००० टकाक संग भेटलनि। विद्यापति सेवा संस्थान (१९९६ ई.), मिथिला विभूति सम्मान देलकनि तँ अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, मुम्बईसँ मिथिला रत्नसँ सम्मानित कएल गेलाह। नागपुरमे मिथिला विभूति सम्मान, पटनाक चेतना समितिसँ यात्री चेतना पुरस्कार, लेखन प्रकाशनसँ लेखन सम्मान हिनक उपलब्धि रहलनि अछि।

नेपालमे विद्यापति भाषा, साहित्य पुरस्कार (२ लाख टकाक संग) राष्ट्रपति हाथे भेटलनि तँ नेपाली साहित्यक दू गोट महत्वपूर्ण संस्था नेपाल भाषा परिषद आ गंकी धुम्रा वसुन्धरा प्रतिष्ठान क्रमशः कर्णलाल दास सिनया पुरस्कार आ गंकी धुम्रा वसुन्धरा पुरस्कारसँ सम्मानित कएलकनि जे कोनो मैथिली भाषी साहित्यकारक हेतु प्रदत्त छल। ई सभ पुरस्कार, सम्मान हिनक कर्मठता, संघर्ष आ साहित्य साधनामे निरन्तर प्रतिबद्धतापूर्वक समर्पणक कारणे भेटलनि। किछुए दिन पूर्व नेपालक श्रेष्ठ समाचारपत्र गोरखापत्र हिनक अन्तर्वार्ता छपने छल तँ एकटा प्रकाशन पुरनामँच हिनक बचपनक प्रसंगकँ विवरण सचित्र प्रकाशन कएलक। ई कोनो मैथिलक हेतु गौरवक विषय भ सकैछ।

अपन एकाकी लेखन यात्राक कारणे बाधा, व्यवधान नहि अएलनि से बात नहि। स्वाभिमानी स्वभावक कारणे लोक - बेगाम नहि लागि

पढ़ब आ लिखब धनिमे सीमित रहल किछु लोककेँ अखनो रहलनि हिनक स्वभाव आ गउँ समय समय पर लोकक दुःख सुखमे ठाढ़ भ हिनक मान मर्दनक जोगाड़ हिताउल जाइत रहल मुदा हिनक काज एहेन निष्पक्ष आ गम्हिर रहि गेल छैक जे ओ सभ विपक्षी विचारक लोक ऊपर छल र जाइत रहल अछि आ प्रमाण अपन स्थानपर अटिके नहि रहैत छथि बल्कि करै कार्यक हिसाबेँ आन निष्पक्ष उत्तम स्थापित भ जाइत छथि।

करबाक अर्थ विशेष आ गोलैसीक धनाम यादवक काज कएनिहार एखन देखिए नहि जाइत अछि जखन नेपाल सरकार हिनका जनकपुरसँ ठाढ़ भ एकबेर नेपालक सरकारी प्रकाशन संस्था साझा प्रकाशनक गरिमामय पद अध्यक्षक आसन पर आसीन क देने छनि। कोना मैथिल, कोना मधेशी पहिल बेर एहि पद पर मनोनीत होइत छथि। ताब नहि ओ अध्यक्ष पद पर नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानमे परिषद सदस्य नियुक्ति भ रहल जाइत छथि नेपालक प्रधानमन्त्री द्वारा। ई दुनू पद कोना भाषा प्रेमीक हेतु, गौरवक पद थिकै, जाहिपर प्रमाण छइ वर्षसँ ऊपर आसीन भ चुकलाह अछि। आ दुनू ठाम ओ मैथिलीक काज कएलनि। साझामे मैथिली भाषाक पुस्तक प्रकाशनक काज शुरू कएलनि, प्रज्ञामे आँगन पत्रिकाक शुरूआतक संग मैथिली लोक संस्कृतिसँ सम्बद्ध अनेकों महत्वपूर्ण गोष्ठी आ पुस्तक प्रकाशन कयलनि। जे सलहेस, दीनाभद्री, जट जटिनक रूपमे चर्चित प्रकाशन अछि। साझा प्रकाशनसँ बालकथा संग्रह बगियाक गाछ सँ मैथिली प्रकाशन शुरू भेल जे हिनक एकटा आओर बसन्त एवं अन्य नाटक, हिनकेँ सम्पादनमे निश्चायति आ नेपाल ग्रन्थक

प्रकाशन भेल। तदनुरूप नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास, भगजोगनी, पैसा आदि मैथिली रचनासभ आएल।

भ्रमर जी निबन्ध सधानान् छथि। पत्रकारिता करैत छथि, मैथिली पत्र पत्रिकाक अतिरिक्त एकटा दैनिक समाचारपत्र जनकपुर एक्सप्रेस डेढ़ दशकसं नेपालीमे सेहो निकालैत छथि। अपन पत्र पत्रिकाक हेतु निबन्ध लेखनक काज जारी रखैत बाहिरी लेखनक हेतु आएल आग्रहकेँ प्राथमिकताक संग पूरा करबाक हेतु निबन्ध लेखनमे जुटल रहैत छथि। ओ मैथिली पत्रपत्रिका भ सकैछ, ओ काठमाण्डुक नेपाली पत्रपत्रिका भ सकैछ, तहिना काठमाण्डुसँ प्रकाशित होइत द पब्लिक मासिक हिन्दीक पत्रिका भ सकैछ। इनक लेखनी अविरल, चलैत रहैत अछि।

इएह अटूट लेखनक प्रभाव छैक जे तीन दर्जन पोथी द मैथिलीक भण्डारकेँ भरलन्हि अछि। आ से विभिन्न विधामे। जे खगता देखलनि, तहीमे भीड़ि गेलाह। उपन्यासक खगता रहैक त मधेश आन्दोलनकेँ आधार बना घरमुँहा मौलिक उपन्यास लिखलनि, जकरा हालमे पचास हजार टकाक तंकी धुन्नां वसुन्धरा पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएल गेल। लगभग चालिस वर्ष पूर्व नेपालक पहिल आधुनिक कविताक संग्रह बन्न कोठरी : औनाइत धुआँ (२०२९ साल) प्रकाशित कएलनि। तकराबाद कविता, गीत, गजल आदिक आन सं◌ंग्रह समयक अन्तराल संग अबैत गेल- मोमक पघलैत अधर, (गीत गजल), अप्पन अनचिन्हार (१९९० ई.), अन्हरियाक चान (गजल, २०१३ ई.) प्रकाशित भेल। बिहानक मैथिली अकादमी

हिनक यहिल कथा संग्रह गाना संग जयबो न कुजवा (१९८४ ई.) प्रकाशित कएलक ज काना नयालीय मैथिली साहित्यकानक यहिल संग्रह छल। दासन कथा संग्रह हुगली उयन वहैत गंगा (२०६ग साल) आएल। गसन कथासंग्रह एही राष्ट्रनस २०१६म आएल। नाटकम हिनक अयन हूट स्थान छन्हि। कगका नाटक मंचित हुल, प्रशंसित हुल। नानी चह्वानी प्रानीहिक नाटक अछि गँ एकटा आउान दसन्द अयन्द चर्चित नाटक नहल ज दैदही दनरंगाक एकटा यून अंकम छयल १०९४ ई. मा। महिषासुन मूर्दानाद एवं अन्य नाटक (२०ग४ साल), हैया अएलै अयन सानाज (२०६१ साल) आएल।

किछु साधयनक यूस्तक सहो अछि- नाजकमलक कथा साहित्यम नानी चनित्रक अध्ययन। (Oकान यन (निचान संकलन), निनिधात्मक सामग्रीक संग समय सहुर्है, निदश याञायन चीन याञाक प्रथम यूस्तक लिखलनि चीन ज हुम दखल (२०१४ ई.) सन सन निनिध निषयक याथी प्रकाशन क नहुग नन नन गथ्यसँ अनगत कनौलनि। साआक्षान संग्रह अहाँ ज कहुलहुँ अनलाक वाद ञमनजी नहुग मैथिली सनककं एकOाम नाखि हुनक चिंतन निचानसँ मैथिली याOक सहकँ अनगत कनौलखिन्ह।

हिनक अन्य यूस्तक छन्हि मैथिली लाक नृत्य, गान हंगिमा एवं स्मनृय (२०६१ साल), मैथिली यद्य संग्रह (२०ग१), त्रिशूली (मथूनानन्द चौधनी माथून (२०४९), नयालक मैथिली यत्रिकानिता (२०४४), अन्दर्नाष्ट्रीय मैथिली सम्मलन आ नयाल (२०६ग), मैथिली

नाटक संग्रह (२०६१),लालाक धान(कविता संग्रह) सम्पादित पुस्तक सरु अछि। अन्यम अंग्रेजीक प्रुस अगणितवव िजस्वग्रवनस या लस्उव ि (२०६२), आजका धूनषा (२०३९), समयका अन्दनाल यश्चाउँदे नयालीक नवना अछि।

अनूनादम नहि आव नहि (मैथिलीक एक मात्र दीर्घ प्रम काव्य)क हिन्दी मं वस, अव नही क नामसँ (गायाल अश्क अनूनाद कएल छथि गँ नयाली म सुप्रसिद्ध गद्य- यद्य लखक मनूव्राजाकीक अनूनाद स्या अन स्या (१९९० ई.) प्रकाशित अछि। गहिना ग्रमनका उत्कृष्ट नाटकहन् धर्मेन्द्र निव्रल द्वाना अनूनादित नाटक संग्रह अछि त घनमूहाँ उपन्यासक राजपूनीम उमाशंकन द्विवदी द्वाना कएल अनूनाद प्रकाशित अछि। जनकपूनधाम न यस उएका सांस्कृतिक सम्पदाहन् (२०७६) आ तनाऊका स्हाँट दखि हिमालका काँख सम्म (२०६१) नयालीक मौलिक सांस्कृतिक एवं सामाजिक आलख संग्रह अछि। हालम हिनक चर्चित निवन्ध संग्रह मिथिलाक लाक जीवनः लाक सहूस आएल अछि।

हूनक अनियन नामसँ गीति कैसट वहान स (गल छन्हि, जाहिम नव (गाट गीत नाखल (गल अछि। हिन्म वनउालनि एकटा आउान वसन्त। ई हिन्म नयाल टलिहिजनसँ प्रसानित स वूकल अछि, स्हाऊत नहैत अछि।

उा यूर्ण मौलिक लखक छथि, यत्रकान छथि। यैतृक सम्पत्तिकँ जागा क नखलनि, अयन अनजल स्वय स्वन वना साहित्य साधनाम नत् छथि। हिनक आनास ग्रमनकूत्र जनकयूनक नलन स्थनसँ उत्तन सहजहि

नजनि यन आवि जाऽऽछ, जग साहित्य मनिषी लाकनिक निनन्दन आनाजाही लागल नहेग अछि।

अयन लखनीक वलयन यायाक ओहि यान उाहियान समान नूयं समाहृग ग्रमन अयन ऽऽगिहास स्नयं नवलनि अछि। अयन प्रकाशनक माध्यमसँ आना साहित्यकानकँ सासा आनि नयालक मैथिली साहित्यक ऽऽगिहासक यृष्ठ कओलनि अछि। हुनक मूल्यांकन जना हओवाक चाही स संस्न थिक नहि रहल हा, गकन कानध यूछलायन उा महज मूम्किया देग छथि, मुदा ओकटा आनाय ग लगिग छैक मैथिली मंच सस्यन दश प्रगिशग लाकक कडा नहेग अछि, लन जन नहेग अछि आ ग्रमन सन सनक साहित्यकान कगी काग क दल जाऽऽग छथि। मुदा ग्रमन स्नयंकँ हनगनहँ सन्तुष्ट मानैग छथि- हमन उयलब्धि काना गनहँ कम नहि, ऽऽी ग सुधी समाजक मूल्यांकनक कानध र सकल अछि न गखन निस्द कथीक।

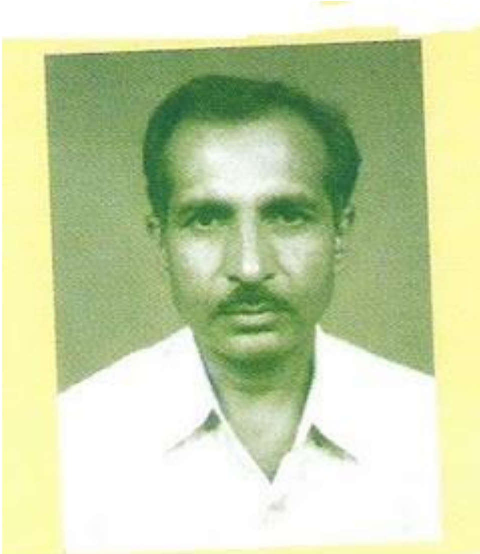
वहुग (गाट ऽऽी ग्रमन क वउयन मानैग छथि। सग ऽऽी अछि हुनका अयन स्थान वनओवाम खास यनशानी आ अटूट यनिश्रमक कन यउल छहि ज सम्भनाः आन यउकँ सहज हाऽऽैक। दखल ऽऽहा जा नहल छैक ज वहुग कम लिखि क सवसं वसी ग्राप्त कओनिहाना सन अछि। किछु (गाट ओहन अनन गुट खउा क ओकक निनूद्धम यासनक महिमामण्डिग कनवाक काज सन सहा शुनू क चूकल छथि जाहिसं समस्त मैथिली साहित्य प्रदूषिग र नहलैक अछि। ओहनम ग्रमनसन ओकाकी साधनालीन सस्क हग ग सव ओकमात्र आधान छैक मूल्यांकनक ज दन सवन रहा कृओलैओ।

गेला अपन माटि पानिसँ कटल, नारिनी आतंकन आ बला बाटी प्रथासँ दूर भ्रमनशील विविध व्यक्तित्वकेँ एकठाम जाति क नरकन छथि आ नकर प्रदर्शन हुनक व्यवहार आकृतिमे स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होइत अछि।

एखन ऊ मधेश सरकार द्वारा गठित उल्लेखनीय मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अध्यक्ष बनाओल गेलाह अछि आ भाषा,साहित्य,संस्कृति उन्नत काजक आगाँ बढ़ेबाक हेतु अपस्यांत छथि।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

२.२२.डा. योगानन्द झा-देवा अपनौ अपन समाज: विहंगम दृष्टि



डा. योगानन्द झा

भैया अओलै अपन समाज: विहंगम दृष्टि

आधुनिक साहित्य व्यक्तिगत आ सामूहिक जीवनक चुनौतीसभक प्रत्युत्तरक रूपमे स्थापित भेल अछि आ साहित्यिक परिकल्पना स्वप्नलोकसँ क्रमशः दूर भेल आ बदलल अछि। आजुक साहित्य शैली विशेषरूपेँ मानव जीवनक व्याख्या किंवा लोकरंजनक साधनामात्र रूपमे सीमित नहि अछि। अपितु ई वर्तमान लोकजीवनक हितक हेतु नव नव विकल्प आ दिशानिर्देशक प्रति प्रतिबद्ध अछि। तेँ आजुक साहित्यकार लोकजीवनक वैविध्यक हेतु चिन्तनशील देखि पड़ैत छथि

𑒂 𑒪𑒼𑒏𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒧𑒪𑒱𑒢𑒞𑒰, 𑒁𑒮𑒧𑒰𑒢𑒞𑒰, 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚𑒳𑒩𑒞𑒰 𑒍 𑒁𑒢𑓂𑒡𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒅𑒢𑓂𑒧𑒴𑒪𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒯𑒟𑒱𑒨𑒰𑒩𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।

𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒑𑒞𑒱𑒫𑒱𑒡𑒱𑒏 𑒄 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒂𑒨𑒰𑒧𑒲 𑒮𑓂𑒫𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒩𑒰𑒧𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒏𑒰𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒦𑓂𑒩𑒧𑒩 𑒖𑒲𑒏 "𑒦𑒻𑒨𑒰 𑒁𑒋𑒪𑒻 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒳𑒩𑒰𑒖" 𑒣𑒼𑒟𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒓𑓂𑒏𑒪𑒱𑒞 𑒠𑒮𑒼 𑒋𑒏𑒰𑒓𑓂𑒏𑒲 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒧𑒹 𑒁𑒞𑓂𑒨𑒢𑓂𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒤𑒳𑒙𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱𑒮𑒦𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒰𑒓𑓂𑒏𑒲 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞 𑒧𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒧𑒓𑓂𑒑𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒰𑒨𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒄 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒧𑒰𑒖, 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩 𑒍 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒧𑒰𑒢𑒫𑒏 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒨𑒢𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒠𑓂𑒡 𑒪𑒹𑒐𑒢𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒟𑒰 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒁𑒧𑒓𑓂𑒑𑒪𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒞𑒞𑓂𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒅𑒣𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒮𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒍𑒏𑒩 𑒢𑒱𑒠𑒰𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒩𑓂𑒑 𑒯𑒹𑒩𑒱 𑒮𑒏𑒟𑒱।

𑒋𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒏 𑒠𑒳 𑒙𑒰 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒑𑒰𑒟𑒰𑒣𑒩 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬𑓁 : *𑒦𑒻𑒨𑒰, 𑒁𑒋𑒪𑒻 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒳𑒩𑒰𑒖 𑒂 𑒪𑒼𑒏 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨 𑒖𑒙 𑒖𑒙𑒱𑒢*। "𑒦𑒻𑒨𑒰, 𑒁𑒋𑒪𑒻 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒳𑒩𑒰𑒖" 𑒧𑒹 𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒦𑒠𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒑𑒰𑒟𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒡𑒰𑒩 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒑𑓂𑒩𑒯𑒝 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒑𑒰𑒟𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒦𑒠𑓂𑒩𑒲 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒠𑒳𑒃 𑒑𑒼𑒙 𑒧𑒳𑒮𑒯𑒩 𑒦𑒰𑒃 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒏𑒢𑒏 𑒡𑒰𑒧𑒱 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒋𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳𑒋𑒿 𑒫𑒱𑒩𑒼𑒡 𑒏𑒋𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒖𑒹 𑒍 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦𑒮𑒿 𑒥𑒹𑒑𑒰𑒩𑒲 𑒐𑒙𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒦𑒠𑓂𑒩𑒲 𑒏𑒢𑒏 𑒡𑒰𑒧𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒏𑓄 𑒥𑒹𑒑𑒰𑒩𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰𑒮𑒿 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒥𑒰𑒩𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒖𑒢 𑒖𑒢𑒧𑒹 𑒣𑒴𑒖𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒃𑒨𑒼 𑒍 𑒧𑒳𑒮𑒯𑒩 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑒴𑒖𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒢𑒏𑒡𑒰𑒧𑒲 𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒩𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒰𑒧𑒢𑓂𑒞𑒲 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒖𑒲𑒫𑒢𑓂𑒞 𑒁𑒕𑒱𑒋। 𑒮𑒰𑒧𑒢𑓂𑒞𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒹𑒫𑒪 𑒠𑒪𑒱𑒞 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒬𑓂𑒩𑒧𑒏 𑒬𑒼𑒭𑒝 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰𑒯 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒣𑒱𑒞𑒳 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒨𑒾𑒢𑒬𑒼𑒭𑒝𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒠𑒢𑒰𑒧

नहलाह अछि। क्रमशः युगचेतना बदललैक अछि आ शोषित वर्ग ओहि अतीतियुगीन शासकक प्रति असन्तोष, विरोध आ विद्रोहक भावनासँ संवलित होइत गेलाह अछि। एकर परिणाम थिक जे आब बेगारी प्रथा इतिहासक वस्तु भऽ गेल अछि। तथापि नाटककार एहि प्रसङ्गक पुनरावृत्ति कऽ वस्तुत : शोषक आ शोषित वर्गक ऐतिहासिक संघर्षक गाथाकेँ संदर्भित करैत समसामयिक जीवनमे पर्याप्त शोषण चक्रक अभिव्यंजना आ तकर निदानक मार्ग संकेत कऽ देलनि अछि।

एहि एकाङ्कीमे पुरुष १ आ पुरुष २ कृषक मजदूर अछि जे जानकीनन्दन सिंह सामन्तक जमीन्दारीमे रहैत अछि। ई सभ बेगार सँ तँ अकच्छल अछिए, अपन बहु बेटीक इज्जतक रक्षाक हेतु कोनो त्राणक बाट ताकि रहल अछि। जखन एकरा दुनूकेँ विदित होइत छैक जे दिना आ भद्री नामक दूटा पहलमान एकर जातिक छैक आ ओ दुनू जानकीनन्दनक अत्याचारसँ लोककेँ त्राण दिएबाक हेतु तत्पर रहैक अछि तँ दुनू बड़ प्रसन्न होइत अछि। जानकीनन्दनक लठैतसभ गाम गमतिमे अत्याचार करैत छैक। तत :पर दीना भद्रीक सँग जानकीनन्दनक मल्लयुद्ध होइत छैक आ ओ मारल जाइत अछि। एहन अत्याचारीक मृत्युपर जनता जनार्दन प्रसन्न होइत अछि। वस्तुत : ई एकाङ्की लोकचेतनाक प्रति नाटककारक आस्थावादिताक निदर्शन थिक। एहिमे युगिन चेतनाक सम्यक उपस्थापन नहि देखि पड़ैत अछि। जट जटिन मिथिलाक प्रसिद्ध लोकनाटक थिक। ई लोकनाट्य महिलालोकनिद्वारा अभिनीत होइत छल। कहल जाइछ जे जखन वर्षा ऋतु समाप्त होएबाक बादो वर्षा नहि होइत छलैक, तँ

𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑓂𑒨 𑒢𑒰𑒩𑒲𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒙𑒼𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒋𑒯𑒱 𑒙𑒼𑒢𑒰𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒧𑒹 𑒖𑒙 𑒖𑒙𑒱𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒠𑒳 𑒠𑒪𑒧𑒹 𑒫𑒱𑒦𑒏𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒐𑒹𑒪𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒄 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒏𑒴𑒙𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒥𑒹𑒓𑓂𑒑𑒏 𑒏𑒩𑒳𑒝𑒰𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒂𑒫𑒰𑒖 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒃𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒣𑒒𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒍 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒰 𑒯𑒼𑒧𑓄 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒏। 𑒏𑒴𑒙𑒪 𑒥𑒹𑒓𑓂𑒑𑒏 𑒁𑒫𑒬𑒹𑒭 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒅𑒑𑒱𑒏 𑒂𑒓𑒢𑒧𑒹 𑒤𑒹𑒏𑒱 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒮𑒿𑒑 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒋𑒯𑒱 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒰𑒩𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒍 𑒖𑒰𑒥𑒹𑒿 𑒐𑒼𑒧𑒰 𑒐𑒼𑒧𑒰 𑒏𑓄 𑒑𑒰𑒩𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒲𑒯। 𑒪𑒼𑒏 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒰 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒫𑒹𑒑𑒮𑒿 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒕𑒪।

𑒏𑒵𑒭𑒱 𑒏𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒫𑒩𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒑𑒖𑒰𑒯𑒱𑒩 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒖𑒙 𑒖𑒙𑒱𑒢𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨 𑒐𑒹𑒪𑒋𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰 𑒁𑒞𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨𑒏 𑒠𑒴𑒢𑒴 𑒣𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒙 𑒍 𑒖𑒙𑒱𑒢𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒠𑒧𑓂𑒣𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒏𑒩 𑒢𑒼𑒏 𑒗𑒼𑒿𑒏 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒨𑒳𑒑𑒪 𑒑𑒲𑒞𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒤𑒳𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒰𑒙𑒏𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒋𑒯𑒱 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒖𑒼𑒑𑒱 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒖𑒹 𑒋𑒏𑒩 𑒮𑒓𑓂𑒏𑒪𑒢 𑒏𑒋𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒋𑒏𑒩 𑒧𑒴𑒪 𑒩𑒴𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒨𑒟𑒰𑒫𑒞 𑒩𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒋𑒪𑒢𑒱 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒢𑒫 𑒢𑒫𑒲𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨 𑒣𑒩𑒧𑓂𑒣𑒩𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮𑒩𑒝𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒧𑒳𑒩𑓂𑒠𑒰𑒥𑒰𑒠 𑒋𑒯𑒱 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯𑒏 𑒋𑒏𑒪 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒟𑒱𑒏। 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒨𑒳𑒫𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒰𑒏 𑒮𑒿𑒑 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒰𑒙𑓂𑒨 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑𑒏 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒖𑒹 𑒄 𑒋𑒥𑓂𑒮𑒩𑓂𑒛 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒋𑒏𑒰𑒓𑓂𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒓𑓂𑒑𑓂𑒨, 𑒂𑒏𑓂𑒩𑒼𑒬 𑒍 𑒫𑒱𑒛𑒧𑓂𑒥𑒢𑒰 𑒨𑒳𑒑𑒲𑒢 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟𑒏 𑒔𑒱𑒞𑓂𑒩𑒰𑒓𑓂𑒏𑒢 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒧𑒮𑒰𑒧𑒨𑒱𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒄 𑒨𑒟𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒟𑒱𑒏 𑒖𑒹 𑒂𑒃 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒂𑒢𑒏 𑒥𑒯𑒳 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒏 𑒃𑒖𑓂𑒖𑒞𑒱 𑒪𑒴𑒙𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩, 𑒠𑒯𑒹𑒖𑒪𑒼𑒦𑒲

अभिजातक, गरीबक मखौल उड़बैनिहार, महाजनी वृत्तिसँ समाजक शोषण करैनिहार, अनाचारी भ्रष्टाचारीलोकनिक चलती छनि आ ओलोकनि कानूनकेँ अपना कब्जामे कऽ निर्द्वन्द्व विचरण करैत छथि, जखन कि अन्यायक विरोध करैनिहारकेँ झूठे कानून फाँसीक फन्दाधरि पहुँचा दैत छैक। नाटककार शोषण होइत वर्गमे शोषित वर्गक विजयक पक्षधारी छथि आ ओहो सन्देश दैत छथि जे कोना एकटा शोषककेँ हलाल कऽ देने शोषण समाप्त होमऽवाला नहि छैक किएक तँ एकटा शोषक मरैत देरी दोसर शोषक पैदा भऽ जाइत छैक। अन्ततः, ई शोषितलोकनिसभक संघ समाप्त कएल जा सकैत छैक।

तहिना पटक खातिर सड़क नाटक किंवा नुक्कड़ नाटक थिक जे बिना अधिक नाटकीय उपकरण ओ रङ्गशालाक सुनियोजित व्यवस्थाक कतहु खेलल जा सकैछ। आजुक व्यस्त जीवनमे नाटक आ रङ्गमञ्चक सामान्य दर्शकलग स्वयं पहुँचबाक चाही, ताहि दृष्टिसँ जे एहि कोटिक नाटक अभिनव प्रयोग थिक। एहि नाटकमे प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे भ्रष्टाचारक विभिन्न आयामपर कसगर चोट कएल गेल अछि आ दर्शकलोकनिकेँ समाज ओ राष्ट्रमे व्याप्त विसङ्गतिसँ परिचय करा ओकर निदान सोचबाक हेतु मार्ग प्रशस्त कएल गेल अछि। एहि नाटकमे ई दर्शाओल गेल अछि जे कोना तस्करीक माल तस्कर ओ नेतालोकनिबलेँ एक देशसँ दोसर देश पहुँचि जाइत अछि, कोना प्रशासकलोकनि भ्रष्टाचारक शृङ्खलासँ आबद्ध छथि आ जनसामान्यक शोषणमे लागल छथि, कोना नेता लोकनि टिकट पएबाक लेल कुत्सितसँ कुत्सित कर्म करबाक लेल तत्पर रहैत छथि। कोना जनताक

रखवारलोकनि जनताक कल्याणक मददिक अंश अपने खा गेल करैत छथि आ शिक्षाजगतक माफियालोकनि पाइक बलपर मेधावी छात्र लोकनिक स्थानपर कमजोर छात्रकेँ मघा सुविधा आगाँ बढ़ा देबाक धन्धामे लिप्त रहैत छथि।

रता जी आबिरहल छथि एकाङ्की सेहो प्रजातन्त्रीय शासनक विभिन्न विसङ्गतिक दिग्दर्शन करबैत अछि। एहि नाटकमे नाटककार जनताक समस्याक मूलकेँ स्पष्ट करबाक उद्देश्यसँ कथा सूत्र जोड़लनि अछि। नाट्यारम्भमे सूत्रधार आ नटी कलाकारलोकनिक हड़तालसँ सीदित देखि पड़ैत छथि। ईलोकनि कथानक तकबाक प्रयासमे छथि। तावत् एकटा जुलूसक स्वर सुनि पड़ैछ। जाहिमे महँगीक समस्या अत्यन्त सामान्य बूझना जाइत छनि आ चूँकि लोक ओकरा तेना कऽ कऽ अढ़जि लेने अछि जे ई नाटकक विषय रूपमे ज्वलन्त नहिं बूझना जाइत छनि। ततः पर भ्रष्टाचारक विरुद्ध जुलूस देखि पड़ैत छनि। आ भ्रष्टाचारक समस्याकेँ कथानकमे लऽ नाटक खेलबाक मानसिकता बनबैत छथि। मुदा ईहो आब ज्वलन्त समस्या नहि बूझना जाइत छनि। कारण लोक कोनो प्रकारक सरकारी काजक हेतु घूसक लेन देनक अढ़जि कऽ एकटा स्वीकृति दऽ चुकल छैक। तःपर शान्ति सुरक्षाक हेतु प्रशासनक विरोधमे जुलूस देखि पड़ैत छनि। एखन ओ अपन नाटकक हेतु शान्ति सुरक्षाक समस्याकेँ कथानक रूपमे ग्रहण करऽ चाहैत छथि। किएक तँ ईहो समस्या जतिआएल बूझना जाइत छनि। मुदा एखन बेरोजगारलोकनिक एकटा जुलूस देखि ओ बेरोजगारीएकेँ ज्वलन्त समस्या मानि कथानकक सृजन करबाक चेष्टा करऽ लगैत छथि। मुदा पुनः एकटा सरकारी जुलूसपर नजरि

जाइत छनि। जाहिमे निम्नमध्यवर्गक निर्धनक समस्या, कर्मचारीलोकनिक हड़तालक समस्या, शान्ति सुरक्षाक रक्षक समस्या आदिक प्रतिनिधात्मक रूप सूनि यथेष्ट आ ओहि समस्यासभकेँ नाटकीय स्वरूप प्रदान करबाक मन बनबैत छथि। ओहिनाहुँ ओहि एकाङ्कीक माध्यमे नाटककार प्रजातन्त्रीय व्यवस्थामे उत्पन्न विभिन्न समस्यासभक सन्धान कऽ ओकर प्रदर्शित करबाक प्रयास कएलनि अछि जे आइ ततेक समस्या अछि जे सभपर फूट फूट कऽ नाटक लिखल जा सकैछ। कोनो समस्या ककरोसँ कम नहि अछि मुदा सभसँ बढ़का समस्या थिक राजनीति जे प्रजातान्त्रिक व्यवस्थाक देन थिक। ओहि समस्याक कारणे लोकजीवन अस्त-व्यस्त भऽ गेल अछि। मुदा ओकर कोनो समाधान प्रस्तुत नहि कऽ पबैत अछि। अनेक राजनीति कएनिहारकेँ एकटा आत्मसन्तोष होइत छैक। जे ओ अपन अधिकारक प्रयोग कऽ पाबि रहल अछि। आ ओहि राजनीतिक समस्याक मूलमे छथि राजनेतालोकनि जे मूल समस्यासँ जनताकेँ भ्रमित कऽ अपन स्वार्थ साधनमे लागल छथि। तेँ प्रजातन्त्रमे जाहि एकमात्र चरित्रक चातुर्यक सबटा समस्या घुमैत अछि, से थिकाह नेता जीलोकनि। यावत धरि हिनकालोकनिक चरित्रमे सुधार नहि होयत, तावत धरि प्रजातन्त्र लोककल्याणकारी नहि भऽ सकैछ आ ने कोनो समस्याक समाधान भऽ सकैछ। ओहि तरहेँ ओहि नाटकमे वास्तविक जीवनक उद्घाटन कऽ अभिनव कलाक माध्यमे एकटा विशिष्ट विचारधाराक अभिव्यक्ति भेल अछि जे लोकजगतकेँ प्रति प्रभावित करबाक दृष्टिए सफल अछि।

हम घूरी अयलहुँ मीत उग्रवादसँ ग्रस्त नेपालक लोकजीवनक अन्तःकथापर आधारित अछि। एकर आधारपर नेपालक लोक दू भागमे बँटल अछि। पहाडी आ मधेशी। पहाडीलोकनि पहाडपर रहैत छथि आ मधेशीलोकनि तराइमे। पहाडीलोकनि, मधेशीलोकनि प्रति नीक भाव नहि रखैत छथि। एकर कारणे नेपाली मानस दू भागमे बाँटि गेल अछि। समस्या : पहाडी आ मधेशीक राष्ट्रीयता एक रहलाक बादो दुनूक बीच दूरी बढल अछि। ई सामाजिक संघर्षक रूप लऽ लेलक अछि। एहि संघर्षक कारणे पहाडीलोकनि मधेशीलोकनिक बीच आ मधेशीलोकनि पहाडीलोकनिक बिच उत्पीडित होइत छथि। उत्पीडनक अतिरेक तखन होइछ जखन मधेशमे बसल कोनो पहाडीक अपन बल अचल सम्पत्ति अल्प मूल्यमे बेचि प्रव्रजन करबाक स्थिति बनैत छैक। रामशरण पहाडी अछि मुदा बहुत दिन सँ मधेशीलोकनिक बिच बसल अछि आ ओकरासभक सँग आत्मीयता बनौने अछि। मुदा राजनीतिक षडयन्त्रक कारणे ओकरा प्रव्रजित होयबाक स्थिति बनैत छैक। मुदा ओकर मधेशी मीतकेँ ई पसिन्न नहिँ छैक। दुनूक बीच अन्तरङ्ग सम्बन्ध छैक । अन्त : ओ पहाडी अपन जन्मभूमिक परित्याग नहि कऽ पबैत अछि आ पुन : अपन वासस्थलपर घूरि अबैत अछि। अपरिचित राष्ट्रीयता बीच मानवीय संवेदनाक उपस्थापन एहि नाटककेँ अत्यन्त रमणीय बना देलक अछि।

सूलीपर इजोत प्रतीक नाटक थिक। एहिमे इजोत प्रतिनिधित्व करैत अछि मानवक सुखी, सम्पन्न, सुन्दर आ आकर्षक जीवन, अन्हार प्रतिनिधित्व करैत अछि ओहि समस्त विसङ्गतिक जे मानव

जीवनकेँ दुःखमय बना देने अछि। सुखी ठीक ओ स्थान जतऽ विसङ्गतिसभसँ संघर्षक कऽ सुखीधनि पहुँचबाक आवश्यकता छैक। आइ

गरीबी, बेरोजगारी, हत्या, भ्रष्टाचार, लूटि, बलात्कार, चित्कार, दहेज प्रथा, चोरी, डकैती, अनाचार, आदि विभिन्न समस्या मानव जीवनकेँ दूभर कएने छैक। ई समस्यासभ जाबत दूर नहि होएत मानव नीकजकाँ जीबि नहि सकैछ। मुदा ई समस्यासभ दूर होएत कोना, ताहिलेल हाथपर हाथ धऽ बैसलासँ काज नहि चलि सकैत छैक। एकरालेल चाही कर्मठता आ साहस। ई साहस न तऽ ओहि सुविधाभोगी समाजलेल छैक जे कारण पुन ऐसि अपनामे मस्त अछि आ ने क्रान्तिदर्शी ओहन लोकलेल जे सामाजिक जड़ताँक तोड़बाक स्वाङ्ग मात्र करैत अछि। वस्तुतः जखन मजदूर आ किसान अपन आजीविकाक प्रति बफादार रहैत संघर्षशील होएत तखन सामाजिक विद्रूपता सभपर विजय प्राप्त कऽ अज्ञानकेँ परास्त कऽ सकत आ सम्पन्न जीवन जीबि सकत। नाटककार श्रमिक वर्गक प्रतिष्ठा करैत पृष्ठ २ सँ कहलैत छथि हम आ पाला सिढ़ीक दूर ठाढ़ हैत। बड़का पैघ योगदान। आ पालामे जे बाह्ल अछि ताहि जीनसँ योगदान बाह्ल जाइत। एना कऽ चलनि पहुँचि जाएब इजातधनि। वस्तुत? ई नाटक सामाजिक राजनीतिक जगतमे व्याप्त विद्रूपतासँ संघर्ष करबाक आवहन करैत अछि। आ बौद्ध बाझ ओटल ग्राम्य जीवनमे चलैत कूटनीतिक पर्दाफास करैत अछि। एकर नायकमे अछि बौद्ध जे एकटा चाहक दोकान चलबैत अछि। एहि दोकानक कारणे ओ गामक गतिविधिसँ परिचित होइत रहैत अछि। अपितु बौधनी तानमप्रधान अछि। जकरा समयमे गाममे सुख -

शान्ति व्याप्त छैक। मुदा किछु लोककेँ ई नहि सोहाइत छैक। एहन स्वार्थी तत्व ग्रामक प्रधानविरुद्ध षडयन्त्र करैत अछि। ओसभ ग्रामप्रधानक एकटा मित्रकेँ ग्रामप्रधान बनबाक हेतु चुनावमे ठाढ़ करबा दैत अछि। परिणाम : दुनू मित्रक बीचमे वैमनस्य भऽ जाइत छैक। मुदा बोधू षडयन्त्रकारीसभक चाल खाली दैत अछि आ गाम पसाही लगबासँ बाचि जाइत अछि। एहिनाहुँ नाटकमे ग्राम्य जीवनक विद्रूपताविरुद्ध उठैत जनचेतनाकेँ साकार कयल गेल अछि।

संग्रहक सर्वाधिक पैघ एकाङ्की अछि सृजन उगनासँ पहिने। ई सात दृश्यमे विभाजित अछि। ई एकगोट रोमानी अर्थात स्वच्छन्दतावादी नाटक थिक। एहिमे प्रेमक स्वच्छन्दतापन बेस बल देल गेल अछि। आ ओकर मार्गमे उपस्थित होबऽबला विघ्न बाधाक सामना अत्यन्त सहज ढङ्गसँ होइत देखाओल गेल अछि। एहि नाटकमे नायक ओ नायिका विवाहमे विघ्न-बाधा होइतो अत्यन्त हर्ष आ उल्लासक वातावरणक प्रदर्शन भेल अछि।

एकर नायक अशोक पढि लिखि क नोकरी करऽलगैत अछि मुदा एहि हेतुएँ नोकरी छोड़ि दैत अछि जे ओकर मालिक अवैध व्यापारमे लागल रहैत छैक। आ [illegible] करबाक लेल ओकरा नियुक्त कएने रहैत छैक। नोकरी छोड़लाक बाद ओ बेरोजगार भऽ गामक सङ्गीसभक कुसङ्गतिमे रहऽ लगैत अछि आ व्यक्तिगतरूपेँ स्वच्छ रहितो अपन नशेड़ी मित्रसभक कारणे बदनाम होइत चलिजाइत अछि जाहिसँ ओकर माता पिता दुःखी रहऽ लगैत छथिन। बन-

बर कोशिश कएलाक बाद अशोककेँ नोकरी नहि भेटि पबैत छैक आ ओ अपन पेंशनधारी पितापर आश्रित रहऽ लगैत अछि।

अशोकक पिता अपन सकल अचल सम्पत्ति अशोकक पढ़ाइमे बिलहि देने छलाह। आ किछु कर्जा भऽ गेल छलनि जकर कारणे गोनाइत हुनका आ हुनका पत्नीकसँग दुर्व्यवहारपर उतरि जाइत अछि। अशोककेँ ई नहि नीक लगैत छैक आ ओ गोनाइतसँ रीति जाए चाहैत अछि। ओ मूलक कताक गुण्डा सूदि जाति कऽ ओकरा पैतृक घराडी हड़पबापर तुलल छैक। पूरा वर्ग ओहि महाजनी वृत्तिक प्रतिरोध करऽ चाहैत अछि मुदा आत्मविश्वासमे जकड़ल ओकरासभक माता पिता अत्याचारी महाजनकेँ बलपर ०।८ हाएबाक कृपा करबाक कृतज्ञताक कारणसँ नहिँ करऽ दैत छैक। मुदा अशोककेँ अपन माता पिताक अपमान नहिँ सहल जाइत अछि। ओ गोनाइतक डेउढ़ी जा झमैत अछि। मुदा ओतऽ गोनाइतक बेटी ओकरा गोनाइतसँ भेट होबऽ दैत छैक। आ अपन गहनासभ प्रदान कऽ ओकरा ऋणमुक्त भऽ जाए कहैत छैक।

गोनाइतक बेटी लक्ष्मीसँ अशोक गहना नहि लैत अछि। लक्ष्मी अशोककेँ अपन पिताक महाजनी वृत्तिक विरुद्ध संघर्ष करबाक हेतु सङ्गठित प्रयास करबाक मन्त्रणा दैत छैक आ ओहिमे आवश्यकता पड़लापर अपना सहयोग देबाक वचन दैत छैक। अन्ततः अशोक लक्ष्मीसँ विवाह कऽ लेबाक निर्णय लैत अछि आ लक्ष्मीयो ताहि हेतु तैयार भऽ जाइत अछि। हुनक विवाहमे गोनाइत विघ्न बाधा उत्पन्न करऽ चाहैत अछि मुदा कन्याक बालिग रहबाक कारणे आ

ओकर स्वीकृतिसँ विवाह होएबाक कारणेँ आ विवाह रोकि नहि पबैत अछि। आ एहिठामहि महाजनक अन्यायी वृत्तिक अन्त होइत छैक।

एहि नाटकमे महाजनी वृत्तिक जतेक सुन्दर आ सजीव उपस्थापन भेल अछि, ततेक ओकरा विरुद्ध संघर्षक नहि आ ने फलदायी प्रेमक। लक्ष्मी आ अशोकक प्रेममे ततेक असहजता अछि जे वस्तु विन्यासपर प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। तथापि रङ्गमञ्चीय दृष्टिसँ ई नाटक सिनेमा शैलीक सफल नाटक थिक।

मैथिली नाट्य साहित्यक इतिहास अत्यन्त प्राचीन अछि। संस्कृत नाटकमे मैथिलीक गेय पदावलीक सम्मिलनकेँ ई मैथिली नाटकक इतिहास मानी तँ आठसय वर्ष पुरान अछि। नेपाल मैथिली नाटक आ रङ्गमञ्चक एकटा महत्वपूर्ण केन्द्र रूपमे सत्रहम अठारहम शताब्दी धरि जानल जाइत रहल। मुदा परवर्ती कालमे ओहिठामसँ मैथिली नाटकक स्रोत जेना सूखा गेल छल। मुदा श्री रमन जीक प्रयाससँ बुझना जाइत अछि जे आधुनिक मैथिली नाटक अपन सकल सम्भावनाक संग नेपालमे पल्लवित पुष्पित भऽ रहल अछि आ युगानुरूप अन्यान्य भाषाक समकक्ष लेखनक प्रतिस्पर्धामे लागल अछि। एहि नाटकसंग्रहसँ ई स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे रमनजी प्रयोगधर्मी नाटककार छथि, नाट्यशैलीक विविध प्रयोगमे सिद्धहस्त छथि चाहे ओ पारम्परिक शैली हो किंवा अत्याधुनिक।

रमन जीक एकाङ्की नाटकसभमे अधिकांश वस्तु विन्यास प्रासङ्गिक अछि। एहिसभमे वर्तमान जीवनक विभिन्न समस्यादिसँ लोकक

ध्यानाकृष्ट करबाक सामर्थ्य छैक। हिनक सबटा नाट्यमञ्चीय दृष्टि सफल एकाङ्की अछि। नाटककार नाट्य प्रयोगकेँ उत्कर्षधर्मी बनेबाक हेतु नाट्यभाषाक प्रयोग कएलनि अछि, जे हुनक निर्देशकीयताकेँ स्फुट करैत अछि। यथासम्भव भाषाक प्रयोग कयलनि अछि जे हुनक निर्देशकियताकेँ स्फुट करैत अछि। यथासम्भव भाषाक व्यवहारसँ एकाङ्कीमे कतहु असहजता आ भाषीयता बुझना जाइत छैक। लोकानुरञ्जनक अपेक्षा गम्भीर वैचारिक अभिव्यक्ति प्रदान कए प्रभुजीक एकाङ्कीसभ लोकजीवनक समक्ष नाटकात्मक यथार्थक निरूपताकेँ उद्घाटित करबामे सफल सिद्ध अछि तथा नव निर्माणक पक्षधारी अछि। अन्तमे हिनक ई साहित्य समाज आ देशक हेतु कल्याणकारी अछि जाहिमे सभ लोकप्रियता आ बाजारूपनक अभाव तँ अछिए, प्रबल आ उपदेशकक ठोकल बौद्धिकता नहि अपितु कलात्मक लोकादेश अछि। समग्रतामे हिनक संग्रह समाज ओ राष्ट्रक प्रति हिनक प्रतिबद्ध लेखनक विशिष्ट नमूना थिक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.२३.गजङ्ख 0ाकुन- नाम स्नास कायि 'ञमन' यन ७कटा समग्र दृष्टि



गजङ्ख 0ाकुन

नाम स्नास कायि 'ञमन' यन ७कटा समग्र दृष्टि

नाम स्नास कायि 'ञमन' सर्वद्वाना नर्गकँ गनिमा द्वलहि, जखन मद्धङ्ख मलंगिया ञा जागिनादी नंगमंच (ञालकन ञा ना७ युक्त शब्दावली ञयन स्रौयस्थिक ञ्रुमन वला नाटक म दS नद्धल छल, नखन ञमन जी ञ्री कलहि, स ञान मद्धत्वपूर्ण छल।

ञँ नाटक यढवाम उद्धलिन नै कनन गँ निर्दशक उाकन मंचनक निर्णय काना लन? ञा ज यढवाम नीक लागन स रुS जायन नाटकक य0नीय गन्नक ञाग्रदी? ञा ज जागिनादी ञछि, ज 'स्रौयस्थिक ञ्रुमन' लिखै छथि स रुला नाटकक मंचीय गन्नक ञाग्रदी? २१म

शताब्दीमे मलंगियाजी 'ओकर आंगनक बारहमासा'मे निम्न वर्गकेँ नाउ कहै छथि, कएक दशक बाद जे ध्वनि सुधांशु आएल छन्हि से ओ आब ओहो वर्गकेँ निम्न वर्ग कहि रहल छथि, जे सुधांशु स्नातक पाश्च मुदा ई दीर्घ अवधि लेल बड कम अछि। मलंगियाजी अपन जाति-आधारित नाटक संरचना, आ ग्रष्ट-हिन्दी मिश्रित नाटक रचना करना घासिया सकैत छथि जेँ हुनका आ निम्न वर्गक हस्य संकल्पना नै अनैत छथि, जे तथ्य ओ बड चतुराइसँ नुकबाक प्रयास करै छथि, आ जेँ ओ मतियाक्रिटीसँ आगाँ नै बढि पबै छथि। आ जेँ हुनकाम ई नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनबाक आग्रह जेँ छन्हि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि। विष्णु शर्माक पंचतंत्र नीक कथा सरु अछि मुदा ओ अकानध शुद्र आ स्त्रीक पाछाँ पड़ि जाइ छथि, से नारायण पण्डितकेँ ओकर पुनर्लेखन कऽ हितोपदेश लिखय पड़लन्हि। रंगमंच निर्देशककेँ सेहो ई तनरुक भाषाक पुनर्लेखन कऽ मंचन पाश्च शब्दावली बनबाक चाही।

रमनक गनिमामय भाषा लोकक गनिमाक मान रखैत अछि।

मुदा पहिल रमनक लघुकथा सरयन एकटा दृष्टि:

गाम संग जयबौ रे कुजवा (१९८१)

ई संग्रहम १२ टा लघुकथा अछि।

पहिल लघुकथा **हगजागनी**क जबर्दस्त प्रारम्भ हएल। (स्नेमन गर्ल नखा घन गृहस्थीक लेल चिन्तित, जे देखि कऽ प्राइटगोनिस्ट अरि अचम्भित छथि। समाजसँ पतिताइसँ जे ओकरा अधिकार उन्नैस बर्खमे पड़ा

दलकें काठमाण्डौ, कमाइ लेल। ओकरासँ खिन्न छलि रेखा। यदि बनारसमे ओकरा कमाइयक यत्न नइँ छल, आ ओकरा रेगमनक खर्च जुटा करै छलै ओकर संगी शेखर, ब्यापारी। मुदा कथाक अन्त कमजोर भऽ गेल अछि।

अप्पनमे रागिआयल एकटा सिपाही उत्कृष्ट कथा अछि। गणेश आ गणेश सन लोकक कथा। 'हमरा हनियन बला वड्डदानसँ माछल दाउना, सुनबाल, टायी आ बाबूक जुनना झगा पयरमे आ आँखिमे टुटल चाँहिबला चश्मा, जकरा ओ जनीसँ बहुत नहैक।'

'रागिआयल बाटक बटोही', 'नानक वृन्न' आ 'असक्त' व्यक्तिक मनक विचार आ निनाशाकँ नीकसँ दर्शन करैत अछि। मुदा सर्वहाराक दर्द 'माटिक दनद'मे जाइ प्रकारेँ आयल अछि, से अद्भुत अछि।

'मनःस्थितिक दंश' कथाक गठनि अद्भुत् अछि। वहुनियाक यदि नाइट श्रुटी, सिकन्टीयन जाइ छै। कमजोर छै। ससुर ओकरा घरमे पइसै छै, मुदा से ओकरा बादमे पता चलै छै, यदिल नागि गँ ओ आदंकमे नहैत, ओकरा संग सम्भोग हलै आकि ओ सयनाइ छलि सहा नै पता। कथा आगाँ वढै छै। आन शिल्पगत विशेषता अबै छै। मुदा हुन अन्त हाइन-हाइन कथा कमजोर भऽ जाइत।

टीस दसमे कजाक छात्राक कथा अछि, ओ किछु वनऽ चाहै छथि, मुदा..

जना टीस गीताक कथा अछि गहिना मौसी मौसीक कथा अछि जे आइ जा नहल छथि, मुदा हुनका मानसँ किया निकालि नै यावि नहल अछि।

आँचनम वर्खा वृन्नीक वीच प्राटेगोनिस्ट साचि नहल छथि। एयंकन वर्खा, अतियानधान कऽ दगै। सनस्नी, सुनीता, गीता। सनस्नीक सासुन नीक नै एलै, गीता लल लतका प्राटेगोनिस्ट गाकथु। स्मृति.. वर्खा वृन्नीक वीच।

यांकम मॉतर्न नखाक कथा अछि। मुदा कथा उद्देश्यहीन एटकैग नहैग अछि। गाना संगे जयवौ न कुजवा टाइटल कथा अछि मुदा यांक सन ऽीहा स्त्री युन्नुष निमर्णकँ नै हनिछा यावैत। वैकल्पैस आस जगवैग नहैत मुदा या0क यियासल नहि जाइ छथि आ स थ्यास गखन आन गीव्र एऽ जाइत जखन ओगक सगक्र याँगि कथाकान अन्हिमम आनै छथि।

गाना संगे जयवौ न कुजवा

वत सुख हायगै-

हथिया चढि घूमवै जहान न..

उमनक नाटक

हीतुनर्कक आधानयन ऊँ लाककथाक संकलन, माहावनाक संकलन नै कानव गँ अहिना हजग जना मर्लंगिया जीक नाटकम हाइत। अहाँ जक नर्गक प्रचलित माहावना 'दस व्राह्मध दस यट, दस नात जक

घर' नाटकावलीक संकलन कऽ लेब मुदा शासन वर्ग द्वारा प्रयुक्त 'दस ब्राह्मण एक घर..' कोन संकलन नै कऽ सकब। महेन्द्र नारायण राम लिखै छथि जे लोककथामे जाति-पाँति नै होइ छै, मुदा मलंगियाजी से कोना मानताह? हिनका सभ हुनकर कथामे एब करै छथि। आ असल कारण जइ कारणसँ ओ मलंगिया जीक नाटकक अभिन्न अंग बनि जाइत अछि से अछि हुनकर आनुवंशिक जातीय श्रेष्ठता आधारित सोच। हुनकर नाटकमे मारा-मारी अछैत-अछैत पात्रक बीच गीति कऽ कहुँएकटा दृश्य होइत अछि, जइमे अन्तिम दु-तीन दृश्य बनि ओ छोटका जातिक (मलंगियाजीक अपन हिसाबे कहल जाए तँ) कथित रामायण सवर्ण दर्शकक हँसबाक, आ हिनकाक ग्रन्थ-विद्वीक माध्यमसँ छद्म हास्य उत्पन्न करबाक अपन पुरान पद्धतिक अनुसरण करै छथि। नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनबाक आग्रह तँ अन्तिम दु-तीन दृश्यमे ओ करैत छथि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि। "पचपनिया मैथिली" मे सुभाष चन्द्र यादव लिखैत छथि- "डॉ. रमानन्द झा 'रमण' अपन नाटवृक्ष मे टिप्पणी छलाह- 'ब्राह्मण कहैत छथि सोइत छी, सोलकन कहैत अछि बाभन छी। हम की कहौ जे की छी?' एहि टीप मे सोलकन लेल जे निरादर व्यक्त भेल अछि, से आन किछु नहि; जातीय विद्वेष आ घृणाक पाथिक अभिव्यक्ति थिक।" बेचन "**रामस्रास कार्यो 'अमन' : निधान, संवेदना आ कामना** [विदेह अंक ३१०]"मे लिखै छथि- "किएक तँ नवालक मैथिली नाटककेँ नाटक बूझल नहि जाइत। शासन, जे संस्था मिनाय नाटक करय गारिम कोना एकटा खास व्यक्तिक मात्र नाटक खेलायल जाइत। एही वर्चस्ववादी नीतिकेँ तोड़बाक आ मानसिकताकेँ जाग्रत करबाक उद्देश्यें ओ एक समयमे

नाटक लिखबा यन ज्ञान दलनि।" ई *एकटा खास व्यक्ति* मलंगिया जी थिका, मलंगिया जी नयाली नाजशाही कालम लखकीय प्रतिबद्धताकँ नै निमहा सकला आ नाजनैतिक नुयसँ सफा यउक नाटक लिखलनि आ खयाल नखलनि ज दर्शक हँसय मात्र सर्वहानायन, सफाधीशयन नै। प्रा. यनमश्वन कार्यत "'मूर्दा' नाटकक यूगीन-सन्दर्भ [नमश नञ्जन- मूर्दा, साल २०६९]" म लिखै छथि- "डॉ. धीनन्द्र आ मलंगिया... अयनाक नाजनीतिसँ एतन नखन नहलाह। । गँउ हिनका सवक नवनाम, नवनाधर्मिताम, नाजनीतिक द्वन्द्वक लवलस नहि दखाइ दैत अछि।" अही आलखम यनमश्वन कार्यत नमश नञ्जन आ मलंगिया जीक मादे लिखै छथि- "नमशजी, मलंगियाक लगम बहुत दिन धनि नहि नङ्गमञ्चीय सम्पति कनिता, यथार्थ ई अछि ज हिनकायन मलंगियाजीक काना छांह-रास नहि यउल बूझाइछ। दासन यथार्थ तs ईहा अछि ज मलंगियाजीसँ हटल नहल अवस्था आ संस्काम ई महत्वपर्ण कृतिक नचना कए सकलथि। हमन कहवाक अभिप्राय ई अछि ज मलंगियाजी आ मिनायसँ जहिया नमशजी अलग हs कs संकल्पसँ आवद्ध नहथि तहिए एकन नचना (मूर्दा, नाटक, वि.सं.२०७० सालम) हल अछि। ध्यातव्य अछि ज मिनाय एखनधनि एकन मञ्चन नहि कs सकल।"

ई यनिस्थितिम ग्रमन मैथिली नाटककँ सम्पादक माध्यम वनौलनि, उकना लल एकटा राषा गढलनि ज सर्वहाना लल अयमानजनक नै ननन गनिमामय छल। नाजशाहीक तनम नहिता आ नयालक नागनिक नहिता (मलंगियाक कार्यस्थल नयाल छल मुदा ओ रानाक नागनिक छला) ओ लाकगाथाक माध्यमसँ नाजनीतिक विषयवस्तु अयन नचनाधर्मिताम अनलनि।

“ऍया, अ७लें अयन सानाज” कन यूनुष-१ आ यूनुष-२ सामन्धक वगानी खटवाक विनाधम अछि आ यार्थ्नसँ गीप उ(0 छै-

सट दिन आ्ल्ली ख6 कटावें छै

साप सउा मूसरुनवा स

सापा साउा मूसरुनकँ घनम छागन यासल छै, दीना एन्नी नाजा एनथनीक गीप गवेप यागी नूयम प्रवश कने छथि।

पहिना 'महिषासुन मूर्दावाद' ७कल नाटक अछि, जल्लम यूनुष-१ अयना आ यार्थ्नसँ वाजल अवाजाक अभिनय कs सकेप अछि। ७कटा कँ मानन वहुप नास जनमि कs O।6 एs जाल्लप अछि, स काज अयूर्ण छै उाल्ल यात्रक, आ पँ उा ऱ्हाँसी यन अखन नै लटकs चाहि७।

लाक नाय्य: जट जटिन (२OO१) ((शाध) हुनकन ऱ्हीतुनर्कसँ ञ७ल नहवाक प्रमाध अछि। आ पँ हुनका नयालीय मैथिलीक लाकनाय्यधर्मी (शक्षयीयन कहल जाल्लप अछि।

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यOाउ।**

२.२४.नियानन्द मण्डल-अयन नक्षम नक्षा७ल नामएनास सन



नित्यानन्द मण्डल

अपन चश्मा चढ़ाओल नामस्मरण सन

करैत सुदर्शन स्वरूप । अपन चमकैत ओजपूर्ण आँखिसँ लालाभ होइत अप्रतिम आकर्षणयुक्त सौन्दर्यपूर्ण सौम्य नयनाभिराम मुस्कियाइत मुखाकृति एक सरल नयनक उपनयन साहित्यसँ होइत छथि से निनन्दन अपना वर्गक प्रवाहेँ निश्छल सरिता जकाँ बहैत बहैत छथि बिना नाकटाक अपन माटि जतेक मस्तिष्कक आलम्ब एक अंकुरित बौद्धिकताक आयामकेँ जीवन आ जगतक क्षितिजधरि आलोकित करब हेतिनथी सत्प्रयाससँ समाज,साहित्य आ संस्कृतिक लेल अपन जीवनकेँ विषम तुलनात्मक नीलकंठ जकाँ विषपान कए श्रोता, पाठक आ दर्शककेँ अपन सृजनसँ अमृतपान, रसपान करौनिहार जनिक समकालिन समालोचक लोकनि सप्रेम, सम्मान, सम्वेद करैत रहनि जे कायतिक चाहि एक फूटनि खायति, आइ बाहेओ कायतिसन मैथिली साहित्यकेँ श्रीवृद्धिम महत्वपूर्ण योगदान दैत मिथिलावासीक माथ सगौरव उच्च क देलखिन्ह । कायति सन मान नामस्मरण कायति सन ।

हुनक साहित्यिक आ सङ्गठनक सुनरी समता आधारित मिथिला होइक वा अस्मिता अभियानित मधेसक कान्ह-कान्हधनि पसरल छनि । हुनका गानगानमे मिथिला आ मधेश सजिव अछि । गँ नेपालमे संघियता आन्दोलनक बाद मधेश प्रदेशमे गठित मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक पहिल अध्यक्षक कमान सम्हारने छथि । मधेशप्रदेशमे रहल विभिन्न भाषाभाषिक साहित्यअनुरागी, भाषाप्रेमी, कलापारखी लोकनि हिनका उपर साहित्यिक सरनिधामे नीक महत्वपूर्ण काज होइक स पलक निछउान अछि ।

वस्तुतः मैथिली साहित्यक एहन कोनो विधा नहि जे हिनकासँ बाम गेल होइक । कविता, गीत, गजल, लेख, आलेख, निबन्ध, शोध, रिपोर्ताज, समीक्षा, कथा, उपन्यास, नाटक, फिल्म, गीति क्यासेट आदि हिनक बेमिसाल कृतिसभ अछि । नहि आब नहि दीर्घ कविता, गाम संग जएबा न कुजबा, हुगली उपर बहैत गंगा, एकटी राइनस कथा संग्रह, ठेकान पर आलेख संग्रह, सीता फिल्ममे प्रसिद्धगीतक लेखन, जटजटिन, जानकीक महिमा, हमर गतीवीए हमरा ननदान लगेए, महनतिक नारी पकवान लगेए आदि गीत, जनकपुरधाम न पर ऊनका साँस्कृतिक सम्पदा आ एकर अँग्रेजी अनुवाद सह, राजकमल आ स्त्री पर शोध, मधेश आन्दोलनपर कविता घरमुँहा उपन्यास, आदि उल्लेखनीय कृति अछि । गामघर आ आँगन मैथिली पत्रकारिताक एकटा एहन राजमार्ग बनल जाहिपर सयौंक संख्यामे एखनुका नामी हस्ताक्षर लोकनि ओहिठामसँ डगाडगी चलबाक सुरुआत कएने रहलबात ककरासँ नुकाएल नहि अछि जाहिमे

अपनक (शाभिग आ नकार्यक्षक सूरूल थिक ज आ्ॅॅया उा दूनू यत्रिका या0कक मनमस्फिष्कम जीनिग अछि, आ चलि नहल अछि। जनकयूनधामसँ कान्दियूनक नास्फ यहिल ब्यकिग्नक नूयम काज कनव, मधूयर्क, गनिमा, (गानखायत्र, नाजधानी, नागनिक, हिमाल खवन, अिग्नीयथ, यूना मञ्च आदिम समाचान निचान प्रकाशिग हाञव अपनक कलमक जादूगनी अछि। हिन्दूस्फान, आज,ॅॅलिनकलाव, हिमालीनी, द यालिटिक्स, निनिध हानग लगायगम हिन्दी हाषाम निचान आ समाचान सम्प्रषक्ष। सानामाटि, दशकास, घनवाहन, समयसाल, अंगिका, फूलयाग, यल्लव, मि थिला टाॅॅइम्स, मिथिला दर्शन आदिम छायल नहलाह। जनकयूनधामक दासन अरूसट प्रतिधिक यत्रिका सूप्रहाग, जनकयून एक्सप्रेस आॅॅया लाकक (0ान यन अछि। एकटा आउान वसन्फ टलिहिल्म लखन, निर्मा0,कार्यक्रमक आयाजन,उानिआउान, ब्यवस्थायन आ सम्यादक अङ्गग कला उा सहजन छथि जकन यनिशाम छै जनकयून हिल्म हस्टीहल, अन्फनाष्टन््िद्रय मैथिली सम्मलन, साहित्य कला उत्सव आदि। नयाल प्रस्ना प्रगिष्ठानक प्राज्ञ मात्र नहि मैथिली निकास काषक संस्थायक, नूयनंग आदि संस्थासहक सह्ल ग0न आ सञ्चालन कनवाम हिनक याग़दानक चर्चा नहि कनव (था० हएग। नयालक नाष्ट्रिय अखवान मात्र नहि स्थानीय उली एक्सप्रेसम निनन्फन सत्य संवाद नामक स्फम्भयन कलम चलवैग आनि नहलाह अछि। ॅॅ(शानयाल नाॅॅर्टेस मिट, उाहीयन आयाजन हावएवाला निग्नायगि समानाह, लाकार्यक्ष आ साँस्कृगिक मञ्च सह यन हिनक उयस्थिगि गनिमामय मानल जाॅॅग अछि।

नन्दः ई एकटा एहन व्यक्ति, जे कहियो दार्शनिक चिन्तक जकाँ, कहियो चमत्कारिक वक्ता जकाँ, कहियो बुद्धकीय लेखक जकाँ। कहियो पश्चिमी दर्शन, चिन्तन आ सामाजिकविज्ञानक एकटा पात्र जकाँ। कहियो पूर्वीय धर्म, अध्यात्म, दर्शन आ अनुशासनक स्नाता जकाँ। जीबैत रहलाह अछि। ई जीवनक प्रत्येक क्षणमे हुनक रङ्ग सत्यक हिसाब किताबक आँकलन मात्र नहि कएलनि, ओही रङ्ग सत्यसँ जीबाक उत्कट उत्कण्ठा जिजीविषा पाललनि, आओर अपन रङ्गमे रंगा जाएवाला व्यक्तित्व। मूँह मिसरी बात करैला, सुदर्शन व्यक्तित्व, कला, साहित्य आ सङ्गीतक संगम, अञ्जन, आनन्द आ अध्यात्मक त्रिवेणी, बहुविधावादी सभक हृदयाञ्जन आदरणीय रामरूपास कायति भ्रमर सन।

कहियो ईमनसँ इहनाएल, ईमराम मागल जे अक्षर मौकाक गलासम रहैत अछि जे ककरा कामा अपन शब्दक बाणसँ धनी धरा दी। मुदा असलमे कहीँ त एकटा एहन अरिस्तानक जे साँचक प्राध्यापक बनबाक कहियो लोल नहि कएलनि मुदा मैथिलीवाला नहि नेपालीवाला लोकनि सङ्ग हिनक कृतित्व आ व्यक्तित्व पर शोध करैत रहलाह। अर्थात् स्नान, चिन्तन, वाणी आ लेखनमे लय रहल लोक। सार्वजनिक मञ्चसभक सम्बोधनमे एकदम प्रमिल सम्बोधन, मुदा निबन्धमे समाज, राजनीति, जीवन जगतक विशाल आ गहिना समुद्रसभ कल्पनाक सतरंगी पाँखि लगा ईतान रसैत आ हलैत डुबैत, नँखसिक हाल्ला। अद्भुत रचित लेखनशैली। चिन्तन आ तर्ककँ सरल रूपमे रेखांकन करबाक जादूगरी कुशलता। तार्किक बहुत ही ईदानतापूर्वक राखबाक बेजोड कला।

हुनक गाना सँग जएवा न कूजवा, हुँगली उयन वहैत गंगा, एकटा आउान वसन्ध, सुनुज उगवासँ यहिन, यटक खागिन, महिषासुन मूर्दावाद, सुलीयन ००जाग, वन्नः काOनी ऊैना००ग धूँवा, लकताउन तायनी, नहि आन नहि, दीर्घकविगा, हालहिँम मिथिलाक लाकजीवनः लाक सहुर्ट याथी एकटा नव कीर्तिमान स्थायित कनवाम सहुल रहल अछि । हिनक नचना सवम जीवन,जगग आ प्रम व प्रणय लवालव रहल अछि ज सर्वाधिक नुचिकन अछि । जाहिँम नायक नायिकाक हाउराउ, स्पर्श, नृत्य आदिसँ ध्वनित हाएव, श्रवित हा००व आ दू गीन दिनधनि मान गुदगुदाएल नहुव । याOकक स्वाराविक प्रगिक्रिया । हिनक कथासहम जाँघ वा वउास्थलक वाग मात्र नहि हा००ग अछि, उाहिम लाट, माह, काम, क्राध, समाज आ नाजनीगि उयन वाटगन प्रहान सहा नहैत अछि । वृद्धक मन्त्रसट, कुनान, वद, उयनिषद्, वा००वल... की की नँ००ी नहैत अछि ? लखनम विम्वसरक प्रयाग जादुगनी । गामसाम,हँसियाक प्रदर्शन, आतम्वनकसँग यूजायाO कनएवाला ढाँगी यण्डित यूनाहिग,मौलाना,यादनी सटसँ लS कS समाजक अन्य याखण्डी नाजनीगिस्ह आ स्कूल शिउकधनिक चनीकला उयन विलउाण व्यंग्रवाण प्रहान कनव हिनक मौलिक शिल्य छनि । हिनक सौन्दर्यवाग आ जीवनक खास नङ्ग नूपसटकँ वन वन निघानवाक मान हाएव अस्वाराविक नहि । हुनक वहुग चर्चित ग्रंथ आ विचानप्रधान शृंखला गामघन आ उली एक्साप्रसम प्रकाशित नचना आदि वहगाकँ (Oान यन शीर्षक आ गुदी कण्ठस्थ नहैत अछि । कहियाकाल अयना मूतम नहलासँ अयन समकालीन सँगीसट वीचक संवाद,चौल,नाकसाँक, मौल, वाग कटौवलि आ Oड्डा गजानक हा००ग

अछि । तखन एना लगैत रहैत अछि जेना जीवनक सभ रङ्गसभ उमड़ि ओहि पृथ्वीलोक पर उतरि आएल होइक । जेना दार्शनिक, आध्यात्मिक आ मानवीय भावक वहस,विमर्श आ छलफल शानदान,वजनदान आ दमदान होइत जा रहल होइक । जनिक ओहाम सभ अनन्त गहिराइ होइत ठीक, उ यथिहास आ विनोदप्रियता सभ ! गहिर सौन्दर्यता आ मानवीय प्रेम । भावनासँ भरल आ माजल एकटा प्रारम्भ पातनरूप बम्मा, वज्र दाँत आ अट्टाहासक मनकानी हँसनाइ लागवाव ।

पछिला समयम अत्याधुनिक अन्तर्जाल आँखिगन,आसन्न जनगणना आ प्रदेशक राखाक नामाकरण आ राखाक जगर्नाक लल माहित अत्यन्ताक नूतन सामाजिक सञ्जाल आ विभिन्न मितियाम खूब सक्रिय देखल गेलाह अछि । अंग्रेजीम कहल जाइत अछि ज गिरे अ ग्राम ! मैथिलीम बाल मगलव । विना चाकटाक, कहएवाला बात ओहिं य ओहिं कहनाक चाही, लिखवाक चाही । बात जानिसारह,दु टयी, विना काना हिचकिचाहट गलत तथ्यक विरुद्ध आवाज उठाएव । जाहिँसँ लोकक दुःख हएतनि तकर काना हिकिन,यतनाह नहि । एहिसँ कडा गलत वूसमा ना अयन हित नहि होइत स कहिया नहि वूमि सकलनि । अर्थ अनर्थक किछु गप्प कथिला नहि होइ ताहिँयन ताइीतक प्रदान कनव ज जीवनकँ नङ्ग सरम राखैत अछि विना ढोंग, विना घमण्ड, विना तथाकथित सामाजिक रय ! सीधा अर्थ नहि रटव, हिनक गहिँन आ गम्भीन नवनाम । तथापि लयम वहएवाला स्नराव हिनका 'यल्लिक ठहलक्कअल' अर्थात् कोनो काना विषयम लगातान सुवनायुक्त प्रवचन

दनिहान निद्वान् आ निद्वतायुक्त निद्वता, निचान आ चिन्तनम हुनक उवाज्ञी आ आयाम अतुलनीय अछि । वौद्धिकता, चिन्तन आ निचानक गहम(समानधन) वात नहि मिलला यन ककनासँग अति जाग्व हिनक स्नाहान सर्वजनिन हऽ गेल अछि ।

ओहिसह वातक पुष्टि कनवाक वगनता नहि । लाक हिनक कृतित्व आ व्यक्तित्वसँ नीक जकाँ यनिचित अछि । कहनाम कोना हर्जा नहि जे नाटक लखन, टलिफिल्म(ओकटा आउन वसन्त), यत्रकानिता(गामघन,,कान्तियून,सुप्रहात, जनकयून ओक्षायस, कथासँग्रह,कनिता,निवन्ध सयपत्री,आँगन,संस्मनध आदि)क यात्रा,सार्वजनिक मञ्च आयाजन व सञ्चालन जनकयून फिल्म हस्तीहल, अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मलन, जनकयून साहित्य उत्सव) आदिम सनावानि तुवलासँ,नसास्वादन आ यनखलासँ सहजे हटि सकैत अछि । वत सुअहगन लयम हिनक मूखाकृतिक जादूटोना किनका नहि सम्मोहित कनैत हअतनि । आउन की कहूँ ? मारु कअल जअौक जे हिनक हागीनथी सतप्रयाससँ साहित्य आ सञ्चानम प्रनाहित अनकानक कृति आ नचनाक उल्लख नहि कऽ सकल हअव, हमन छाट मस्तिष्क जे कौद कअन नहय गकन शब्दम गढवाक चष्टा कअल ।त्रमनसनक प्रति हमन कहव छूअह नहा अयनक व्यक्तित्व आ कृतित्वक यनिछाहीम हमन छूी शब्दचित्र स्नीकानल जाअ ।

मैथिली हाषा ओवं साहित्यम अतुलनीय योगदानक कदन आ सम्मान स्वनुप यनमादनधीय नामहचास कार्यति 'त्रमन' सनक नयालक

महामहिम राष्ट्रपतिद्वारा 'सुप्रबल जनसेवा श्री तृतीय पदक' प्राप्त करबाक सौभाग्य प्राप्त भेलनि । वास्तवमे विगत ३० वर्षधरि अपन जीवनक सर्वाधिक हिस्सा मैथिली, नेपाली, हिन्दी साहित्य, पत्रकारितामे व्यय कएनिहार व्यक्तित्वकेँ सम्मान करब संस्था स्वयं सम्मानित होएब अछि ।

कहबाक काज बहुत नहि जे ३१ वर्ष दिनका लेल सुखद रहलनि आ मैथिलीक लेल हर्षक, एहि दुआरे जे नेपाल सरकारद्वारा सुप्रबल जनसेवाश्री तृतीयसँ सम्मानित होइतहि लगातार भेल नेपाल सरकारक संस्कृति, पर्यटक एवं नागरिक उड्डयन मन्त्रालयद्वारा वर्ष २०७७ क 'महाकवि देवकोटा पुरस्कार'क लेल चयनित भेलाक समाद सुनि सगर मिथिला अत्यन्त हर्षित, आह्लादित आ विभोर भेल । हँ परमादरणीय वरिष्ठ पत्रकार आ साहित्यकार श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' सरक नमन सहित हार्दिक बधाइ एवं शुभकामना । हुनक पर चौकाक बर्षात । समय घुमैत छै, समय बितैत छै आ समय एवं समाज लगानीकेँ मूल्यांकन सेहो करैत छै से सबन । सबुर करबाक चाही । देर हे अन्धेर नइँ बात हुनार करबा नाँगनि रहनहुनबा ।

मधेश प्रदेश प्रतिष्ठानक सम्प्राप्ति अध्यक्ष भेला पर हुनसँ अनेकानेक शुभकामना, अशेष मंगलकामना आ अपनेक जीवन सार्थक, सृजनमय आ सुखमय होअए से असंख्य कामना ।

-नित्यानन्द मण्डल, जनकपुरधाम, नेपाल

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

ऐ अंकक अन्य रचना

३.गद्य खण्ड

३.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

३.२.जगदीश प्रसाद मण्डल- शॉर्ट कट रास्ता (लघुकथा)

३.३.नन्द विलास राय- साँटवन्ना

३.४.रवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- ३१-३५ म खण्ड

३.५.कुमार मनोज कश्यप-अन्हार सऽ लऊन

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खण्ड-१९)

३.७.संतोष कुमार राय 'बटोही' मंगरौना (धारावाहिक उपन्यास १२म खण्ड)

३.८.आचार्य रामानन्द मण्डल-जाति बनाम जातिवाद/ धनम संकट मुक्त

३.९.डा. किशन कारीगर-पुरस्कारी गुर्गा पुरस्कार बँटा ठकैत

३.१०.लाल देव कामत- कथाकार नन्द विलास राय जी क कथा पोथी 'असल पूजा'/पोथी समीक्षा- "समिया रायनि"

३.११.कुन्दन कर्ण- मैथिली बीहनि कथा- नीड

३.१२.आशुतोष कुमार झा- जीवनक सीख

३.१.जगदीश प्रसाद मण्डल- सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)



<u>**जगदीश प्रसाद मण्डल**</u>

सुचिता (धारावाहिक उपन्यास)

'सुचिता' धारावाहिक रूपेँ छपब प्रारम्भ भेल 'मिथिला दर्शन'मे, जे बादमे प्रिंटमे छपब बन्द भेल आ मात्र पी.डी.एफ. मे ई-प्रकाशित होअए लागल आ फेर सेहो बन्द भऽ गेल। आ तेँ 'सुचिता'क सेहो छपब/ ई-प्रकाशित होएब बन्द भऽ गेल। अही आलोकमे ई उपन्यास धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित कएल जा रहल अछि। -सम्पादक।

दासन यठान

दिनक तीन बजा। विलासदेव सुति उठि कऽ हाथ-मुँह धोऽऽ दरबज्जापर बैसब कएल छला कि सुखदेव लाटाम यानि, कटानीम यीसल रोंग नन पहुँचलैन। कटानीम नाखल रोंगकँ विलासदेव अपन हाथक आँगुनक चुटकीसँ दखए लगला जे रोंगक यीसान नीक अछि कि नहि। किए तँ विलासदेवकँ ऽऽी बूमल छैन जे रोंगक नीक यीसान तखन मानल जाऽऽए जखन ऊा यानिम अलैग जाऽऽए। मान ऽऽी जे रोंगक जहन यीसान हाऽऽए तहन उाऽऽम नशाक मात्रा उात बसी हाऽऽए। चुटकीसँ दखला पछाऽऽत विलासदेव बूमि गेला जे रोंगक यीसान नीक अछि। तहीकाल विलासदेवक लंगोटिया संगी निशाकान्त सहा पहुँचला।

निशाकान्त आ विलासदेव संगे-संग गामक स्कूलम पढ़न छैथ। दुनूक जन्म सुप्रस्त यनिवानम रुन नाकनी-चाकनीक खगता नहियेँ छलैन, तँए आगू पढ़बकँ उात जनुनी दुनूक पिता नहि बूमलैन। तँए आगू नहियेँ पढ़लैन। अपन जमीन-जथाक कागज-पत्तर दखब, महाजनीक बही-खाताक हिसाब-वानी करब, बस एतब खगता छलैन।

पिताक अमलदानीम जहिना विलासदेवक तहिना निशाकान्तक यनिवानम महाजनीक कारोबार चलैत नहैन। मान नुयेउा-पैसा आ अन्ना-पानिक सुदि-सवाऽऽ दुनू यनिवानक खानदानी पेशा छल। उाना, रैयानीम विलासदेव असगर छैथ मुदा निशाकान्त तीन राँऽऽक रैयानीम छैथ। पिताकँ मुऽऽला पछाऽऽत निशाकान्तक यनिवानम सम्यैतिक बँटवाना लऽ कऽ तहन विवाद उठल जे महाजनीक संग-

संग आधारसँ बसी जमीनक मुकदमबाजीमे चलि गेलैन। मुदा विलासदेवकेँ से नहि भेलैन। असगर भैयारी रहने दियादी विवाद नहि उठलैन। निशाकान्तकेँ देखिते विलासदेव बजला-

“आउ-आउ भयान..!”

निशाकान्त बजला-

“भयान, की हाल-चाल अछि?”

विलासदेव बजला-

“हाल-चाल की रहत..! समय गेने दुनकाल भऽ गेल अछि जे सदिखन मनमे अबैए- बहुत जिनगीसँ मरब नीक। की समय छल आ अखन की भऽ गेल से बूझिये ने पबै रहल छी..!”

गैबीच सुखदेवकेँ आगुमे ठाढ़ देखि विलासदेव मुँह घुमाकऽ बजला-

“बौआ, अपन भाँगसँ काज नहि चलतह। जँ अनलह गप आना नहि आबह। गैबीच हम दुनू भयान गप-सप्त करै छी।”

पिताक बात सुनि सुखदेव मन-मन विचारलक जे अपना-ले जे तखन

छी मोन आधा पिता-ल अपन छल आ आधा अपना-ल ओ जखन छल, गाम सबहक आनिकऽ दऽ देने छथिन आ गामक पत्नीकेँ पानिम डीजेल दऽ देबै। बिनु डीजल पत्नीकेँ पीसलासँ ओ नस ठेउ ओत ओ डीजलम अबैत। सबहक कलक।

टाँगक गेला देखि बिलासदेव सुखदेवकेँ कहलखिन-

"बौआ, अपन त ओहिना टाँग खा लेने छी, मुदा जखन देवघरायन टयान चलि गेला तखन ओहिना खाएब ओचित हएत। कनक दुखो आ बीनियाँ तन आबह। पाकल कता गँ घनम नहियँ हगह। तेँ ल अपन बौकपन कथील जबह। बीनियँ-दुखसँ काज चला लेबह।"

पिताक बात सुनि सुखदेव आँगनसँ दासन लाटाम दुख आ बीनीक तिब्बा आनि टाँग धाउलक। दुनू लाटा टाँग, दुनू टयान मान बिलासदेव आ निशाकान्त पीब लेलैन। टाँग पीब ढकान कनैत बिलासदेव बजला-

"बौआ सुखदेव, दु कप चाह तन आबह।"

ओना, चाहक नाओं सुनि निशाकान्त कन गानाम्य कनए लगला मुदा बूझल नहब कनैन ओ बिनु चाह पीन ठेओक देनीसँ टाँग अपन तंग अनैत मुदा चाह पीन स नहि हाएत, लगल तंग आबि जाएत।

सुखदेवक हाथमे चाहक कप देखि विलासदेव बजला-

“बौआ, चाह नहि एकबेर आधा आँगन जा आ धानक सेर समधा आनि ऊठाम नहि देहक, रौड़ गेलहे ग्राहन झूठी। यहोंड़ा हम दुनू खयान गप-सप्प करैत रहब।”

धानक सेर समान सुखदेव आनि पिताक आगुमे नहि अपन राँगक उनियानमे चलि गेला। गैबीच दु-दु घांट चाह दुनू गोटे पीब ललैन। राँगक संग कनी-कनी दुनूक मनमे मुठियानी दिअ लगल नहैन। जहिसँ दुनूक मन थोड़ेक हल्लुकाम सन्हा हुअ लगलैन। एसन घांट चाह पीब विलासदेव बजला-

“खयान, की जुग-जमाना छल आ अखन की रौड़ गेल। हाइँ ज एहेन जिनगीसँ मनब नीक..!”

निशाकान्त कबहनिया लोक। मात काट-कबहनीक आवा-जाहीसँ जहिना बजे-गुरुक ढंग बदेल गेल छैन तहिना बाली-नाथीक शिकारी सन्हा बनियेँ गेल छैथ। मुदा स विलासदेव नहि छैथ। काट-कबहनीसँ कहिया राँट नहि रहल छैन, राँटा कना हाइँन, न कहिया एकोटा कसम मुद्दइ बनि ठाढ़ रहला आ न मुद्दालहे बनला। मुदा निशाकान्त अपन रैयानीक विवादमे काट-कबहनी जाइन-अबैत यक्का खलाउ बनि गेल छैथ। माछ हँसबैक घुमौआ जाल जकाँ राखाक घुमौआ जाल हकैत निशाकान्त बजला-

"भगवान, कहला गेल अछि ने जे ×बंश बढ़ै गोँ बच्चा हएत।"

जिज्ञासा करैत विलासदेव बजला-

"स की भगवान?"

विलासदेवक जिज्ञासा देखि निशाकान्त बुझि गेला जे जाल सुतरल। जहिना बेपारी सभ अपन पूजी लगा पहिने गहिंकीक मन मोहैत, मान नमूना देखा-देखा कऽ परिचय दैत, तहिना निशाकान्त अपन समांग सबहक निष्ठा करैत बजला- "भगवान, जहिना बड़ी समांग बढ़लासँ परिवारमे अगुआही लगैत, तेना हमरा परिवारमे लागल तेना गोँ भगवान अहाँकेँ नहि कहलैन। काल्हिक सूझल परिवार अहाँक अछि। बड़ा आई.ए.एस. कऽ लेलैन। आब की चाही। ×बढ़ैहि पुत्र पिताक धर्म..।' अहीं सन-सन धर्मात्माक परिवारमे ने भाग्यवान सन बेटाक जन्म होइत।"

ओना, भाग्यवानमे अपन विलासदेवक मन पहिनेसँ जमल छलैन्ह मुदा आगुम चारि-पाँचक आकर्षण अपना दिस खींच नेने छलैन। तोहि एक दूनू गोटे आशासँ बड़ी चाहा पीब नेने छला। जेहनसँ हाँगक लड़की, सेहो मनमे लड़कओ लागल छलैन। परिवारक विचार विलासदेवक मनसँ हटि चारि दिस आबि गेल छलैन। बजला-

"भगवान, अपना सभ की चाह पीबै छी, लोककेँ पीबैत देखै छिऐ

गँ मनकँ बुझबै छी। एकबेर सासुर गेल रही। सौसला सार मलटनीम रहैए ओ गाम आएल छला। ओ ई बात पीयौलक ओहन बात ने जीवनमे कहियो पीने छलौं आ ने कनियासक कहियो पीब।”

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्त बजला-

“सर्यान, ठीक अहाँ कहै छी। ओठाम, अपना सबहक गाम-घरमे जे बातयथी अबैए ओ काना बातयथी छी, जहिना धानमे खखरी रहैए तहिना बातक खखरी छी। एकबेर असाम गेल रही। ओहूठाम बाधक-बाध बातक खरी देखलिऐ। अपना सब जकाँ कि ओकरा सबहक बाध अछि। पहाड़ी इलाका छै। बड़का-बड़का पहाड़ अछि आ खेत-पथार कि अपना सन जकाँ चौरस अछि। ओहिना उपर-निच्चाँ, ऊँच-खाल सन छै, जहिना बातक खरी रहैए।”

निशाकान्तक बात सुनि विलासदेव जिज्ञासा करैत बजला-

“सुनै छी, ओहिना—आसाम—मे अपना सनसँ बसी बनखा रहैए?”

विलासदेवक विचारमे नेग देनौ निशाकान्त बजला-

“से कि काना चालाएल बात सुनने छी। अपना सबहक के कहैए

से दुनियाँमे सरसँ बसी बनखा ओहिठाम रहैत।"

'बनखा' सुनि विलासदेव बजला- "एखन तँ अपना सरसँ नमहर-नमहर धार-धुर हएत आ पनियाह हेसला मान पनिगर जगाए अपना सरसँ बसी रहैत हएत?"

निशाकान्त बजला-

"ब्रह्मपुत्र धारक जे नाओं सुनै छिऐ से असाममे अछि। ओही धारककातमे एकटा पहाड़ छै जइ पहाड़पर कामरूप कामाख्याक मन्दिर अछि। ओही इलाकामे न देशक आन इलाकाक लोककेँ गदहा-बानर, गाए-माल बना खेतमे चरबैए।"

ऐबीच दुनू गोरे चाह पीब पान खा नेने छला। साँझक खुमारी दुनू गोरेकेँ चढ़ि गेल छलैन। विलासदेव बजला-

"कतए धार अछि ब्रह्मपुत्र?"

निशाकान्त बजला-

"कतए धार अछि ब्रह्मपुत्र..! कहै-सुनै जोकर अछि। माटा-माटी पढ़ल बुझू जे अपना सर ओहिठाम नहि छी, एकरा गंगा-ब्रह्मपुत्रक

मैदान कहल जाइ छै। ओहन मैदान जइमे गंगा सन पवित्र आ ब्रह्माक सन्तान सन लोक बसैए। एखन भूमि लियौ त कहन थान अछि। जकरा हिमालय पहाड़ कहै छिऐ, एकर उत्तर हाइग पहाड़सँ उतरल अछि। पहाड़क कात-कात पुब मुहेँ निच्चा हाइग बहैत आगू जा दक्षिण मुहेँ भेल अछि। तेँए थान ब्रह्मपुत्र छी। देखबै ने ग्रीन-ग्रीन भूमि पड़ल। एहन भयंकर थान अछि..!”

विलासदेव बजला-

“छोड़ू थान-धूनक गप। जाए छै स अपन जानए। ओहन पाना लोक खाइए आकि एक नम्बर चाहटा पीबैए?”

निशाकान्त बजला-

“जा पान त सब खाइए मुदा अपना एठामक लोक थोड़ खाइए। अपना एठाम ने लोक गीत गबैकाल पान खाइए आ बाँकी समय दाँत टूटै दुआरे नहियेँ खाइए। बाबक-बाबा सुपारी गाछ देखबै। ओहूनसँ अपना सब दिस सुपारी अबैए। जकरा असामी सुपारी कहै छिऐ।”

निशाकान्तक बात सुनैत-सुनैत विलासदेवक मन घूमिकऽ पनिनानपन चलि गेलैन। पनिनानपन अबिते बजला-

“रयान, अहाँ कहलौं ज हमन समांग, सर वच्चाउसँ वदन्हन अछि गऽऽसँ की नीक हमन वटा—नाधानमध—अछि।”

निलासदनक वाग सूनि निशाकान्ह सावलैन ज असल वाग आव उठला गँउ किछु आगा अपन यनिनानक निष्ठा किउ न करी जऽऽसँ निलासादन अपन कनव कनगा। जखन अपन यनिनानक निष्ठा कनाऽऽ शुनु कनव गखन उाऽऽ वीचम टँढ-साम कनैग वलव जऽऽसँ (गाटी नीक जकाँ वैसग...। निशाकान्ह वजला-

“स की रयान?”

उक गँ निलासदनक मन नाधानमधयन जनल छलैन गैयन राँगक निशा सहा नीक जकाँ चढि (गलैन। वमछैग वजला-

“रयान, वटा-वटी कावा यढि-लिखि लिअउ मुदा जँ उा माता-यिताक निवानम नहि नहल गखन उाकन यढवक कान माल नहल।”

निलासदनक निवानम वीह हाउँग निशाकान्ह वजला-

“रयान, नहि वूसलौं अहाँक निवान। वटा-वटीकँ माउ-वायक निवानम नहव, काना कि नव निवान छी। सर दिनसँ हाऽऽग आवि नहल अछि आ आगुउा सर दिन हाऽऽग नहग। शास्त्र-यूनाध कि

कानब शुरू करैत अछि।”

निशाकान्तक विचारसँ विलासचन्द्रक मन जेना आगि कऽ उठल गेलैन गहिना बजला-

“श्याम, की करब! नाथानमठ ओही दिन चिन्तसँ उठैन गेल जेहि दिन अपना मन विवाह कऽ लेलक। अहीं कहू जे बीस लाख रुपैयाक कारोबार छल, मात्र बीस लाख रुपैया दहेज दऽ नइ छल। ओ परिवारकेँ घाटा लगौलक कि नहि। श्यामीम लोकक नाम राखय देखि न घटै छै।”

ओना, निशाकान्तकेँ बूझल छलैन जे विलासचन्द्र आ नाथानमठक बीच वैचारिक मतभेद छैन, मुदा एतेक सरसँ अनबूझ बनि निशाकान्त गोटी चालैत बजला-

“नीक जकाँ नहि बूझलौं श्याम?”

विलासचन्द्र बजला-

“नाथानमठ जखन आइ.ए.एस.क परीक्षा पास न कए छल, तेहसँ पहिलुक बात छी। ओकर विवाह करैक विचार भेल। बूझल अछि जे गीनू राँइक श्यामीम ओ सरसँ जुड़ल अछि। अपना

जीवैत ओँ तीनू वटाक विवाह-दान नै कऽ लव, आ अपन काना नाजा-दैव भऽ गेल तखन तँ अपन न मूँहला पछातिया एकरा कलंक कयानयन चढल रहल ओ हल्लाँ अपना धिया-पूताक विआहा-दान न कना सकल। अनक प्रयास जनमौन अछि।”

सह दैत निशाकान्त वजला-

“ऐ की काना अहींटा-क संग हाइता। सभकेँ एहन कलंक लगैत छै। समाजक मूँहकेँ किया नाकि दत।”

निशाकान्तक वात सुनि विलासदनकेँ वूझि पड़लैन ओ ध्यान अपन विचारानुकूल विचार दऽ रहल छैथ। तँए आना सह वातकेँ किए न विकछा-विकछा विचार लऽ ली...। विलासदन वजला-

“ध्यान, की करव! वटाक विनदानीसँ समाज हमनायन हँसि रहल अछि मुदा अकलहुथ वटा-ल धेनसन..!”

विलासदन शब्दक गहींन यन्ना ताकि जहिना वौनीम (मान गहींनगन खगम, जइम यानि वसैत हाइ आ डाइम अननुआ कऐौन हवैत हाइ, हलैँ डाकन जयनका खांइचा दखैम कानी लगैत हुअए मुदा ललौन सहा हाइए) कऐौन डखाऐ खाइत तहिना निशाकान्त अपन यन्ना डखाऐ वजैक मन वनौलैन मुदा तहीकाल सुनयना चाह नन विलासदन लग अवै छली कि हिनक्षीक आँखि जकाँ निशाकान्तक

आँखि चमैक उठलैन। सुनयनाकेँ देखि निशाकान्त बजला-

“भयान, धनवाली देलैन तँ भगवान हमरा देलैन। जहिना सुनै छिऐ ने जे जखन समुद्र मथन भेल, जइमे विष-अमृत दुनू निकलल। परासनिहार नारीक कहन जे किछुना लपक-लप अमृत परैस देलक आ जखन सठि गेलै तखन लपक-लप विष परसलक। सहए भेलैन हमरा धनवालीकेँ बनबैकाल विधाताकेँ। गणेशजी जकाँ जखन नमहर पेट आ नमहर माथ देलखिन तखन ओही आकारक ने आँखियो दितथिन, तहन धनवाली हमरा कपारमे लिख देलैन।”

ओना, विलासदेव भाँगक निशामे उधिया लगल छला तेँए निशाकान्तक बात नीक लगै छलैन मुदा सुनयनाक मन कठुआ उठलैन। कठुआ इली उठलैन जे एठाम हम दुनू परानी मात्र पति-पत्नी छी मुदा निशाकान्त तँ से नहि अछि। सृष्टिक जे रचना-प्रक्रिया अछि ओहन बात बजैक की प्रयोजन। बढ़ियाँ बात जे दुनूकेँ दोस्ती छैन, अपना जगहपर छैन, कना धिया-पुतामे लोकक आम-लताम चोरा कऽ तोड़ै छला, तइसँ हमरा कोन मतलब। मतलबक बात तँ इ अछि जे बूढ़हाकेँ बटायन तामस-पीत बढ़ल छैन, तकरा समरस कोनो दुनूक बीच समस्यान पैदा करैक ने छैन। सुनयना बिना किछु बजने, दुनू कप चाह रखि चोट आँगन दिस घूमि गेली।

सुनयना आँगन पहुँचला ने छली कि सुखदेव आएल। सुखदेवकेँ देखिते विलासदेव बजला-

“भैयार, गाछीक-गाछी बेटा भगवान भलेँ नहि देथ मुदा ओँ एकटा बेटा श्रवण कुमार सन दऽ जाएत तँ बूढ़ी ओ दस हजार बेटावला राजा सगरसँ नीक। बेटा-बेटीक जन्म माए-बाप दछए मुदा माता-पिताक मृत्युक भार तँ बेटे-बेटीक सिर पर रहैत। एक सीमानपर हमरा खुट्टा गाड़ि देलैन। हम तँ आब दिनक ने जनावरहु भेलिऐ, जाब आँखि तकै छी। स ओँ बाँहि पुरैवला बेटा दऽ जाए तँ बएह ने नर्को-स्वर्गक दुआरि लग तक पहुँचा सकैत। छी नहि ने ओ मुहम ओकरसँ आगि लगा। उतरी ताड़ि हक दिअए तछसँ ओ श्रद्धाक पात्र भेल।”

अपन सुरैत शत्रंजक गोटी देखि निशाकान्त बजला- “भैयार, काल्हि हम फूसि बजै छी सच्चा बात नहि अछि। दुनियाँ जनैत ओ जहिना अहाँक पिताकेँ पचास बीघा जमीन छलैन तहिना हमरा पिताकेँ रहैन। दुनू गोरकेँ गामक मालिक लोक बूझै छलैन, धन-कुबेर, दु-सए आ दु-टाकासँ ओढा होइछ छलखिन। मुदा देखिते छी ओ तहन करांगकुल होइत सए भेल ओ अखन तीन बीघापर आबि अँटकल छी। मुदा पिताक अमलदारी-समैयक खानदानी मलिकाना दाखी तँ दुनू गोरक बीच अछिए।”

निशाकान्तक विचारकेँ विलासदेव अपन विचारमे पुरबैत बजला-

“भैयार, बाबानमस गामसँ अपन परिवार लऽ कऽ दुनियाँ निकलल तँ निकलल। गामक सम्पैत तँ हमर भेल। जाब हम जीबै छी ताब

तक जहिना माए-बापक जिनगीमे सुख होतलौं तहिना सुख ने बेटा-बेटी तहिना पूनबए, सेहो ने चाहियै। हलैं नै कमाइ-खटाइए तँ की होइ। माए-बापक सेवा तँ करैए। एखन जे जमीन हम बचब, तइमे एक हिस्सा मात्र भेटतै जमीन तँ बाबा-परदादाक जेतै। तेँ ल ओ दूनू हाँइ—सुखदेव आ बामदेव—क की बिगड़ल।" मूँह चटपटबैत बिलासदेव आगू बजला-

"हथान, आइ जे सुखदेव हाँत पीपीलक एहन उँ सबदिन पियाबए तखन ने।"

तैयो सुखदेव बाजल-

"बाबाजी, मलिकाना हाकी की कहलिऐ?"

अपन बालक बालबाजी पकैत बलाक जकाँ बलाकीक ताजियन सँ निशाकान्त सुखदेव दिस तकैत बजला-

"बौआ, जहिना तूँ हथानक बटा छूहून तहिना हमरा हथान-हागिज ने हलहै। बटा-हागीजम काना अन्दन होइए। जहिना लोक अपन बटाकेँ बूझियनक बिचान देत बूझियान बनबए चाहैए तहिना ने हमहूँ चाहब। तहूमे तँ जे आइ हाँत पियौलह से तहन पियौलह जे मन शिवजी-महादेवक देवानक देवानीक नुप पकड़ा देन अछि, तेँ हमरा अपना तँ अपनहुक हान माथपन आबिय गेल किने?"

निशाकान्तक अलंकारी भाषाक अर्थ सुखदेव नहि बूझि पौलक मुदा शब्दक गुण-गरिमा सुनि गाल-गप्पी गपकेनिहार गुम्म भऽ गेल। बाजल-

“बाबाजी, जहिना अंगदकेँ—मात रामायणिक बालिक बेटा—केँ, सुग्रीव सन बाबा भेटलैन जकरासँ नामक दर्शनक संग सुग्रीवक साम्राज्य स्वीकारि लेलैन तकरासँ अहाँ भिन्न हमरा बूझै छी। तहुना स्नान-ध्यान धानक नहानक बेर। ओना, लोकक बीच कहिया चलैत अछि जे कुघाट-सँ-कुघाटक कहला कुघटिया किए न हुअए मुदा मूँहक स्नान सँ देवी स्नान ठीक किन सँए ओकरा ग्रहण करैत नाहू-काजुक काना दोष नहि।”

ओना, सुखदेवक विचार सुनि निशाकान्त खुशियाएल मुस्की मारि-मारि गन-गन मुसुक मुस्की मारै छला। जकरा सुकदेव अपन विचारक बढ़ैयन बूझि रहल छल, मुदा निशाकान्त मन-मन भिन्नाक छिन्ना सदा देखि रहल छला। बजला-

“बाउ सुकदेव, मलिकाना दोस्ती भेल, जेना हमरा-तोरा यजिमानक बीच अछि।”

निशाकान्त अपन ओ वंशी याथए चाहि रहल छला जकरा वंशीम दूनू दिशा घाव बनल रहैत। चाहे ऊपरा लागे आकि सुनरा लागे, ताकि पुनरा करब असान हुए। पुनरा भेल पुछयुछी।

𑒑𑒧𑓂𑒦𑒲𑒩 𑒮𑒳𑒐𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒰𑒖𑒪-

“𑒥𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲, 𑒞𑒃𑒮𑒿 𑒏𑒲 𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒴𑒗𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲। 𑒯𑒧 𑒞𑒿 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒴𑒗𑒻 𑒕𑒱𑒌𑒢 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒯𑒴𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒹 𑒥𑒴𑒗𑒻 𑒕𑒲।”

𑒮𑒳𑒐𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒢𑒱𑒬𑒰𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒢-𑒧𑒢 𑒥𑒧𑒥𑒧𑒹𑒪𑒰। 𑒥𑒧𑒥𑒧𑒹𑒪𑒰 𑒄 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒦𑒰𑒩𑒲 𑒩𑒖𑒢𑒥𑒪𑒰 𑒩𑓀𑒑𑒰 (𑒩𑒰𑓀𑒑) 𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒂𑒑𑒱𑒨𑒧𑒹 𑒣𑒒𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒼𑒚𑒲𑒏 (𑒮𑒧𑒵𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒏𑒼𑒚𑒲, 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒣𑒔𑒲𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒐𑒪 𑒂 𑒞𑒰𑓀𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒮𑒋 𑒮𑒯𑒮𑓂𑒩 𑒥𑒱𑒠𑓂𑒡𑒲-𑒏𑒼𑒚𑒲 𑒦𑒰𑒿𑒖𑒱 𑒮𑒰𑒿𑒣𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒋 𑒂 𑒥𑒰𑒪-𑒥𑒰𑒡 𑒐𑒪𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒻𑒋।) 𑒧𑒴𑒯𑒧 𑒠𑒪𑒰𑒨𑒢 𑒒𑒛𑓃𑒰𑒃𑒞 𑒦𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒦𑒩𑒱𑒨𑒰𑒃𑒞 𑒢𑒱𑒬𑒰𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰-

“𑒥𑒰𑒅..!’

𑒞𑒯𑒲𑒏𑒰𑒪 𑒩𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰। 𑒩𑒰𑒧𑒠𑒹𑒫𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒢𑒱𑒬𑒰𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒥𑒰𑒅𑒋 ‘𑒥𑒰𑒅𑒋’𑒣𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒧𑒰𑒞𑒱 𑒁𑒿𑒙𑒏𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒧𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒋𑒏 𑒞𑒲𑒢𑒮𑒿 𑒠𑒴 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒱𑒋 𑒢𑒹 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒥। 𑒩𑒰𑒨 𑒧𑒯𑒰𑒩𑒰𑒖𑒰𑒏 𑒪𑒛𑓃𑒰𑒃𑒧 𑒡𑒢𑒳𑒭𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒪 𑒋𑒏𑒞𑒲𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒻 𑒕𑒪 𑒂 𑒖𑒢𑒰-𑒖𑒢𑒰 𑒂𑒑𑒴 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪 𑒞𑒢𑒰-𑒞𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒫𑒵𑒠𑓂𑒡𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒞-𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒠𑒮-𑒠𑒮 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪, 𑒞𑒿𑒋 𑒁𑒣𑒢 𑒦𑒪𑒿 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒏𑒱 𑒦𑒲𑒭𑓂𑒧𑒣𑒱𑒞𑒰𑒧𑒯 𑒢𑒃 𑒕𑒲, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒐 𑒞𑒿 𑒕𑒲𑒯𑒹। 𑒞𑒐𑒢 𑒠𑒴𑒃𑒙𑒰 𑒬𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒢𑒃 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒱 𑒮𑒏𑒥। 𑒦𑒪𑒿 𑒏𑒢𑒳𑒁𑒰 𑒢𑒰𑒑 𑒧𑒯𑒰𑒧𑒰𑒢𑒲𑒋 𑒏𑒱𑒋 𑒢𑒹 𑒕𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒏𑒩𑒝𑒏 𑒞𑒿 𑒞𑒏𑓂𑒭𑒏𑒖𑒲 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒢𑒳𑒁𑒰𑒏 𑒖𑒰𑒢𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱𑒋, 𑒞𑒿𑒋

एकलौंगिक बनि विमानीकँ अधा-अधी गँ अपन कऽ लेने अछि गाम
ऊँ अधिक यात्रु सौंस दुनियाँ-बहाल छी सकल हाल की अछि,
सहा न सए सूना। मुक्की देन निशाकान्त बजला-

“बौआ, कमलपुर गाममे अपन दुनु टोलक परिवार सएसँ बनिका
आ सएसँ अन्‍नादाता पिताक अमलदारीमे रहल। ऊहो बनावनीक
दासी दुनु परिवारमे अछि। जहिना पाहुन बाबा आ हमर बाबू
एकठाम बैस खवा-पीवा करैथ आ सए सेहन्क काज-उदममे हमरा
परिवारक सए अबै छला आ हमरा ओठाम जाइ छला, पनरह-
पनरह दिन रहै छला। मुदा आइ गँ ऊ रंग नहि रहल, नवका-
नवका लोका रल आ लोकक संग सम्बंधिया रल आ सैसंग नव-नव
विचारा गँ रव कएल अछि। जहिना पाहुन पिताकँ मान रयानकँ
अपन परिवारक हिनिसानीसँ पलखैत नहि हाइ छैन तहिना हमरा
रइय गेल अछि। गँए कनी आवा-जाही कमि गेल अछि।”

निशाकान्तक विचारमे विलासदेव अपन बउहपन देखि रहल छला,
गँए सुनन्दु बटा लग बजन्दु बनि बजला-

“रयान, की कहूँ। बिनु कमल-खरन जहन पितृरक बटा हाइए
गइम छदामा रनि कमी दुनु बटाम—सुखदेव आ नामदेव—नहि
अछि। ऊना, मनमे काना एहन रनमावेवला ग्रामनक वास रऽ गेल
हाइ, स गँ हनूमान जकाँ किया छाती खानि नहियँ देखए देत, स
गँ समूना नहियँ अछि। राय, छाती गँ छाती छी, कखना अपन

छथि बनि छात्रावास बना बास करैत तँ कखनो छातीमे मुक्का मारि बेटा-पुतहुक संतोख सेहो करैत अछि। मुदा किछु अछि तैयो तँ दुनू बेटा तँ हमरा ने कहैत।”

ओना, विलासदेव अपन जिनगीक रायसँ बाजल छला, किए तँ एकटा कचहरिया संगीक विचार मनमे जेना बैस गेल छैन तहिना बर-बर बजै छैथ जे कोट-कचहरीक खेल जहिना जिनगी भरि एक्के शब्दमे अटकौने रहैए तहिना ने परिवारोमे होइए। दस-बीस बर्खक जिनगी तँ लोक टिटहीक टाँगियासँ निमाहि सकैए। जहन जे करैए से तहन पबैए। से कि कोनो हमरेटा बूझल अछि आकि सभकेँ बूझल छै। आब किया अक्लबहन बनए आकि अकलथुक। से तँ ओकर ने काज भल...।

विलासदेवक बात सुनि निशाकान्तक मन तरसा जकाँ धीर-धीर तरसए लगलैन, मुदा दुनू भाँइक अगवानी देखि निशाकान्त अपन तरसकेँ तरसमे समेटि मनकेँ मानि चुपचाप, ओहिना बौगुला जकाँ लटकलहाक पाछू दौड़ैत रहैए तहिना निशाकान्त सेहो अपन जिनगीक समन्वय अपन भयाराकेँ बनबए चाहि रहल छला। किए तँ जहिना अपन निशाकान्त तीनू भाँइक भैयारीमे गामक परबैतीसँ लऽ कऽ कोट-कचहरीक मर्दन करैत पचास बीघाक ठाँट सम्पन्न बीघा होइए तैठाम बरबाँटमे पड़ि तीन-तीन बीघापर तीनू भाँइ ठाढ़ छैथ। भाय, धनक ओझरी ने धनीकक धनकेँ ढाहैए। तँए कि मान-मरजादा तइ लागल ढहि जाइए? से तँ नइ ढहैए, ओ तँ भवानी मंत्रक

सुन्न छी। जे जेहन पकबैए से तेहन पबैए।

निशाकान्त बजला-

“हयात, बापक हम बड़ दुलारू बेटा छलिऐन। हुनका एक मात्र जखन दुरागमन भऽ गेल रहिया तँ, जहिना माइयो रहिना पिताजी सदिन बकलल-बुहलल करैत रहला आ तँए संग किछु-किछु सिखैत छला। मुदा आइयो ओ अपन पान-सात वर्खक कोचिंगक बेटा-पोताकेँ किछु पढ़बा करबै आकि सिखबा करबै से अहाँक बाल-बाइन बूझ तखन ने। ओइ अबोधक कोन दोख अछि। दोख अछि ओकर माए-बापक ने जे बच्चाक जिनगीक हिसाबसँ अपन जिनगीक नक्शा नहि बना सकला।”

जहिना अलबेलक विलासदेव रहिना दूनू बेटा, तहिना निशाकान्त सन उपदेशक। ओ अपन परिवारकेँ छोड़ि अपन पैत्रिक सम्पत्ति—खेत-पथार—केँ परवर्द्धन प्रशिक्षण दान जकाँ गमा चुकल छथि, जीवनमे तेँ बसी हासिल की सकैए। पतीसा प्रशिक्षण तँ अपना जीवन-लीलाकेँ चालव करी। निशाकान्तक मनमे खीस उठैत रहैन जे निसरला नाहि, मात्र अज्ञानक घनघोर समयमे तँ शुभ्र पाउक इजोरियाक चान जकाँ ओहना समयमे न चाहनी नाहि बना चानियन चमेक अपन पनिबय देत अछि। तेँ किए, घनघोर अज्ञानमे सदा ज्ञानवद्धसँ प्रकाशपुंज प्रकाशमान होइत अछि।

अपन टूटैत जिनगी आ जिनगीक विचारधारा शाश्वतक आस बनियेँ गेल छैन, मुदा जहिना साँपक मूँहमे पड़ल बेंग, जकर आधारेँ बसी लाग कितौ न मृत्युक अन्तक सीमा पार कऽ रहल होइ, मुदा ओँ मूँह उघार नहि मानि साँपक मूहसँ बाहर नहि, तहुकाल ओँ कानो रङ्गिनगाकँ उठैत दरबा गँ लयकब करैत। एहन अनस्ठाम पड़ल विलासदनक जिनगी बनि गेल छैन। जिनगी साहुनी नागग्रस्त भऽ गेल छैन। शारीरिक नाग जे होनि मुदा मानसिक नागसँ मननासन्न भऽ गेल छैथ। मुदा गैया...। मौखिक परीक्षा जकाँ निशाकान्त बजला-

"बौआ, रानका पान जकाँ मूँहक पान नसनिहीन भऽ सिठिया गेल अछि गँउ पहिने एक गिलास पानि पीयाबह, पछाइत पान खुआबिहह। नइ गँ एक रौँइ गिलास-लाटाम पानि आनह, जइसँ भ्यापा पीब लेत आ एक रौँइ पान लगाबह। पानक संग समान लगैम छह।"

जहिना दुनियाँमे किया पहिने अपन स्नान दान बटाकँ करैत चाहैत नहिना न अनका अढ़बैसँ मानि काज अढ़बैसँ पहिने बटाकँ अपन बूझि अहैबा अछि। ओना, दुनू बटाक—सुखदना आ नामदना—क मन दुनू भ्यानक बाग-विचार सुनि दहला-रँसिया नहल छलैह। गैबीच सुखदन ओहून पानि आनैत आँगन गेल आ ओहून विलासदन हूसहूसा कऽ बजला-

"भ्यान, ओ अबन्त बटाकँ मानि नामदनकँ, सदिकाल सिखबै छैत जे बौआ माइ-बापक उद्धार जेठक बटासँ होइ छै आकि छाटक

बेटासँ राधानगरक ई हाल अछि से देखब करै छलहुँ, एखन एँ गाँही न बँचलहु। बीचक ई राजा सगर जकाँ देसा हजार बेटा रहल एकर कारा मानि अछि। ओ एक कि जिनगी रहि बाप-माइक देहपर थूका ककरा एकरा मानि नहियेँ अछि।"

पिताक बात सुनि रामदेवक करेज उठल। ई निशाकान्त पचखि लेलनि। अपन करेजमे निशाकान्त करजपर रहैत, मान करैजक पानि रहैत बजला-

"हुजुर, सासुरमे ई माइरमाला देर अछि, एकर जानकारी समाजो आ पत्निनाथकँ अखन देऽ दियौ ई रामदेव मुँहमे आगिया देत आ श्राद्ध-कर्मक हान उठर देइ छिऔ। गँओ अपनवला माइरमाला रामदेवक हेत।"

पानि पीब पान खा दुनू हुजुर—विलासदेव आ निशाकान्त—पुनः पत्निनाथक गप-सप्प शुरू केलनि। अखनुका ओस्थाओल नहि, विग्रहक टाइल मारैत निशाकान्त बजला-

"हुजुर, गाममे अहाँ-जाकर कओटा बाप हेल अछि ई अपन बेटाकँ आइ.ए.एस. बनौलक!"

अपना जनैत निशाकान्त टाइल मानि बाजल छला मुदा पीनू बापुत—विलासदेवक संग आ दुनू हाँइ सुखदेवा आ रामदेव—क मनमे

साधारणक प्रति ओ धारणा धऽ लेल छल, ओ आगाँ धराह बनि गेल। जहिसँ नियतीक रानक जन्म दीनूक मनमे जगि गेल। एखन तक निशाकान्त अपन पत्निबानक दीनू समाजक जिनगीक कथा सुना सुनी-बुनी सुना चुकल छला। जहिसँ सामाजिक साम-लक्षणक रैयानीक सम्बन्ध नहि बनि सकल, बनबा कना कतो एक नाम पिताक वंश चलनिहार, शासन दरबजक वंश चलनिहार हेता। तेँ आम सीतानाम कना साधारण बनि सकैत। साधारण-ले तँ किछु आसाधत पड़ै छै किने।

निचानक द्वन्द्व दीनू बापूक मनकेँ सना स घुटिया-पुटिया रहल छल ओ दीनूक बकार हरण हऽ गेल छल। पगलाएल साम जहिना चिउ-चुनमुनीक संग गाछा-बिनीछकेँ सीताक पनिचय पूछए लागल रहैथ। ओ ×हे खग, हे मृग मधुकर श्रेणी, तुम देख सीता मृगनयनी?' तहिना शान्त बातानरण देखि निशाकान्त शासन टाहुल मारैत बजला-

“हयात, आब अहाँक राज्य जगि गेल। ×बरहि पुत्र पिताक धर्म’ अहाँक साम्राज्यना धनम साधारणम चलि गेल जहिसँ ओकर राग उग्र हऽ जगि गेल आ दूनू राँहि—सुखदेव-नामदेव—क राज्य सेहो ओकर म मात साधारणमम चलि गेल, हलाहल दूनू राँहि बिनु पानि चढल लाहा जकाँ कहियो आकि कुम्भानक आनाक अध-पक्कू बनि जकाँ कहियो, कँचकुहक कँचकुह नहि गेल।”

×कँचकुरु' सुनि नामदेव बाँहिक भरि समरैग बाजल-

“श्याम काका, अहाँ दुनू श्याम उँ यी0यन 0।८ नरुव मान यी0याहू वनल नरुव गँ ७क रैयानीकँ क करु७ ज सम्हनरुटा रैयानीकँ सीखा सकै छी।”

उाना, निशाकान्त मन-मन वूसैग ज टीनक गनमी कागकाल। कम-सँ-कम यहिन शानसा कनैजाग वनगन वनरु गखन अयनाकँ खान-ड्रन करुा७वा छी कागज जकाँ आ अयनाकँ गमै छी ज सान-वानी जकाँ हमहुँ सूर्य द्रव्य छी। मुदा निशाकान्तक अकास चढल मन ७का७क धनीयन अगनलैना उगैनग मनम ७लैन ज ककना करुन टीन द्रव्य नहि रुs सकै७ सहा गँ नहियँ अछि। समुद्र नुयम टीनाम शानस हा००ग अछि। कनी उाकना आगियन चढा, जखन उा आगिय जकाँ लाल रुs जा७ गखन हाथक आँगुनसँ छुवि कs देखियौ ज आन द्रव्य, रुलँ उा सान कि७ न हा००, उा००सँ कम शक्ति टीनाम छै। उयदेशक जकाँ निशाकान्त सुखदेना आ नामदेनाक उयदेशी वनि श्यानकँ करुलैन-

“श्याम, दुनियाँ ज वूसरु, मुदा अयना गँ ००मान-धनम अछि७, वारु अयन वटा-वटी हूअ७ आकि दुनियाँक, मुदा अयन ज माननीय कर्तव्य अछि, गकना उँ 30। कागम रुक देव, सहा गँ नीक नहियँ रुला।”

अपन शानक शानपन विलासदत्तकँ संग बूझि पड़लैन। जइसँ मनमे एकटा स्वर्ण-नूआ विचार अनायास जगि गेलैन। बजला-

“श्यान, गणेशजी सन गुरु आ अष्टावक्र सन ज्ञानी किया किछु न रहथि मुदा बद विद्वान विचार जे पिता यहिल गुरु छैथ' एकरा किया मूलिया देल?”

नहलायन दहला स्कैन निशाकान्त बजला- “श्यान, गामक गेम-गेम खलम रहलँ नहलायन दहला रहक दहला दियौ मुदा पढ़ली एट'म नहल दहलाकँ नमबेछ। खाछन समय यव अदिना टिटही अकासमे टिटियाइछ तइसँ लोककँ कान मगलव। मगलव गँ छगव न अछि जे अपन यनिवानक नमहन इतिहास अछि, जहियासँ मनुख घन वना यनिवानक संग नहछ लगला गहियाक यनिवान छी।”

निशाकान्तक विचारमे विलासदत्तकँ इतिहासक कान यन्ना शट गेलैन स गँ विलासदत्त बूझला, मुदा मनक चयचयीमे चयचयाइत मुस्की दैत बजला-

“श्यान, सट दिन दुनू शाँझकँ कहैत छिऐ जे पौआ, हजारो धर्मस्थान आकि हजारो सनातनक घाट यन किछु न नहाइल हाइ, मुदा वटा-वटी लल माछ-वायक सना सटसँ येघ धर्मक काज छी। पिताजी जखन जीवैत छला, शनि दिनमे गीनवन मद्ययान संग कनै

छला। समयसँ पहिने मुस्काइत रहs हुनका मध्यपान करबोग नहिओन। ओ त्रिकालदर्शी छला। जखन मन उदास रहs जाइ छलैन तखन कहै छला- ×बौआ बिलास, जहिना तूँ सबा करै छह तहिना तारा पचास बीघा जमीन अनेक देल छिअ। मनेवन मन्त्रओ रनि मनम साग-पीआ न अपन नहरा आ न तारन नहरा। उँ किया कहनिहान करा ज अहाँक पनिनान देशक रान बनल अछि। स उाकन करन रs जाइ। जहिना अपन देश छी तहिना न अपन दिना-दुनियाँ अछि, जइ पाछू लागि अपन जीवन धानध कन छी।”

दुनू राइ—सुखदना आ बामदना—क मन गहन मिथि-मालिनिक मथानीम मथा गेल ज जहिना दुनियाँक हजारा बाटम हजारा सुख-दुख नबौग अपन छन्दि पकौअ लइअ तहिना छन्दि पकउग सुखदन बाजल-

“रयान बाबा, अहाँक सामाम कहै छी ज जहिना सर अपन माअ-बापक मान माता-पिताक सना दुनियाँम कs नहल अछि तइसँ की हम कम छी। जहिना दुनियाँम देखै छी तहिना करै छी, तइ ल उँ पिताजी मन-मन तकलीफ सहना स किअ सहना। हुनका न बूसअ पअौन ज जखन आब मावाइलसँ पढौनी सहा शुनु रs गेल अछि, तखन स्कूल जा खुजल तकना हिसाब नइ हाइ सहा कहन हअना।”

उाना, धानक धानाम जहिना खन्दा-खन्दीक सअल-जमल जमौ0 पानि

किए न मिलैत होइ मुदा धाराक प्रवाहमे ओकरामे एहन गतिक संचार तँ होइए जाइ छै जइसँ ओकरामे शुद्धता आबिए जाइ छै। अही अनुकूल सुखदेव बाजल। किए तँ जीवनक एक परिस्थिति ओहन अछि जे अपनाक जिनगीमे लोक नहि पढ़ि पबैए। मुदा जे परिवार आर्थिक दृष्टिएँ सम्पन्न अछि, जइ परिवारमे आइ.ए.एस. हुअ सकैए, तैठाम सहादन दासन-तासन होए श्रमदान करा बनि गेल अछि। जे सुखदेव अपना न बूझैए। जहिना ग्रहण लगलापर वा अकासमे सूर्ज-चान-तारा वा पानिक बादलक घटमान देख, देखनिहार ऊपर-घाट न देखैत नहि जाइए। ओ थोड़ बूझैए जे सूर्ज कोना कतियाएल देखि पड़ैए आ कि आन ग्रह-नक्षत्र किए कतियाएल। ओ तँ बएह देखि सकैए जकरा हृदयमे ज्ञानपिपासाक ज्योति प्रज्वलित होइत। कहैकाल तँ सहजेँ सब कहै छथि ‘श्रवण कुमार जे माए-बापक सेवा कएलनि ओ इतिहास-पुराणक अद्वितीय घटना छी।’ मुदा श्रवण कुमारक जीवनधारा आ माता-पिताक जीवनधारा की छलनि, केहन छलनि आ कते प्रवाहित छलनि सेहो ने सबहक समझक प्रश्न रहल। खाएर जे रहल ओ त्रेता युगक घटनामे चलि गेला। आब कि गुनधुनमे बौआ जकाँ धियान कएने बेवहार रहल, आब तँ मोबाइलसँ स्थानक संबन्ध टुटए लगल अछि।

निशाकान्त मन-मन विलासदेवाक आ दुनू होँइ—सुखदेवा आ बामदेवा—क बड़ नीक जकाँ पकैड़ रहल छला। सुख कोना सब बनैए आ सब कोना सुख बनैए, अही सीमापर अपनाकेँ ठाढ़ कएने निशाकान्त बजला-

“ध्यान, ई सभ व्याधिक घर छी।”

बजैत क्रममे निशाकान्त वैज्ञानिक विषय तँ रखि छलैन, मुदा अपन मिसियो भरि टिप्पणी नहि छलैन जे अही व्याधिसँ त मनुख व्याधाक रूप पकैत व्याधिसँ निवृत्ति भऽ सकैत। आकि जिनगी बनौने छी चारूक दोकानदारक आ अकासमे उड़ैत ओँजन करा लसैक गेल? दिन-राति ओँ स चिन्ता करैत तखन उ ई करा बूझत जे समाजमे मान पाबत, पढ़ाइ लिखाइ आमदनीक परिवार अपन भेल तँ हमरा दुनू दिस देखत पड़त। एक दिस आमदनीक बढ़ोत्तरी करा हएत तँ दोसर दिस अपन परिवारकेँ अपना आमदनीपर असथिर करैक सेहो अछि। ओँ स नहि हएत तँ परिवार पाछाल जाएत किने।

पत-सम्पर्कँ अन्तिम सीमा दिस बढ़ैत निशाकान्त बजला-

“ध्यान, हम जहिना अपना बेटा-बेटीकेँ बूझै छी तहिना अहूँक धिया-पुताकेँ बूझै छी। भलेँ दुनू भाँइ—सुखदेवा आ रामदेवा—मानत वा नहि मानत, मुदा अपना तँ किछु कर्त्तव्यकेँ निमाहैत बजलौं। आब अबेर भऽ गेल। पता लगल जे राधानगर जा रहल अछि, कहुना भेल तँ बेर-सामिज न भेल, घरसँ जखन निकैल दुनियाँ दिस बढ़त तँ कम-सँ-कम एतबा आसीरबाद देब जरूरी अछि किने जे कहितिऐ, बौआ गाम-घरक चिन्ता मिसियो भरि नहि करिहह। हम सभ अपन बूझि लेब।”

राधारमणक प्रति निशाकान्तक प्रतिक्रियाक आकलन तीनू बाबूओ विलासदेव एक-दोसर दिस देखि-देखि करए लगला। मध्यम वर्गक परिवारक मनुक्खकेँ सामाजिक-आर्थिक दुनू दृष्टिएँ तेना वैवाहिक ठाँवमे ठाढ़ कएल गेल जे ओ श्रमहीनक संग भोगी-विलासी सेहो बनि गेल। जइसँ परिवारक ठाँवमे व्यवधान उपस्थित भेल आ धीरे-धीरे मृत्युक कगारपर पहुँच गेल।

एक तँ कचहरिया लोक निशाकान्त, तहूमे गामक सभ जनैत जे निशाकान्त सन पुश्तखानदान दोसर गाममे किया ने छथि, अपन पौरुष बीघा खेत बेचि कोट-कचहरीक स्थान हाँसिल कने छथि, तँइसँ एहेन सेहो छथि जे सहोदर भाइक संग सभ किछु कहलैन।

सामंजस करैत निशाकान्त बजला- “भयान, एकटा राजा एकटा जोगीकेँ अपन दुनू बेटाक सेवा करैक भार देलैन। जोगीकेँ बिदा केलैन, एकटाकेँ अपन जकाँ जोगी बनौलैन, जे अपना घरमे रहला। दोसरकेँ राजसी जीवनसँ मण्डित कयलैन। जखन दुनू ज्ञानवान भेल तखन जोगी दुनूकेँ राजाक सामने उपस्थित कयलैन। देखैत काल राजा-जोगीकेँ अपन हिस्सामे लऽ लेलैन। अपसोच करैत जोगी घर घूमला।”

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.२.जगदीश प्रसाद मण्डल- शॉर्ट कट नाम्हा (लघुकथा)



<u>**जगदीश प्रसाद मण्डल**</u>

शॉर्टकट नाम्हा

आइ छअ मासस सुनिवान राय मनसागरसँ पीड़ित भऽ गुम-सुम गुमसाइत रहल छथि, मुदा मुँह खोलि ककरा लग किछु बाजि नहि रहल अछि। बजता कथी ककरा? सातो ने सात छी जकरासँ सभ किछु-ने-किछु पीड़ित अछिए। किओ पुत्र सागरसँ पीड़ित अछि, ने किओ धनसागरसँ पीड़ित अछि। माटा-माटी एना बुझियौ जे एक्का याइ लोक एहन नहि छथि जे पीड़ित नहि छथि। आइ अस्पतालम की देखै छथि जे एकदिस मदयानसँ चुन ठाकुर साहेब नागीक इलाज करए बैसल छथि ने दोसर दिस राँग-गाजाक मारल रुग्नवला अपन नागी लऽ पहुँचैए, गोरम जँ नागी लग ठाकुर साहेबक पहुँचैसँ पहिन निदान नहि होइन, सभ प्रकृतिक प्रतिकूल ने करैत जाएत।

पूर्णिमाक प्रातक दिन, माने पूर्णिमा हेलाक एक दिनक पछाइत, सुनिवान राय कमलानन्द काकाक अपन रागीज दिया समाद पठौलनि जे जाक जल्दी भऽ सकैन गाक जल्दी भेंट देथ। ओना, एहन निवान शिक्षावानक नियतीत हेल मुदा पनिस्थितिवश अनुकूला हेला। सुनिवान राय अपन मनसागरसँ गाक पीड़ित भऽ गेल छथि जे आँखिक सूत बैस गेल छैन तँए भ्रमवश कुमानक पिता जकाँ आइन भऽ गेल छथि। ओना, समाद पठौवसँ पहिन सुनिवान राय एग सानकी कइय नन छला जे साम भेंट करए करवैन स काशीसँ उचित नहि हएत। तँए पूछी सागक चर्च सभ रागीजसँ कऽ नन छला।

कमलानन्द काका सुनिचान राखैक समाद सुनि गुम्म भऽ गेला। आदमी मानस्द उँ काना जतुवाजीक समाद अवैत तँ ठाकन महल्ल आन दासन माध्यमक समादसँ वसी हाखा अछि। किन्तु तँ आदमीक समदियाक मान रल संग नन आजुवा। नहुम आजुक वदलल परिवेशम, अखन तँ माता-पिताक श्राद्ध आ गयाक पिण्डदान मावाइलासँ देहना यता हूअ लगल अछि।

अठानस-उन्नैस वर्खक सुशीलक मूहँ समाद सुनि कमलानन्द काका पूछलखिन-

“बौआ, नीक जकाँ नइँ वूझलौं।”

जहिना काना नवयूवक ज आइ.ए.एस.क संकल्पकँ मनम नायि अप्पन जीवनकँ साधना दिस मोड़ि साधक वनि साधना करैत तँ ठा निश्चय सफलताक सीढ़ी प्राप्त करैत अछि, तहिना मान ठारल नवयूवक जकाँ सुशील वाजल-

“वावा, वावाजी एतव वजला ज पूत्रीक सागसँ गा पीड़ित भऽ गेलौं ज आगू दिस किछु सूझि नहि नरल अछि।”

सुशीलक संगे कमलानन्द काका विदा भेला।

कमलानन्द काका आ सुनिवान राय एक-दोसराक जीवनक संगी छथि। दुनूक जन्म एक्के दिन भेल छैन। मुदा समाजक जे व्यवहारिक चलैन अछि ताहि अनुकूल कमलानन्द ×काका'क नुयम आ सुनिवान ×राय'क नुयम छथि।

दस कट्ठाक कनीव हटलसँ कमलानन्द काका दरबज्जाक ओसारक चौकीपर सुनिवान रायकेँ बैसल देखि मन छला, मुदा मुँह बन्न जे दुआरे नखन नहुला जे जिनका लगा एलौं हुन से न यदिन टाकगा, मुदा जे टाकगैन गिनकन गँ आँखियक सूगा बैस (गेल छैन गखन देखब कना कनगैन। ओना, कमलानन्द कक्काक मनम ओO (गेल छलैन जे जेOाम एलौं से गँ घननानीक सीमाम एला, ओ अपन यनिनानक सीमा-सनहदक व्यवहार कहुन नखगा से गँ हुनकन यनिचय रलैन। गेवीच अपन मान-गाव नाखव ननयन रला। अपन मन कमलानन्द कक्काक मानि (गेल छलैन। गेवीच धीन-धीन कमलानन्द काका सुनिवान रायसँ लग्ग गीनियँक दुनयन यहुँचला। जानसँ खखास कलैन। सुनिवान राक्षक मन गना राननाम रनिग रs (गेल छलैन जे आँखिक संगा काना सुन्न रs (गेल नहैन। मुदा गेया मनम एहन निचान गँ नहव कनैन जे कमलानन्द काका जहघOी न यहुँचला अछि। समयक यागसँ मुहुर्फ वनियँ (गेल अछि। कनी हनिक्कासँ सुनिवान राय Qनकेँगा वजला-

"आव हम नहि जीव, गँ आखनिय दिन वूसु।"

सुनिधान रायक निधान कमलानन्द काकाकेँ कोना सोँचयन न पड़लैन। सोँचयन कोना पड़ितैन, एक्के दिनक जन्म दुनू गोटेक अछि, अखन यथासा न टपलौं हुन, तखन एहन निधान मुहसँ निकालब सहितगर थोड़े हएत। प्रसन्नहुँ रायक अपन नजैर झलैन गेँय ठा यथासक निधूँ, मात चालीसकेँ छयचालीस कहलैन। हुन अपन मन कमलानन्द कक्काक मानि लेलकैन जे रानिसक कोना तहुन सागम सुनिधान सागा गेल अछि जहिसँ निचलित भऽ गेल अछि। जहिना कोना छनवा बड़ा घनसँ बोड़ा बान-साउम यति जाइए आ बोनाइत-बोनाइत कोना एहन कुण्ठमयन बलि जाइए जेठाम मनब झाति दासन नक्षा नहि नहैए..।

जहि हिसाबसँ मात जहि मार्मिक रानसँ सुनिधान राय बाजल झला तकर बिपरीत रान कमलानन्द कक्काक मनम जगि गेल झलैन। जगित मन तमतमा गेलैन जहिसँ ठान पटपटलैन, एहन जे बुझैताह अछि जे संग-संग नहिता एतबा न बुझि सकल जे कुष्ठानक कँचका बनातसँ तन्नुक अपन जीवन अछि, जे कखनो हुना हनल बेलुन जकाँ खुस-द सटैक जाएत।

कमलानन्द काका रान बढेल बजला- “की समय अपना सबहक झल आ अखन की भऽ गेल अछि..!”

सुनिधान रायकेँ सङ्ग अपन ठा दिन मात यति गेलैन जहि दिन बटी बिआह अपनासँ बीस पनिनानम कनाएब सावलैन। तैसंग

एकटा बात मनमे प्रवाहित भेलैन जइमे अपन कनियाँक संग बेटीक बेटियनक बोध भेल रहैन। बोध ईहो भेल रहैन जे जखन पाँच बेटाक बीच एकटा बेटी अछि, ओकर पिता तँ हम ओहिना छिऐ जहिना बेटाक छिऐ। तँए बिना कोनो मथहानि केने बेटीकेँ बी.ए. पास करौलैन। बी.ए. पास केला पछाइत ओकर लड़काक संग विवाह सेहो करौलैन।

सुविचार राइक जमाए डॉक्टरी करै रहला अछि। मुदा जखन सुनलैन जे जमाए एकटा ओहेन लोकसँ अनेर ओझरा गेला जे जान लइपर तुलल छैन, तखनसँ तेँ सुविचार राइक मन थरथर काँपि रहल छैन जे की सोचि बेटीकेँ पोसलौं आ सासुरक घर हँसी-खुशीसँ विदा केलौं आ आइ की देखि-सुनि रहल छी। यएह सोग सुविचार रायकेँ तर-तर सतौने करैत मनमारल बना देने छैन।

जीवन-मरणक बीचमे सुविचार राय तेना ओझरा गेल छथि जे कोनो बाट ने सुझि रहलैन अछि। मन मसोसि कऽ बजला-

“काका, ओ जीवनसँ मृत्यु नीक।”

सुविचार राइक विचार कमलानन्द काका विचारए लगला जे कखन कोन तरहक मृत्यु जीवनसँ नीक होइए आ कोन तरहक अधला? किया नीकसँ अधला बनैए तँ कि ईहो हुसि थोड़ छी जे किया अधलासँ नीक होइत अछि। मुदा विचारकेँ बदलैत कमलानन्द काका

बजला-

“ई तँ नीका अछि आ अधला तँ अछिए। किया जीवन ल मनैक तँ किया मनैल नै जीवैक सहज बाप नहियेँ अछि, सहज तँ अछिए। जीवन-मरणक गप-सप्प छोड़ू, अपन वेदनाक की कारण छह पैयन आबह।”

सुनिवान राय बजला-

“काका की कहब, बड़ीम लाज होइए.! मुदा अहाँ लग नै बाजब तँ धर्मराजक घर दाखी बनब।”

कमलानन्द काका बजला-

“अखन अलंकार छोड़ू, धर्मराज आ धर्मक विचार पछाइत करिहह, अखन बाजह जे की भेलह हन?”

सुनिवान राय बजला-

“बड़ लीलसासँ बटीक सना कए घर बसलौं मुदा ओ घर उजैर गेल अछि..!”

सुनिचान रायक विचार कमलानन्द कक्काक मनमे मेघक बादल जकाँ उमड़लैन-घुमड़लैन। उमड़लैन ई जे सागो नै सात छी, दुआरा रंगक अछि मुदा सभा कएल बड़ा-बड़ीक घर उजड़ैत देखि काना माता-पिताकेँ सात हएब स्वाभाविक अछिए।

सुनिचान रायक विचार सुनि कमलानन्द कक्काक अपन मन विचार दलकैन जे किए ने बड़ीक उजड़ैत देखाकेँ एक नजैर पहिने देखि-सुनि ली। बजला-

"कनी फरिछाकऽ बाजह।"

सुनिचान राय बजला-

"काका, जमाए डाॅक्टर छथि से नै बूझल अछि?"

कमलानन्द काका बजला-

"किए ने बूझल रहत। पिता प्रोफेसर छलखिन, माए डाॅक्टर।"

सुनिचान राय बजला- "अपना दुनू गोरेक जन्म एक्के दिन भेल आ अखन तक संग-संग चलिया रहल छी, मुदा अहाँ लग अखन तक एकटा विचार, जहिना कृषकक धनवानमे अपन गरीबीक पछुल

सुदामा नूकौन छलैथ, गहिना हमहुँ नूकौन नहल छी स यहिन कहि दऽ्ऽ छी।”

कमलानह्द कक्काक मनम यनिग्र शीगलयनन जकाँ सिहकलैन। सिहकलैन ऽ्री ज जीननक दूनू दिस ढलान अछि, मान आगुउा दिस आ याछ्उा दिस, दूनू ढलानक वीच मनादशाक निचान सहा ढलकैग-हलकैग नहैव, गैOाम निचानम संगयन अविग अछि।

गैवीच अय्यन नूकावल वथाकँ खालैग सुनिचान हाय वजला-

“काका, मनम उाहि दिन Oनकाक चाट जकाँ लागल जऽ्ऽ दिन सुनलौं ज जमाव समैधकँ मानलैन.!”

उाना, कमलानह्द काकाकँ गनी-सँ-घटी धनिक जानकानी प्राहसन साहैवक निषयम छैह्र मुदा जहिना कवीन दास कहलैन ज ×विनू तंती क यलउा गैलग है संसान’, गहिना न सट मनुक्खकँ अय्यन-अय्यन गनाह्नक दूनू यलउा आगुवम छैन, अयना-अयना नजनिय गैलै जाउथ। जीनन जीनन छी, Oहा नहि। ज जीनन जगक क्रियाशील नहग उा जीनन उागक वसी गुष्टि हग, मुदा ज जीनन यनजीनी हS (गल, उाऽ्ऽ जीननक हल वहन हटव अनुचिग नहियँ कहल जा सकैव। ज जीनन उाहन वनि (गल जऽ्ऽम माव कगी, वाय कगी आ वटा-वटी कगी नहग उाऽ्ऽम नैचानिक कगवा प्रगाढगा किव न हूअव मुदा वनहानिक कमी नहव कना।

रूपलाल मात्र सुविचार रायक जमाए, बड्डसँ परिवार-समाजसँ टूटल रहला। जखन कि माए-बाप स्वयं समाजक प्रबुद्ध व्यक्ती, मुदा हुनका अपना सन्तानपर मातृ-माधुर्य नहि रहलैन ओ अपन सन्तानकेँ कमसँ कम अपना सन तक बनाएब सकै छी। माता-पिताकेँ नीक आमदनी, बेटा हाथमे डाँग पाइ दऽ दइ छलखिन ओ हाइ स्कूलसँ रूपलालकेँ शराब पीबैक चस्का लगि गेलैन। मतिकलक छात्र हाइत-हाइत माता-पिताकेँ अखरए लगलैन, मुदा बेटा तँ जवान भऽ गेलैन। एहेन स्थितिमे कहुना पढ़ाइ समाप्त भेला पछाइत नोकरियाक जोगार कऽ देबै आ विश्वास-दान करा अपन माता-पिताक दायित्व पूरा करब। अपन मनक विचारमे रहल कमलानन्द काका रहब करैथ, बजला- "दायित्व पूर्ति हाइसँ पहिल प्रारम्भ सारेब शानिसँ रानि गेला.!"

जहिना पोखरसँ पोख दहक राग हुअए आकि मनक, जखन सब बात मान डाइ विमारीक सही कारण बूझिमे अबैए, तखन रागक पीड़ा स्वत: किछु-न-किछु कमब करैए।

हृदय खालि सुविचार राय बजला-

"काका, बटी सुनयनाक की गति हएत.!"

डाना, कमलानन्द कक्काक मनमे अनेका प्रश्न बनखा-बुनक बुलबुला जकाँ मनमे उठबा करैन आ अपन स्फुटि-स्फुटि प्रवाहिता हुअ

लगलैन। मुदा विचारकेँ समेटैत मनमे उठि गेलैन, एखन तक अपना जीवनमे जेना खालिकऽ बेटीकेँ राखल गेल तेना बेटीकेँ नहि। जीविकोपार्जनक कोनो अधिकार बेटीक हाथमे नहि रहल, जहिसँ ओकर आत्मशक्ति जगैत, मुदा से अछि तहिना ने सभ छी। बेटी सुनयनाक बात सुनि कमलानन्द कक्काक मन टहैल गेल छलैन, जहिसँ मनमे उठि गेलैन जे एखन तक जे बेटीक जीवन परिवार-समाजमे रहल ओ ओहिना रहल जेना बड़ीटा गाएकेँ खाइल दियौ वा नहि दियौ मुदा दुहैकाल बच्चा चाही लऽ कऽ पहुँच जाउ, सएह स्थिति बेटी-जातिक परिवार-समाजमे रहल अछि। समाजो तँ समाज छी, एक दिस जहिना नैतिक प्रवचन अकासमे गुंजायमान होइत रहैए तहिना दोसर दिस पैघ-सँ-पैघ अपराध नहि होइए सेहो कना नहि कएल जाएत। अपना जीवनमे किसानी जीवन एहन रहल अछि जे किसान किसानीपर आश्रित छथि, अधिकांश ओहन किसान छथि, जिनका किसानी करैक औजार—खास साधन धनि—नहि छैन आ जे किसानी नहि करै छथि हुनका सभ साधन छैन। ओना, बटाइ सिस्टम सेहो अछि मुदा ओहो बेढंग अछि। खाएर से अछि, कमलानन्द काका बजला-

“सुनिचान, काल्हि दिन की हएत तेकरा मनसँ हटाबह। आजुक की स्थिति अछि तेहन धियान दहक।”

ओना, कमलानन्द कक्काक मनमे एहन विचार हिलोर मारि रहल छैन जे जे जीवन जेकर गाँठिकट जाल्हासँ बचल ओ ओत जीवनसँ दूर रहल।

जीवन जीबैत जहिना समुद्र पार करैक सूत्र अर्जुन आ हनुमान दुनूकेँ बूझल रहैन मुदा दुनूक दू रास्ता रहैन, तहिना जीवनक पूर्ण रास्ता आ शॉर्टकट रास्ताक बीच किछु-न-किछु कमी-बेसी रहब करत मुदा से अखन नहि, अखन एतबे जे हीय हारि सुविचार राय बजला-

“समाज जना पार-घाट लगाबैथ।”

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.३.नन्द विलास राय- साँठवन्ना



नन्द विलास राय

भोँटबब्बा

नन्दलालजी रिटायर शिक्षक। सभ दिन चौक-चौराहापर रंग-बिरंगक भाषण झाड़ैत रहै छैथ। नैतिकता, निष्ठा आ चरित्रक बात करैत रहै छैथ। एमकी बेर पंचायत चुनावमे मुखिया पदक तीन-तीनटा उम्मेदवारसँ भोँट देबाक नाओंपर ढौआ लेलखिन। मुदा भोँट त कोनो एक्कोटा उम्मेदवारकेँ न देन छथिन। रामकुमारजी मुखिया पदक उम्मेदवार छला। जिनकजी ए नन्दलालजीक बेटाक संगी छैथ, तिनक समए रामकुमारजी भोँटक नाओंपर नन्दलालजीकेँ पाँचटा भोँटक लेल पनरह साए टका देन छलैन।

𑒂𑒃 𑒩𑒰𑒢𑒧 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒂𑓀𑒑𑒢𑒥𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒏𑒺𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒔𑒩𑓂𑒔 𑒅𑒚𑒪 𑒞𑓀 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒪𑒰𑒪𑒖𑒲 𑒪𑒑𑒪𑒰 𑒮𑒼𑒔𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒋। 𑒍 𑒏𑒯𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰- “𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒂𑓀𑒑𑒢𑒥𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒏𑒺𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒻𑒋। 𑒏𑒺𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒣𑒩 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒮𑒦𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒣𑒼𑒭𑒰𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒫𑒱𑒞𑒩𑒝 𑒮𑒺𑒯𑒼 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒋। 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑒺𑒯𑒼 𑒯𑒰𑒪 𑒕𑒻। 𑒮𑒦𑒏 𑒢𑒻𑒞𑒱𑒏 𑒣𑒞𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒺𑒪 𑒕𑒢। 𑒮𑒦 𑒥𑒺𑒃𑒧𑒰𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒺𑒪 𑒕𑒢। 𑒏𑒏𑒩𑒼𑒧 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒰𑓀𑒔𑒪 𑒢 𑒁𑒕𑒱।”

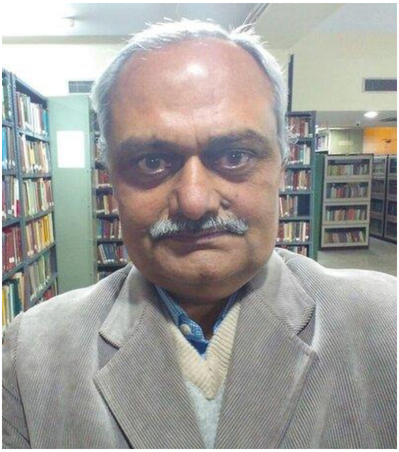
𑒖𑒐𑒢 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒪𑒰𑒪𑒖𑒲 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒠𑒼𑒏𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒋𑒯𑒱 𑒮𑒼𑒔𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪𑒰 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰 𑒩𑒯𑒋। 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒰𑓀 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒑𑒺𑒪𑒻 𑒍 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒪𑒰𑒪𑒖𑒲𑒏𑒺𑓀 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢-

“𑒡𑒴𑒢𑒖𑒲, 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒲 𑒮𑒼𑒔𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒲। 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒴𑓀𑒯 𑒌𑒢𑒰𑒧 𑒠𑒳𑒐𑒱𑒨𑒾। 𑒩𑒱𑒙𑒰𑒨𑒩 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒕𑒲। 𑒣𑒔𑒰𑒮 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒙𑒏𑒰 𑒣𑒹𑓁𑒬𑒢 𑒦𑒹𑒙𑒻𑒋 𑒂 𑒮𑒰𑓀𑒗𑒏 𑒢𑒰𑒅𑓁𑒨𑒢 𑒅𑒧𑓂𑒧𑒠𑒫𑒰𑒩𑒮𑒴𑓀 𑒣𑒰𑒃 𑒪𑒃 𑒕𑒲। 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒞 𑒮𑒰𑓀𑒙𑒥𑒰 𑒕𑒲। 𑒁𑒯𑒰𑓀 𑒏𑒲 𑒢𑒻𑒞𑒱𑒏𑒞𑒰 𑒂 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒩𑒥।”

𑒢𑒢𑓂𑒠𑒪𑒰𑒪𑒖𑒲 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒖𑒪𑒰- “𑒯𑒱𑒢𑓂𑒢𑒰𑓀 𑒧𑒴𑒯𑓀 𑒧𑒴𑒛𑓃𑒲 𑒑𑒼𑓁𑒞𑒢 𑒅𑒃𑒚𑒰𑒧𑒮𑒴𑓀 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰।”

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓁𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

३.४.नवीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)- ३१-३७ म खण्ड



नवीन्द्र नारायण मिश्र

मातृभूमि (उपन्यास)- धारावाहिक

खण्ड ३१-३७

३१

ओहिखन बहुत दिनपर नागबाबा लखनपुर पहुँचलाह । स्वास्थ्यसँ किछु हरम्ध लागि रहल छलाह । उपरबारिटोलक मंदिरपर हुनकर डेरा छल । शीलाक पिता मधुकान्त बैदकेँ नागबाबाक आएबाक सूचना भेटलनि । ओ दौड़ल हुनकासँ भेंट करबाक हेतु पहुँचलाह।

"बाबा दण्डवत"-बैदजी नागबाबाकेँ प्रणाम कए हुनक पाँजरमे बैसि जाइत छथि । कनीक कालमे गोविंद, माधव किछु आओर युवक संग पहुँचलाह । ओहि समय बैदजी शीलाक समाचार पुछि रहल छलाह।

"जयन्दसँ भेंट भेल रहए । ओएह शीलाक बारेमे किछु-किछु कहैत रहथि ।"

"की कहलथि?"

"की कहू?"-से कहि नागबाबा चुप रहि गेलाह । ओना बैदजीकेँ ई सभ बात बुझल रहनि । ओ गलती कए गेल रहथि । आब पछताइए कए की होइनि? कहुना हँसैत-बजैत शीलाक भविष्यकेँ अंधकारमय कए देलाह,से सोचि-सोचि ओ दुखित भए गेल रहथि । कतबो केओ कहनि कोनो दवाइ नहि खाथि । कोनो डाक्टर-वैद लग नहि जाथि । अपन एकमात्र संतानक दुखसँ भीतरिआ कष्ट रहनि जकर कोनो समाधान हुनका नहि बुझाइन । एहन स्थितिमे नागबाबाक आगमनक समाचार सुनि ओ जेना-तेना हुनका लग पहुँचल रहथि।

"शीलाक आब ओहिठाम रहबाक कोनो लाभ नहि छैक। दिन-प्रतिदिन ओकर स्थिति खराब भेल जा रहल अछि । ई हमरा

हिसाब सँ ओकरा गाम लऽ आनू ।-नागबाबा कहैत छथि । शीलाक खिस्सा सौंस गामम पसरि गेल रहैक । मुदा करता की करैत? बिआह भऽ गेलाक बाद बेटीक स्थिति माता-पिताक वशम नहि रहि जाइत छैक । कानून जेंक समाधान नहि दैत अछि ताहिसँ बड़ी समस्या उत्पन्न कऽ दैत अछि । पश्चिमक संस्कृतिक अनुकरण कऽ लोक बिआह विच्छेद कऽ लिअए । मुदा समाज ओकरा उग-उगपन प्रमाणित करबासँ बाज नहि हटइत अछि । रहन-सहन वक्र दृष्टिसँ देखऽ लगैत अछि । जँ ओ नैहरम वापस आबिओ गेलथि तँ अपन परिवारम पाहुन भऽ जाइत छथि। कानून द्वारा प्रदत्त पैतृक संपत्तिक अधिकार कागजम समटल नहि गेल अछि । सउह सए साचि लोक चाहैत अछि ज बेटी जहा-तहा सासुरम रहए ।

मुदा शीला संग सँ बहुत पैघ धोखा भऽ गेल रहैक। ओकरा संग सँ ओकर घरवला नहि रहैक । ओ परिवारसँ विधर्मीसँ बिआह कऽ लेने रहैक । बेटीक मानम अपनाधबाध सँ हटइत रहनि ,मुदा ताहिसँ की होइत? नागबाबाक हालचाल देखि हुनका बूझबाम कसनि नहि रहलनि ज असलियत की अछि । गोंडा मानम कहाहू उम्मीद रहनि ज की पता किछु नीक भऽ गेल होइक ?सँ ओ बहुत आशासँ नागबाबाक अबबाक समाचार सुनितहि हुनका लग आएल रहथि । लग-पासम बैसल पुरुकसभकेँ सहा शीलाक खिस्सा बूझल रहनि । ओ संग सहा चाहथि ज शीलाक मदति कएल जाए। मुदा स काना कएल जाए? नागबाबा मुँह शीलाक काना स्पष्ट समाचार नहि सुनलाक बाद हुनकर सभक चिंता आओर बढ़ि गेलनि ।

"हमरा तँ मोन होइत अछि जे अखन जानकीधाम जा कए शीलाक ससुर आ ओकर पतिकेँ जहलमे बंद करबा दी।"- गोविंद बजलाह।

"मुदा ताहिसँ होएत की? - माधव कहलखिन।

" तँ की हमसभ मूकदर्शक बनल रही आ एकटा निर्दोष स्त्री अन्याय सहैत रहि जाए।"

"ताहरसभक हिसाब की कएल जाए?"-बैदजी बजलाह।

" हमसभ पाठशालाक समस्याक समाधानक हेतु जयन्दसँ भेंट करबाक हेतु जानकीधाम जाएब। एहि हेतु काल्हि बैसार होएत। ओही बैसारमे शीलाक समस्याक बारेमे सेहो चर्चा कएल जाए आ तकरबाद सभगोटे चलब। ओतहि सामा-सामी बात हुनिका जेंक। एकटा स्त्री संग एहन अन्याय कए ओ निचैन नहि रहि सकैत छथि।"

"बात तँ तूँ सभ वाजिब कए रहल छह। मुदा बैदजी क सहमतिएसँ किछु कएल जएबाक चाही। " -नागबाबा बजलाह।

"हम समाजसँ बाहर थोड़ छी। जे सभक विचार, सएह हमरो विचार।"

साँझमे होबएबला बैसारक हकार देबाक भार टुनटुनकेँ देल गेलनि। टुनटुन स्कूटरपर चढ़ि कए एकटा छौंडाक संग चिकरि-चिकरि कए कहलथि -"सुनैत जाउ,आइ साँझमे मंदिरपर बैसार अछि। नागबाबा सेहो रहताह। सभगोटे अवश्य आएब।"

केओ -केओ पुछलकैक -"कथीक बैसार छैक?"

गौंवासभसँ सवाल-जवाब करब ओकर काज नहि रहैक। ओ तँ मात्र हकार देबाक हेतु गेल रहए। हकार देलाक बाद

ओ नायब हाइत रहए की सुधाकर भरि गेलखिन। इसारा दए रुकबाक हेतु कहलखिन। स्कूटरक आगुम ठाढ़ भए गेलथि। चारूकात सुधाकरक लठैतसभ घेरि लेलक। हारिकए ओकरासभकेँ स्कूटरसँ उतरए पड़लैक।

"कथीक बैसार छैक?"-सुधाकर पूछलखिन।

"पाठशालाक पुनर्निर्माण करबाक चर्चा होइक।"

"हमर ठीह-ठाबरपर पाठशाला बनबए चललाह अछि। हरगिज नहि होबए देब। जकरा जानक काज नहि छैक सएह ओहि बैसारमे जाए।"-सुधाकर बिकरि-बिकरि कए सौंसगामकेँ ई बात सुना देलखिन।

दोसर दिन साँझमे आरतीक बाद उतरबारिटोलक मंदिरक पतिसरमे बैसार शुरू भेल। बैसारमे उतरबारिटोल उमड़ि गेल छल। मुदा दछिनबारिटोलक मात्र दुइए गोटे अएलाह ,मधुकान्त बैदजी आ सुधाकरक वयोवृद्ध पिता रबीकान्त।

नागबाबा सामान्यतः शांत रहैत छलाह। मुदा कहि नहि ओहि दिन बैसारमे ओ एकाएक बहुत उग्र भए गेलाह। भेलैक ई जे बैसार शुरू होइतहि सुधाकर सदल-बल पहुँचि गेल। ओकर लठैतसभ चारूकातसँ मंदिर पतिसरकेँ घेरि लेलक। ओना लठैतसभ तँ सुधाकरक संग रहैत छलनि मुदा ओहि दिन किछु बेसिए गोटे अएल रहथि।

"सभगोटे कान खोलि कए सुनि लिअ। आइ नौ-छौ भइए कए रहत। राज-राजक ई सम्पतिसँ मुक्ति जरूरी अछि। अन्यायक एकटा सीमा होइत अछि। हमर पूर्वजक देल घरारीकेँ ई सभ पाठशाला बनाबए हेतु अमादा छथि। ई कतक न्याय

थिक ।”

"हमहू ओही गामक छी । ओहिठाम पाठशाला काल्हि आइक नहि अछि । हमसभ जखन नेना रही तखनो ओतए पाठशाला छल आ हमरासभक बाबा जखन नेना छलाह तखनो छल । अहाँक घराड़ी ओ कोना भए गेल?"- नागबाबा बजलाह ।”

"तोहर बुद्धि सठिआ गेलह अछि । जमीन-जायदादक निर्णय कागजसँ होइत अछि, चिचिएलासँ नहि। ओ जमीन बाबा हमरासभक नाम लिखि गेल छथि । ओहिपर ककरो कोनो अधिकार नहि अछि ।"-से कहि ओ अपन जेबीसँ एकटा कागज निकालि कहैत छथि-

"जकरा देखबाक होअए से देखथु । ओ पाठशालाक जमीनक रजिष्ट्रीक कागज अछि । तथापि यदि कोनो झंझट करबाए अएल होथि तँ तकरा ओलाज हम तैयार रखने छी ।” -सुधाकर ओ बजैत छलाह कि लठैतसभ लाठी भाँजए लागल ।

"एहन अन्याय नहि करह । जयन्त सन विद्वान एतए पाठशाला चलबए चाहैत छथि । ओ विद्वान छथि । समाजक उपकार करए सकैत छथि । हुनकर आग्रह मानबाक चाही ।"- सुधाकरक पिता रवीकान्त बजलाह ।

“एह! विद्वान छथि । हमरा सभटा पता अछि । जानकीधामक शीलाक संग...।" -ओ एतबा बाजल होएताह कि वैदजी चिकरलाह-

"खबरदार! पाजी नहितन । शीला...।" किछु आओर बजितथि ताहिसँ पहिनहि हुनकर आवाज अवरुद्ध भए गेल । ओ धड़ाम दए खसलाह । चारूकातसँ लोकसभ हुनका घेरि लेलक ।

लोकसभ कात भऽ गेल।

"वैदजी नहि रहलाह"-गोविंद बाजल। वैदजीकेँ हृदयाघात भऽ गेलनि। बाजारमे हाहाकार मचि गेल। यतिस्थिति हाथसँ बाहर होइत देखि सुधाकर लोकक संग लागल।

३२

गाममे भेल बैसार आ ओहि बारमसँ शीलाक पिता वैदजीक आकस्मिक निधनक समाचार जयन्त धरि पहुँचल। समाचार सुनितहि हुनका ठकबिदोर लागि गेलनि।

"आब की होएत? शीलाकेँ ई दुखद समाचार कोना देल जाएत? "-जयन्त नागबाबाक बलाक संग बैसल बतिआ रहल छलाह। ओएह गामसँ समाद लऽ कऽ आएल छलाह।
"नागबाबा कतए छथि?"
"ओ एखन गाममे छथि।"
"गामक की हाल छैक?"
"गाममे बड़ तनाव अछि। ओगरबाहिनीटोलक लोकसभकेँ नागबाबा रोकि देलखिन नहि तँ ओहीदिन बड़ किछु भऽ गेल रहैत। "
"एहनमे हमरा लोकनिक ओहिठाम गेनाइ संभव होएत?"
"मुदा नहिओ गेनाइ तँ समाधान नहि अछि।"
"तखन की कएल जाए?"
"हमरा हिसाबे तँ कालीकान्तकेँ सम्वाद कहल जाए। ओएह किछु समाधान कऽ सकैत छथि।"
"बात तँ सही कहि रहल छी। मुदा कालीकान्तकेँ ई सभ कहबामे

हमरा बहुत संकोच भऽ रहल अछि।"

"अहाँ अपन चिन्ता करबनि। आचार्यजीकेँ पठा देल जाए। ओ सम्हारि सकैत छथि।"

"सही कहलहुँ। मुदा शीलाकेँ कोना ई समाधान देल जाएत? ओ तँ पहिनेसँ बहुत परेसान छथि।"

"मुदा हुनका जानकारी देनाइ तँ अनिवार्य अछि। गाममे हुनकर पिताक लास हुनकर प्रतीक्षा कऽ रहल अछि।"- से कहि नागबाबाक चेला अपन आश्रम चलि गेल।

जयन्त आचार्यजीसँ भेंट करबाक हेतु विदा भेलाह। आचार्यजी आश्रमक गेटपर भेंट भऽ गेलखिन।

"की बात छैक? अहाँ बहुत परेसान लागि रहल छी?"

जयन्त आचार्यजीकेँ सभ बात कहलखिन।

"हमरा लोकनिकेँ कालीकान्त लग चलक चाही। हुनका सभ बात कहबनि। ओएह रस्ता निकालताह।"

"ठीक छैक। मुदा शीलाकेँ कोना सूचित कएल जाएत?"

"कालीकान्त लग चलू ने। सभ भऽ जेतैक।"

जयन्त आचार्यजीक संग कालीकान्तक ओहिठाम विदा भेलाह।

३३

आचार्यजीक संग जयन्त कालीकान्त लग पहुँचलाह। कालीकान्त अपन ओसारापर बैसल चाह पीबि रहल छलाह। गौरी सेहो ओहीठाम बैसल छलीह। हुनका अखबार आबि गेल

नहि। ओहि अखबारक मुख्यपृष्ठपर लेखकपुत्रक एक कांडक समाचार छपल छल। कालीकान्त जी समाचार पढ़िए रहल छलाह कि आचार्यजीक संग जयन्तकेँ देखलकनि।

"बहुत सही समयपर आबि गेलहुँ। "

"की बात भेलैक?"

"अखबारमे जयन्तक गामक घटनासम्बन्धी समाचार छपल छैक। सएह पढ़िकए चिन्तामे पड़ि गेल छी।"

"ओही विषयमे अपनेसँ चर्चा करए आएल रही। सुनबामे आएल जे शीलाक पिताक देहावसान भए गेलनि आ गाममे लोकसभ शीलाक प्रतीक्षा कए रहल छथि।"

"ओ तँ ज्योतिषीजीक संग भागि निकलि गेलीह। सुधाकरक मारफत हुनका समाचार भेटि गेल रहनि।"

"जयन्त सेहो जाए चाहैत छथि।"

" ओहिठामक माहौल तँ बहुत खराब छैक। कहीं किछु अनिष्ट ने भए जाए?"

" जयन्तक गेनाइ जरूरी छनि। शीलाक परिवारसँ हिनका लोकनिक बहुत घनिष्ठता रहलनि अछि।"

जी सभ गप्प-सप्प भइए रहल छल कि गौरी आ चन्द्रिका सेहो आबि गेलीह।

चन्द्रिका अड़ि गेलीह जे ओहो जयन्तक संग जेतीह। कालीकान्तकेँ बूझब नहि करनि जे हुनका कोना मनाओल जाए? कारण ओहि माहौलमे हुनका लेखकपुत्र गेनाइ कोना परह उचित नहि बुझाइनि। जखन चन्द्रिका नहिए मानलखिन तँ तय भेल जे सभगोटे संग जाइ। मुदा जयन्त मना कए देलखिन।

" अहाँ अखन किछु दिन रुकि जाउ । श्राद्ध होबए दिऔक । तकरबाद आबि जाएब । "

"जयन्तक बात सही बुझाइत अछि । हमरा लोकनिक अखन ओहिठाम गेलासँ परेसानी बढि सकैत अछि।"-कालीकान्त बजलाह ।

दोसरदिन अहल भोर जयन्त आचार्यजीक संग लखनपुर विदा भेलाह । रस्तामे दुनूकेर मोन खसूआएल रहनि ।

"जयन्त एतेक किएक सोचैत छी? अहाँ त विद्वान छी । जीवन-मरण त लागल रहैत अछि । एकरा स्वीकार करहि कुशल थिक।"-आचार्य बजलाह ।

"सवाल जीवन-मृत्युक नहि अछि । जाहि तरहें हिनकर मृत्यु भेलनि से बहुत दुखदायी अछि । एकटा लड़का सभकेँ परेसान कर अछि आ सभ मूँह ताकि रहल अछि ।"

"सभ चीजक समय होइत छैक । ओकरा जवाब भेटतैक आ भेटबे करतैक ।"

"से त ठीक अछि । मुदा हमरा लोकनिक किछु कर्तव्य बनैत अछि कि नहि? की हमसभ मात्र नियतिकेँ दोख दए समय काटैत नहि जाएब । समस्याक जड़ि ओ पाठशालाक जमीन थिक जाहिपर जबरदस्ती सुधाकर कब्जा कए लेने अछि । ओही विषयपर चर्चा करबाक हेतु बैसार भेल छल । मुदा की सँ की भए गेल ।"

"आब त आगुएक सोचबाक होएत अछि । कोना समाधान तकर भए सकैत अछि ।"

"तकर मोन ज सुधाकर जकरा चाहए मानि दैक, परेसान करैत रहैक आ हमसभ ठाढ़क पलटी लेबाक प्रतीक्षा करैत रही ।"

"फिलहाल श्राद्ध होयत दिऔक। एकरबाद कालीकान्त सेहो अएत करताह। हुनका सामनेमे विमर्श कएल जाएत। सुधाकर काका बलगर छथि, मुदा कालीकान्तक आगू ओकर एकटा नहि चलैक। जखन एक दिन धैर्य राखब कहलहुँ तँ थोड़ेक दिन आओर सही। पाठशालाक समाधान सेहो हेब करैक। "

इएह बीच गद्य-पद्य करैत लेखनपूनक सीमामे प्रवेश कए रहल छलाह। धानक काजमे वैदजीक चिताक आगि मिझा गेल छल। शीलाक लेखनपून पहुँचएमे विलंब होइनि। लोकसभ गाममे लोकसँ बसी काल रखनाइ उचित नहि बुझलक। वैदजीक संस्थान शीलाक गाम पहुँचबासँ पहिनहि गोंसाइ कए देलखिन। ग्रामीणजी शीलाकेँ लेखनपून पहुँचा कए बाड़ अपन गाम चलि गेलाह। ओही समाचार हुनका धानक काजमे टनटन देलखिन। टनटन संग ओ सभ वैदजीक दरबाजापर पहुँचलाह। ओहिठामक दृश्य बड़ा दुखद छल। ओसारापर एकसरि बैसलि शीला कनैत-कनैत बेहाल छलीह। जना-तना वैदजीक श्राद्ध संपन्न भेल।

सुधाकर तँ ओहि दिनक घटनाक बाद ओ नियमित भेलाह से घूमि नहि अएलाह। थानासँ पुलिस हुनकर पता लगबैत कैक दिन आएल। मुदा सुधाकरक किछु पता नहि चललैक। संस्थाक ओहदासभ खानापूर्ति कए रहल छल। गाममे सभकेँ एहि बातसँ आश्चर्य लगैक जे शीलाक घरवाला ससुरक श्राद्धमे नहि अएलाह। लेखनपूनसँ अपन गाम वापस होइत काल ग्रामीणजीकेँ की भेलनि की नहि एकर किछु पता नहि चलि सकल। मुदा ओ मरियो नहि पहुँचि सकलाह। नक्समे नहि गेलाह। लोकसभ बाजए जे लेखनपूनक चक्करमे हुनका जिन गछानि ललकनि।

गोविंद जयन्तसँ भेंट करऽ आएल रहथिन। संगम माधव आ ओतबानिटोलक किछु पुस्तकसभ रहथि। आचार्यजी सेहो ओतहि छलाह। नागबाबा सेहो रहथि। सभकेँ एकठाम बैसल देखि शीला सेहो ओतहि आबि गेलीह।

" यद्यपि वैदजीक मृत्यु आकस्मिक भेल, मुदा एकर पाछू की छल? एही अत्याचारीक दुर्व्यवहारसँ ओ बहुत दुखी भऽ गेलाह आ हुनका हृदयाघात भऽ गेलनि। पुलिसमे प्राथमिकी लिखाओल गेल। आइ कैक दिन भऽ गेल। कओ पकड़ल नहि गेल। पुलिस-थाना मात्र खानापूरी कऽ रहल अछि। कोनो ठोस कारवाइ नहि भऽ सकल।"-गोविंद बजलाह।

"शीला एकसरि छथि। सभसँ पहिने हिनकर सोचल जाए। एकरबाद आगू बढ़नाइ उचित होएत।"- माधव बजलाह।

" आब तँ जे होबाक छलैक से भऽइ गेल। मुदा एकरा पकड़ि कऽ बैसल तँ नहि रहल जा सकैत अछि। अहाँसभ हमरा लेल चिंता नहि करू। हमर भविष्य तय भऽ चुकल अछि। हम आब कतहु नहि जाएब। ई हमर गाम अछि आ हमरा किछु करबाक हक अछि। पाठशालाक काज आगू करू। हमहु ओहीमे जे संभव होएत योगदान करब।"- -शीला बजलीह।

" हमरा लोकनि आइ साँझमे मंदिरपर बैसार करब आ ओतहि आगुक नक्शा तय होएत।"-गोविंद बजलाह।

३४

दोसर दिन बैसारसँ पहिने मंदिर लग सभटि कऽ कीर्तन

भेल। ओना ओहिठाम कीर्तन होइत रहैत छल। मंगल दिन रहबाक कारणे विशेष आयोजन भेल रहैक । साँझ उतरबारिटोलक जवान,बूढ़,बच्चासभ एकठा रहए। कीर्तन समाप्त भेलाक बाद प्रसाद वितरण भेल । लोक तकरबाद चलि जाइत । मुदा कीर्तन शुरू होबएसँ पहिने गोविंद कहि देने रहैक जे कीर्तनक बाद बैसार होएत आ सभगोटे ओहिमे सामिल होएत । लोकक उत्सुकतासँ भरल बहुत रास बातसभ रहैक ।

आब ई समय बदलि बदलि गेल रहैक जे लोक अपन सहैत रहलैक । देशमे लोकतंत्रक विकास बढि रहल छैक । समाजमे तकर प्रभाव स्पष्ट देखा रहल छैक । गेलैक ई समय जे गरीब-गुरबाकेँ खानदानी कर्जक एवजमे अपन जिनगी बतान करए पड़ैत छलैक । आब तँ बानिओ दलायन जन नहि भेटैत छैक । किएक भेटैक? सभक स्थिति सुधरलैक । सभक बाल-बच्चा देश-विदेश कमाए चलि गेलैक । दिल्ली,पंजाब आ कतए-कतए नहि पसरि गेलैक । किछुगोटे तँ देशक सीमानाकेँ टपि गेल। अरब चलि गेल, किछुगोटे तँ पढ़ि लिखि कए अमेरिका,जर्मनी धरि अपन पैठ बना लेलक । ताहिठाम आब सुधाकर सन लोक लठैत बलें कतेक दिन टिकि सकैत अछि? ई बात उतरबारिटोलक लोकसभ नीकसँ बूझैक जे जँ ई सभ लागि पड़तैक तँ सुधाकरकेँ कहए,कहुना बदमासकेँ ई सभ लाइनपर आनि देतैक । मुदा ओकरासभ बेसी हसाद नहि करए चाहलक । सोचलक जे समयसँ सभ ठीक भए जेतैक, मुदा से कहाँ भेलैक? सुधाकरक मान बढ़ैत गेलैक । जयन्त सन सरल ई विद्वान व्यक्तिकेँ तबाह करए पर लागि गेल ।

कहबी छैक जे 'विद्वान सर्वत्र पूज्यते' । जयन्तम ताक

निष्ठा छनि जे जखन जाए चाहथि अपन जगह बना सकैत छलाह। कालीकान्त हुनका अपना संग रखबाक हेतु कतेको बेर कहि चुकल रहथि । मुदा मातृभूमिक सिनेह कही,मोह कही जे कही ओ ओहि संकटसँ गुजरि रहल छथि । हुनका ई दुर्दिन त्यागि लोकसभ साथ कए देब नहैत । मुदा धन कही उपनवानिटालक रखवारसभकेँ जे जानमन खसि कए उठल खराब मौसममे हुनका बचओलक ।

ई बात सभ लोकसभक मोनमे छलैक,हाल-हालमे नव घटना सेहो भेलैक। शीलाक पिता बैद्यजीकेँ सभक सामनमे बेइज्जत कएल गेलनि जकरा ओ नहि सकलाह आ ओमहि नहि गेलाह। शीला आब निधोह असगरि भए गेलीह । यद्यपि ओ बिआहल अछि,ओकर पति जीवित छथि । यदि ओकरा बिआह करए छलाह,ओहो निधर्मीक संग,तखन एकर जिनगी बनबाद करबाक कोन औचित्य छल? मुदा ओ सओह कलाह। शीला आब गर्भ कए ललक अछि जे गाममे रहत आ जयन्तक काजमे सहयोग देत,समाजक सेवा करत जाहिसँ हलिखम ककरा संग एहन घटना नहि होइक ।

बैसार प्रारंभ भेल।

नागबाबा,आचार्यजी,जयन्त,शीला,गोविंद,माधव मंचपर रहथि। आश्चर्यक बात रहैक जे दक्षिनवानिटालक एक आदमी नहि आएल रहैक । बैसार शुरू होएबासँ पहिने सुधाकर अपन लोकक संग दल-दल करैत हाजिर भए गेलाह । सभ अकचका गेल । ई कोनासँ आबि गेलाह?सुधाकरक पाछू-पाछू एक दर्जन सिपाही सेहो अएलैक । ओहिमसँ ससन सिपाही आगू बढ़ल आ नागबाबा

दिस हथकड़ी बढ़बैत कहलकैक-

"अहाँकेँ गिरफ्तार कएल जाइत अछि ।"

केओ किछु बूझैत,किछु सवाल-जवाब करैत ताहिसँ पहिनहि हुनकर हाथमे हथकड़ी लागि चुकल छल। स्वयं डाक्टर छगुन्तामे छलाह । नागबाबाक ओहो हाल देखि उगनबाड़ीटोलक युवकसभ छनयल । डाक्टरसभकेँ अंदाज लागि गेलैक जे एहिमे सुधाकरक कुचक्र अछि। गमार बढ़ैत देखि पुलिसवला माइकपर घोषणा कलक-

"खबरदार! जँ केओ पुलिसक काजमे बाधा करब तँ जहल जाएब ।'

-से सुनि बढ़ैत पुलिस नागबाबाकेँ पुलिस जीपमे बैसा लेलक आ लऽ चलि गेल । सुधाकर आ डाक्टर लठैतसभसँ पाछू-पाछू चलि गेल । लोकसभ देखैत रहि गेल ।

एहि घटनाँ नागबाबापर पुलिसक आक्रमणसँ उगनबाड़ीटोलक लोकसभ बहुत उत्तेजित भेलथि । गोविंद आ माधव आगू बढ़लाह । हुनका पाछू-पाछू बीस-पचीसटा युवक बढ़ल। ककरो हाथ मे लाठी ,ककरो हाथमे बरछी तँ ककरो हाथमे भाला छलैक । सभ सुधाकरकेँ पकड़ि करबाक हेतु छटपटा रहल छल । हालात काबूसँ बाहर होइत देखि जयन्त उठलाह आ माइकपर कहैत छथि-

"हम आइसँ आमरण अनशन प्रारंभ कऽ रहल छी । जाधरि नागबाबा बाइज्जत बरी नहि होयताह, जाधरि पाठशाला अपन पूर्वस्थानपर नहि बनि जाएत ताबत हम अन्न-जल ग्रहण नहि करब।"

जयन्तक एतेक बजितहि सभ सन्न रहि गेल । युवकसभ थकमका गेलाह । सभ एक-दोसर दिस देखए लागल। ककरो किछु फुरब नहि करैक जे आब की कएल जाए ? सभकेँ एहि घटनें परेसान

देखि आचार्यजी माइक धेलनि -

“मानलहुँ जे सुधाकर आ हुनकर समर्थक बहुत अत्याचार कऽ नेने छथि आ पुलिस-प्रशासनक लोक सेहो हुनके संगे ठाढ़ बुझाइत छथि, तथापि हमरा लोकनिकेँ धैर्य बनौने राखक चाही कारण हमसभ ओतऽ स्कूल निर्मित करबाक सरंजाम स्थापित करऽ अएलहुँ अछि न कि हिंसावादकेँ प्रश्रय देबाक हेतु। नागबाबाकेँ पुलिस पकड़ि कऽ लऽ गेलनि। मुदा ई सभ कतेक दिनधरि चलत? नहि चलि सकत , न्याय हेब करतैक। अतः,हमर प्रार्थना अछि जे अहाँसभ कानून अपना हाथमे नहि ली। "

"बेकारहो सहनशीलताक लोक गलत अर्थ लगबैत अछि, आचार्यवर! ई तँ हमसभ सद्यः देखिऽ रहल छी। कहिआसँ जयन्त पाठशालाक हेतु प्रयत्नशील छथि। मुदा भेल की? हुनकर पैतृक हककेँ पचा लेबाक भरिसक प्रयत्न सुधाकर करैत रहलाह आ पाठशालाक जगहपर अपन व्यक्तिगत घर बना लेलाह आ हमसभ मूकदर्शक भेल छी। जखनसँ नागबाबाकेँ पुलिस पकड़ि लेलक।"-गामक युवकसभ बाजल।

"आचार्यजीक कहब अपना हिसाबे ठीक छनि। तँ हम शान्तिपूर्ण प्रयास कऽ रहल छी। हमर अनशन करबाक निर्णय अटल अछि। अहाँसभ कृपया शांत रहू आ शान्तिपूर्ण आंदोलनमे सहयोग करू। "-जयन्त बजलाह।

आचार्यजीक आग्रह आ जयन्तक आमरण अनशनक घोषणाक बाद युवक लोकनि अपन-अपन हाथसँ हथिआर रखि देलाह। गोविंद आ माधव किछु आओर युवकसभक संगे थाना विदा भेलाह। नागबाबा थानामे नहि रहथि। हुनका पुलिस जिला

मुख्यालय लऽ चलि गेल कारण ओहिठाम नक्सलवाद आंशिक संचालन करैत छलैक। स्थानीय पुलिससँ पता लगलैक जे बीस साल पूर्व एकटा हत्याक मामलामे नागबाबाकेँ पकड़ल गेलनि अछि।

एहन नै छैक जे अपन पुजारिस्थानमे नागबाबा समाजमे परिवर्तनक हेतु अग्रसर नहि छलाह। ताहि हेतु गाम-गाम घूमि कऽ गरीब,असहाय लोकसभक संगठन बनबैत छलाह । ओकरासभकेँ अपन अधिकार हेतु निरंतर जागरूक रहबाक हेतु प्रेरित करैत छलाह । समाजक समृद्ध लोकसभकेँ ई कोना नीक लगितैक? ओसभ हिनका खिलाफ षड़यंत्र करलक ।

नागबाबा एकदिन अपन ठाम अपन खाम कुसिआर काटए गेल रहथि । ओहिमे पहिनेसँ ककरो हत्या कऽ फेकि देल गेल छल । नागबाबा लास देखिते चिकरए लगलाह । चानूकासँ बदमाससभ मौकाक ताकमे छलाह,ओहिठाम जमा भऽ हिनक नाम लगा देलक । पुलिसमे हिनकर नाम लिखा गेल । बादमे जाँच-पड़तालमे हिनकर खिलाफ किछु सबूत नहि भेटलैक । पता नहि एतेक दिनक बाद कोना ओहि मामलाकेँ सुधाकर जगा देलक जाहि कारणसँ हुनका गिरफ्तार कएल जा रहल अछि ।

उपनबानिटोलक हेतु ई नागबाबा भगवान छलाह । समस्त जीवन ओ हुनका लोकनि सामाजिक,आर्थिक विकासक हेतु प्रयत्नशील रहलाह । सन्यासी रहितहुँ ओ अपन गाम-घरसँ संपर्क बनौने रहलथि । धनकेँ नागबाबा जे जयन्तक जान बाँचल आ ओ शारदाकुंज पहुँचि एतेक शिक्षा ग्रहण कलथि । सुधाकर एहुबातसँ हुनकासँ तमसाएल रहैत छल । "ई नागबाबा नहैत त ई दुष्ट जीबैत ।"-कखनो काल सुधाकर ई बात बजबा करए।

सभक मोनमे आक्रोश भरल छल । ऊपरसँ जयन्तक अनशनक घोषणासँ संपूर्ण समाजमे जबरदस्त प्रतिक्रिया भेल । दोसर दिन अखबारसभक मुखपृष्ठमे ई समाचार छपल । चारूकातसँ लोक आबए लागल । पुलिसक करमान लागि गेल ।

सभ केँ प्रयास रहैक जे जयन्त अनशन तोड़ि दथि ,मुदा ओ किछु बजबे नहि करथि,मौन भए गेलथि। उत्तरवारिटोलक युवकसभ दिन-राति जयन्तक सेवामे लागल रहैत छलाह । पुलिस तँ पहरा दैत छल। लोकक आवा-जाही लागल रहैत छल । जयन्तक अनशनक दस दिन भए गेल। हुनकर स्वास्थ्य गड़बड़एबाक भयसँ प्रशासनक अधिकारी लोकनि बहुत चिंतित रहथि । मुदा जयन्त अपन निर्णयपर अडिग छलाह।

“चाहे जान रहए की जाए । मुदा अपन निर्णयसँ हम नहि हटब।” ओ ई बात बेरि-बेरि स्पष्ट कए देलाह ।

जयन्तक अनशन आ एहिसँ जुड़ल घटनाक्रमसँ अखबारक पन्ना भरल रहैत छल । कालीकान्तकेँ सेहो पता लगलनि। ओ सपरिवार लखनपुर पहुँचि गेलाह । हुनका संगे सएसँ बेसी लोकसभ सेहो आएल । कालीकान्त ई सुनने रहथि जे कैक पुस्त पहिने हुनकर पूर्वज लखनपुरमे रहैत छलाह । हुनका पूर्वजसभ जयन्तक पूर्वज द्वारा स्थापित पाठशालामे पढ़ल रहथि । आइ सद्यः ओ लखनपुर गाममे छलाह । अपन पूर्वजक गाममे गेबाक आनंद लागि रहल छलनि ,मुदा गामक माहौलसँ ओ बड़ दुखी छलाह । जयन्तक प्राण संकटमे देखि हुनकर समस्त परिवार आ मित्र मंडली परेशान छलाह । चंद्रिका कैकबेर जयन्तसँ भेट करबाक प्रयास कएलीह मुदा ओ मौनमे रहबाक कारणसँ किछु नहि बाजथि । चारू

कारण चिन्ता पसरि गेल छल। सरकारी महकमा सेहो परेसान छल। सभ समस्याक जड़ि सुधाकर बुझाइत छल। सभकेँ बुझा रहैक जे हुनका पकड़ल जाए आ नौ-छौ कएल जाए। मुदा सुधाकर कहि नहि कतए निपत्ता भए गेल छल।

जयन्तक अनशनक समाचार गाम-गाम पसरि गेल। पाठशालासँ पढ़ल विद्वानसभ समक्ष प्रश्न पसरल छलाह। कोन-कोन छोटी घटनाक समाचार सभठाम पसरि गेल। नित्यप्रति गाम-गामसँ लोकसभ लखनपुर मंदिरक लग-पास जमा होइत गेल। सभक मुँहमे एके बात रहैक-"आब की होएत? जयन्तक जान बचि सकत की ओ अनशन करिते चलि जेताह?

२१

जयन्तक अनशनक समाचार नागबाबाकेँ जहलमे पता चललनि। ओ सुनि ओहो अनशन शुरू कए देलनि। जेलर बाबू सहित तमाम आला अधिकारी हुनका बुझबाक प्रयास कएलक मुदा ओ एकहि बात कहथि-"जहिआ जयन्त अनशन तोड़ताह,तहिए हमहू अनशन तोड़ब। अहाँसभ हुनकासँ गप्प करू। हमरा किछु कहलासँ कोनो फएदा नहि होएत।"

जेलक अधिकारीसभक परेसानी बढ़ि गेलैक मुदा किछु करब ओकरासभक हाथमे नहि रहैक। सभकेँ एके छगुन्ता रहैक जे नाटिटा आदमी सुधाकर एतेक शक्तिशाली कोना भए गेल जे थानासँ लए कए उपरधरिसभ ओकरे बात सुनैत अछि? जँ ई नहि होइत तँ स्थिति एतेक खराब नहि भेल रहैत। सुधाकरक

सामर्थ्यक रहस्य बूझब ककरो बशमे नहि रहि गेल छलैक। ओकर दिनसँ लखनपुरमे घमाचौकड़ी शुरू भऽ रहल अछि मुदा सुधाकरक किछु नहि बिगड़ल। ओ लायक अछि,स अछि आ जखन मोन होइक लठैतसबहक संग लाठी भाँजा हाजिर भऽ जाइत। बाहर प्रशासन। लगैत अछि जे बहुत जयध्वनि सुधाकरक घालमेल चलि रहल अछि। एही बात दछिनबारिटोलक लोकसबकेँ किछु-किछु अंदाज रहैक। तेँ ओ सब चुप रहैत छल। सुधाकरक इलाज तेँ उत्तरबारिटोलक युवकसब करैवला छल,ओ सब हथिआर पकड़ि लेने छल मुदा जयन्द आबि गेलाह। ओ अनशनपर बैसि गेलाह। कहि नहि शांतिपूर्ण समाधानक हुनकर एही प्रयास कोन धनि पहुँचत?

उमरहुन जेहलमे नागबाबाक स्थिति नित्यप्रति खराब होइत गेलनि। जेलरबाबू कतेको प्रयास कएलक ओ अनशन कनिञो नहि गेलाह। हुनका अस्पतालमे लऽ जएबाक विमर्श भऽ रहल छल। संभवतः दोसर दिन प्रातहि ओ सब ओहि प्रयासमे लागि जाथि। उपर अधिकारीसबहक आदेशक प्रतीक्षा भऽ रहल छल। मुदा से समय नहि आएल। ओही राति अचानक हुनका हृदयाघात भेलनि। कनीकाल ओ घीं-घीं कएलाह आ सब खतम। राति बारह रहैक,सब सुति रहल छल। ककरो ध्यान नहि गेलैक। नागबाबा एहि दुनिआसँ बिदा भऽ गेलाह। भोर भेने जेलक सिपाही हुनका पड़ल देखि उठएबाक प्रयास कएलक।

मुदा ओ रहितथि तखन ने ..। सौंस जेलमे विषाद भऽ गेल। नागबाबा नहि रहलाह। अखबार,पत्रिका सबमे समाचार आबए लागल। कनीककालमे एही समाचार लखनपुरधरि सेहो पहुँचि गेल।

-रवीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम: स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम: स्वर्गीया दयाकाशी देवी, वएस: ६९ वर्ष, पैतृक ग्राम: एउर डीह, मातृक: सिन्घिआ ठाढ़ी, वृत्ति: भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त), स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त), शिक्षा: चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक, प्रकाशित कृति: मैथिलीमे: प्रकाशन वर्ष:२०१७ १.भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा),२. प्रसंगवश (निबंध), ३.स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग); प्रकाशन वर्ष:२०१८ ४. हसाद (कथा संग्रह) ५. नमस्तस्यै (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०१९ ९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२० १३.शंखनाद(उपन्यास) १४.ओएह थिक जीवन(संस्मरण)१५.ढहैत देवाल(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२१ १६.पाथेय(संस्मरण) १७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास); प्रकाशन वर्ष:२०२२ १९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास) २१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास) २२.राष्ट्र मंदिर(उपन्यास) २३.संयोग(कथा संग्रह) २४.नाचि रहल छलि वसुधा(उपन्यास) २५.दीप जरैत रहए (उपन्यास)।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.७.कुमार मनोज कश्यप-अह्वान सऽ लगौन



कुमार मनोज कश्यप

१ टा लघुकथा

अस्पतालसँ लौटि

लॉन मे बैसल रौद सेकैत रही तखन गेटक कॉल-बेल बाजल। गेट खोललहुँ- एकटा उन्नैस-बीस बरिसक छौंडा ठाढ़। कहल जाति बाजल- 'सर! अहाँ ओहि ठाम हमरा कोनो काज दऽ सकैत छी?'

- 'कोन काज?'

- 'जे हुअए.. बिया-धुआ के झुरान घरनामे सँ लऽ कऽ शारीरिक श्रम.. सब किछु!'

- 'हमरा लग एखन एहन कोनो काज अछि नहि। अहाँ कतहु आन पुछियौ।'

- 'सर! अहाँ के कोनो घरनिबिन'!

ओकरा पर दया आबि गेल। लागल जे निश्चय ई कोनो बड़ी खगता मे अछि। तखन हासन दिस मोन मे बिजलौका जकाँ चमकल

ओ आइ काल्हि चान सन चानि सऽ पहिने नकी कऽ कऽ सन जानकारी इटा लैत छै... अपनहु बढ़बैत छै आ आराम सऽ बालदार क अंजाम दैत छै। हुन मान म आयल हान-रान आ बहुना-मारुना सऽ तऽ लुब्बा-लंपट नहिं लगैत अछि। नयाली घन गेल अछि; कियै न गाछी ताका नाज ओकरा सऽ खाआ ली....... ओकरा दु पाइ दऽ जौं आ हमरा अपन गाछी सारह नहिं करऽ पड़त। गाछी खावा काल हम डागदि ०१८ नरवै तऽ इ ओम्हन-डम्हन ताक-झाँक नहिं कऽ सकत। बस ओकरा अपन काज सऽ काज। येह सोचि कहलियै— 'हमरा लऽग आन कोनो काज तऽ अछि नहिं। हुँ, ओखन नयाली गाम गेल अछि ताका आहाँ कऽ नऽ चाही तऽ हम अपन गाछी खावा क काज आहाँ क दऽ सकैत छी" ओ सहर्ष गैयान दऽ गाछी खालक आ काल्हि हुन रान ओवाक बात कहि प्रणाम कऽ कऽ चलि गेल।

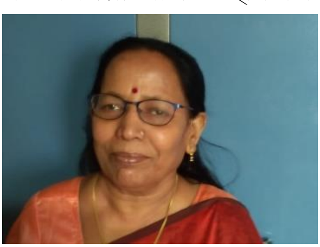
गाछी ओ बस नीक जकाँ खान छल.... नगति-नगति कऽ। ओहन सारह सऽ तऽ नयाली कहिया न खान हैत! हम गाछी क चारू कात घूमि कऽ देखऽ लगलहुँ। ओकरा पासकार्ड खसल रहल। लिखल छलै- 'नीना! ओखन तक हमरा कोनो काज नहिं रहऽ लै। काज रहितै हम पाइ पठबाक जोगार करबौ। ताव ठाकुर-दनाइ तऽ नहिं दऽ पबौ; मुदा दसी-घरलु दनाइ सऽ माय क जीया कऽ नखनाइ ताहुन येघ जिम्मदारी छौ। हिम्मत नहिं हारिहें। भगवान संग छथुन। ताहुन तैया - अमाल।'

हम उठि चिट्ठी क हाथ म लऽ शून्य म ताकैत रहलहुँ आ फेर पर्स जेब म रखैत पापा ऑफिस दिस विदा भऽ गेल रही ।

-कुमार मनोज कश्यप, सम्प्रति: भारत सरकार क उप-सचिव, संपर्क: सी-11, टावर-4, टाईप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट क सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.६.निर्मला कर्ण- अग्नि शिखा (खंड-१९)



निर्मला कर्ण (१९६०-), शिक्षा - एम् ए, नैहर - खराजपुर,दरभंगा, सासुर - गोढियारी (बलहा), वर्तमान निवास - राँची,झारखण्ड, झारखंड सरकार महिला एवं बाल विकास सामाजिक सुरक्षा विभाग म बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पद सँ सेवानिवृत्ति उपरान्त स्वतंत्र लेखन।

मूल हिन्दी- स्वर्गीय जितेन्द्र कुमार कर्ण, मैथिली अनुवाद- निर्मला कर्ण

अग्नि शिखा (भाग- १९)

पूर्व कथा:

राजा पुरुरवा उर्वशी सऽ विदा लऽ पृथ्वी पर वापस जाइ क बात करैत छथि। पुनः हुनका सऽ भेंट करबाक लेल अबइ क वचन दऽ अमरावती मे अपन निवास जाइत छथि।

आब आगु:

राजा पुरुरवा क स्वर्ग सँऽ घुमला पर आइल तीन मास बीत गेल छल। राज्य कार्य मे पुरुरवाक मोन आब पहिल सन नहि लगैत छलनि। सदिखन हुनकर ध्यान उर्वशी पर लागल रहैत छलनि। कखनो-कखनो ओ विरह वेदना मे व्याकुल भऽ जल बिनु मीन सन तड़पऽ लगैत छलथि,मुदा एतेक शीघ्र ओ स्वर्ग लोक कोना कऽ जा सकैत छलाह? भला कोन कारणे देखबैथ स्वर्ग लोक जयबाक ? एहन कोनो कारण हुनका नहि भेटि रहल छलनि। देवदूत क कोनो संदेश एखन धरि नहि आबि रहल छल। आब ओ कोन उपाय करथि उर्वशी सँऽ मिलन कर, हुनका नहि बुझना जाइत छलनि। उर्वशी क विरह क कारणे ओ लगन पूर्वक पृथ्वीक शासन व्यवस्था सम्हारबा मे समर्थ नहि भऽ पाबि रहल छलाह।

राजा पुरुरवा एक दिन अपन राज प्रासाद मे चुपचाप बैसल उर्वशी क ध्यान मे निमग्न छलाह। ताहि समय राज्य ज्योतिषी क पदार्पण भेल। अचक्के हुनक दृष्टि पुरुरवाक सीधा राखल हथेली पर चलि

गेलनि । कुतूहल वश ओ ध्यान पूर्वक पुनूनवाक हथेली क निरीक्षण करS लगलाह। प्रसन्नता हुनक मुख पर छलनि ओत। ओ प्रसन्न भय बाजि उठलाह -

"राजन् बुझना जाइत अछि आहाँ क जीवनसंगिनीक साथ अति शीघ्र हएत बला अछि"।

राजा क मुख पर उदास सन मुस्कान प्रगट भेलनि हुन ओ गंभीर होइत राज ज्योतिषी सS पुछलथि -

"कतेक दिन मं अपनेक बात सत्य होयत ब्राह्मण देव"?

"अधिकतम छः मास! मुदा एक गोट समस्या देखि रहल छी राजन्"!

"ओ कथि थिक देवता"?

"दांपत्य सुख बहुत कम अछि राजन् अपनेक हथेली मं। आहाँ क पत्नी क वियोग मं आधा उम्र बितावय पड़त राजन्"।

राज ज्योतिषी कर बात सँS राजा क उत्साह समाप्त भय गेल। हुनका रुनामुनि कर शापक स्मरण आबि गेलनि। पुन: दु:खी भय गेलाह राजा पुनूनवा। ओ गुमसुम भS गेलथि। राज ज्योतिषी कउ मं व्याप्त मौन क तोड़लथि -

"मुदा अपनेक जीवनसंगिनी कोनो साधारण रमणी नहि होयतीह राजन्"।

कुतूहल वश पुनूनवा पुछलथि - "हुन"?

"कुना दिव्य नारीक योग अछि"।

पुनूनवा पुन: गंभीर भS गेलथि। हुनक मोन मं उर्वशीक स्मरण तीव्र वेग सँS हिलकोर मारS लगलनि। मोन मं टीस सन उठS लगलनि। मुदा अपन आंतरिक व्यथा क ओ संयम सँS नियंत्रित कS

लेलथि। अपन व्यवहार सँ मनक व्यथा प्रगट नहि होमय देलथि राज ज्योतिषी पर।

राज ज्योतिषी सँ शुभ-अशुभ क बारे सँ संबंधित बात होमय लगलनि । पुरुरवा हां - हूं मे अनमनायल भाव सँ जवाब दैत रहलथि। हुनक ध्यान तँ स्वर्ग लोक मे बैसल अपन प्रेयसीक निकट पहुँचि गेल छलनि।

अंतिम दिन इन्द्रक संवाद आयल। तीन दिन उपरान्त विशेष कार्य वश देव सभा होमय क छल। ओहि सभा मे पुरुरवाक उपस्थिति आवश्यक छल,स्वर्गक सर्व-शासक होयबाक कारण। भला हुनक अनुपस्थिति मे कोनो विशेष कार्यवाही कोना भय सकैत छल ?

पुरुरवा क उपयुक्त अवसर भेट गेल उर्वशी सँ भेंट करबाक। ओ शीघ्र स्वर्ग जयबाक तैयारी करऽ लगलाह । तत्पश्चात ओ विदा भेलाह अमरपुर क दिशा मे । रथ हुनका गंतव्य पथ पर तीव्र गति सऽ लऽ गेलनि । स्वर्ग मे पहुँचि ओ सर्वप्रथम देवेंद्र सँ भेंट केलथि,तत्पश्चात नंदनकानन मे जाकय उर्वशी सँ भेंट कय अपन विरह वेदना क शांत कय हृदय तृप्त केलथि।

तत्पश्चात कतेक दिन तक देव सभा भेल जाहि मे राजा सम्मिलित भय कार्य निष्पादन केलथि । सभा समाप्त भेलाक उपरांत पुरुरवा क पुन: पृथ्वी पर आबय पड़लनि।

आब ओ प्रत्येक मास स्वर्ग लोक जाय लगलाह। कारण स्वयं इन्द्र क कहनाम छल -

'स्वर्गक शासन व्यवस्था क संचालन मे राजा पुरुरवा क अनुमति एवं सहयोग आवश्यक छैक'।

स्वर्ग लोक जाय पर ओ उर्वशी सँ भेंट अवश्य करथि। दिन प्रतिदिन

उर्वशी-पुरुरवाक प्रेम प्रगाढ़ सँ प्रगाढ़तम भेल गेल। प्रेमाग्नि क ज्वाला दुनू क हृदय मे तीव्र सँ तीव्रतम होइत गेल।

- -

राजा पुरुरवाक रथ वायु वेग सँ आकाश मार्ग सऽ चलल जा रहल छल। पुरुरवा ओहि रथ मे सवार छलाह। हुनकर मोन अत्यंत प्रसन्न छलनि। मोन मे उत्साह छलनि। "पिया मिलन केर आस" - मनुष्य क स्वर्ग तक खीचि लऽ जाइत अछि! राजा पुरुरवा तऽ ओहुना स्वर्गक शासन क अर्ध अधिपति छलाह ।
मंद सुगंधित पवन मन-प्राण क शीतलता प्रदान कऽ रहल छल। आकाश मे छिटपुट बादल एम्हर-ओम्हर घूमि रहल छल। एहि कारण पृथ्वी हुनका धुंध मे लपटायल मात्र एक गोला दृष्टिगत भय रहल छल। ओ प्रसन्नता मे किछु-किछु गुनगुनाइत जा रहल छलाह । बहुत रास मूल्यवान उपहार हुनक रथ मे राखल पड़ल छल। उर्वशी क देबाक वास्ते बड़ हुलास सँ ओ ई सब उपहार तैयार करबौने छलाह। रथ तीव्र गति सँ अपन मार्ग पर चलैत रहल। आब रथ दूसर दिशा मे घूमि गेल । किछु काल धरि ओहि दिशा मे चलैत रहल । राजा पुरुरवा रथ क गति तीव्र केलनि। ओ शीघ्रातिशीघ्र अपन गंतव्य पर पहुँचि जाय क चाहैत रहथि । दसो दिशा मे नीरवता व्याप्त छल। अचक्के हुनक दृष्टि दक्षिण दिशा मे घूमि गेलनि । ओम्हर किछु रथ उड़ैत हुनका दृष्टिगोचर भेल । राजा पुरुरवा आश्चर्यचकित भऽ गेलाह।
'ई रथ तऽ दानव निर्मित लगैत अछि ' - राजा पुरुरवा मोनहि मोन सोचलनि।
'मुदा दानव क आकाश मार्ग मे तऽ हयबाक नहि चाही' - मोन

मं साबेंग नाजा यूनुनवा अयन नथ उहि दिशा मं घूमा ललनि। यूनुनवा क नथ आव यूर्व दृश्य दानव निर्मित नथ क याछ्र लागि गेल। आव अनक नथ हुनका दखना मं आवय लागल,ज यक्कि वह्व रय चलि नहल छल। यूनुनवा क मान मं आशंका हामय लागल -

'ॐ गs दानव क नथ अछि,अनथ्य ओहि सर नथ क लs कs स्वर्ग लाक सs दानव आवि नहल हायत'- सावलथि यूनुनवा। नथ आव अयंग निकट यहुंचि गेल छल। उ अगिलका नथ क नुकना हगु गीव्र स्वन मं आवाज लगौलथि,मुदा उ सर आउान गीव्र गति सँs रागs लागल। ॐ दखि नाजा क अनहानी क आशंका हामय लागल।

यूनुनवा अयन नथ क गति आउान गीव्र कय दानवक नथ सँs आगु निकालि ललथि। आव हुनक दृष्टि ओक नथ सँs टकनायल। अन! ॐ की रल ! उहि नथ मं गs नाजा क अयन प्रयसी उर्वशी छलीह। संगहि छलीह उर्वशीक प्रिय सखी चित्रलखा! नाजा क ओक मलक उर्वशी क रट गेलनि! नाजा क मलक यावि ओक कनूण विकान निकालि यउल उर्वशी क कं0 सँs अयन नञा हगु!

उाह! दानव नाज कशि चान सन स्वर्गक दुनु अप्सना क हनण कय यउा नहल अछि! हाठात् यूनुनवा क मस्तिष्क मं ॐ वात विजली सन चमकि उ0ल ! नाजा मट अयन गलवान निकालि ललथि! उहि नथ सs यहिलहि गलवान निकलि गेल छल। दुनु क मध्य युद्व हामय लागल। दखिताहि-दखतुग मं आग्नेयास्त्र क प्रयाग कनs लागल कशि। किछु उण यूनुनवा किंकर्तव्यविमूढ सन रs गेलाह। कशि क द्वाना आग्नेयास्त्रक प्रयाग कनवा सँs ऊुव्ध रs नाजा यूनुनवा

अपन तलवार खींचि शीघ्र दिव्य अस्त्रक प्रयोग करs लगलथि। आब दुनू क मध्य घनघोर युद्ध होमय लागल। एहि अप्रत्याशित आक्रमण सs ओना तs दानवराज किछु घबड़ा गेल छल मुदा दानवक हौसला बुलंद छल,कारण शत्रु नितांत असगर छल। घमासान युद्ध होमय लागल।

पुरुरवा एहि युद्ध सँs कनिको विचलित नहि भेलथि। ओ तs क्रोध सs उन्मत्त छलाह। आखिर दानवराज केशि हुनक प्रियतमा पर अपन कुदृष्टि रखने छल। अपन प्रियतमा पर उठय वला हाथ के काटबा हेतु ओ अपन पूर्ण शक्ति सँs युद्ध करs रहल छलाह। अनेकों राक्षस अपन प्राण गंवाओल। आब बहुत कम दानव दृष्टिगोचर भs रहल छल। पुरुरवा क उत्साह एवं युद्ध क गति अत्यंत तीव्र वेग मे आबि गेल छल। राजा आब मायास्त्र क प्रयोग कलथि। दानव क अनेकों पुरुरवा दृष्टिगोचर होमय लगलाह। ओ सब वास्तविक पुरुरवा क चिह्नित नहि कय सकलाह,आ वास्तविक पुरुरवा क छोड़ि कs अन्य छाया पुरुरवा सँs युद्धरत भय गेलथि।

आब राजा अपन धनुषी निकालि ललथि आ [illegible] प्रयोग केशि पर कलथि। ओकर छाती सs रक्त क धार झरना सन बहय लागल। केशि जोक बनि तलवारक वार कयल ओ पुरुरवा क करवद्ध बाहु सs टकराकs वायु मे विलीन होमय लागलa। आब केशि मूर्छित भय रथ मे खसि पड़ल।

अपन राजा क मूर्छित पाबि दानव गण भयानक हुंकार भरय लागल। ओ सब पुरुरवा क अखन धरि रथ तक आबै सs रोकि रहल छल। पुनः आग्नेयास्त्र क प्रयोग राजा पुरुरवा द्वारा कयल गेल। आब जोक गनल-चुनल दानव गण बचल छलाह ओ सब

वायुमंडल मे रुदन करैत खसs लागल।

पुरुरवा अपन रथ सs उछाल मारि केशि क रथ मे प्रविष्ट भय गेलथि, एवं केशि क रथ सs निकालि भूमंडल क दिशा मे फेंक देलथि। पुन: ओकर रथ सs उर्वशी एवं चित्रलेखा क अपन रथ क दिशा मे उछालि देलथि। ओ दुनु सखी आश्चर्य भय रथ मे बैस गेली। आब पुरुरवा स्वयं एक उछाल भरल आ अपन रथ मे प्रविष्ट भs गेलाह। रथ पुनः चलनाई प्रारंभ कएल। आब ओ विपरीत दिशा मे (स्वर्गक दिशा मे) जा रहल छल।

उर्वशी अपन प्रियतम क पाबि भाव-विभोर भs रहल छलीह। हुनक प्रसन्नता क कोनो सीमा नहि छल। यैह स्थिति पुरुरवा क छल। उर्वशी क सुरक्षित अपन रथ मे आनि राजा अति प्रसन्न छलाह। प्रसन्न मुख हँसैत राजा कहलथि -

"यदि हम सही चिन्हि रहल छी तs अहाँ सम्भवत: चित्रलेखा थिकहुँ। अहाँ दुनु सखी पाताल लोकक यात्रा पर भ्रमण क वास्ते जा रहल छलहुँ? हँ ! स्वर्ग लोक मे आब अहाँ सभ क देखs क लेल किछु नहि बचल छल"?

चित्रलेखा - "राजन् अहाँ क हँसी सुनैत अछि, ओ हम सभ अपनें भयग्रस्त भs गेल छलहुँ"।

"ई दानव कोना पकड़लक अहाँ दुनु सखी क"?

"ई हमरा नहि उर्वशी सs पुछब तs ठीक रहत। किएक सखी! तों चुप किएक छह, राजन् क प्रश्न क जवाब दहुन"!

"हम! हम! हम कहियनि? हँ राजन् ! वास्तव मे दोष हमर छल"।

"हम एह तs पुछैत छी! ओकर हाथ मे कोना पड़लहुँ अहाँ दुनु"?

उर्वशी क मधुर स्वर गुंजित होमय लागल। पुरुरवा क कर्ण गह्वर

मे हुनक आवाज अमृतक बुन्द सन टप-टप टपकऽ लागल। ओ निरंतर अपन दृष्टि उर्वशी पर जमौने छलाह । उर्वशी राजा क निरंतर अपन मुख क निहारैत देखि लज्जा वश बीच-बीचमे अपन आँखि क पलक क पर्दा सऽ झाँपि लथि। वातावरण मे उर्वशी क आवाज गुंजित रहऽ गेल छल,आ राजा हुनक मधुर स्वर सुनि अपन सुध-बुध बिसारने जा रहल छलाह -

"अपन कक्ष मे बैसल -बैसल जखनि हमरा मोन कुण्ठित होमय लागल,हम चित्रलेखा लग पहुँचलहुँ। ओकरा नींद सँ जगाओल,पुनः प्रमद वनक योजना बनाओल"।

"वाह कतेक नीक बात ! जवाब नहि आहाँ क सौंदर्यमयी देवी-गण!अर्ध रात्रि-प्रहर आ घुमऽ क शौक! आ ओहो ककर! सुंदरता क देवी-गण क! वाह-वाह! की कहब ! की आहाँ सरग क स्मरण नहि,कि जे कतऽ देखत आहाँ सरग क। आहाँ क सुंदरता ओकर तऽ प्राण हरण कऽ लत। अगर ओ किछु शक्ति राखैत होयत तखन बलपूर्वक आहाँ क उठा कऽ अपन शयनागार क शृंगार बनाओत"।

"जाऊ! छाड़ि दिय! हम नहि बनायब आब आगु किछुओ। आहाँ तऽ हमर हंसी उड़ाबय लगलहुँ।आहाँ हमरा बना रहल छी"। उर्वशी हृदय मे प्रसन्न होइत मुदा ऊपर सऽ मधुर क्रोध देखबैत बजलीह -

"नहि-नहि आहाँ कहु ना। आहाँ क बनबाक सामर्थ्य तऽ ब्रह्मा जी क नहि छलनि,तखन हमरा कोन हिम्मत जे आहाँ क बनायब"?

"कहि देलहुँ चित्रलेखा आब तं बता देलहुँ,हम नहि बाजब किछु" - उर्वशी मान देखबैत बजलीह ।

"नहि गे दाइ हम नहि करबइ किछुओ ! हम दु गोट क बीच बाजऽ वाली क छी" - चित्रलेखा मुस्काइत कहलीह ।

"की हम आ अहाँ अलग-अलग श्रेणी क थिकहुँ "?

"अवश्य! पहिल नहि छलहुँ,मुदा आब रहऽ गेलहुँ"।

"एना स कोना "!

"एकर प्रत्यक्ष प्रमाण साओन राजा पुरुरवा छथि। तांहु सऽ बढि कऽ आहाँ दुनू क एकहि सुर मे धड़कैत हृदय अछि ज,एकहि कथा कहि रहल अछि "।

"अच्छा आब हम बुझलहुँ,अहूँ उर्वशी क हृदय क धड़कन चिन्हि गेलहुँ अछि! "

राजा पुरुरवा मुस्काइत बाजि उठलाह।

"हँ!ओ अपन धड़कन संग एकहि नाम लैत रहैत छैक,आ ओ नाम आहाँक थिक राजन्"।

चित्रलेखा क मुख सँ इ बात सुनि उर्वशी गंभीर भय गेलीह।

घबड़ाउ जुनि सखी,हम तऽ आहाँ क राजदास थिकहुँ। आहाँ क इ बात कुना दोसर क कान तक नहि पहुँचत"।

,"हम तऽ सुनिये ललहुँ ! नहि की! दोसर कान तक तऽ बात जा पहुँचल"। - पुरुरवा हँसैत-हँसैत बजलाह।

"कथि सुनलहुँ आहाँ"? - उर्वशी पुछलथि।

"बैह....बैह.....कि.....आहाँ....पुरुरवा क मुख सऽ आवाज नहि निकलि पाओल घबराहट मे ।

"आय....आय.....आय...... " -

अपन जीह निकालि कऽ नकल उतारऽ लगलीह उर्वशी पुरुरवा के। इ देखि चित्रलेखा आ पुरुरवा दुनू गोट हँसऽ लग लथि । आब

उर्वशी संकोच वश आर लज्जा सs अपन दृष्टि झुका लेलथि। किछु दिन एक मौन व्याप्त रहल हुनका तीनू के मध्य,पुनः चित्रलेखा बाजलथि
-
"स्वर्ग लोक तs संकट सs पुनः घना गेल बुझाइत अछि। आब तs हमर सबहक प्रतिष्ठा खतरा मं पड़ल अछि"।
"नहि आब एहन किछु नहि होयत,किएक तs उद्यानक जड़ि कटि गेल अछि"। - राजा पुरुरवा हुनका दुनू के आश्वस्त कलथि ।
चित्रलेखा मौन भs गेलीह । उर्वशी मौन भंग कलथि -
"ई दुर्घटना मात्र आहाँ के कारण भेल "।
"की! कथि कहलहुँ ! हम थिकहुँ एकर कारण! हमरा कारण भेल ई दुर्घटना ! ई कोना कहि सकैत छी आहाँ"? - पुरुरवा पुछलथि।
"हँ! हमर हृदय के चोरी कलहुँ आहाँ!हम ओकर तलाश करैत पहुँचलहुँ उद्यान मं,आ ओतहि ई दुर्घटना भs गेल " - उर्वशीक एहि बात पर चित्रलेखा आ पुरुरवा दुनू हंसs लगलथि।
"आहाँ अपन हृदय के विषय मं चित्रलेखा सs पुछि लितहुँ तs चोरक नाम ई बता दितथि,तखन आहाँ के चोर के तलाश करबा हेतु उद्यान मं जाय के आवश्यकता नहि होइत"।
पुनः एक बेर सम्मिलित ठहाका पसरि गेल। एहि प्रकार सs हंसी-दिल्लगी सs परिपूर्ण बात करैत-करैत ओ आनंद पूर्वक रहथि आ कोना अमरावती पहुँचि गेलथि हिनका ज्ञात नहि भs सकलनि। किछु काल पूर्व के दुर्घटना के ओ सभ आनंद मय वातावरण मं बिसरि गेल छलाह।

क्रमशः

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.१.संतोष कुमार राय 'बटोही' मंगनौना (धारावाहिक उपन्यास १२म खण्ड)



संतोष कुमार राय 'बटोही'

'मंगनौना' (धारावाहिक उपन्यास- बारहम खण्ड)

आब हम थाकि गेलहुँ अछि। दौड़-दौड़ बयस भऽ गेलहुँ हम। आब हमरा सँ नहि होयत । बूझना जाइत अछि- पाउन टूटि गेल। नाहिटा सँ दौड़ रहल छी। अखनो धरि बटोही बन छी। बटोही नाम आब हमरा नीक नहि लागि रहल अछि। 2002 म

हमर मित्र आओर गुरुजी डॉ० किशन कारीगर हमरा ई नाम देलथि , मुदा आब बूझना जायत अछि ई नाम राखि कऽ हम पैघ गलती कएलहुँ अछि। आब कतेक दिनस धरि ढोऔत रहू ? मोन थाकि गेल अछि। बटोही आब नहि रहब हम।

किशनजी कर प्रति हम आभारी छी। ओ मंगरौना गामक एकटा पैघ विद्वान छथि। हालिया मे हुनकर जिनगी छन्हि। रेलवे कर नौकरी सँ ओ रिटायर दऽ देलथिन्ह। हमरा विचार ई हुनकर पैघ गलती छलन्हि। पत्रकारिता सँ हुनका बड़ प्रेम छलन्हि। देशक राजधानी दिल्ली मे करियर बनबै कँ कोशिश कएलथि , मुदा मासकम्यूनिकेशन मे डिग्री रहलाक बादो बेसी दिन धरि ओ सक्रिय नहि रहलाथि। रतिया जर्नलिज्म मे पीजी डिप्लोमा छन्हि। बीएड आओर एमएड छथि । पीएच-डी कर डिग्री छन्हि, मुदा हुनकर विचार हिनका सँ नहि मिलैत छन्हि। ओ मंगरौना गामक मार्क्स छथि।

किछु शुभआग गाँ करैत छथि, मुदा ओ काज मँझधार मे फँसि जायत छन्हि। संस्था आओर संस्थान बनबाक हिनका सँ किया सीखिए सकैत छी। आइ धरि ओ अपन सिद्धांत पर अडिग छथि। अपन आय कँ घर मे बड़ कम दैत छथि। हिनका सँ मलजाल नहि। गामक विद्वा कर ई गति हमरा बटोही बनौने अछि।

ई गोठगामा गाम छियैक। जनता हरिहर दत्त उच्च विद्यालय, गोठगामा सँ 1999 मे ओ द्वितीय श्रेणी सँ उत्तीर्ण भेलाह अछि। हमरा सँ ओ एक क्लास सिनियर छथि। हरिनाम , वासुदेव, आनंद,

अजय, अमर ठाकुर आओर लालबाबू ओही सत्र किया एक बैच कऽ विद्यार्थी छथि।

लालबाबू जी कऽ दिल्ली एनसीआर मे अपन एम्ब्रेसी कऽ फ्लैट छन्हि। अपन मशीन बेचैत छथि। ओ बी ए एम ए करबा मे विश्वास नहि करैत छथि। ते जा हुन मे कोर्स कऽ कऽ बिजनेस करबाक हिनकर मोन रहलन्हि। नहु-नहु गति सँ ओ आगाँ बढि रहल छथि। राशन कऽ फ्लैट मे तिजाहुनन कऽ नौकरी छोड़लाक बाद यदि एकटा कयठा मे जमी काज कऽ मशीन गेट्टा कॉलोनी मे लगौलाथि। आब ता राशन मशीन लगौलाथि। मोन हरखित रहल। सुभाष कँ शादी कऽ निसर्जन मे दिल्ली मे होटल मे मिलल छलाथि। हुन मंगनौना गामक नाम कऽ रहल छथि।

गरीब आओर माय-बापक मृत्युलाक बाद की हाल होएत छै स हरनाम कऽ जिनगी सँ बूझि सकैत छी। तीनि भैयानी मे हरनाम सबसँ छोट छथि। सबसँ नमहर आओर माँझिल कलकत्ता मे स्थापित भऽ गेलाह। हरनाम पढबा मे नीक रहैत, परञ्च गरीबी प्रगतिक कँ मानि रहलकन्हि। बंबई मे काज करबा लेल गेल छलाथि। एकटा आँखि यदिनैह भगवान लऽ लेने छलन्हि। किछु घटना मे ताक न मानि लगलैह जे हिनकर शरीर बदम भऽ गेलन्हि। आब ओ घर ओगरने छथि। मजूरी करक जिनगी कटैत छथि।

आनंद कऽ जिनगी ओना काना भ गेलैह, नहि यता अछि। कॉमर्स राखि कऽ ता दरभंगा मे अल्लाह मोहल्ला मे गरीब भगत लॉज मे

ना यढैग छलाह। कॉमर्स कन नीक विद्यार्थी रऽ गेल छलाह, यनञ्च हुनका की रलहि ? उा दिमागी नुयध वीमान छथि। नाँवी सँ सद्दा ऊ्रीलाज रलहि , यनञ्च ना ठीक नहि रलाह। लाक कहैग छै उ ठाकुनजी कँ शिष्यन्न ग्रहध कलाक वाद उा वसी सावऽ लगलथिह , गँ वताह रऽ गेलाह। रगवान जानै यना नहि हुनका की रलहि... !!

आनंदजी रनि गाम घूमि अवैग छथि आउान अयन दलान यन आवि कऽ वैस जायग छथि। ऊ्री हिनकन उली कन नुटिन छियैह। एक दिन दुर्गा स्थान म हम यढवैग नही, उा आवि कऽ कायी यन किछु लिखि दलथिह । विद्यार्थी सर उना गेल छल, यनञ्च ना एकटा रजन कन मुखडा लिखन छलाथि।

हम यूछलियैह- की समाचान अछि आनंदजी ?
ना किछु नहि वजलाह। मूँह विचकवैग चलि गेलाथि। गामक य्रगिरा कन अऽ्रू प्रकाशध दुर्गेग हायग दखि कऽ किनका व्राज हाटि जायग। आनंद जी आव जिनगीरनि उाहिना नहगाह। हुनका सँ छाट राऽ्री कँ दुटा वालक रलैह, यनञ्च ना उाहिना नहि गेलाह।

वासुदन जी गणित विषय सँ यीएच-डी कन छथि। प्लस टू विद्यालय वायाञ्ची म शिक्षक रलाह अछि। दुर्गा यूजा समिति कन काषाध्यक्ष छथि। 2011 सँ ना अऽ्रू यद कँ संचालन छथि। हिनकन व्याह मंडावनदान रल नहैह। ना कहैग छथि घन म किया उाडि-वीडि लगौन अछि। रगा सर लग दौड लगावैग छथिह। हुनकन

कनिया दरभंगा म अंग्रेज रहैत छथि ।ओ अंग्रेज मंगरौना म रहैत छथि। तेँ हुन श्राद्ध नहि करैत आओर हुनकर कनिया सदा अपन धनि दासर श्राद्ध नहि कलीहऽ। तेँ अपन जिनगी कँ जेना माँ दुर्गा कँ अर्पित कऽ देलथिन्ह।

मंगरौना गाम म वासुदेव जी ओहिना भेट जाइत मन। हिम्मत कऽक पूछलियैन्ह - की दासर श्राद्ध नहि करब सर ? हुनकर आँखि लाल-पीयर भऽ गेलैन्ह। ओ कहलाथि - अइ गप कँ चर्चा नहि उठायब। जिनगी म एकटा श्राद्ध कलहुँ। आब दासर नहि करब। देखैत नहि छियैय घर म किया आगि लगौल अछि। ई आगि लगौल छियैय कि मान रहत ?

आनंद आओर जनार्दन क जोड़ी गाम म खूब जमैत छलैह। गाम म 'चूहर-खटमल' शब्द कर प्रचार करबा म ई दुनु गोटे क हाथ छलैन्ह। जनार्दन पढ़ना म सिलौट छलाह। तेँ तीनि साल पहिला वर्ग म रहलाह अछि। एखना किताब पढ़ल नहि भेलैन्ह। एखन हानि कऽ मास्टर साहेब दूसरा म हिनकर नाम आगा बढ़ा देलथिन्ह। कहुना-कहुना कँ आठ क्लास तक पढ़ि कऽ कलकत्ता चलि गेल। हिनकर बाबूजी कलकत्ता कालीघाट म पुलिस मेस म खाना खबाक लेल नाम लिखा देलथिन्ह आओर चक्रवर्तिया म मारत गाड़ी ड्राइविंग सेंटर म ड्राइभर बनबाक लेल नाम लिख देलथिन्ह। लाइसेंस तऽ टाका दऽक बनि गेलै , परन्तु बाबूजी मुइला क बाद धनि हुनका गाड़ी चलौनै सीखल नहि भेलैन्ह। हुनकर बेटी पढ़बा म नीक अछि, परन्तु गरीबी ओकरा आगा नहि पढ़ऽ देतै। तेँ शंकरनामाइसिनक

याउतन रूँकना म आगु छथि।

गाम म वनारक संख्या वढि रहल अछि। दारु गाम म विका रहल अछि। साँग, गाजा , दारु यीवि कs जनतका सर अपन कयाउ म कानिख लयन जायत अछि। नशा क चक्कर म युवा गाम वर्वाद रs रहल अछि।

-संतोष कुमार राय 'वटोही', ग्राम-मंगरौना

ऊ रचनायन अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३.८.आचार्य रामानन्द मण्डल-जाति वनाम जातिवाद/ धरम संकट मुक्त



आचार्य रामानंद मंडल

जाति बनाम जातिवाद/ धरम संकट मुक्त

१

जाति बनाम जातिवाद

बिहार जाति आधारित गणना (The Bihar caste base Survey) पर उच्च न्यायालय, पटना तत्काल प्रभाव स रोक लगा देलक हय। कुछ लोग अइ आधार पर याचिका दायर कैल रहल हय कि अइस जातीय विषमता बढ़त आ शासन अइ कि जनगणना कराब के अधिकारी केन्द्र सरकार हय। जौंकि बिहार सरकार के कहना हय कि अइ जनगणना न हय बल्कि एकटा सर्वे हय। आ सर्वे करे के अधिकारी राज्य सरकार सेहो हय।

पहिले उच्च न्यायालय गणना पर रोक लगाब सं इन्कार क देल रहय। तब याचिका कर्ता सर्वोच्च न्यायालय म गेल। सर्वोच्च न्यायालय याचिका कर्ता के उच्च न्यायालय म जाय के आदेश देलक। उच्च न्यायालय के आदेश देलन कि तीन दिन के अंदर अंतरिम फैसला करय। सेय आदेश के आलोक मं उच्च न्यायालय अप्पन अंतरिम आदेश म जाति गत गणना ३ जुलाई-२३ तक रोक लगा देलक। अगला सुनवाई ३ जुलाई मं निर्धारित हय।

नाञ्च सनकान क कहना हय कि लाक कल्याणकानी याजना क लल सांख्यिकी क आवश्यकता छाऽ हय। कत वान न्यायालय ओकन जानकानी मांगै छय। ओकना अलाव म जन कल्याणकानी याजना क लागू कनै म व्यवधान छाऽ हय।

मंडल आयाग क लागू कनै म दिक्कत एल नहय। ताऽ समय म १९३१म एल नहय जाति गणना क डाटा क आधान पन पिछडा वर्ग क २७प्रतिशत आनक्षण शिक्षा आ सना क्षेत्र म दल गेलय। अनुसूचित जाति आ अनुसूचित जन जाति क जनगणना कनै क प्रावधान संविधान मं हय। लेकिन सामान्य वर्ग आ पिछडा वर्ग क जाति गणना क प्रावधान न हय। त जाति गणना क लल जनकल्याण क लल संविधान संशोधन कननाऽ आवश्यक छाऽ जाय छैय। सामान्य वर्ग क विना जाति गत डाटा क आर्थिक आधान पन १० प्रतिशत आर्थिक आधान पन आनक्षण एंट गेल। जौकि संविधान म आर्थिक आधान पन आनक्षण दल क प्रावधान न हय। संविधान म कवल सामाजिक आ शैक्षणिक पिछडापन क आधान पन शिक्षा आ सना क्षेत्र म आनक्षण दवय क प्रावधान हय।

जौं समाज म जाति हय त जाति क गणना आवश्यकता हय। तव लाकन कल्याण क लल आनुपातिक याजना वनायल जा सकल हय। हन जगह धर्म आ जाति क कालम एनल जाऽ हय। लेकिन जौ गिनती क वात छाऽ हय त ओकन अल्पसंख्यक जाति ओकन विनाध कनय हय। असल म गणना क प्रजातंत्र मं महत्व छाऽ हय आ ताऽ गिनती स घवनाऽ हय। लाग अपन नाटी-वटी क संवंध

अथ्रन जाति म कनय हृया हृन जाति क अथ्रन कल्रन हृया हृन जाति क संघ-संघठन हृया संगठन ग अंगननाष्ट्रीय स्तन गक वनउलय हृया जातिवाद खुब कनग यनंु जाति स घवनायग। कहृग कि सामाजिक समनसग हृया आ्ऽ्या समाज म जातीय विराजन आ विमषग हृया जातिगग विषमगा वनल नहृय अऽऽ लल जाति आधानिग सर्व क विनाध कैल जा नहृल हृया माननीय उच्च न्यायालय क सर्व गथ्य यन विचान कन क आनश्यकग हृया अर्सल म ऽऽ जाति वनाम जातिवाद क लठाऽी हृया

२

धनम संकट मुक्त

नाजश्वन प्रगाय प्रगायगुठ क यूर्व जमींदान नहृलन। हृनका गीन सैय विघा जमीन नहृ। लम्बा चौठा दुमंजिला हृवली। दुना यन दु (गो हाथी,दु(गो घोठा,दस जोठा वैल,चान (गो भैंसी आ चान (गो गाय नहृ। गहृिना नौकन नौकनानी ,टहृलु-टहृलनी, (गावन कठनी नहृ। हृन जाग क लल हृनवाहृ, माल जाल क दखनाल लल नौकन,खेगी कन लल मजदुन-मजदुनिन आ जठैयग नहृ। कस मुकदमा दख लल मैनजन। हाथी क लल महावग,घोठा क लल सहृसवान, फिटिंग गाठी क लल कोचवान, वैलगाठी क लल वहृलवान आ ७गो जीय क लल ड्राऽवन नहृ।

यच्चीस वनख क नाजश्वन प्रगाय शादी सुदा नहृ। घनवाली मृनालिनी दी नामगुठ क जमींदान सूर्य प्रगाय क ७कलौगी वटी

नहि। वाॅ़स वनस क मृनालिनी यांचनां गक यठल नहि। साठ यांच र्हीट ,नाक नक्क आ शनीन क कटिंग 0ीक नहि। लकिन नंग स मब्रिम नहि। मान कि श्यामला नहि। स्नाक नाजश्रन प्रगाय अयन (गान गुनाक आ लगरेग ठहर र्हीट क वांका जनान नहि। कनिया मुंठ रूनका जनानी मं चान चांद लगावा। दुनु अयन जवानी मं (गांग लगवैग यानिनानिक जीनन जीयग नहि।

एक दिन नाजश्रन प्रगाय क नजन अयन (गावन कठनी दलिग विधवा कासलिया क एकलौगी वटी ननिया यन यनल। ननिया वाॅ़ दिन अयना विमान मगानी क वदल (गावन काठ आयल नहि। ननिया खुव सुन्नन नहि। अ0ानह वनस क ननिया क दखग नाजश्रन प्रगाय क 0कमुर्गी लाग (गल। मान कि दखग नह (गल। कनिका दन क वाद नाजश्रन प्रगाय वाललन-गु ग कासलिया क वटी छ ना। ननिया वाललक-जी। नाजश्रन प्रगाय वाललन-वहुग दिन क वाद दखलिउ हए। कंहा नहैग नहलैय हए । ननिया वाललक-हम अयना मामा ॅ़हा नहैग नहली हए हमन नानी विमान नहैग नहल हए। नानी क सना लल मामा वूला ल नहल हए आवि हमन नानी मन (गल। गॅ़ला आवि हम ॅ़ह नहव। आॅ़ हमना माय क वूखान लागल हए गॅ़ला काम कन हमही आ (गली हए।

ॅ़ वाग सुनक नाजश्रन प्रगाय कहलन-हं। माय क आनाम कन द आ काम कन गु ही आ। आ नाजश्रन प्रगाय माल जाल क घन दखैग हवली क उान चल (गलन।

नाजश्रन प्रगाय हवली मं ग चल अयलन।

लेकिन मन मालजाल क घन मं नह (गेल। दिल ननिया म अटक (गेल। नाजश्वन प्रगाय क नाग क नीन उउ (गेल। नाग मं ७क वान नाजश्वन प्रगाय क मृनालिनी वाललक-कि वाग आ᳸ नीन न अवेय कि।

नाजश्वन प्रगाय आंख मूलग कहलन-काना वाग ना। नीन आ नहल ह७ कहक यहिल वान मू0 वाललन।

नाजश्वन प्रगाय कहना क क नाग विगेलन। मान कि ननिया क ᳸गजान कनेग नहलन।

ननिया (गावन काठ साग वज सुवह मं आयल। उ नहनी क खनहना स मालजाल क घन खहनेग नह। नाजश्वन प्रगाय रो मालजाल क घन क मूयेना कन क वहान आ (गेलन। ननिया (थाउ सकयकायल। हन ननिया अयना ऊाठनी क समाहन लक ज हनवनायला क कानन नीचा गिन (गेल नह।

नाजश्वन प्रगाय वाललन-माय क कि हालग होउ। वूखान कम रलें᳸ कि ना। ननिया वाललक-ना। अरो हाथ-मथा वना गयग ह७। नाधा किसुन तागतन क दवा वलें ह७। नाजश्वन प्रगाय वाललन-अष्ठ ᳸ ल ७क सेय नुयया आ माय क द दिह आ कहिय मालिक दवा᳸ ला दलथून ह७।

ननिया घन (गेल आ माय क ७क सेय नुयया दलक आ कहलक कि मालिक दवा᳸ ला दलथून ह७ कोसलिया वाललक-मालिक क हमना सर यन धियान नहे छैय।

रनिया नित दिन काम करे आबे लागल। राजेश्वर प्रसाद जी नित दिन रनिया स मिले लागल। कहियो रनिया क देर भऽ जाय त राजेश्वर प्रसाद व्याकुल भऽ जाय। कहियो राजेश्वर प्रसाद क देर भऽ जाय त रनिया व्याकुल भऽ जाय। मोन क व्याकुलता दूनू ओर रहे। मोन कि ई प्रेम क आहट रहे। राजेश्वर प्रसाद जी हवेली क ओर चल गेलन।

रनिया काम क अपना घर चल गेल। रनिया अपना माय क कुछ न कहलक। फेर रनिया काम करे आयल। राजेश्वर प्रसाद जी आ गेलन। राजेश्वर प्रसाद पूछलन-माय क कि हाल चाल छौ। रनिया कहलक-धीरे धीरे सुधार भऽ रहल छै।

राजेश्वर प्रसाद हवेली क ओर चल गेलन। आ रनिया अपना घर।

रनिया फेर सबेरे काम करे आयल। राजेश्वर प्रसाद जी आ गेलन। राजेश्वर प्रसाद रनिया स ओकरा माय क हाल चाल पूछलन। रनिया बौलक कि माय क हाल चाल ठीक भऽ रहल छऽ। रनिया क राजेश्वर प्रसाद क सहानुभूति आ ब्यग्रता प्रेम क ओर बढ़ लागल

रहिना राजेश्वर प्रसाद क रनिया क सुन्दरता आकर्षित करे लगल आ ब्यग्रता प्रेम क डोर मं बांधे लागल।

एनी मृनालिनी राजेश्वर प्रसाद क व्यवहार मं आयल परिवर्तन क खोज म रहे। पता न लागे। लेकिन एक रात मं जब मृनालिनी पूछलक कि अंहा हमरा पहिल लेखा ध्यान न करै छी त राजेश्वर

प्रणाय कहलन कि हमरा रनिया स प्रेम भ गेल हऽ। मृनालिनी कहलक-बेऽऽ गोबर कहनी कौसलिया क बेटी रनिया स। राजेश्वर प्रणाय कहलन-हं। ओकरा बिना हम न रह सकै छी। मृनालिनी कहलक- ऽऽ अंहा कि बात करै छी। ओऽऽ गोबर कहनी क बेटी स अंहा बिआह क क हवेली में रखबै। ऽऽ हम न हाय देब।

संजोग ऽऽ रहल कि रनिया क मामा रनिया क बिआह बगल क गांव भिनहर में ठीक क देलक। रनिया बिआह क विरोध न कर सकल। राजेश्वर प्रणाय टी गुम रह गेल। तय समय पर रनिया क बिआह भ गेल। रनिया ससुरा चल गेल। जाति आ समाज क रिवाज क मुताबिक चार दिन बाद अपना नहिरा प्रणायगढ आ गेल।

कल्ह सबेर रहन रनिय काम कर आयल। राजेश्वर प्रणाय माल जाल क घर क देख बहाल रहन आ गेलन। राजेश्वर प्रणाय कहलन-तू आ गेला। हम त गाना बिना न रहब। रनिया कहलक-हमहू अंहा बिना न रह सकै छी। लेकिन हम बिआह क विरोध न कर पैली। राजेश्वर प्रणाय कहलन-हमहू कुछ न कर पैली। रनिया आ राजेश्वर प्रणाय क प्रेम परवान चढ लागल।

चार महीना क बाद रनिया क दुरागमन क दिन आयल। लेकिन रनिया दुरागमन क सारु नकार देलक। माय मामा क टी समझावे क कोशिश असर रनिया पर न रहल। रनिया आ राजेश्वर प्रणाय क संबंध क उड़ैत खबर लेरिका आ ओकरा बाप क मालुम भ गेल। उ रनिया क संबंध क तोड़ देलक। मान कि छोड़ छाड़ी भ गेल।

ससुरा स ननिया क संबंध टूट क खबर स ननिया आ नाजश्वन प्रसाय खूब खुश रहल। लेकिन मृणालिनी कनिका चिंतित रहल। कारन कि जमींदार परिवार म ई सब होइत नहेय छै। नाजश्वन प्रसाय स मृणालिनी बाजल-कि सुनै छिया। ससुरा स ननिया क संबंध टूट गेल छै। ननिया ससुरा जाय स इनकार कर देल कै छै। हमरा त अहाँम अंश क हाथ लगेय छै। अही सिखेल परैल हावे। नाजश्वन प्रसाय हँसैत क कहलन-हम कैला सिखेवै-परैवे। मृणालिनी बाजल-हँया। जमींदार परिवार सब म एहिना होइत नहि छै। हमरा एगो विधवा काकी अपन नौकर स संबंध रखल छथिन। परिवार मं सब चुपचाप छै। ई एगो समझौता छै। हमहू अंश स समझौता करै छी लेकिन अहाँ हवेली म हम ननिया क न रह देव।

नाजश्वन प्रसाय कहलन-हमहू ननिया क अहाँ हवेली म न लायब। अलग ननिया क टाल म मकान बना देवै आ लिब इन्त निलशनशिय मं रहब।

अब नाजश्वन प्रसाय ननिया क एगो मकान

बना देलक। आ ननिया क नाम स बिस बिघा जमीन लिख देलक। ननिया क पति जगदू ननिया क बाप क नाम आ पता प्रसाय गढ लिखायल गेल। नाजश्वन प्रसाय दूनू जगह मं समय बिताब लागल। ननिया क माया परिस्थिति स समझौता कर ललक। कुछ दिन बाद ननिया क माय चल बसल। समय पाक ननिया क एगो बेटा रहल। नाम (धेलक मनोज कुमार आ मृणालिनी स एगो बेटी रहल।

नाम रखलक माधवी। मनोज कुमार स माधवी छौह महीना छोट रहै।

मनोज आ माधवी जौर जौर पढ़ै। मनोज क बाप क नाम रनिया क बिआहल पति क नाम लिखायल गेल। जाति सेहो पति क लिखायल गेल। दूनू गोटे जवान भ गेल। दूनू गोटे मे प्रेम सेहो पनप गेल। माधवी सेहो ग्रेजुएट भ गेल। समय पाक आरक्षण लाभ स मनोज सिंचाई विभाग मे इंजीनियर भ गेल। आबि मनोज आ माधवी बिआह करै क बात करै लागल। मनोज क मन म एगो बदला क सेहो भाव रहै। अपना माय आ नाजायज प्रणय क संबंध क लक। समाज क ताना बाना मन म बदला लेब क आग लगा देल रहै।

मनोज आ माधवी ई जानै कि हम आ माधवी दूनू दू जाति क छी। अइस बिआह मे कोनो बाधा न होयत।

एगो रात मे माधवी अपना माय क अपन आ मनोज क प्रेम संबंध क बात मे बतौलक। आ कहलक कि हम दूनू गोटे बिआह करै चाहै छी। मृणालिनी अपन माथा पकड़ लेलक। मृणालिनी कहलक कि हम तोरा बाबू जी स बिचार क क बतायब। रात मे सुतै बेर मृणालिनी नाजायज प्रणय क माधवी क बात मे बतौलक। नाजायज प्रणय कहलन-ई बिआह न भ सकै छैय। माधवी क माय रनिया न हैय लेकिन हम बाप छी आ मनोजा क बाप हम छियै। रहल मृणालिनी ,तोहर जनमल मनोज न होअ । हम मनोज क जैविक बाप छियै। मान कि माधवी आ मनोज क बाप हम छियै। मतलब

मनाज माधवी क जैनिक राञ्ज्ञी हञ। मान मनाज माधवी राञ्ज्ञी-वहिन हञ। माधवी आ मनाज मं विआह न हा सकै छैया। हिन्दू धर्म मं ञ्ञ वर्जित हञ। दुनू दु जात क हाक री निआह न हा सकै हञ। ञ्ञ त वनका धनम संकट हञ। ञ्ञ सह वात नात म मृनालिनी माधवी क का0नी म आक वौलक आ कहलक माधवी अञ्ञ अञ्ञ धनम संकट स तु ही मुक्त कना सकै छा। मृनालिनी अपना का0नी मं सुत चल ।गल। माधवी वहूत दन तक जग ल साचैत नह कि हमन वावू जी क जनमल मनाज हञ। वा हमन जैनिक राञ्ज्ञी हञ। हमना दुनू मं विआह न हा सकै हञ। हम दुनू राञ्ज्ञी-वहन छी। सवन मनाज रैया स मिलव। ञ्ञ सावत सावत निन यन ।गल।

मनाज अपना माय ननिया क अपना आ माधवी क प्रम क वान मं वौलक आ विआह कन क वान मं कहलक। ननिया कहलक-मनाज तहन आ माधवी क निआह न हा सकै छैया। माधवी हमन जनमल न हञ लकिन माधवी क वावू जी री तहन वावू जी हाेआ। वाेआ मनाज ञ्ञ ञगा। धनम संकट हञ। आञ्ञ तान मुक्त कन क हाेआ।

मनाज कहलक माय ञ्ञ वात हम जनैय छी क हम माधवी क जैनिक राञ्ज्ञी छियै। लकिन हमना मन मं समाज क उपजा आ ताना नखैल पूत्र कहला स हमना मन मं वदला लव क राव आ ।गल नहल हञ। समाज हमना आ माधवी क राञ्ञ-वहिन न मानै हञ । हमना वडा मानसिक यीडा रल हञ । आव ञ्ञतना त हम जनैय छी कि अगना जात क नानी, दलित जात क नखैल क प्रमिका

कहै छथि। आ दलित जाति क नारी, अगिना जाति क प्रेमिका क रखैल कहै छथि। ई मापदंड समाज मं व्याप्त छै। जबकि लिंग ई न निर्धारित अतीत काल स चल रहल छै। वर्तमान समय मं एकर चलन और बढ़ि गेल छै। लेकिन ताना कहला पर हेमना मन क बदला क राग मिट गेल। हेमना मन स अगिना आ दलित क राग मिट गेल। आबि हेमना मन मं सौतेली-बहिन क प्रेम जाग गेल। हम माधवी क जैविक सौतेली छिये आ माधवी हमर बहिन।

सबटा कौआ क कांव कांव स माधवी क नींद टूटल। मनोज क ननिया उठौलक। सबटा ठहक बज रहलैत बल जब मनोज आ माधवी मिलल त सौतेली-बहिन क रूप मं मिलल। माधवी कहलक-भैया मनोज। मनोज कहलक-बहिन माधवी। आ दूनू सौतेली-बहिन आपस मं गला मिल गेल।

आइ राजेश्वर प्रसाद, मृणालिनी ,माधवी, ननिया आ मनोज धर्म संकट स मुक्त भ गेल।

-आचार्य रामानंद मंडल सामाजिक चिंतक सीतामढ़ी, *सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, माता-चन्द्र देवी, पिता-स्व०राजेश्वर मंडल, पत्नी-प्रमिला देवी, जन्म तिथि-01 जनवरी १९६० योग्यता- एम-एससी (रसायन शास्त्र), एम ए (हिन्दी)। रुचि- साहित्यिक, मैथिली-हिन्दी कविता - कहानी लेखन आ आलेख। प्रकाशित पोथी - मैथिली कविता संग्रह हासा क न बांटिया। २०२२ प्रकाशित रचना - समिया कविता संग्रह पोथी - जनक नंदिनी जानकी आ शौर्य गाथा। २०२२ पत्रिका -मिथिला समाज, घर -बाहर आ अपूर्वा (मैसाम)। अखबार -दैनिक*

मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश। सामाजिक-सामाजिक चिंतन, दायित्व- पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी। स्थायी पता- ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार जिला-सीतामढ़ी। वर्तमान पता- पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड-04 सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला-सीतामढ़ी भाया-परिहार पिन-843302 मो नं-9973641075 ई-मेल- ramanandmandal001@gmail.com

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.६.डा. किशन कारीगर-पुरस्कारी गुर्गा पुरस्कार बँटा ठकैत



डॉ. किशन कारीगर

पुरस्कारी गुर्गा पुरस्कार बँटा ठकैत (हास्य कटाक्ष)

बाबा बड़बड़ाइत रहथि छीना गेल मिथिला मैथिली. ई मैथिल लोकनि आ गुर्गा सब पुरस्कारी खेल मे त चंचला घाटी लोकनि के कान काटि लेत की? एकरा सबके कोनो लाज धाख छै आ कान मउकलहा के पुरस्कारी धूरी के लाज छै? किताब बिकाइ छै नहि लोक पढ़लकै नहि आ वरिष्ठ साहित्यकार हेबाक दाबिए चुन रहैए ई लोकनि सब. मनमाना पत उठाबु जे ओ हमरा के की करत लेत? आखिर मे मिथिला समाजक लोक सब सेहो चालनुकबा जे त अहाँ लोकनि सबके मनमाना के रोकत? के मंगतै जबाब, ककरा मान मतलब छै?

हम बजली हौ बाबा रिसाइ रिसाइ की हौ गेलहा? घर मे लोकनि हौ गेलौ? की कोइ रांग खुआए देलकहा जे बाबा गोइ एना बड़बड़ाए रहलौ? पुरस्कार त गेल जाइ हइ उठाकर कहुँ लोकनि हालोइए? हमर गप सुन बाबा हाँ हाँ के हँस लगल आ बाजलकै हौ कानीगन गोना सबटा यथार्थ बूझल छह आ यथार्थवादी लेखन माध्यम लोक के पुरस्कारी धूरी के देखार चिह्नाक करै दै छहक? आ अखैन अनठिया के हमरा स पूछै छह आ हमरा स सुनै चाहै छह? हम बाजली जे बाबा हम कोना चान लोकनि के चिन्हइ मे रहै छी की? हमरा पुरस्कारी चाली लोकनी बाद मे कुछो न बूझल है क? बलु अहीं साफ साफ कहु जे पुरस्कारी लोकनी की हइ?

बाबा बाजलकै देखै नै छहक जे मैथिली साहित्यकार सब चान लोकनि ओंका अपन गिरोह बनने अछि. जइमे गिरोह गढ़ने पुरस्कार बँटा लोकनि आ गढ़ने पुरस्कारी गुर्गा सब. ई सब गोना हौ हौ करैत जे एकर सब दुआरे मिथिला मैथिली बांचल हाउ? आ एहि धूरी

मे ओ सभ मिथिला मैथिली के अपन बपौती बुझि कब्जा जमौने रहल. ककर नाम गनबिऐ? साहित्य अकादमी, मैथिली भोजपुरी अकादमी, मिथिला मैथिली समिति, लेखक संघ, परिषद ककरा छोड़ब गिनाउ आ एहन गुर्गा सभ मिली मैथिली पुरस्कारक ठकैति मे लागल ऐ की? यथार्थ कहबैक त ठकैत आ गुर्गा सभ बाकुड़बैल के अपन चलकयनी कुकृत्य के सँगे के हिसाब मे रहताह. मैथिली पुरस्कार मे कोनो निष्पक्ष व्यवस्था किएक नै रहताह? जेहन गिनाउ आ जेहन गुर्गा तेहन पुरस्कार बँटा ठकैती. अहि दुआरे त मैथिली पुरस्कार सभ महत्वहीन भ गेलै आ घिना क नाखि दै जाइ गेलै. यथार्थ कहुक त ओकरे हमरे तारे कुंठित कहि चलकयनी करताह. ओ ठकैत गुर्गा सभ अपन ककर कुंठित अछि जे निष्पक्ष व्यवस्था के बात पर कयरहानी पर ओतारू भऽ जाइ की?

हम बाबा स पुछली जे पुरस्कार देलकै आ भेटलै त अइ मे पुरस्कारी ठकैत आ गुर्गा कैसन हो गेलै? बाबा हं हं के बाजै लगलै हो कानीगन तहुँ सबटा हमरे मुँह अइ पुरस्कार बँटा ठकैत सबहक देखार चिह्नार करबह त हैइओ लैह सुनहुअ सबटा किनदानी. एकटा गप कहुअ हमन तहन यथार्थवादी विचार मिलै छह आ अपना सब त कोनो गिनाहा मे नै नहै छि. तइया हम तोरा बसहा बरद पुरस्कार द दियअ आ तूं हमरा मिथिलांचल रत्न पत्रकारिता पुरस्कार बाँटि दैओ त ई पुरस्कारी ठकैति हेतै की नै? चिह्ना पनिब, सर कूटमारी, हिमाहवादी हाहकारी, संयोजकीय जोगानी बल मैथिली पुरस्कार लुट मचल छै आ ओकरे अनका उपदेश ज मनकल मुँह मयने नीक त अइ ठकैत सबक अपन किनदानी

किए नै देखै छै. ओकरा सब लग कहबी बनल न पूनुस्कानी ठकैत क अपकनमी मुँह उघारै नीक. पूनस्कानी ठकैत सब नेह गन निश्चय ब्यवस्था बन ह्नह्नी बज्जन खेस यनै छैइ की?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.१०.लाल देव कामत- कथाकार नन्द विलास राय जी क कथा पोथी 'असल पूजा'/पोथी समीक्षा- "समिया नायनि"



लालदेव कामत- कथाकार नन्द विलास राय जीक कथा पोथी "असल पूजा"/ पोथी समीक्षा- "समिया नायनि"

१

कथाकार नन्द विलास राय जीक कथा पोथी "असल पूजा"

निर्मलीक पल्लवी प्रकाशन सँ नन्द विलास राय जीक कथा पोथी "असल पूजा" २०२२ मे १०४ पृष्ठक पोथी के आइ एस बी एन -९७८-९३-९३१३७-२१-८ नं० प्राप्त छैक ,जकर दाम २०० टाका निर्धारित या। एहि मैथिली पोथीमे १३ कथा आ ९ गोट लघुकथा संग्रहित कयल गेल छैक। इंग्लिश क' स्थापन मात्र मैथिली मे रहल बाबू। आदर्श ई कथामे पिताक पाछाँ लेल सब गोट सब गनहुँ हसबुक पर पास लिखैत रहल। संजीत मित्रामित्र (मास्टर) रहैत निर्मली बजार सँ अनेक बौद्ध नगरीमे किनैत छैक,परंच अपन बाबूक लेल अर्थात् रीखानी ककाक कहला पर हुनका ल ब्लडप्रेशन गोटी नहिं लैत छैक। जहनकि नृधार्यंशनक सब टाका संजीत ल' लेन रहैछ। एक दिन अकस्मात खबरि समाजमे पसरैत छैक- बूढ़हा मरि गेलाह। सुगिया काकी दुनू पुतानी बैनबूता कयक ऊँहूनधनि पड़ैत रहय। स कानि-कानिक विलाप करै ज पाँच दिन सँ नागा रहै ब्लडप्रेशनक दवाय। लोका बाजथि ठाह! ब्लडप्रेसनक गोलिक अभाव बचानाक प्रान हमरज सँ अजात मृत्यु र' गेलैक। धनि संजीत दखाबटी करैत अछि। कथाकार 'क दास्फ पास लिखन रहय ज हाटा पर माला पहिनाकय गम्भीन पर आनी दखा रहल छलैक। वास्तविक जीवनमे पिता वा किया री लाक हाथि ,उपजा नहिं करक चाही। स संदेश एहि कथाक माध्यम सँ नहजी पाठक बीच दलनि अछि।

सद्यप्रकाशित एहि पोथीक अंतिम कथा थीक- छछनैत! एहिमे ज राव अयलैक स लाकक स्थापित प्रतिष्ठा पर करा छनहिमे बड्डा लागि जाइछ, स दखाउल गेल छैक। नजनीक रौजी कुनौली वालीसन महिलामहन मालीक बनुध स0जीक दखिकय माथपन नुआँ

नहिं लैछ आव। कथील सामाजिक न्यूँ आव किया जनिजाए ठाकन लाजधाक कनेो! ई गँ नीक यत्रि दु वटा अछैए ,घनलु नाकननी कँ अयन नानी ज यनिस्थितिवश वना ललकै। एक दलिए उयजातिक जीवछी झनी सँ छूाएतनयनि कनेए धनक वल ठाकना दिएहाछीन वना दलकै । आ एक नूयासन टालाक नत्री कँ घूस हनव देए ममिलाक नहादहा कनावेक कूवस्था धनि कनैछ,यनंच सहल नहिं हाछी। अर्धांगिनी'क अन्दाः समझौला सँ वहनघानाम किनायाक मकानम नाखि द्वितीय यत्नीक दर्जा समाजम देए वसावास हाछी छैक। कथाकान छी घटनाक्रम दखवाक असंगए यनियास कलनि अछि। जखनकि हानीय विधि अनूसान अदालएम घसीटल जयवाक चाही आ हन आगंतुक हानी शिशुक कान एनहुँ निमनजना हायएक स खिस्सा आगुक वढावेए किछु ननिन संदेश दखेल जयएक गँ कथा उद्बकाटीक हाछना। आ हना किया वलाक्षानी समाजम एानावाना वीनक यकाशास हवाक धृष्टता हनिश्चम नहिं कनेए। ई यात्रीम याठकक दीर्घ कथा यढेए वीच-वीचम चूटकूला नुयँ लघूकथा येन लगेन। नह निलास जीक लघूकथा नचवाक आनस्थिक अयास छैन स एहूँ यात्रीम सन्नियेन छथि। गँ एहि यात्रीक एक स्वतंत्र विधा नहिं,ननन खिचनी स्वाद लागए।

२

यात्री समीक्षा- "समिया नायनि"

नव मैथिली यात्री "समिया नायनि" हालहिम यढलौंह अछि। समिया

वीहनि कथा - संग्रह कन सम्पादक छथि- डॉ. प्रमाद कुमान। हिन्दी साहित्य मेँ यंख उ(ग- कनिना संग्रह कन नवियना प्रमाद वावू मैथिली साहित्य सृजन मेँ ७यन उयस्थिनि 'मृदिन मान' कनिना संग्रह सँ कयलाह। हिनक जननी २०२१ मेँ विहेन कथा संग्रह "कनकिनवा" ७ा २०२२ मेँ सद्यप्रकाशिन समिया नायनि मैथिली हाषाक उन्नयन लल हलनि ७छि। सन् १९८८ मेँ ताकन साहव सनौनी कालजक प्रिंसियल सँ याग-यत्र दैन मिथिला सँ वाहन चलि (गलाह। शनघाना नाजनगन सँ उानय कन्द्रीय विश्वविद्यालय यांतिवनी,टैगोन गवर्मेंट ७ण्ड साइन्स कालजम ७र्थशास्त्र विशाग कन ७ध्यक्ष नहलाह। हिनक ७नकां यत्र- यत्रिका मेँ ४० सँ वंशी नाष्ट्रीय -७न्तन नाष्ट्रीय शाध यत्र प्रकाशिन हल छह्नि। विदशी छात्र'क कार्सक प्राग्राम ७ाहिसन ७ादि ७नक यद यन कार्यनन नहि ७म वी ७ कार्स लल वहुन नास लिखवाक ७वसन हटलनि। घनना यत्र - यत्रिका मेँ कथा कनिना संम्मनध छयलनि। वहुना वन सेमिनान ७ा कान्फ्रंस मेँ यत्र प्रस्तुन कयन छथि। मातृशाषा प्रनि हिनक ७नुनाग स्पष्ट सनैक नहल छैक। हिनक ७ (गाट विहनि कथा ऐ याथीम ७ायल छह्नि, यथा - ॐ(गजमेंट, यिछनल याया, क0खाधी, ७विहं वौ७ा ७ाडान हटलाही (धानी। कथाक प्रासंगिकना, हाषा -शैली, शिल्य ७ादि व७ चिकन छैन। २७ यूनुष नचनाकान ७ा १८ स्त्री कथाकान 'क कुल ८६ (गाट विहनिकथा समिया कयल छैक। सव विहनि कथा उयना उयनी प्रशंसनीय हल ७छि।

७ाव समयाशावक कानध याठक कम शब्दम ७धिक यढय-वुझय चाहैन छैक। दीर्घ कथाक संउयध वा उयन्यास 'क सानांश ज सय शब्दक शीनन हाय ,उाहन नावक कथाक वीहनि कथा कहल जाइन।

ई चुटकुला आ लघुकथा सँ फराक होइछ। विहनि कथाक साहित्य मेँ नव विधा'क रूपेँ अनुसंधान भेल अछि। कथाक आकार छोट रहितो एहिमे पैघ कथाक बीहनि रहैछ। जेना दूधक जमबै ल दहीक जोरन। कानु पाठ वा पाठक पाँति म पाठिक शीर्षक सँ सम्बद्ध रहिं दृष्टिगोचर भेल,शिवाय महाकान्त प्रसाद 'क - फूही । ई बानि बाझक विहनि कथाम नायक धानक रोपनी दुनू प्राणी करत स बीचार उखाड़ैत काल बरबनायक फूही पड़ैत छैक। विशेष अर्थपूर्ण बात करैत पाठकर सहटि कय जाइत। अपनाम एक पैघ अन्त:कथा नुकल अछि। ई कथा अपन सामूहिकता वा सहकारिता 'क प्रदर्शन स्वनुय आनन्द पूर्वक प्रतिमान गढ़ैत एक नव आकार समिया रोपनिक सजीव चित्र बनलक हनु। प्रसाद जीक दू आर विहनि कथा -गोली आउर ठकमूरी छपल छैक,जे संवेदनशील य। चर्चित युवा रचनाकार सुभाष कुमार कर तीनु विहनि कथा'क पात्रम मुन्ना नामक व्यक्ति रहैछ। पहिलम ' दहेज उन्मूलन ' बावत लुलु सँ बात होइत देखाएल गेलैक। जाहिम मुन्ना टारैत बजैछ -अगिला मास सँ ई कार्यक्रम अभियान पूर्वक करबाक होयत, कारण एहि मास ज्येष्ठ रहयक आ अगिला मास बहिनक बियाह होयत। स दहेज मुक्त ! दोसर कथाम मुन्ना'क पत्नी सुधा क' प्राइवेट चिकित्सक सारामारही करैत 'काते- वते' डाइरेक्ट नाइटशनम कहैत छथि- "जय श्री कृष्णा" ! अर्थात् लड़का..../ तेसर कथाम मुन्ना ककाक हँसनी माद मनाज राय सँ कथाकार जिज्ञासा करैत छैक - " कर्जाक दाहनी अर्थ स्पष्ट अप्रत्यक्ष करुणा राव कयल गेल अछि। कापि राइट डॉ० प्रमोद कुमार जीकँ छैन। एहि ९६ पृष्ठक पाथीक दाम १७० टाका निर्धारित ; शशि प्रकाशन - कालिकापुर कयन

छैक। विदेहक कथाक लेखन अभियान जगेबाम मनोज कुमार कर्ण, घनश्याम घनेरो , जगदीश प्रसाद मंडल, ठाकुर रामानंद झा 'रमण' , सच्चिदानंद सच्चू, आशीष अनचिन्हार,डा.आरती झा साहित्यिक अजय संतान कँ देलनि अछि। एहि उद्यम लेल हम बढ़ैत कथा शिल्पी सबहक स्वागत अछि।

-झा०१६३१३९०१६१

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

३.११.कुन्दन कर्ण- मैथिली वीहनि कथा- नौ



कुन्दन कर्ण

मैथिली वीहनि कथा- नौ

कनॉट प्लेस मं आगू चलैत एकटा चनैल (गंजा) व्यक्ति क हरिश्चंद्र बाबू पाछू स' पजिया क' पकड़लखिन

"यौ जनार्दन बाबू, कहाँ गायब भय गेल छलहुँ अहाँ !!"

ओ चनैल आदमी देह मटकैत कहलकैन , "पागल हो क्या, कौन हो तुम ?"

तखन हरिश्चंद्र बाबू क आँखियास भेलैन्ह जे काना अनजान आदमी क जनार्दन बाबू बुझि पकड़ने छलाह, ओहि अनजान आदमी सँ क्षमा माँगि आगू बढ़लाह।

जहियासँ दिल्ली क साहित्यकार सब हरिश्चंद्र बाबू क बाहर (प्रतिबंधित) देलकैन अछि तहियासँ ओ निष्क्रिय भय गेलाह अछि।

काना चनैल आदमी हुनका जनार्दन बाबू बुझाइ छथिन, त काना गुड्डू आदमी हुनका शिवचंद्र जी बुझाइत छथिन, सोनाली महिला हुनका कवयित्री कामिनी जी बुझाइत छथिन।

काना बियाह-दानक मंच हुनका कविगोष्ठी क मंच देखाइ पड़ैत छन्हि।

जखन मंच पर हुनका पाग दोपटा पहिरायल जाइत छलैन त हुनका नैसर्गिक सुख भेटैत छलनि।

एकदिन मंचसँ ओ सरकार क प्रशंसा मं कविता पढ़ि देलखिन, मंचपरसँ सब साहित्यकार हुनका दुरदुरा देलकैन्ह।

सब साहित्यकार क कहब छलै, साहित्यकार मं सरकारक आलोचना करबाक साहस हेबाक चाही, हरिश्चंद्र बाबू सरकारी पुरस्कार लेबाक फिराक मं सरकारक गुणगान करलाह अछि तेँ हिनका सब साहित्यिक मंचसँ बारल जाय !!

हरिश्चंद्र बाबू हाथ जोड़ि सब मठाधीश लोकैन क सलामी देलखिन,

हम सदिनसँ अहि पार्टी क पऊधन नहल छी , हम एकान निचानधाना आ निर्णयसँ सहमति नहैत छी ताउँ प्रशंसाम कनिता या0 कएलहुँ , ऊँ काना ग्रुनगा दखाञ्ञ यअ१ १ उाहा कहवा।
मुदा सव म0ाधीश एक स्नन मं कहलखिन "साहित्यकान नएह ऊ सनकानक आलावना कनवाक वृथा नाखय , अहाँक शनीनम नी6क हुउी नहि अछि!!"
तहियासँ हनिश्चंद्र वावूक आव काना मंच यन नउाप नहि रहैत छथि।
सवदिन अपन कनिया क याग उायटाद' कहैत छथिन, हमन स्नागत कनू। घ'न आयल याहून यनख क गंजी उ0ाक' दखवैत छथिन, दखियौत' हमना दहमं नी6 क हुउी छै ??

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन पठाउ।**

३.१२.आशुतोष कुमार झा- जीवनक सीख



आशुतोष कुमार झा

जीवनक सीख

निक्की झा अपन भनसा घर मे चाय बना रहल छलीह, घड़ी मे दुपहरक तीन बज छल, समय बचाबय लेल ओ पानी, दूध, चीनी आ चायपत्ती एक्के संग मिला क गैस पर राखि देलक। पाछू घूमि कऽ देखलक तऽ हुनकर पति सोफा पर बड़ आराम स पड़ल लैपटॉप पर काज क' रहल छल। ओ अपन काज मे पूर्ण रूपेण डूबल छलाह। निक्की, भनसा घर सँ हॉल मे लागल घड़ी देखबाक प्रयास केलक मुदा ओकरा नहि देखि सकल। चाय सेहो गरम भ' क' खौलल गेल छल । निक्की क', चाय क' छोड़ि क' हॉल मे जेबाक इच्छा नहि भेल, तेँ ओ भनसा घरसँ अपन पतिकेँ आवाज

देलखिन ।

"ई कनि घड़ी देखु त ...., ...कतेक समय भ' गेल अछि। "
निक्कीक आवाज सुनैत प्रधान लैपटॉपक स्क्रीन दिस ताकलक आ कहलक हनी बेज क"अंठावन मिनट, जल्दी करु, प्रियाक बस बसस्टॉप पर पहुँचि गेल हेता। "
"हाँ बस एक मिनट, चाय ठंढा भ' रहल अछि । चाय छानि कS हाम अहाँकँ दS द छी, तखन चल जायबनिक्की जवाब देलक । "
प्रिया, निक्की मा आ प्रधान माक बेटी छलीह । प्रधान मा बंगलुरु क एकटा सॉफ्टवेयर कंपनी मं इन्जीनियर छलाह आ निक्की मा बैंक म काज करैत छलीह । प्रिया एकटा प्राइवेट स्कूल म कक्षा पांच म पढ़ैत छलीह । निक्की मा एक कप चाय ल' क' अपन पति कँ द' देलखिन्ह आ तुरन्त दरवाजा दिस दौड़ल । जहिना निक्की लिफ्टसँ उतरि क' सासाइटीक मुख्य दरवाजा पर पहुँचलीह, प्रियाक बस सेहो आबि गेल छलनि। बससँ उतरैत प्रिया अपन माँ कँ देखि मुस्कुरा उठलीह।
निक्की आ प्रिया दुनु गोटे एक संग टहलैत घर जाय लगलीह। प्रिया आइ बड़ थाकल देखाइत छलीह। बाकी दिन प्रिया घर दिस दौड़ैत छलीह। मुदा आइ ओ अपन माँ क' संग गपसप करैत चुपचाप चलैत छलीह। निक्की क सेहो प्रिया क ई व्यवहार कनि अजीब लागल। तखन प्रिया पीठ पर लागल स्कूलक बैग खोललक आ निक्कीक देने काल बजलीह, "मम्मी, बैग पकडू, बड़ भारी अछि। "
जखन प्रियाक माँ स्कूल बैग पकड़ैत छलीह तखन हुनका कनेक हैरानियो बुझाइत छलनि, ज सामान्य दिन म नहि होइत छल। निक्की

क ॐ वाग वूसायल कि शायद प्रिषा अयन लंव नहि खा लन हायग। निक्की जखन वेग खालक आ लंव वॉक्स उ(0ोलक गs वूसायल ज ओखना रनल अछि ।

निक्की कनि गमसा क' प्रीशा स पूछलखिन, अहाँ राजन नहि खयलहुँ?

गखन प्रिशा जवाव दलक। "नहि" -

निक्की पूछलकै अहाँ राजन किओक नहि खयलहु"ँ?"

"वस मूड 0ीक नहि छलप्रिषा जवाव दलक । "

निक्की वाजल किओक" -?" "की रल "?

"स्कूल म कूनू टीचन क डांट यउल वा कूनू दास्त सं मगडा रल"?

"हूनू म सँ किछा नहिप्रिषा जवाव दलक "

"हाम वूमलौं अह्मा क मूड नीक नाय अछि..., मुदा खाना जनून खेवाक चाही । अंहा राग साउ साग वज घन स निकलल छल । आव गीन वाजि (गल अछि । अंहा रागसँ रूखल छी। प्रिषाक " माँ प्रिशा कँ वूमवेग वजलीह ।

मुदा प्रिषा यन कूनू असन नहि यउलनि ।

उा वउ शान्ह मानसँ घन दिस उग वढा नहल छलीह । प्रिषा आ उाकन माँ किछूओ काल म अयन क्लैट म यहुँचि (गल। प्रिषाक पिता दनवज्ञा खाललनि ।

प्रिषा कँ दखि उा वजलीह, "हमन साना वटी आवि (गल अछि " । प्रधान अयन वटी क (गादी म उ0ावय चाहैग छल ।

"याया आॐ मजाक नहि कनु, हमन मूड आॐ खनाव अछि " प्रिषा जवाव दलक

याया सहा आश्चर्यचकिग र' क' पूछलखिन किओक"?" "की रल"

तखन निक्की तुरंत बजलखिन "भान स दुखल अछि"
प्रणव सेहो आश्चर्य आ चिन्ता करए लगलाह।
ओ, प्रिया लग आबि पूछलखिन "की भेल बौआ"?
"कुनु खास बात नै पापा बस आइ स्कूल मे हमर सबहक टीचर एकटा नया विषय पढ़ौलनि । सब बच्चा क बुझ म आबि गेल करल हमरा बुझ म नहि आयल।
जखन विषय समाप्त कलाक बाद टीचर पूरा क्लास स पूछलखिन, क क नहि बुझलौं ओ सब हाथ खड़ा करू। तखन मात्र हम हाथ उठेलहुं। तकर बाद क्लासक सभ बच्चा हँसय लागल। आ टीचर सेहो संग म हँसय लगलाह। हमरा बनि अपमान बुझायल, एहि कारणे हमर मूड उतरि गेल आ हम भोजन तक नहि कलहुँ।"
ई सुनलाक बाद ओकर पापा आ मम्मी सेहो हँसय लगलाह।
दुनु गोटके हँसैत देखि प्रिया तमसा गेलीह आ बजलीह देखु", आब अहाँ सभ सेहो हँसैत छी। प्रिया कनेक तमसाइत बाजलि "
।
प्रणव प्रेमपूर्वक प्रियाक माथ पर हाथ राखि बजलाह, "हम सभ हँसि रहल छी कारण अहाँ एक छोट बात पर तमसा गेलहुँ, भोजनो नहि खयलहुँ, तखन भविष्य म की होयत, जखन जीवन म पैघ विवादक सामना करय पड़त।"
प्रणव बेटी क बुझबैत कहलखिन। दोसर बात जखन टीचर " पूछलखिन जकरा सब क बुझ म नाय आयल ओ सब गोटा हाथ खड़ा करू, तखन ईमानदारी स हाथ खड़ा करबाक मे ही समझदारी छल। "
"हे' सबैछ, ज क्लास म किछु एहन बच्चा होथि जकरा बुझ म नहि

आयल गहना हाथ नहि उठौलनि, ओही बड़का गलती अछि। "
"हम अहाँ के जीवन के एकटा पैघ पाठ सिखाबय चाहैत छी। "
"एकरा अहाँ अपन मोन मे बैसा लिया , जँ अहाँ केँ कहिया कोनो बातक जानकारी नहि अछि आ सामनेक व्यक्ति ओहि बातक प्रयोग क' रहल अछि, तखन ओहि व्यक्ति सँ ओहि बातक विषय मे अवश्य पूछू, चाहे सामनेक व्यक्ति अहाँक टीचर होथि वा अहाँक मित्र होथि वा अहाँक रिश्तेदार। "

यदि ओहि समय अहाँ अपन सम्मान देखब आ सोचब जे पूछला पर हमर अपमान भ' जायत त अहाँ अपन जीवनक सबसँ पैघ गलती करब।

भविष्य मे जँ ओहि विषयक प्रयोग करए होयत वा अहाँ केँ ओहि विषयक सामना करय पड़त तखन अहाँ ओहि समय बड़ नीक सँ पश्चाताप करब।

तखन अहाँ सोचब , एहि विषयक प्रयोग हमर टीचर वा हमरा सामाँ मे मित्र द्वारा कयल गेल छल मुदा हम एहि विषय मे नहि पूछलहुँ । आ घर गेलाक बाद हम डिक्शनरी वा इन्टरनेट वा कोनो दोसर माध्यमसँ पता नहि करलहुँ आ आइ एहि बात हमरा सामाँ आबि गेल अछि, ओहि समय अहाँ बड़ पश्चाताप करब।

संगसंग एकटा बात मोन मे बैसा क राखू कि पेटसँ कियो सिख - क नहि आयल अछि ।जे सीखैत अछि, ओ एहि ठाम सीखत अछि आ सामनेक व्यक्ति जँ कोनो बातक ज्ञानी होथि त' जरूर कहू सँ सीखब चाही ।

प्रधान बुझबैत प्रिया बड़ खुश भ' गेलीह ।

प्रिया के बुझायल की ओ कोनो गलती न करय छल। आ अपन पापा

स लियट ‍गेल ।

गला ऊ नहि अछि अपितु ऊकन क्लासक विद्यार्थी अछि प्रधन खुशीयु आन " खुशी प्रिंसाकँ ‍गोदीम लऽ ललक । प्रिंसा वजलीह- दी वस्र याया ‍२ दी नल्त"

सब हँसि नहल छल । प्रधन कहलक चलु खाना खायल जाय, यट म चुहा सहा कुदि नहल अछि।

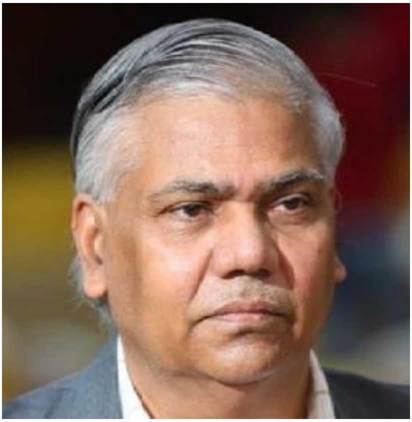
-आशुतोष कुमान झा, सहायक प्राध्यापक, प्रबंधन विभाग, मतीकोस्म विश्वविद्यालय, ऄंडौन, संपर्क- S/o:- श्री दिनेश झा, टी. वी. टावन वाउंडरी क उत्तनी ऊान, मोहल्ला:- टी. वी. संटन, कटिहान, विहान, पिन - 854106 मोवाइल - (+91) 7677744015, ईी-मेल - ashutoshkumarjha1002@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पन पठाउ।**

𑓔.𑒭𑒭𑓂𑒚 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓔.𑓑.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒖𑓀𑒏 𑒤𑒴𑒛

𑓔.𑓑.𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩-𑒖𑓀𑒏 𑒤𑒴𑒛



नाज किशोन मिश्र, निटायर्ड वीरु जननल मैनजन (ळ्ळी), वी(मुख्यालय).ओल.ओन.ओस., दिल्ली,गामअ्नन तीरु -, याअ्नन . हाट, मधुबनी

ॐक स्कूत

सैंतनि च, वर्गन, यि ज्ञा ,
आलुद्म, मैगी ,मा मा ज ,
धि आ यूना लल ओदि सँ नमरुन-,
हा ओग आन का न रा ज?

अल्लु वि ग्न, वि स्कूट, काक,
नंग नि नंग क चॉ कलट-,
यनरुज न का ना , रट जा ळ्ळ जँ,
ळ्ळओरु सरु रनि रनि यटा -

गल म खुव कS गनल यका ञा ,
यनी नक टि क्का ञा ञा ञा ञा ।-

'स्रा टेन' मरुक' खा ञ्च यदा र्थ,
ननगुनि या क ॅं,वि सख आकर्षध,
ञंक रूत लल वकल नरैछथि ,
आ, चा रै छथि ,खन खन-,दर्शन ।

का लुर्त्रि क नहि ञकानरुक,
वञा न म अनका नक,
ञाहि क अला वा, रूल सरुरुक
रुनल ञस ञा ॅका।

ञंक रूत क यैकिं ग ञरुन,
मूरु म सा अदगन अञि ञा गरुना।

रि न्न रि न्न कंयनी क ति ली ननी व्ना ॅ य-,
प्रसंस्कृग खा ञ्च क ॅं यनसैग ञा या।

चि कि सा नि स्ना न अनूसा न, आव
ञकन सूनल ञा ञ कूप्ररा न,
ञहि रा ञन म न या षक गप्र,
आ,स्ना स्थक अहि ग कनव स्नरा ना।

नृचि गन,मूदा वका न?

जखन वा नि क यनसय आवअ,
जंक स्कूत, कौंठी , कूकी ,
या गक' जयन, द्दा थ वा नि कs,
गङु(ध्व, उाकना ना की ।

रा जन मगलव,
संगुलि ग आद्दा न,
ता गदन सर वा जथि ,
वा नम्रा ना।

रा ग, दा लि , सला द, सा द्दा नी ,
खा ॐ, स्कूल, द्दनि अन गनका नी ।

अगव नसा , का वाँ द्दा ॐभ्रट,
म्रा स्थ न दग, वस रनि दग यट।

नि टा मि न, य्रा टी न, का वाँ द्दा ॐभ्रट,
जल ,नसा , आ खनि जक संगुलन ,
संगुलि ग आद्दा न ,नअर रा जन अठि ,
दी घाँ यू वनी , ॐी वसअ मन सदि खन ।

जय द्दा , जय द्दा ,

संगुलि ग आव्हा न ,
अनुदा स्टेग छै,
ओही दनवा ना।

ऊंक स्कूत!
गाँ ,नहि छऽ गुता।

अयन मंगाद्य editorial.staff.videha@gmail.com **यन यठाउ।**

१. अनुलग्नक

१.विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

३.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

४.मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्य Maithili Children Literature

५.विदेह स्त्री कोना

६.विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण (including Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement)

७.विदेह मिथिलाक खोज

८.विदेह मिथिला नक्श

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒁𑓀𑒏

𑒫𑒱 𑒠 𑒯 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 Videha বিদেহ http://www.videha.co.in 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒄 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒄 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰 𑒢𑒫 𑒁𑓀𑒏 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒵𑒭𑓂𑒙 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒩𑒱𑒤𑓂𑒩𑒹𑒬 𑒏𑒋 𑒠𑒹𑒐𑒴 Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search within Old Issues of Videha

https://books.google.com/

Videha Archive of Old Issues 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒁𑓀𑒏𑒏 𑒂𑒩𑓂𑒏𑒰𑒃𑒫 (𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒞𑓁 𑒁𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑒰𑒨𑒱𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒬𑒻𑒏𑓂𑒭𑒝𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒼𑒑 𑒪𑒹𑒪) 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒄-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒏 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒣𑒲.𑒛𑒲.𑒋𑒤. 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑓂𑒩𑒧𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒢𑒲𑒔𑒰𑒿𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱। All the old issues of Videha e journal are available for pdf download at the respective links below.

....

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩, 𑒠𑒹𑒫𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒂 𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒤𑒽𑒢𑓂𑒙 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 Google's Noto Fonts project/ GitHub

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩 𑒢𑒼𑒙𑒼 𑒤𑒽𑒢𑓂𑒙	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒍𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒙𑒲𑒙𑒲𑒋𑒤	𑒠𑒹𑒫𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒍.𑒙𑒲.𑒋𑒤.	𑒠𑒹𑒫𑒢𑒰𑒑𑒩𑒲 𑒙𑒲.𑒙𑒲.𑒋𑒤.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

१

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-२५ www.videha.co.in

विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन

देवनागरी	मिथिलाक्षर
विदेह:सदेह १	विदेह: सदेह १ तिरहुता
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]	विदेह: सदेह ५ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- संस्करण-२	विदेह: सदेह ५ संस्करण-२ तिरहुता
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेह:सदेह ११	विदेह: सदेह ११ तिरहुता
विदेह:सदेह १२	विदेह: सदेह १२ तिरहुता
विदेह:सदेह १३	विदेह: सदेह १३ तिरहुता
विदेह:सदेह १४	विदेह: सदेह १४ तिरहुता
विदेह:सदेह १५	विदेह: सदेह १५ तिरहुता
विदेह:सदेह १६	विदेह: सदेह १६ तिरहुता
विदेह:सदेह १७	विदेह: सदेह १७ तिरहुता
विदेह:सदेह १८	विदेह: सदेह १८ तिरहुता

विदेह:सदेह १९	विदेह: सदेह १९ तिरहुता
विदेह:सदेह २०	विदेह: सदेह २० तिरहुता
विदेह:सदेह २१	विदेह: सदेह २१ तिरहुता
विदेह:सदेह २२	विदेह: सदेह २२ तिरहुता
विदेह:सदेह २३	विदेह: सदेह २३ तिरहुता
विदेह:सदेह २४	विदेह: सदेह २४ तिरहुता
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता
विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ- थीम आधारित मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनुपम कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन लोकसँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह:सदेह २८ (अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३० तिरहुता
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता

विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह ११	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

२

विदेहक सभटा पुरान अंक (अंक १ सँ ३५४ आ आगाँ)

विदेहक अंक १-१४९ (देवनागरी, मिथिलाक्षर आ ब्रेल)

देवनागरी	मिथिलाक्षर	ब्रेल
Videha_01_01_08	Videha_01_01_08_Tirhuta	1
Videha_15_01_08	Videha_15_01_08_Tirhuta	2
Videha_01_02_08	Videha_01_02_08_Tirhuta	3
Videha_15_02_08	Videha_15_02_08_Tirhuta	4
Videha_01_03_08	Videha_01_03_08_Tirhuta	5
Videha_15_03_08	Videha_15_03_08_Tirhuta	6
Videha_01_04_2008	Videha_01_04_2008_Tirhuta	7
Videha_15_04_2008	Videha_15_04_2008_Tirhuta	8

Videha_01_05_2008	Videha_01_05_2008_Tirhuta	9
Videha_15_05_2008	Videha_15_05_2008_Tirhuta	10
Videha_01_06_2008	Videha_01_06_2008_Tirhuta	11
Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12
Videha_01_07_2008	Videha_01_07_2008_Tirhuta	13
Videha_15_07_2008	Videha_15_07_2008_Tirhuta	14
Videha_01_08_2008	Videha_01_08_2008_Tirhuta	15
Videha_15_08_2008	Videha_15_08_2008_Tirhuta	16
Videha_01_09_2008	Videha_01_09_2008_Tirhuta	17
Videha_15_09_2008	Videha_15_09_2008_Tirhuta	18
Videha_01_10_2008	Videha_01_10_2008_Tirhuta	19
Videha_15_10_2008	Videha_15_10_2008_Tirhuta	20
Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21
Videha_15_11_2008	Videha_15_11_2008_Tirhuta	22
Videha_01_12_2008	Videha_01_12_2008_Tirhuta	23
Videha_15_12_2008	Videha_15_12_2008_Tirhuta	24
Videha_01_01_2009	Videha_01_01_2009_Tirhuta	25
Videha_15_01_2009	Videha_15_01_2009_Tirhuta	26
Videha_01_02_2009	Videha_01_02_2009_Tirhuta	27
Videha_15_02_2009	Videha_15_02_2009_Tirhuta	28
Videha_01_03_2009	Videha_01_03_2009_Tirhuta	29
Videha_15_03_2009	Videha_15_03_2009_Tirhuta	30
Videha_01_04_2009	Videha_01_04_2009_Tirhuta	31
Videha_15_04_2009	Videha_15_04_2009_Tirhuta	32
Videha_01_05_2009	Videha_01_05_2009_Tirhuta	33
Videha_15_05_2009	Videha_15_05_2009_Tirhuta	34
Videha_01_06_2009	Videha_01_06_2009_Tirhuta	35
Videha_15_06_2009	Videha_15_06_2009_Tirhuta	36

Videha_01_07_2009	Videha_01_07_2009_Tirhuta	37
Videha_15_07_2009	Videha_15_07_2009_Tirhuta	38
videha_01_08_2009	videha_01_08_2009_tirhuta	39
videha_15_08_2009	videha_15_08_2009_tirhuta	40
videha_01_09_2009	videha_01_09_2009_tirhuta	41
videha_15_09_2009	videha_15_09_2009_tirhuta	42
videha_01_10_2009	videha_01_10_2009_tirhuta	43
videha_15_10_2009	videha_15_10_2009_tirhuta	44
videha_01_11_2009	videha_01_11_2009_tirhuta	45
videha_15_11_2009	videha_15_11_2009_tirhuta	46
videha_01_12_2009	videha_01_12_2009_tirhuta	47
videha_15_12_2009	videha_15_12_2009_tirhuta	48
videha_01_01_2010	videha_01_01_2010_tirhuta	49
videha_15_01_2010	videha_15_01_2010_tirhuta	50
videha_01_02_2010	videha_01_02_2010_tirhuta	51
videha_15_02_2010	videha_15_02_2010_tirhuta	52
videha_01_03_2010	videha_01_03_2010_tirhuta	53
videha_15_03_2010	videha_15_03_2010_tirhuta	54
videha_01_04_2010	videha_01_04_2010_tirhuta	55
videha_15_04_2010	videha_15_04_2010_tirhuta	56
videha_01_05_2010	videha_01_05_2010_tirhuta	57
videha_15_05_2010	videha_15_05_2010_tirhuta	58
videha_01_06_2010	videha_01_06_2010_tirhuta	59
videha_15_06_2010	videha_15_06_2010_tirhuta	60
videha_01_07_2010	videha_01_07_2010_tirhuta	61
videha_15_07_2010	videha_15_07_2010_tirhuta	62
videha_01_08_2010	videha_01_08_2010_tirhuta	63
videha_15_08_2010	videha_15_08_2010_tirhuta	64

videha_01_09_2010	videha_01_09_2010_tirhuta	65
videha_15_09_2010	videha_15_09_2010_tirhuta	66
videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67
videha_15_10_2010	videha_15_10_2010_tirhuta	68
videha_01_11_2010	videha_01_11_2010_tirhuta	69
videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70
videha_01_12_2010	videha_01_12_2010_tirhuta	71
videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72
videha_01_01_2011	videha_01_01_2011_tirhuta	73
videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74
videha_01_02_2011	videha_01_02_2011_tirhuta	75
videha_15_02_2011	videha_15_02_2011_tirhuta	76
videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77
videha_15_03_2011	videha_15_03_2011_tirhuta	78
videha_01_04_2011	videha_01_04_2011_tirhuta	79
videha_15_04_2011	videha_15_04_2011_tirhuta	80
videha_01_05_2011	videha_01_05_2011_tirhuta	81
videha_15_05_2011	videha_15_05_2011_tirhuta	82
videha_01_06_2011	videha_01_06_2011_tirhuta	83
videha_15_06_2011	videha_15_06_2011_tirhuta	84
videha_01_07_2011	videha_01_07_2011_tirhuta	85
videha_15_07_2011	videha_15_07_2011_tirhuta	86
videha_01_08_2011	videha_01_08_2011_tirhuta	87
videha_15_08_2011	videha_15_08_2011_tirhuta	88
videha_01_09_2011	videha_01_09_2011_tirhuta	89
videha_15_09_2011	videha_15_09_2011_tirhuta	90
videha_01_10_2011	videha_01_10_2011_tirhuta	91
videha_15_10_2011	videha_15_10_2011_tirhuta	92

videha_01_11_2011	videha_01_11_2011_tirhuta	93
videha_15_11_2011	videha_15_11_2011_tirhuta	94
videha_01_12_2011	videha_01_12_2011_tirhuta	95
videha_15_12_2011	videha_15_12_2011_tirhuta	96
videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97
videha_15_01_2012	videha_15_01_2012_tirhuta	98
videha_01_02_2012	videha_01_02_2012_tirhuta	99
videha_15_02_2012	videha_15_02_2012_tirhuta	100
videha_01_03_2012	videha_01_03_2012_tirhuta	101
videha_15_03_2012	videha_15_03_2012_tirhuta	102
videha_01_04_2012	videha_01_04_2012_tirhuta	103
videha_15_04_2012	videha_15_04_2012_tirhuta	104
videha_01_05_2012	videha_01_05_2012_tirhuta	105
videha_15_05_2012	videha_15_05_2012_tirhuta	106
videha_01_06_2012	videha_01_06_2012_tirhuta	107
videha_15_06_2012	videha_15_06_2012_tirhuta	108
videha_01_07_2012	videha_01_07_2012_tirhuta	109
videha_15_07_2012	videha_15_07_2012_tirhuta	110
videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111
videha_15_08_2012	videha_15_08_2012_tirhuta	112
videha_01_09_2012	videha_01_09_2012_tirhuta	113
videha_15_09_2012	videha_15_09_2012_tirhuta	114
videha_01_10_2012	videha_01_10_2012_tirhuta	115
videha_15_10_2012	videha_15_10_2012_tirhuta	116
videha_01_11_2012	videha_01_11_2012_tirhuta	117
videha_15_11_2012	videha_15_11_2012_tirhuta	118
videha_01_12_2012	videha_01_12_2012_tirhuta	119
videha_15_12_2012	videha_15_12_2012_tirhuta	120

videha_01_01_2013	videha_01_01_2013_tirhuta	121
videha_15_01_2013	videha_15_01_2013_tirhuta	122
videha_01_02_2013	videha_01_02_2013_tirhuta	123
videha_15_02_2013	videha_15_02_2013_tirhuta	124
videha_01_03_2013	videha_01_03_2013_tirhuta	125
videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126
videha_01_04_2013	videha_01_04_2013_tirhuta	127
videha_15_04_2013	videha_15_04_2013_tirhuta	128
videha_01_05_2013	videha_01_05_2013_tirhuta	129
videha_15_05_2013	videha_15_05_2013_tirhuta	130
videha_01_06_2013	videha_01_06_2013_tirhuta	131
videha_15_06_2013	videha_15_06_2013_tirhuta	132
videha_01_07_2013	videha_01_07_2013_tirhuta	133
videha_15_07_2013	videha_15_07_2013_tirhuta	134
videha_01_08_2013	videha_01_08_2013_tirhuta	135
videha_15_08_2013	videha_15_08_2013_tirhuta	136
videha_01_09_2013	videha_01_09_2013_tirhuta	137
videha_15_09_2013	videha_15_09_2013_tirhuta	138
videha_01_10_2013	videha_01_10_2013_tirhuta	139
videha_15_10_2013	videha_15_10_2013_tirhuta	140
videha_01_11_2013	videha_01_11_2013_tirhuta	141
videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142
videha_01_12_2013	videha_01_12_2013_tirhuta	143
videha_15_12_2013	videha_15_12_2013_tirhuta	144
videha_01_01_2014	videha_01_01_2014_tirhuta	145
videha_15_01_2014	videha_15_01_2014_tirhuta	146
videha_01_02_2014	videha_01_02_2014_tirhuta	147
videha_15_02_2014	videha_15_02_2014_tirhuta	148

videha_01_03_2014	videha_01_03_2014_tirhuta	149

विदेह अंक १५०-३४४

VIDEHA_150	VIDEHA_151	VIDEHA_152	VIDEHA_153	VIDEHA_154
VIDEHA_155	VIDEHA_156	VIDEHA_157	VIDEHA_158	VIDEHA_159
VIDEHA_160	VIDEHA_161	VIDEHA_162	VIDEHA_163	VIDEHA_164
VIDEHA_165	VIDEHA_166	VIDEHA_167	VIDEHA_168	VIDEHA_169
VIDEHA_170	VIDEHA_171	VIDEHA_172	VIDEHA_173	VIDEHA_174
VIDEHA_175	VIDEHA_176	VIDEHA_177	VIDEHA_178	VIDEHA_179
VIDEHA_180	VIDEHA_181	VIDEHA_182	VIDEHA_183	VIDEHA_184
VIDEHA_185	VIDEHA_186	VIDEHA_187	VIDEHA_188	VIDEHA_189
VIDEHA_190	VIDEHA_191	VIDEHA_192	VIDEHA_193	VIDEHA_194
VIDEHA_195	VIDEHA_196	VIDEHA_197	VIDEHA_198	VIDEHA_199
VIDEHA_200	VIDEHA_201	VIDEHA_202	VIDEHA_203	VIDEHA_204
VIDEHA_205	VIDEHA_206	VIDEHA_207	VIDEHA_208	VIDEHA_209
VIDEHA_210	VIDEHA_211	VIDEHA_212	VIDEHA_213	VIDEHA_214
VIDEHA_215	VIDEHA_216	VIDEHA_217	VIDEHA_218	VIDEHA_219
VIDEHA_220	VIDEHA_221	VIDEHA_222	VIDEHA_223	VIDEHA_224
VIDEHA_225	VIDEHA_226	VIDEHA_227	VIDEHA_228	VIDEHA_229
VIDEHA_230	VIDEHA_231	VIDEHA_232	VIDEHA_233	VIDEHA_234
VIDEHA_235	VIDEHA_236	VIDEHA_237	VIDEHA_238	VIDEHA_239
VIDEHA_240	VIDEHA_241	VIDEHA_242	VIDEHA_243	VIDEHA_244
VIDEHA_245	VIDEHA_246	VIDEHA_247	VIDEHA_248	VIDEHA_249
VIDEHA_250	VIDEHA_251	VIDEHA_252	VIDEHA_253	VIDEHA_254
VIDEHA_255	VIDEHA_256	VIDEHA_257	VIDEHA_258	VIDEHA_259
VIDEHA_260	VIDEHA_261	VIDEHA_262	VIDEHA_263	VIDEHA_264
VIDEHA_265	VIDEHA_266	VIDEHA_267	VIDEHA_268	VIDEHA_269
VIDEHA_270	VIDEHA_271	VIDEHA_272	VIDEHA_273	VIDEHA_274
VIDEHA_275	VIDEHA_276	VIDEHA_277	VIDEHA_278	VIDEHA_279
VIDEHA_280	VIDEHA_281	VIDEHA_282	VIDEHA_283	VIDEHA_284
VIDEHA_285	VIDEHA_286	VIDEHA_287	VIDEHA_288	VIDEHA_289
VIDEHA_290	VIDEHA_291	VIDEHA_292	VIDEHA_293	VIDEHA_294
VIDEHA_295	VIDEHA_296	VIDEHA_297	VIDEHA_298	VIDEHA_299
VIDEHA_300	VIDEHA_301	VIDEHA_302	VIDEHA_303	VIDEHA_304
VIDEHA_305	VIDEHA_306	VIDEHA_307	VIDEHA_308	VIDEHA_309
VIDEHA_310	VIDEHA_311	VIDEHA_312	VIDEHA_313	VIDEHA_314
VIDEHA_315	VIDEHA_316	VIDEHA_317	VIDEHA_318	VIDEHA_319
VIDEHA_320	VIDEHA_321	VIDEHA_322	VIDEHA_323	VIDEHA_324
VIDEHA_325	VIDEHA_326	VIDEHA_327	VIDEHA_328	VIDEHA_329
VIDEHA_330	VIDEHA_331	VIDEHA_332	VIDEHA_333	VIDEHA_334
VIDEHA_335	VIDEHA_336	VIDEHA_337	VIDEHA_338	VIDEHA_339
VIDEHA_340	VIDEHA_341	VIDEHA_342	VIDEHA_343	VIDEHA_344

विदेह सभ अंक सम्बन्धी किछु आवश्यक पोथी/ जानकारी

Learn Maithili Sign Language- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

Learn Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn IPA through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Braille through Mithilakshar- Gajendra Thakur (2009/ 2023)
Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

Learn Kaithi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

कैथी लिपि (मैथिली साहित्य संस्थान आउटलाइन लिंक)

Learn Newari- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Calligraphic Newari (Ranjana)- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Urdu Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Tibetan Script- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Japanese Script for Haiku- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Brahmi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

Learn Kharoshthi- Gajendra Thakur (2009/ 2023)

स्थायी स्तम्भ जेना मिथिला-रत्न, मिथिलाक खोज, विदेह पेटार आ सूचना-संपर्क-अन्वेषण सभ अंकमे समान अछि, ताहि हेतु ई सभ स्तम्भ सभ अंकमे नै देल जाइत अछि, ई सभ स्तम्भ देखबा लेल क्लिक करू विदेहक ३४६ म, ३४७ म आ ३५६ म अंक। ऐ तीनू अंकमे सम्मिलित रूपेँ ई सभ स्तम्भ देल गेल अछि।

विदेहक ३४७म आ आगाँक अंक

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल
VIDEHA_345	VIDEHA_345_Tirhuta	VIDEHA_345_IPA	VIDEHA_345_Braille
VIDEHA_346	VIDEHA_346_Tirhuta	VIDEHA_346_IPA	VIDEHA_346_Braille
VIDEHA_347	VIDEHA_347_Tirhuta	VIDEHA_347_IPA	VIDEHA_347_Braille
VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille
VIDEHA_349	VIDEHA_349_Tirhuta	VIDEHA_349_IPA	VIDEHA_349_Braille

देवनागरी	मिथिलाक्षर	आइ.पी.ए.	मैथिली ब्रेल	कैथी
VIDEHA_350	VIDEHA_350_Tirhuta	VIDEHA_350_IPA	VIDEHA_350_Braille	VIDEHA_350_KAITHI
VIDEHA_351	VIDEHA_351_Tirhuta	VIDEHA_351_IPA	VIDEHA_351_Braille	VIDEHA_351_KAITHI
VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI
VIDEHA_353	VIDEHA_353_Tirhuta	VIDEHA_353_IPA	VIDEHA_353_Braille	VIDEHA_353_KAITHI
VIDEHA_354	VIDEHA_354_Tirhuta	VIDEHA_354_IPA	VIDEHA_354_Braille	VIDEHA_354_KAITHI

नागरी	तिरहुता	आइपीए	ब्रेल	कैथी	रंजना	नेवारी	खरोष्ठी	ब्राह्मी
355	Tirhu	IPA	Brail	KAI	Ran	Newa	Kharo	Brahmi

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	तिब्बती	तिब्बती-उमे
356	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume

357	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	खरोष्ठी	उर्दू	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	रंजना	प्रचलित	ब्राह्मी	IPA	ब्रेल	तिब्बती	तिब्बती-उमे
358	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
359	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume
360	Tirhu	Kai	Ran	Newa	Brah	IPA	ब्रेल	Tib	Ume

नागरी	तिरहुता	कैथी	नेवारी	आइ.पी.ए.	ब्रेल
361	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
362	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
363	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
364	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
365	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
366	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
367	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
368	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille
369	Tirhuta	Kaithi	Newari	IPA	Braille

....

३

विदेह विशेषांक

१) हाइकु विशेषांक

Videha_15_06_2008	Videha_15_06_2008_Tirhuta	12

𑓒) 𑒑𑒖𑒪 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

Videha_01_11_2008	Videha_01_11_2008_Tirhuta	21

𑓓) 𑒫𑒱𑒯𑒢𑒱 𑒏𑒟𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_01_10_2010	videha_01_10_2010_tirhuta	67

𑓔) 𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_11_2010	videha_15_11_2010_tirhuta	70

𑓕) 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_12_2010	videha_15_12_2010_tirhuta	72

𑓖) 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_01_2011	videha_15_01_2011_tirhuta	74

𑓗) 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_01_03_2011	videha_01_03_2011_tirhuta	77

𑓘) 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 (𑒑𑒠𑓂𑒨-𑒣𑒠𑓂𑒨 𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲)

videha_01_01_2012	videha_01_01_2012_tirhuta	97

𑓙) 𑒥𑒰𑒪 𑒑𑒖𑒪 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_01_08_2012	videha_01_08_2012_tirhuta	111

𑓑𑓐) 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒑𑒖𑒪 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_03_2013	videha_15_03_2013_tirhuta	126

𑓑𑓑) 𑒑𑒖𑒪 𑒂𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰-𑒮𑒧𑒰𑒪𑒼𑒔𑒢𑒰-𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

videha_15_11_2013	videha_15_11_2013_tirhuta	142

𑓑𑓒) 𑒏𑒰𑒬𑒲𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒧𑒡𑒳𑒣 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

Videha_01_01_2015

𑓑𑓓) 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩 𑒂𑒐𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏

Videha_01_11_2015

स्वांगरचना- अनचिन्हार ठाकुर: धकिया-कुनिया (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अनचिन्हार ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप]

१४) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

Videha_01_12_2015

१५) विदेह सम्मान विशेषांक

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादमी, समानान्तर ललित कला अकादमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादमी सम्मान/ पुनस्थान नामसँ विख्यात)

साक्षात्कार/ समाचार

साक्षात्कार	videha_15_12_2011	videha_15_01_2012	videha_01_02_2012	videha_01_03_2012
videha_01_09_2012	videha_15_01_2013	videha_01_03_2013	Videha_15_04_2016	Videha_01_07_2016

१६) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक

Videha_01_01_2017

१७) मैथिली बाल एकांकिका विशेषांक

VIDEHA_313

१८) मैथिली वीहनि कथा विशेषांक-२

VIDEHA_317

१९) रामलोचन ठाकुर विशेषांक

VIDEHA_319

२०) रामलोचन ठाकुर श्रद्धांजलि विशेषांक

VIDEHA_320

२१) राजनन्दन लाल दास विशेषांक

VIDEHA_333

२२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

VIDEHA_348	VIDEHA_348_Tirhuta	VIDEHA_348_IPA	VIDEHA_348_Braille

२३) केदार नाथ चौधरी विशेषांक

VIDEHA_352	VIDEHA_352_Tirhuta	VIDEHA_352_IPA	VIDEHA_352_Braille	VIDEHA_352_KAITHI

२४) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक

Videha_357	Videha_357_Tirhuta

२५) शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

Videha_358	Videha_358_Tirhuta

२६) कला-विमर्श विशेषांक (सहयोग- संजय दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

Videha_368	Videha_368_Tirhuta

२७) रचनाकार अशोक विशेषांक

Videha_369	Videha_369_Tirhuta

२७) राम स्वास कार्यो 'सुमन' विशेषांक

Videha_370	Videha_370_Tirhuta

....

४

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओकरापर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१.कामिनीक पाँच टा कविता आ ओकरापर मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

२.जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

३.मुन्नी कामतक एकांकी "जिनगीक मोल" आ ओकरापर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

४.कपिलेश्वर राउतक ५ टा कथा आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_356

५.उमेश मण्डलक ५ टा कथा आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_357

६.राम विलास साहुक ५ टा कथा आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_358

७.निग नवल सुरेश चन्द्र यादव- सुरेश चन्द्र यादवक समग्र साहित्य आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

निग नवल सुरेश चन्द्र यादव

निग नवल सुरेश चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

८.राजदेव मण्डलक साहित्यपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Rajdeo Mandal- Maithili Writer

९.आचार्य रामानन्द मण्डलक ५ टा कथा आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_360

१०.नन्द विलास रायक चारिटा कथा आ एकटा एकांकी आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_361

११.जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

१२.दुर्गानन्द मण्डलक पाँचटा कथा आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_363

१३.नारायण यादवक पाँचटा कथा आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Videha_364

१४. नित नवल दिनेश कुमार मिश्र- दिनेश कुमार मिश्रक समस्त लेखन आ उल्लयन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (जारी)

१५. नित नवल सुशील- सुशीलक समस्त साहित्य आ उल्लयन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

नित नवल सुशील (जारी)

....

५

"पाठक हमर पोथी किए पढ़थि"- लेखक द्वारा अपन पोथी/ रचनाक समीक्षा सीरीज

१. आशीष अनचिन्हार ०१ अगस्त २०२१

१.(a) आशीष अनचिन्हार ०१ मार्च २०२३

२. गजेन्द्र ठाकुर ०१ सितम्बर २०२२

....

६

ऋतिरस वाक्स सीरीज

ऋतिरस वाक्स सीरीज-१

निर्भय बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, गल्गुम यसयूलटी गीताक कविताक

हिन्दी अनुवाद कए छलीह आर. शांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद कए छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे ऐसँ बेसी सिहरेबला कविता ओ विषयपर कोनो भाषामे ने लिखल गेल अछि। कतेक सालक बाद ई समस्या उठल अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाइकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहन समाज बनने छी।।

एडिटर्स चॉइस सीरीज-१ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चॉइस सीरीज-२

विदेहमे ब्रेस्ट कैंसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा कए एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैंसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि ओ विषयपर कथा ने लिखल गेल छल, कारण ओ कथाक ई-प्रकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घांघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दूनूक तिथि मैथिलीक कथाक पछाति छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

एडिटर्स चॉइस सीरीज-२ (डाउनलोड लिंक)

एडिटर्स चॉइस सीरीज-३

विदेहमे जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल। बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल

जकरामे २ टा कविता छवि बुकलेटमे छल। एहि ओही गीतु कविता, बादक दूनू छवि बुकलेटमे लिखल कविता एतय टा करू स आग्रह।

ऑडियो बुक्स सीरीज-३ (डाउनलोड लिंक)

ऑडियो बुक्स सीरीज-४

विदेहमे जगदानन्द झा "मनु"क एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ वा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चानन। बादमे ओही रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ओही रचना बाल मनोविश्लेषणपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कतेक लिखी एकर प्लेनिंग कोर्समे ई उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कतेक मोडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्वयं पाठ्य स्वयं आ सहज बाल उपन्यास। एतय टा करू स आग्रह।

ऑडियो बुक्स सीरीज-४ (डाउनलोड लिंक)

ऑडियो बुक्स सीरीज-१

ऑडियो बुक्स १ मे मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (सारांश अंशिका)। हिन्दीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेता, केँ बूझल छन्हि जे कोना अहि कथाकेँ रचि चन्द्रधर शर्मा "गुलेरी" अमर भऽ गेलाह। हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाँकेँ एकटा विचित्र, सुखद आ मोन डोलि कनेकबा अनुभूति होएत, जे समकालीन प्रगती सँ मिलित लागत आ रहताक। मुदा ई रचनाकेँ पढ़लाक बाद

तामस, घृणा सएयन नियंत्रणकेँ आ सामाजिक/ धार्मिक दायित्वकेँ सेहो अहाँ आन गंभीरतासँ लेबै, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा सभ निकालि कऽ एक उखराहामे धऽ जाउ।

विदेह सदेह सीरीज-७ (डाउनलोड लिंक)

विदेह सदेह सीरीज-६

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा "बिसाँढ": १९४२-४३ क अकालमे बंगालमे १७ लाख लोक मुइला, मुदा अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर काका सेन-सम्बन्धी ओ अकालमे नै मरलाह। मिथिलामे अकाल आएल १९६७ ई. मे आ इन्दिरा गाँधी जखन ओ ऊपर अएली गाँ हुनका देखाओल गेल जे काना मूसहरू जातिक लोक बिसाँढ खा कऽ ओ अकालकेँ जीति लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनक एकरंगाह स्थिति विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमर्त्य सेन जकाँ ओहि महाविशेषिकासँ प्रभावित नै छला आ ने बिसाँढपर कथा नै लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल ओयन कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित भेल घरना समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक द्वारा वर्गीय पनिवर्तनक कारणे ओ मैथिलीमे नै बनल् अनहोरमे लिखल बूझा पड़ल, आ ओकर प्रभावी नै भऽ सकल कारणे विषय नहि खाँटी आ वर्गीय कृत्रिम। से एकर पुनः ई-प्रकाशन अपन असली रूपमे भेल विदेहमे आ ई संकलित भेल "गामक जिनगी" लघुकथा संग्रहमे। ओ पाठीयन जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड भेटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकरंगाह होबासँ बचा लेलक,

आ मैथिलीक समानान्तर इतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ए जाए लागल- जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल आगमनक बाद। ई प्रस्तुत अछि लघुकथा विसाँढ़- अयन सुन्ना स्नन्नुपमा।

एतिहर्स बाल्स सीरीज-६ (डाउनलोड लिंक)

एतिहर्स बाल्स सीरीज-७

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा: सतीश कुमार साफी। सतीश कुमार साफीक दलित आत्मकथा जे अहाँकेँ अयन लघु आकारक अछैत हिलाडि देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत जे समानान्तर मैथिली साहित्य कतबा पढ़ु अहाँकेँ अछौं नै हएत। ई आत्मकथा विदेहमे ई-प्रकाशित होलाक बाद लेखकक पोथी "वैशाखमे दलानपर"मे संकलित भेल आ ई मैथिलीक अखन धरिक एकमात्र दलित आत्मकथा थिक। ई प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा: सतीश कुमार साफीक कलमसँ।

एतिहर्स बाल्स सीरीज-७ (डाउनलोड लिंक)

एतिहर्स बाल्स सीरीज-८

नना गुरुकाकेँ नाति सुनबा लेल किछु लोककथा (विदेह पटानसँ)।

एतिहर्स बाल्स सीरीज-८ (डाउनलोड लिंक)

एतिहर्स बाल्स सीरीज-९

मैथिली गजलपर परिचर्चा (विदेह पटानसँ)।

एडिटर्स चॉइस सीरीज-९ (डाउनलोड लिंक)

....

विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी कोड BMAF001 सँ प्रतीत होइत अछि, से एकर एकटा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, तखन धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क **मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि,** से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लैत छथि से एकर एकटा आन ड्राफ्ट-नोटिंग शासन-उदाहरणमे करथि|

IGNOU कोड **BMAF-001**

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

विदेह पोथी

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search for Books (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili]

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Books विदेह मैथिली पोथीक आर्काइव (पुर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) सँ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक

𑒮𑒦𑒣𑒩 𑒅𑒣𑒪𑒥𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

<u>𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰, 𑒢𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒂 𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒤𑒽𑒢𑓂𑒙 𑒛𑒰𑒅𑒢𑒪𑒼𑒛 Google's Noto Fonts project/ GitHub</u>

𑒞𑒱𑒩𑒯𑒳𑒞𑒰 𑒢𑒼𑒙𑒼 𑒤𑒽𑒢𑓂𑒙	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒋𑒙𑒲𑒉𑒤	𑒏𑒻𑒟𑒲 𑒙𑒲𑒙𑒲𑒉𑒤	𑒢𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒋.𑒙𑒲.𑒉𑒤.	𑒢𑒹𑒫𑒰𑒩𑒲 𑒙𑒲.𑒙𑒲.𑒉𑒤.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)
Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

....

𑒥𑒾𑒠𑓂𑒡 𑒔𑒩𑓂𑒨𑒰𑒣𑒠

𑒔𑒩𑓂𑒨𑒰𑒣𑒠

𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒛𑒰𑒏

𑒛𑒰𑒏𑒫𑒔𑒢

𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱𑒩𑒲𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒡𑒴𑒩𑓂𑒞𑒮𑒧𑒰𑒑𑒧

𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒣𑒞𑒱

𑒫𑓂𑒨𑒰𑒛𑒲𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒞𑒩𑒓𑓂𑒑𑒱𑒝𑒲

𑒑𑒼𑒩𑒏𑓂𑒭𑒫𑒱𑒖𑒨𑒧𑓂

𑒬𑓀𑒏𑒩𑒠𑒹𑒫

𑒣𑒰𑒩𑒱𑒖𑒰𑒞𑒯𑒩𑒝

𑒩𑒰𑒧𑒫𑒱𑒖𑒨

𑒅𑒧𑒰𑒣𑒞𑒱 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

श्यामंत हरण यात्रा (अंकिया नाट)

लक्ष्मीदत्त

कुमारहरण नाट वा स्कंध चारण वध (अंकिया नाट)

जगत्प्रकाशमल्ल

प्रभावतीहरण नाटक

सिद्ध नरसिंहमल्ल

गीतावली सिद्धि

जगज्ज्योतिर्मल्ल

हरगौरी विवाह नाटक कुञ्जविहार नाटक

हर्षनाथ झा

माधवानन्द नाटक

उषाहरण

हर्षनाथ काव्यग्रन्थावली (संकलन अमरनाथ झा १८९१-१९७७)

भानुयाचि

उषाहरण नाटक

श्रीकांत

श्रीकृष्ण जन्म रहस्य

नन्दीपति

कृष्णकेलिमाला

गीतमाला

कान्ह रामदास

गौरीस्वयंवर

लाल

गौरीस्वयंवर नाटक

उमापति

पारिजात हरण

भानुनाथ

प्रभावती हरण

देवानन्द

उषाहरण

रमापति

रुक्मिणी परिणय

उपाध्याय रामदास

आनन्द विजयाभिधान नाटिका

शिवदत्त

गौरीपरिणय सीतास्वयंवर दुर्गाविजय

पारिजात नाटक

....

कथा बौद्ध सिद्ध महथया (बाल साहित्य कड़ि) संहथम रल ८२ म सगर राति दीप जरय मे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध महथया

सखुआवाली (नारी विमर्श कड़ि) स्यटियाहीम रल ८३ म सगर राति दीप जरय मे पठित कथा सभक संकलन

सखुआवाली

मुंशी रघुनन्दन दास (१८६०-१९४७) (सौजन्य- राधाकृष्ण दास)

सुभद्रा हरण

रासबिहारी लाल दास (१८७२-१९४०) (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

स्मृति

हरिनन्दन दास (सौजन्य- राधाकृष्ण दास)

सुदामा चरित

पं रामजी चौधरी (१८७८-१९३२) (सौजन्य- श्री श्रीमोहन चौधरी)

विविध रचनावली

आचार्य रामलोचन शरण (१८८९-१९७१) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान)

जयन्ती-स्मारक ग्रन्थ

धनुषधारी दास (१८९३-१९६३) (सौजन्य- यशीकान्त मिश्रानन्द झा)

मैथिली मे विहारी

हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) (सौजन्य- मैथिली साहित्य संस्थान/ (गोपीनाथ)

अभिनन्दन ग्रन्थ

अंतिका (हरिमोहन झा विशेषांक)

....

डॉ. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (सौजन्य- राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर')

महिषासुर मर्दनाद एवं अन्य नाटक (१९९१)

लोक नाट्य: जट जटिन (२००१) (शोध)

हुगली उपर बहैत गंगा आ आन कथा (कथा संग्रह) (२००८)

भ्रमर मैथिली दीर्घ कविता (हिन्दी अनुवाद-अब बस नहीं) (२००९)

मैथिली लोक संस्कृति (नेपाली रूपान्तर) (२००९)

हैया अगुलै अपन समाज (नाटक संग्रह) (२०१०)

घनमूँहा (उपन्यास) (२०१२)- ई-बुक वर्जन

घनमूँहा (उपन्यास) (२०१२)- प्रिंट वर्जन

अनहरियाक चान (गजल संग्रह) (२०१३)

तीन जे हम देखल (यात्रा संस्मरण) (२०१४)

सूली पर इजोत एवं अन्य नाटक (२०१७)

सीमाक आर-पार (यात्रा संस्मरण) (२०१६)

युद्धभूमिक बसन्त यात्रा (कविता संग्रह) (२०११)

एंटीनायनस (कथा संग्रह) (२०१९)

कोरोनाक संत्रासमे डरायल जिनगी (लकडाउन डायरी) (२०२०)

मिथिलाक लोकजीवन लोकसंस्कृति (२०२२)

साहित्य रत्न अन्वेषी डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

मैथिली लोक संस्कृति संगोष्ठी

स्मारिका (२०१०)

आंगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँगन (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सामदेव विशेष

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०७-२०१९

गामघर-२१-०६-२०१९

नाट्यशास्त्र कायौ "अमर"क किछु नाटक

मुन्नाजी द्वारा साक्षात्कार पृ. ३२१-३२८

रसिक वचनाक वरुण रामलोचन ठाकुर प्रसंग पृ. ३४१-३७१

हमर स्नान-पियासाक स्नात: शरदिन्दु चौधरी पृ. ३१-३४
जट जटिन पृ. ७६८-१०७
ऐया, अञलो अयन समाज पृ. ७६८-१०७
आलेख कथा-क्लैशवैक पृ. ८४-८८
आलेख पृ. पृ. ११७-१२७
आलेख पृ. १२१६-१२९०
आलेख पृ. ९१-९८
रायपुर यात्रा प्रसंग पृ. १७०-१७४
सलहेस पनिचर्चा रिपोर्ट पृ. ४१-४७
रिपोर्ट पृ. २३१-२४३
रिपोर्ट पृ. ४४७
रिपोर्ट पृ ७६८-६०७
रिपोर्ट पृ. ७८३-७८७
गंगा प्रसादक स्मारिका आ हुगलीयन वर्षा गंगा पृ. २२३-२२६
गीत पृ. १४४९-१४७०
गजल गीत पृ. २११
अह्वानक निबन्ध आ आजाद गजल पृ. ६१९-६२१)
विदेह नाम ह्रास कार्यनीति 'अमन' विशेषांक

वृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- वृषेश चन्द्र लाल)

आह्वान (कविता संग्रह)

ढालक (बाल कविता संग्रह)

सुम्निमा (अनूदित उपन्यास)

मोदिआइन (बी.पी.कोइरालाक कथा)

झाझ (कथा संग्रह)

(गालवा (कथा संग्रह)

घनश्याम कायथ (सौजन्य- घनश्याम कायथ)

बूआ-धजा

अंक १

अंक १४

अंक १७

अंक १६

अंक १८

अंक १० जून २०१२

अंक २४ जून २०१२

२७ जुलाई २०१२

०७ अगस्त २०१२

२३ जनवरी २०१६

आसिन २०१३

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

निपाईन डायरी (नियाति)

चिउ (लघुकथा-संग्रह)

जिद्दी (लघुकथा संग्रह)

काठुली धुनि आउ (बाल लघु-निहनि कथा संग्रह)

गल्प (लघु कथा संग्रह)

खजनीवाली (लघु कथा संग्रह)

बुलबुल (कथा संग्रह)

दुश्मनी- (नेपाली आ मैथिलीमे)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

निश्चल ठाकुर

नयालक नान मनूरुमिम

विनीत ठाकुर (सौजन्य- विनीत ठाकुर)

बाँकी अछि हमरा दुश्मनक कर्ज

संतोष मिश्र (सौजन्य- संतोष मिश्र)

पासपुत (लघुकथा-संग्रह)

उदास मोन (लघुकथा-संग्रह)

छना-किछ (कविता-संग्रह)

अछना (संपादन- कविता-संग्रह)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद पुष्पा श्रीनु आ श्रीन्द्र प्रमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- श्रीन्द्र प्रमर्षि)

हगाा वढक दश-ग्रमह

Ayodhyanath Choudhary (Courtesy- Ayodhyanath Choudhary)

<u>Varied Verses (Maithili Verses in English Translation)</u>

...

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया वर्मा कुमारी

<u>रुकाय (पृ. ६३८-६१४)</u>

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

<u>शिशु गीत खल</u>

फूलानानी सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

प्रेम- एक कविता (अनुदित नाटक)

अनुपमी देवी (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

सुस्मिता पाठक (सौजन्य- कदान कानन)

यतिविति (कविता संग्रह)

कनाजति (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (सौजन्य- कदान कानन)

याथनक शब्द (कविता संग्रह)

पन्ना झा (सौजन्य- नवेन्दु झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सूखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सूखल मन तरसल आँखि (कविता)

अंतः (कविता संग्रह)

चूक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाड़ मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

एकटा अकास (लघुकथा संग्रह)

रागांजलि (गद्य गीत)

किस्त-किस्त जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दुटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४७६-५१२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)

ब्रेलि ०क्न

(गानू झा आ आन मैथिली चित्रकथा-पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

नस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

७ बी सी डी- प्रकृति अइन पोथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सर खाड्ग अष्ठि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बा श्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

नढ सर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) झाड़ आ मेघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०१) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(११) हमर पनिबाट (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पोथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अवाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किरण चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-गाछी

आर्या कॉकपिट मे

दीपा करमाकर- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

फूल छथि आकाश मे

रैया क मुस्कान क चाभीलक

बीज संचयक

अरविन्द करय "हिवानाची"

शौचालयक खिस्सा

लाल बनसाती

गुल्लीक जादुई छड़ी

समीनाक निक0 राजन

निनाद मे जाड़ छै

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर माँछ! नै हमर माँछ!

रश्मि प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कोना सकै छी, नहिया कs सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

बड़ी आ बबली

नीलिमा चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर सबसँ नीक संगी

स्मिता ठाकुर (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गप्पू बुधि नाचल नै हारू छै

गुलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमरा डर लगैए!

मधुलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

डाँगामे सीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सब संग घँट-घाँट

पूनम मण्डल

सूर्य कालक खिस्सा

....

राधाकृष्ण चौधरी (१९२१-१९८५) (सौजन्य- प्रकाश कुमार चौधरी/ IGNCA)

मिथिलाक इतिहास

A Survey of Maithili Literature

The Political and Cultural Heritage of Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

सोमदेव (१९३४-२०२२) (सौजन्य- नाम स्मरण कार्यालय 'अमन')

आँजन सोमदेव विशेष

प्रकाश कुमार चौधरी (१९४१-१९९८) (सौजन्य- अशोक)

सम्मान प्रकाश विशेष

ललन प्रसाद ठाकुर (१९५३-१९९५) (सौजन्य- कुसुम ठाकुर)

लौंगिया मिरचाइ

नाटककार ललन प्रसाद ठाकुर समग्र रचनावली (७ टा नाटक, ४ टा एकांकी आ ३ टा गीति नाटिका सहित)

सुभाष चन्द्र यादव (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

चित्त धवल राजकमल

बनैत बिगड़ैत (लघुकथा संग्रह)

गुलो

गुलो (हिन्दी अनुवाद- रमण कुमार सिंह)

रमता जोगी

मतन

भोट

गुलो: कला आ भाषा (सम्पादक तारानन्द वियोगी आ केदार कानन)

चित्त धवल सुभाष चन्द्र यादव (लेखक गजेन्द्र ठाकुर)

चित्त धवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाउन)

अशोक (सौजन्य- अशोक आ शिवशंकर श्रीनिवास)

चक्रव्यूह (कविता संग्रह) (१९८६)

त्रिकाल (कथा संग्रह) (१९८६)

ओहि रातिक भोर (कथा संग्रह) (१९९१)

मातबर (कथा संग्रह) (२००१)

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००७)

आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३)

वाद-विवाद (आलोचना) (२०१७)

ऊँठीगाम (कथा संग्रह) (२०११)

अशोक-सलक्षम (विविध)

अशोक-नव कविता

नीक दिनक वाङ्स्वाय (व्यंग्य संग्रह) (२०१८)

कथा-पाठ (मैथिली कथाक आलोचनात्मक अध्ययन) (२०२२)

प्रतिमान (सम्पादन)

विनय (प्रतिमान गोष्ठी- सम्पादक मारूत रानह्वाज)

सन्धान १ (सम्पादन)

सन्धान २ (सम्पादन)

सन्धान ३ (सम्पादन) प्रवास विशेष

सन्धान ४ (सम्पादन)

मुन्ना जी द्वारा साक्षात्कार (पृ. ३८२-३८७)

बनैत कम बिगड़ैत बसी (पृ. २०२३-२०३१)

सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत (पृ. ११९-१२२)

रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत (पृ. ३२१-३४१)

केदार नाथ चौधरीक उपन्यास (पृ. १०१-१०६)

शतदिकूजी (पृ. १०-१३)

विदेह रचनाकार अशोक विशेषांक

रामदेव झा (सौजन्य- शंकरदेव झा/ योगानन्द झा)

सव्यसाची (अभिनन्दन ग्रन्थ)

मैथिली शब्द संचय

दन्द-नीक वस्तु कौशल

संकल्प अंक-१ (सम्पादक डॉ नागेन्द्र झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

लोकजीवन ओ लोकसाहित्य १९८६

संकल्प अंक-१ (सम्पादक डॉ नागेन्द्र झा, सहायक सम्पादक डॉ योगानन्द झा) १९८८

आलेख सञ्चयन २००२

मैथिली शाक्त साहित्य- शास्त्रीय रागनी गीत (सम्पादन) २००२

मैथिली पत्रकारिता क सौ वर्ष २००६

लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा २००७

गहवर गीत (संकलन-सम्पादन) २००७

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

कथा-लोककथा २०१०

कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता' कृत सीतायनम् (सम्पादन) २०११

मंगल-प्रभात गाँधीजी (अनुवाद) २०१३

राग-राग (डॉ ए. कीर्तिवर्द्धनक हिन्दी कविता संग्रहक अनुवाद) २०१४

मानानन्द नियोगी (सौजन्य- मानानन्द नियोगी/ सुभाष चन्द्र यादव)

प्रलय रहस्य (कविता संग्रह)

धराशायी हवाक समय (कविता म कामना काल)

दुनिया घर मेहमान (प्रेम कविता)

अयन युद्धक साँझ (गजल संग्रह)

छियानम (कथा संग्रह)

बहुवचन (आलोचना)

गुंजा: कला आ भाषा (सम्पादन)

सुधांशु शेखर चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

शेखर चयित गजल आ गीत

शरदिन्दु चौधरी (सौजन्य- शरदिन्दु चौधरी)

ॐ हम जनितहुँ (२००२)

बड़ अजगुत देखल (२००७)

गोबरगणेश (२०११)

कनिया कक्काक कानामिन (२०१६)

बात-बातपर बात खण्ड-१ (२०१९)

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२) (२०२०)

हमर अनुराग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३) (२०२१)

साक्षात् (बात-बातपर बात-४) (२०२१)

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

काशीकान्त मिश्र मधुप

विदेह काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक

राजनन्दन लाल दास

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

प्रेमलता मिश्र प्रेम

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

रवीन्द्र नाथ ठाकुर

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

मायानन्द मिश्र (सौजन्य- कदान कानन)

अवांगन (गजल-गीगल)

कलानन्द भट्ट (सौजन्य- कदान कानन)

काह्न यन लहास हमन मैथिली गजल संग्रह

अनुलग्नक-कासी कॉलानी सँ किशन कुटीन धनि

नामकृष्ण मा 'किसुन' (सौजन्य- कदान कानन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादक कदान कानन आ नमश कुमान सिंह)

किसुन समग्र-२ (सम्पादक कदान कानन आ नमश कुमान सिंह)

मैथिलीक नव कविता (सम्पादन)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादक महेन्द्र आ कदान कानन)

कदान कानन (सौजन्य कदान कानन/ CIIL/ सुभाष चन्द्र यादव)

अजु यन नवीन (संस्मनश: जीवकान्तक यात्रक वहान)

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

गुला: कला आ भाषा (सम्पादन)

किसुन समग्र-१ (सम्पादन)

किसुन समग्र-२ (सम्पादन)

अपना नजनि म (सम्पादन)

सृजन कन दीय पर्व (सम्पादन)

भानती मंतन अंक-१६ (सम्पादन)

महेन्द्र (CIIL/ कदान कानन)

झआयल कनकनी

बहुआयामी किसुनजी (सम्पादन)

वावा वैद्यनाथ (सौजन्य- वावा वैद्यनाथ)

यहना ॐमानयन (गजल संग्रह)

अरविन्द ठाकुर (सौजन्य- अरविन्द ठाकुर/ CIIL)

धरती टूटि रहल अछि (कविता संग्रह)

अन्हारक विरोध मे (लघु कथा संग्रह)

बहुरूपिया प्रदेश मे (गजल संग्रह)

सबद मितानथ धाया

नागनाथक लोकयज्ञ (कथेतर गद्य)

जनताक प्रतिवाद मे (साक्षात्कार-दीठक आत्मबोध गाथा- दीर्घ कविता)

सृजन कर दीप पर्व (सम्पादन)

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

स्वांग्रचना- अरविन्द ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (सम्पादक आशीष अनचिन्हार) [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप]

नन्दू झा (सौजन्य- नन्दू झा)

चयल चनन चित चंचल रान

विकास आ अर्थतंत्र

राजेश्वर झा (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

मिथिलाक्षरक उद्भव आ विकास

सुरेन्द्र झा सुमन (आर्काइव डॉट कॉम)

दत्त-वती (मूल)

गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा (आर्काइव डॉट कॉम/ CIIL)

परिचय निचय

मैथिली गद्य संग्रह- सं

रमानाथ झा (CIIL Site आर्काइव)

प्रबन्ध संग्रह

रमानाथ मिश्र "मिहिर" (आर्काइव और कोम)

मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश

आनन्द मिश्र (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

श्यामानन्द झा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मैथिली गीत चन्द्रिका

मैथिली संदेश (विभिन्न कविक कविता-सम्पादित)

पं. लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

रत्नप्रीतानन्द डाझा (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

पदावली

गणनाथ-विश्वनाथ पदावली (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

गणनाथ-विश्वनाथ पदावली

भुवनानारायण झा "नाकश" (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

मनमोहन लड्डु

रास लाल दास (आर्काइव और कोम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

खड्ग बल्लभ दास 'स्वजन' (सौजन्य- हेमन्त दास "हिम")

सीता-शील

डॉ. मदनेश्वर मिश्र (सौजन्य- यशीकान्त विद्यानन्द झा)

एक छलीह महारानी

यात्री (नागार्जुन) (सौजन्य- मिथिला सांस्कृतिक परिषद)

बलचनमा

कालीकान्त झा "बुच"

कलानिधि- कविता-संग्रह

उपेन्द्रनाथ झा "व्यास" (सौजन्य- मयंक झा)

रुबाइयात-ए-उमर खैयाम (मैथिली पद्यानुवाद)

प्रतीक (कविता संग्रह)

संन्यासी (काव्य)

रमेश नारायण (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

पाथरक नाव (लघुकथा संग्रह)

गोपालजी झा "गोपेश" (सौजन्य- गोपालजी झा "गोपेश")

गुम्म रहब जुलुम थिक

विजय नाथ झा (सौजन्य- विजय नाथ झा)

अहींक लेल (गीत-गजल संग्रह)

कामायनी (अनुवाद)

नरेन्द्र कुमार (सौजन्य- प्रसन्न कुमार झा)

ससरफानी

प्रबोध नारायण सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

अन्हेर नगरी (अनुवाद)

चयनिका (सम्पादन)

वैजयन्ती (कविता)

हाथीक दाँत

टटका गप (सम्पादित कथा संकलन)

प्रेमक राग (नाटक)

अमरनाथ (सौजन्य- अमरनाथ)

उचक्का- विहनि कथा संग्रह

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन'

पंचदेवोपासक भूमि मिथिला पृ. १००१-१०६०

डॉ. गंगेश गुंजन (सौजन्य- गंगेश गुंजन)

राधा (१-३०) पृ. १३१३-१३६०

प्रथम-चौबटिया-नाटक *(बुधिबधिया)*

नाटक आइ भोर

कथा-संग्रह उचितवक्ता

गीत-गजल दुखक दुपहरिया

कमलधर दास (सौजन्य- कमलधर दास)

मैथिल कर्ण कायस्थक (गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध

कीर्तिनारायण मिश्र (सौजन्य- कीर्तिनारायण मिश्र)

ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप

सीमान्त

आदमीकेँ जोहैत

अयन एकान्त म

स्मृतियात्राक एकान्तम

राजनाथ मिश्र

Mithila_Painting-Modern_Art-Photos

प्रेमशंकर सिंह (सौजन्य- प्रेमशंकर सिंह/ मिथिला दर्पण प्रकाशन)

मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

विद्यापति कृत व्याडीभक्तितरङ्गिणी (सम्पादन)

डॉ. रमण झा (सौजन्य- रमण झा)

मैथिली काव्यक अलङ्कार

अलङ्कार-दर्पण

मैथिली काव्यक छन्द

छन्द-अछन्द

अभिनन्दन-पत्र (खण्ड काव्य)

पारिजात-मञ्जरी

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण"/ CIIL Site **आर्काइव)**

हिआउल

सगर राति दीप जरय

नाङ्ग आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

अखियासल

केदार नाथ चौधरी (सौजन्य- केदार नाथ चौधरी)

चमेलीरानी

माहुर

करार

अबारा नहितन

अयना

हीना

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बातकही

विज्ञानक बातकही भाग-२

ननक विजय (सम्पूर्ण)

ननक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

पिनाकितक देशम

अकटा मिसिया (कथा संग्रह)

नावार (अनुदित साइंस-फिक्शन नाटक)

किछु गीत मधुर (यात्रा वृत्तांत)

सुशील (सौजन्य- सुशील)

घनाठी (उपन्यास) (१९७३)

गामवाली (उपन्यास) (१९८२)

भामती (नाटक) (पहिल मंचन १९९१, प्रकाशन २०१३)

अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (२०१६)

कामेश्वर झा 'कमल' (सौजन्य- नवनारायण मिश्र)

कमल-ताल (गीत संग्रह)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

ॐ कहब साँच कहब

आँखि मुनने आँखि खोलने (संस्मरण)

स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरण)

अपूर्वा (कविता संग्रह)

इतिहासहन्ता (कविता संग्रह)

देशक नाम छलै सोन चिड़ैया (कविता संग्रह)

लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता संग्रह)

प्रतिध्वनि (विदेशी भाषाक कविताक मैथिली अनुवाद)

पद्मानदीक माझी (अनूदित उपन्यास)

मैथिली लोककथा

आइक कविता (सम्पादित कविता संग्रह)

बेताल कथा (हास्य-व्यंग्य)

देसिल बयना (आख्यान)

विदेह नामलोचन ठाकुर विशेषांक

डॉ. देवशंकर नवीन (सौजन्य- देवशंकर नवीन)

आधुनिक साहित्यक परिदृश्य

डॉ बचेश्वर झा

निबन्ध-निकुञ्ज

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुनल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

आँखिम चित्र हो मैथिली कन (आत्मकथा- जानी)

धानक उड्ड यान (दीर्घ कविता)

गीत गंगा (गीत संग्रह)

गजल गंगा (गजल संग्रह)

पाना अंगना म (गीत संग्रह)

पाना अंगना म (गीत संग्रह)- मूल

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

राज किशोर मिश्र

चाननि (कविता संग्रह)

सप्तपर्ण (कविता संग्रह)

रवीन्द्र नारायण मिश्र (सौजन्य- रवीन्द्र नारायण मिश्र)

भोरसँ साँझ धरि (आत्म कथा)

प्रसंगवश (निबंध)

स्वर्ग एतहि अछि (यात्रा प्रसंग)

प्रसाद (कथा संग्रह)

नमस्तस्यै (उपन्यास)

विविध प्रसंग (निबंध)

महराज (उपन्यास)

लजकाटन (उपन्यास)

सीमाक ओहि पार (उपन्यास)

समाधान (निबंध संग्रह)

मातृभूमि (उपन्यास)

स्वप्नलोक (उपन्यास)

शंखनाद (उपन्यास)

फूलह थिक जीवन (संस्मरण)

ढहैत देबाल (उपन्यास)

याथार्थ (संस्मरण)

हम आबि गेल छी (उपन्यास)

प्रलयक पताप (उपन्यास)

बीति गेल समय (उपन्यास)

प्रतिबिम्ब (उपन्यास)

बदलि रहल अछि सभ किछु (उपन्यास)

राष्ट्र मंदिर (उपन्यास)

संयोग (कथा संग्रह)

नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

गामघर (कथा संग्रह)

सुजाता (उपन्यास)

महारानी कैकयी (प्रवचनात्मक निबन्ध)

गुदरीक लाल (उपन्यास)

अनठिया कुकुर (उपन्यास)

आत्मज (कथा संग्रह)

दिल्लीक यात्रा (शब्द चित्र)

सुकन्या (उपन्यास)

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

काव्य सरिता (मैथिली काव्य संग्रह)

परिवार (संस्मरणात्मक उपन्यास)

याचक क नजरि (मैथिली शब्द-चित्र)

सत्यानन्द पाठक (सौजन्य- सत्यानन्द पाठक)

हमर गाम (उपन्यास)

डॉ. उदय नारायण सिंह "नचिकेता" (सौजन्य- नचिकेता)

नो एण्ट्री : मा प्रविश

आह्वलन

एक छल राजा

जनक आ' अन्यान्य एकांकी

नाटकक लेल

नायकक नाम जीवन

प्रत्यावर्त्तन

नामलीला

प्रियंवदा (एकांकी)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाई १९६९)

मिथिला दर्शन मार्च २०२१

मिथिला दर्शन नवम्बर २०२१

रवि भूषण पाठक

रिहर्सल (नाटक)

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)

विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

डॉ. कैलाश कुमार मिश्र

विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)

कुमार मनोज कश्यप

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)

डॉ. शम्भु कुमार सिंह

(गुलामनामा नामा (बटुक काँकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद डॉ शम्भु कुमार सिंह द्वारा) पाखला

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनुप कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)

डॉ. अनुप कुमार सिंह

विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनुप कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)

कुमार पवन (सौजन्य- अंशिका)

प००0 (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा)

डायरीक खाली पन्ना

कमल रानाबाज

अजगुत अफ्रीका (अफ्रीका डायरी) पृ. २१४-४५५

किछु पढ़ल आ किछु सुनल- शीर्षी अमीन पृ. ४८८-७४८

खलौना पृ. ४५१-४८१

पोवइ पृ. ७४९-१९८

किछु कथा ७०-४५३

गोपाल झा 'अभिषेक' (सौजन्य- गोपाल झा 'अभिषेक')

आउ स्वप्न सामी करी (कविता संग्रह)

आमोद कुमार झा (सौजन्य- आमोद कुमार झा)

विम्बक पथार (कविता संग्रह)

किशन कारीगर (सौजन्य- किशन कारीगर)

किछु रूना गेल हमना

आशीष अनचिन्हार

संदर्भ सहित (गजल-आलोचना)

कुमारि इच्छा (गजल संग्रह)

जँघाजाठी (गजल संग्रह)

अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह)

मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास

मैथिली नव यात्रकारिताक इतिहास (अनुवादक: ऑंगिका आलेख:अंजलि आ मैथिली: गजेन्द्र ठाकुर)

मैथिली गजलक सतो सकारन

शब्द-अर्थ-शक्ति

स्वप्नयात्रा- अनचिन्ह ठाकुर: व्यक्तित्व-कृतित्व (विदेह अनचिन्ह ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप)[सम्पादन]

मुन्नाजी

मकाम दिस (बीहनि कथा संग्रह)

प्रतीक (बिहनि कथा संग्रह)

माँझ आँगनमे कतिआएल छी (मैथिली गजल संग्रह)

हम पुछैत छी (साक्षात्कार)

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

घाह (हाइकु-टंका संग्रह)

सन्दीप कुमार साफी

वैशाखमे दलानपर

ओम प्रकाश झा

किया बुझि नै सकल हमरा (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह)

अमित मिश्र

नव अंशु (गजल-हजल, रुबाइ संकलन)

चन्दन कुमार झा

मानक बाट (गजल, हजल,बाल गजल, रुबाइ आ कताक संकलन)

डॉ. अनमोल झा

समय साक्षी थिक (विहनि कथा संग्रह)

ई ज समय अछि (विहनि कथा संग्रह)

विनय भूषण (सौजन्य- आशीष अनचिन्हार)

उजता यतनाक खोज (कविता संग्रह)

आनन्द कुमार झा

टाकाक माल (नाटक)

कलह (नाटक)

बदलैत समाज (नाटक)

धधाइत नवकी कनियाँक लहास (नाटक)

हठात् परिवर्तन (नाटक)

मुक्ति यात्रा (नाटक)

शिव कुमार झा "टिल्लू"

क्षणप्रभा-कविता-संग्रह

अंशु-समालोचना

देवांशु वत्स

तताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कॉमिक्स)

डॉ. विनीत उत्पल

हम पुछैत छी (कविता संग्रह)

नहुन यन नथ्रु - काशीनाथ सिंहक हिन्दी उयन्यासक विनीत उत्पल द्वाना मैथिली अनुवाद

मन्दुइन्द्रुवाम्रुथ्रुग्रुङ्क- लखक हनिशंकनश्रीवास्तव "शलभ" (हिन्दीसं मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल द्वाना)

मोहनदास- उदय प्रकाशक हिन्दी उयन्यासक विनीत उत्पल द्वाना मैथिली अनुवाद

मोहनदास (मैथिली-देवनागनी) मोहनदास (मैथिली-मिथिलाक्षन) मोहनदास (मैथिली-ब्रेल)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

नढिया गुर्केउ हमन घनाउीयन (गजल संग्रह)

गाहन कौक नंग (विहनि कथा संग्रह)

थानहा- (वाल उयन्यास)

व्यथा- (कविता-गीत संग्रह)

नाजदेव मण्डल

अम्बना-कविता-संग्रह

हमन टाल (उयन्यास)

वसुंधना(कविता संग्रह)

जाल (यटकथा)

लाज (एकांकी)

जल रंनन (उयन्यास)

त्रिवनीक नंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

यंचैनी (लघु यटकथा)

नायसी

Rajdeo Mandal- Maithili Writer by Gajendra Thakur

दुर्गानंद मण्डल

संचयिका

कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

चक्र

राम विलास साहु

अंकुर- लघुकथा संग्रह

नथक चक्का उलटि चलै बाट (कविता/ टनका संग्रह)

कर्म बिनु जग सुन्ना (शासन कविता/ टनका संग्रह)

स्कूलक खिचड़ी (विहनि/ लघु कथा संग्रह)

दुधवचनी (लघु कथा संग्रह)

मनक मैल

नारायण यादव (सौजन्य- उमेश मण्डल)

खाली घर

रामदेव प्रसाद मण्डल "झारुदार"

हमरा बिनु जगत सुना छै

गीतांजलि भारु

कपिलेश्वर राउत

उलहन (विहनि - लघु कथा संग्रह)

नंद विलास राय

सखारी-पटारी(लघुकथा संग्रह)

मदन अमन (शासन लघु कथा संग्रह)

मनजायक राज (गसन लघुकथा संग्रह)

रुनझुनिया

छठिक डाला

हमर चारुधाम

असल पूजा

ललन कुमार कामत (सौजन्य- उमेश मण्डल)

किछु विहनि आ लघुकथा

उमेश पासवान

वर्णित रस

बेचन ठाकुर

बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक)

बाप भेल पित्ती आ अधिकार (नाटक)

विसवासघात (नाटक)

ऊँच-नीच (नाटक)

रँट (नाटक)

डॉ. उमेश मण्डल

जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संसार (अनुसन्धान विश्लेषण)

अयन्दन (संकलन-सम्पादन)

हनुबक सँ हँसबक धरि (संकलन-सम्पादन)

जागु न जागु कवि डागु जागु अनुरागी (संकलन-सम्पादन)

निर्विकल्प (संकलन-सम्पादन)

समस्या सँ समाधान धरि (संकलन-सम्पादन)

निश्छकी- कविता संग्रह

मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन)

मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो

Mithila_Painting-Modern_Art-Photos

सगर राति दीप जरय- इतिहास

सगर राति दीप जरय- आनन्दी कुमारी ठाकुर

दूध-पानि रहनाक-रहनाक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

हिन्दुस्तानी मुसलमान और हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- राकेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल

उमेश मण्डल द्वारा मैथिली लेखकक रचना संसारसँ बीछल निबन्धक पोस्टरक पोथी

जगदीश प्रसाद मण्डल राजदेव मण्डल डॉ. शिव कुमार प्रसाद रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार" राम विलास साहु नन्द विलास राय कपिलेश्वर राउत प्रीतम कुमार निषाद

मिथिलाक सब जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (सौजन्य: उमेश मंडल)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

अन्तर्ध्वनि (जगदीश प्रसाद मण्डलक १७ गोट बीछल कथा- चयन एवम् सम्पादन- उमेश मण्डल)

....

जगदीश प्रसाद मण्डल

गामक जिनगी (लघुकथा संग्रह)

मिथिलाक बेटी (नाटक)

मौलाइल गाछक फूल (उपन्यास)

जिनगीक जीत (उपन्यास)

उत्थान-पतन (उपन्यास)

जीवन-मरण (उपन्यास)

जीवन-संघर्ष (उपन्यास)

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

पंचवटी (एकांकी-संचयन)

अर्द्धांगिनी..सतभाजनी.. सुरक्षा.. गाइक सिनेह इत्यादि (लघुकथा संग्रह)

कम्प्रोमाइज (नाटक)

झमेलिया विआह (नाटक)

इन्द्रधनुषी अकास (पद्य संग्रह)

शंभुदास (तीनटा दीर्घ कथा मइटुग्गर, शंभुदास आ फाँसी)

गीतांजलि (गीत संग्रह)

राति-दिन (कविता संग्रह)

सतभैंया पोखरि (लघु कथा संग्रह)

तीन जेठ एगारहम माघ (गीत संग्रह)

बजन्ता-बुझन्ता (विहनि कथा संग्रह)

तल्लाकन उकैत (नाटक)

बड़की बहिन (उपन्यास)

रकमाउ (लघुकथा संग्रह)

उलवा चाउन (लघुकथा संग्रह)

सनिना (कनिना संग्रह)

सुखाएल याखनिक जाइठ (गीन संग्रह)

नै धाउँए (वाल उपन्यास)

स्वयंवन (नाटक)

यनमाउ (लघु कथा संग्रह)

फलहान (लघु कथा संग्रह)

गामक शकल सूनन (लघु कथा संग्रह)

लजविजी (लघु कथा संग्रह)

वटसन काका (लघु कथा संग्रह)

आमक गाछी

अप्पन गाम

दिनालीक दीय

यंवदन सीनीज

यंवदन-१ यंवदन-२ यंवदन-३ यंवदन-४ यंवदन-५ यंवदन-६ यंवदन-७ यंवदन-८ यंवदन-९ यंवदन-१० यंवदन-२० यंवदन-३० यंवदन-४० यंवदन-५० यंवदन-६० यंवदन-७० यंवदन-८० यंवदन-९० यंवदन-१००

दूध-यानि रत्नाक-रत्नाक (कथा एवं याण्डुलियि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्यादन- उमेश मण्डल)

जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६७ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ (Videha_01_09_2017) सँ २५० (Videha_15_05_2018) धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-

VIDEHA 233	VIDEHA 234	VIDEHA 235	VIDEHA 236	VIDEHA 237	VIDEHA 238
VIDEHA 239	VIDEHA 240	VIDEHA 241	VIDEHA 242	VIDEHA 243	VIDEHA 244
VIDEHA 245	VIDEHA 246	VIDEHA 247	VIDEHA 248	VIDEHA 249	VIDEHA 250

पंगु (उपन्यास)- साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार २०२१ सँ सम्मानित पोथी

पंगु (हिन्दी अनुवाद रामभजन प्रसाद मण्डल)

अयन साती (लघुकथा संग्रह)

माटयन (उपन्यास)

सुचिता (उपन्यास)

सहस्रा सहस्र नहि भेल (लघुकथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उडि न सकी पर बिउ ही हम (भाग १-२) (पृ. १०७४-१०९७)

खिस्सा अण्टार्कटिका केर (पृ. १०७४-१०९७)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१७)

बाल कविता (पृ. १००४-१११३)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४१-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४५८-१८७०)

....

गजेन्द्र ठाकुर

तेलुगु कथा आ उड़िया, तेलुगु, गुजराती, राजस्थानी आ कश्मीरी कविता

गल्प कथा आ डायरी, गल्प, गुजराती, राजस्थानी आ कश्मीरी कविता (मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-१

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक-२)

प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (भाग-२, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक खण्ड-८) (संक्षिप्त)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (मिथिलाक्षर)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (कैथी)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (ब्रेल)

नित नवल दिनेश कुमार मिश्र (IPA)

दुखद यात्री- The Black Book

दुखद यात्री- The Black Book (मिथिलाक्षर)

पर्वत उपर रमता ओ सूतल (वीहनि, लघु आ दीर्घ कथा संग्रह)

पर्वत उपर रमता ओ सूतल (मिथिलाक्षर)

पर्वत उपर रमता ओ सूतल (कैथी)

पर्वत उपर रमता ओ सूतल (ब्रेल)

पर्वत उपर रमता ओ सूतल (IPA)

स्वप्न मिश्रान राउत

The_Science_of_Words

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (हिन्दी अनुवाद नारायण प्रसाद मण्डल)

गंगा ब्रिज (नाटक)

उल्कामुख (नाटक)

संकर्षण (नाटक)

धाँगि बाट बनबाक दाम अगुबान पथ छै (नुबाई, कथा आ गजल संग्रह)

सहस्रजित् (पद्य संग्रह)

सहस्राब्दीक चौपड़पर (पद्य संग्रह)

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दुटा गीत प्रबन्ध)

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)

सहस्रबाढ़नि_ब्रेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल ब्रेल पोथी)

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

देवनागरी वर्सन तिरहुता वर्सन ब्रेल वर्सन

Learn Maithili Sign Language
Learn Mithilakshar Script
Learn Braille through Mithilakshar Script
Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script
Learn Kaithi
Learn Newari
Learn Calligraphic Newari (Ranjana)
Learn Urdu Script
Learn Tibetan Script
Learn Japanese Script for Haiku
Learn Brahmi
Learn Kharoshthi

मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पावनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत

जलदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अञ्जनमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाड़क बड़ौना (बाल-पद्य संग्रह)

नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध)

मचण्ड (नाटक)

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

रङ जातक ठूठ *(मैथिलीक २०१२ म प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक रगा

गनहनिम यनीलाक

वसी छुट्टी कम इस्कूल

वउद कनैउ दाउन न यो

बाल गजल

रिविनिश लाइन

अनुदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह:सदेह २१ (गजेन्द्र ठाकुर आ नवि रुपेश याठकक आन भाषासँ अनुदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाइ्ली कन यनिवनिकानी नवका

(शेष ४० टा बाल चित्र-पोथी नीचाँक लिंकपर:-

सुनु	घन सर	एकटा नीक दिन	चलू हम सँ ठीक छी ना!	की अहाँ उ विउ सरकँ दखन छी?
टाह	बड़टा! कनियटा!	एतऽ हम सर नहि छी	राजमहलक राजकुमारी	राजमहलक राजकुमारी (बिनु शब्दक)
बुधा	कच-कच कचाक	बच्चू-मुन्नुक नहेनाइ	नना उ बेलुनसँ उनाइत छल	अङ्क सिखाबाबी अंक-शृंखला
हानु	अखन नै, अखन नै!	जन्मदिनक उत्सव राज	मेट नाजा याग-दुबऽ कुक्कऽ	बविया उ अपन हँसी नै नाकि सकैत छलि
अंग्रेजी	हम सुधि सकै छी	छोट लाल-टुहटुह उनी	कनु नीक, रागु नीक	ई सरटा विलाइक दाख अछि!
चारा आम!	हमन टालक बाट	जखन ईंकऽ फूल गेल	माछी हन आउ टाटा!	अमावीक झलुम मशीन सर
टिंग टांग	याउ-ख्याउ-वाह	कुकुरक एकटा दिन	हमना नीक लगैए	नीनाक नव-स्कूलम पहिल दिन
कनी हँसियौ ना!	लाल बनसाही	रूल-फ्राक नाचशाला	आउ पउन गनी	कतऽ अछि ई अंक ग?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग चीत-अलाउड पिक्चर बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाइ्ली कन यनिवनिकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलु हम सँ ठीक छी ना!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ उ विउ सरकँ दखन छी?)

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC Maithili Optional- गाइड आ बुक

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (भाग-२, अनुप्रयोग)

मैथिली प्रतियोगिता

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव आ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ठ, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ ततसमय कवि बहुत बहुतरास विद्यापति कालीन कवि छथि। एहि समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व किछु गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे ध्यान आओत, संगहि शब्दकोष पढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुन्दर भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लौकिक गाथामे समाज आ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५

(मैथिली आ दोसर पूर्वोत्तर भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ उड़िया) [यू.पी.एस.सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-"ए", क्रम-५])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

मैथिली

बांग्ला

असमिया

उड़िया

हिन्दी

उर्दू

नेपाली

संस्कृत

संथाली

NTA_UGC_NET_Maithili_01- एतय देखू

NTA_UGC_NET_Maithili_02- एतय देखू

Test_Series-1- एतय देखू

Test_Series-2- एतय देखू

GS (Pre)

Topic_1 - एतय देखू

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह-सदेह १-२९ www.videha.co.in *विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन*	
देवनागरी	**मिथिलाक्षर**
विदेह:सदेह १	विदेह: सदेह १ तिरहुता
विदेह:सदेह २ मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना	विदेह: सदेह २ तिरहुता
विदेह:सदेह ३ मैथिली पद्य	विदेह: सदेह ३ तिरहुता
विदेह:सदेह ४ मैथिली कथा	विदेह: सदेह ४ तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]	विदेह: सदेह ५ तिरहुता
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- संस्करण-२	विदेह: सदेह ५ संस्करण-२ तिरहुता
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]	विदेह: सदेह ६ तिरहुता
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]	विदेह: सदेह ७ तिरहुता
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]	विदेह: सदेह ८ तिरहुता
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]	विदेह: सदेह ९ तिरहुता
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]	विदेह: सदेह १० तिरहुता
विदेह:सदेह ११	विदेह: सदेह ११ तिरहुता
विदेह:सदेह १२	विदेह: सदेह १२ तिरहुता
विदेह:सदेह १३	विदेह: सदेह १३ तिरहुता
विदेह:सदेह १४	विदेह: सदेह १४ तिरहुता
विदेह:सदेह १५	विदेह: सदेह १५ तिरहुता
विदेह:सदेह १६	विदेह: सदेह १६ तिरहुता
विदेह:सदेह १७	विदेह: सदेह १७ तिरहुता
विदेह:सदेह १८	विदेह: सदेह १८ तिरहुता
विदेह:सदेह १९	विदेह: सदेह १९ तिरहुता
विदेह:सदेह २०	विदेह: सदेह २० तिरहुता
विदेह:सदेह २१	विदेह: सदेह २१ तिरहुता
विदेह:सदेह २२	विदेह: सदेह २२ तिरहुता
विदेह:सदेह २३	विदेह: सदेह २३ तिरहुता
विदेह:सदेह २४	विदेह: सदेह २४ तिरहुता
विदेह:सदेह २५	विदेह: सदेह २५ तिरहुता

विदेह-सदेह २६-३६ www.videha.co.in

विदेह ई-पत्रिकाक अंक १-३७० सँ- थीम आधारित

मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ मूल आ अनूदित गद्य आ पद्यक एकटा समानान्तर संकलन	
विदेह:सदेह २६ (डॉ शम्भु कुमार सिंह आ डॉ अनुपम कुमार सिंह अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २६ तिरहुता
विदेह:सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २७ तिरहुता
विदेह:सदेह २८ (अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २८ तिरहुता
विदेह:सदेह २९ (रवि भूषण पाठक आ डॉ. कैलाश कुमार मिश्र- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह २९ तिरहुता
विदेह:सदेह ३० (स्कूल-कॉलेजक विद्यार्थी लेल- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३० तिरहुता
विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३१ तिरहुता
विदेह:सदेह ३२ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-१- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३२ तिरहुता
विदेह:सदेह ३३ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-२- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३३ तिरहुता
विदेह:सदेह ३४ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-३- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३४ तिरहुता
विदेह:सदेह ३५ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-४- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३५ तिरहुता
विदेह:सदेह ३६ (रचनात्मक गद्य-पद्य लेखन भाग-५- अंक १-३७० सँ)	विदेह: सदेह ३६ तिरहुता

....

यू.पी.एस.सी. आ आन प्रतियोगिता परीक्षा लेल देखू:

विदेह:सदेह ११	विदेह:सदेह २१	विदेह:सदेह २३	विदेह:सदेह २६	विदेह:सदेह २९
विदेह:सदेह ३०	विदेह:सदेह ३२	विदेह:सदेह ३३	विदेह:सदेह ३४	विदेह:सदेह ३५

....

Videha-Sadeha

भाषापाक-विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

विदेह पूर्वक अंकक आर्काइव

Videha_1-50

Videha_51-100

Videha_101-149

Videha_150-250

Videha_251-Onwards

Audio_Archive_Folder

Mithila_Painting-Modern_Art-Photos

Videha_Old_Issues_Folder

Videha_Classical_Sites_Folder

....

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन)

मैथिलीक प्रतिनिधि गजल

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

....

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादन)

जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध

जीनियोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-२

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili-English Dictionary Vol.I

Maithili-English Dictionary Vol.II

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

Videha English Maithili Dictionary

English-Maithili Computer Dictionary

....

दिनेश कुमार मिश्र (सौजन्य दिनेश कुमार मिश्र)

बन्दिनी महानन्दा

बागमती की सद्गति!

दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी)

न घाट न घर

बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी

भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक

The Kamla River and People On Collision Course

Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft

Refugees of the Kosi Embankments

....

पत्रिका-जर्नल-स्मारिका

मैथिली कविता-त्रैमासिक (सौजन्य- नचिकेता)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (अप्रैल १९६९)

मैथिली कविता-त्रैमासिक (जुलाई १९६९)

मिथिला दर्शन (सौजन्य- नचिकेता)

मार्च २०२१

नवम्बर २०२१

कौशिकी (सौजन्य- यशीकान्त मिश्रानन्द झा)

कौशिकी (१९७१-७२)

दसिल वयना (अखबार) (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

दसिल वयना (अखबार)

Society Today (सौजन्य- सुमित आनन्द)

अंक ११

संकल्प (सौजन्य- योगानन्द झा)

अंक ७ १९८८

अंगिका (सौजन्य- गौरीनाथ)

जुलाई-सितम्बर २००८ (हरिमोहन झा विशेषांक) अक्टूबर २०१०सँ मार्च २०११ अक्टूबर २०११ सँ मार्च २०१२

हानी मंतर (सौजन्य- केदार कानन)

अंक-१६

सन्धान (सौजन्य- अशोक)

सन्धान १

सन्धान २

सन्धान ३ प्रवास विशेष

सन्धान ४

मिथिलांगन (सौजन्य मुकेश दत्त)

अप्रैल-सितम्बर २०२२

मैलांग (सौजन्य- प्रकाश झा)

अंक२-३

धूआ-धजा (सौजन्य- परमेश्वर कापडि)

अंक ७ अंक १४ अंक १७ अंक १६ अंक १८ अंक १० जून २०१२ अंक २४ जून २०१२ 23February2016 २७ जुलाई २०१२ ०७ अगस्त २०१२ आसिन २०१३

स्मारिका (सौजन्य- रामभरोस कापडि भ्रमर)

स्मारिका (२०१०)

आंगन (सौजन्य- रामभरोस कापडि भ्रमर)

आंगन अंक-४ (२०१२) सलहेस विशेषांक

आँजुर (सौजन्य- रामभरोस कापडि भ्रमर)

आँजुर (अंक वर्ष ३६, अंक ३) सामदेव विशेष

गामघर (सौजन्य- रामभरोस कापडि "भ्रमर")

गामघर-३०-०८-२०१८

गामघर-०४-१०-२०१८

गामघर-१६-०७-२०१९

गामघर-२१-०६-२०१९

दुधमती- (नेपाली आ मैथिलीमे) (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

अंक ३१ अंक ३२ अंक ३३ अंक ३४ अंक 35 अंक 36 अंक 37 अंक 38 अंक 39 अंक 40 अंक 41

घर-बाहर (सौजन्य- चेतना समिति)

अप्रैल-जून २०११

रचना (सौजन्य- सुभाष चन्द्र यादव)

दिसम्बर "०७ मार्च "०६राजकमल चौधरी: मानाग्रह

पल्लव (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

पल्लव- १ गजल अंक

पूर्वोत्तर मैथिल (सौजन्य- प्रेमकान्त चौधरी)

अप्रैल-जून 2010 जुलाई-सितम्बर 2010 जनवरी सँ मार्च 2011 अप्रैल-जून २०११ जुलाई-सितम्बर २०११

लालदास स्मरणांजलि स्मारिका २०२२ (सौजन्य डॉ संजीव शमा)

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (डायर सोर्स)

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

Sahitya Akademi

प्रकाशन

डिजिटल-पोथी

CIIL

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

सृजन कर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

Archive.Org (विजयदत्त झा)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive

IGNCA

Maithili English Dictionary

विस्मृत नक्षत्र

मिथिला दर्शन

गीतगुंज

OLE Nepal's e-Pustakalaya

याथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddhism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाꣿब्रनी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

याथी जॅट कॉम

I Love Mithila (याथी जाउनलाउ लिंक)

online maithili journal

owner I Love Mithila

याग मैथिल चैनल- किनध चौधनी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सरसँ लाकप्रिय यू ट्यूब चैनल

मिथिला चैशन

खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल

जानकी ७रू.७म समाचान

आकाशवाणी दनरंगा यू ट्यूब चैनल

....

JNU

मैथिली

मैथिली लक्षिकन

....

Videha e-Learning YouTube Channel

....

निदह सम्मान; **सम्मान-सूवी** (समानान्द्न साहित्य अकादमी, समानान्द्न ललित कला अकादमी आ समानान्द्न संगीत-नाटक अकादमी सम्मान/ यूनस्कान नामसँ निस्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- निदह मैथिली मानक राषा आ मैथिली राषा सम्पादन पाथक्रम

राषायाक

२

मैथिलीक वर्तनीम पर्याप्त निनिधता अछि। मूदा प्रश्नपत्र दखला उपरान्त एकन वर्तनी ऽऽशू BMAF001 सँ प्रतिन वूसाऽऽत अछि, स एकन एकना एक उखऽाह्नाम उनटा-पूनटा दियौ, तान धनि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसनी) पयन लल सद्द ऽऽी पर्याप्त अछि, स ज निद्यार्थी मैथिली (कम्पलसनी) पयन लन छथि स एकन एकटा आन राष्ट्र-नीतिंग दासन-उखऽाह्नाम कनथि|

IGNOU ऽऽशू *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c)

Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

विदेह वीडियो

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search for Video related informations (including Print, Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili](https://books.google.com/)

https://books.google.com/

Videha" Ist Maithili Fortnightly ejournal Archive of Videos **'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका वीडियो आर्काइव मैथिली वीडियोक संकलन (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) वीडियो देखबाक लेल सम्बन्धित लिंककेँ क्लिक करू।** For viewing videos click the respective links.

....

मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (सौजन्य: उमेश मंडल)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43

……………………

गुवाहाटी विद्यापति पर्व २०१०

पहिल भाग दोसर भाग तेसर भाग चारिम भाग पाँचम भाग

गुवाहाटी अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन आ विद्यापति पर्व २०११

01 02 03 04 05 06 07 08 09 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46

……………..

चौबटिया (सौजन्य- श्रीशम्भु प्रसादि)

चौबटिया

सौराठ मिथिला

ललका पाग भाग-१

ललका पाग भाग-२

……………..

मिनाप-१

वृधियान ह्वीरा आ नाऊस

मिनाय-२

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

यं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य रमानन्द झा "रमण")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संस्कृत भाषा सहित- मैथिलीमे पढ़ल वन)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

ग्राम मैथिल चैनल- किसलय चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सरसँ

लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल

मिथिलांग लोक रंग

मिथिला चैनल

खिस्सा-पिहानी नवा गुटका लल

मैथिली रंगमंच

कोकिल मंच

मिथिला दर्शन

नीलम मैथिली

मैथिली गंगा

नरु कझ, नविकना

कृ३ विहानी

नाम वावू मा

नी. ज., निकास मा

आ॰॰ लव मिथिला

नजनी यल्लवी

यूनम मिश्र

नंजना मा

झली मा

मैथिली ०ाकृन

ब्लूम ला॰॰ब्रनी मैथिली

अनियन फाउ(ण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसा॰॰ी कन यनिवर्निकानी नवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गाँ ०ीक छी न!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (७कटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सए)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ओ चिठ सएकँ देखन छी?)

जानकी ७ए.७म समाचान

ममता गावय गीत (सौजन्य- श्री कदाननाथ चौधनी)

गीत

आकाशवाणी दनरंगा यू ट्यूब चैनल

I Love Mithila
online maithili journal
owner I Love Mithila

....

वृखश चन्द्र लाल, जनकपुनक सौजन्यसँ

मिमिया

ढाल-पियरी

यवनकान्त मा (काश्यप कमल), एटसिमनि, मधुवनीक सौजन्यसँ

नसनचौकी

....

विद्यापति गीत

गुलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन दीआ रानी)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-५

गोविन्ददास-६

....

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन दीक्षा रानी)

वरुण मृणालिनि

गजल-२

गजल-३

गजल-४

....

११म सगर राति दीप जरय (०२ अक्टूबर २०१०), गाम वनगामा , जिला मधुबनी (संयोजक- जगदीश प्रसाद मंडल)

राग-१ राग-२ राग-३ राग-४ राग-५ राग-६

82 म सगर राति दीप जरय, स्थान- गजेन्द्र ठाकुर जीक निज आवास, गाम- मेंहथ, जिला- मधुबनी। दिनांक- 31 मई 2014 (शनि दिन), समय- संध्या छह बजेसँ (गोष्ठीक नाओं- कथा बौद्ध सिद्ध मेंहथिया सगर राति दीप जरय। आयोजनक क्रम- ८२ म आयोजन, संयोजक- गजेन्द्र ठाकुर। विशेषता- बाल साहित्यपर केन्द्रित।

....

मैलोरंग-१ (सौजन्य- प्रकाश झा)

नचिकेताक एक छल राजा - भाग-1

नचिकेताक एक छल राजा - भाग- 2

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-1

काठक लोक- महेन्द्र मलंगिया भाग-2

मैलोरंग-२

कारी समीनान 12 दिसम्बर 2008 भाग-१

कारी समीनान 12 दिसम्बर 2008 भाग-२

....

मिथिलांगन

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

यू ट्यूब लिंक

विदेह मैथिली साहित्य/ नाट्य/ कविता/ पत्रिका उत्सव

विदेह समानान्तर साहित्य अकादमी सम्मान समारोह

जनकपुर- विद्यापति पर्व

जितेन्द्र झा, जनकपुर

नामरन्ध्र

सामा चकेबा 1

सामा चकेबा 2

मैथिली कवि सम्मेलन (मिथिला कल्चरल □ऐसोसिएशन, यू.के.)

नियमित रूपें 2009 (भाग)

सगर राति दीप जरय, कविलपुर, झंझारपुर २०१०

भाग-१ भाग-२

कृष्ण कुमार कश्यपसँ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा लेल साक्षात्कार

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७

प्रबोध सम्मान: राजमोहन झा

(साहित्यकारकेँ बीचमे ल' जाउ, अप्पनाक बाद राजमोहन झासँ विनीत उत्पलक साक्षात्कार छनि।)

साहित्य अकादमी पुरस्कार: मन्त्रेश्वर झा

मिथिलाक खोज

1. गौरीशंकर

भाग-१ भाग-२

2. बाल्हसी-बसैटी

वर्षकृत्य

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

समन्वय २-४ नवम्बर २०१२ इण्डिया हैबीटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव

Samanvay 2-4 November 2012 IHC Indian Languages' Festival. Venue: India Habitat Centre, Lodhi Road, New Delhi -- 110 003.

3rd November 2012 Maithili- Love's Own Language/ Brahminism in Maithili/ Pre-Jyotirishwar Non-Brahmin Vidyapati

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९ भाग-१०

भाग-११ भाग-१२

2nd November 2012 Ugna Re- By Shovna Narayan (Pre-Jyotirishwar Non Brahmin Vidyapati's Life Episode)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८

१५म सगर राति दीप जरय मे मुन्नाजीक पहिल निर्देशित कथा चित्र प्रदर्शनी

मिथिलाक मूर्ति- (रसनचौकीक सुरक संग)

हृदयनारायण झा

भाग-१ भाग-२ भाग-३

रंजन चौधरी आ हरी मिश्र (तबला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

ललित नंद आ हरि मिश्र (तबला)

भाग-१ भाग-२ भाग-३

दीआ भानी

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४

सुषमा

बरगमनी

नन्द कुमार मिश्रक गजल पाठ

नन्द कुमार मिश्र जीक कविता पाठ

भाग-१ भाग-२

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, नई दिल्ली

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, नई दिल्ली सम्मान 29 मार्च 2009

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६ भाग-७ भाग-८ भाग-९

मैथिली- भोजपुरी अकादमी, द्वारका, नई दिल्ली सम्मान

भाग-१ भाग-२ भाग-३ भाग-४ भाग-५

भाग-६

………………

विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रतीत होइत अछि, से एकर एकरा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, तखन बनि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आन शास्त्र-नीतिक शासन-उदाहरणमे करथि|

IGNOU इग्नू **BMAF-001**

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह शिशु, बाल आ किशोर उत्सव

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

Search for Children Literature (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili

https://books.google.com/

Videha Archive of Maithili Children Literature विदेह मैथिली शिशु, बाल आ किशोर साहित्यक आर्काइव (पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below

....

NCERT BHASHA SANGAM

NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)

पं लक्ष्मीपति सिंह (सौजन्य गजानन्द झा "गजेश")

हिन्दी-मैथिली-शिक्षक

मैथिली-हिन्दी वार्तालाप (३ घण्टा)

मैथिली (मैथिली संकेत भाषा सहित- मैथिलीमे पहिल बेर)

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/TebuC-lrSs8

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

विदेह मैथिली शिशु उत्सव

कथा बौद्ध सिद्ध महथया (बाल साहित्य कॉमिक्स) [illegible] भेल ८२ म सगर राति दीप जरय मे पठित कथा सभक संकलन

कथा बौद्ध सिद्ध महथया

नेना भुटकाकेँ राति मे सुनबा लेल किछु लोककथा

भोला लाल दास (आर्काइव डॉट कॉम)

मैथिली सुबोध व्याकरण

डॉ. रमानन्द झा 'रमण' (सौजन्य- रमानन्द झा "रमण")

पाइ आ टाकाक गाछ (अनुवाद)

योगेन्द्र पाठक "वियोगी" (सौजन्य- योगेन्द्र पाठक "वियोगी")

विज्ञानक बातकही

विज्ञानक बातकही भाग-२

जनक विजय (सम्पूर्ण)

जनक विजय (संशोधित)

हमर गाम (बाल उपन्यास)

पिरामिडक देशमे

रोबोट (अनूदित साइंस-फिक्शन नाटक)

रामलोचन ठाकुर (सौजन्य- रामलोचन ठाकुर)

मैथिली लोककथा

कीर्तिनाथ झा (सौजन्य- कीर्तिनाथ झा)

कुणाल: मैथिली भावानुवाद

जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" (सौजन्य- जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल")

बाल कविता

मुन्नाजी

तीन टा बाल नाटक (मैथिली बाल साहित्य)

खुरलुच्ची (मैथिली बाल कविता- बाल साहित्य)

दनांशु नम्र

नताशा -मैथिली बाल चित्रशृंखला (कौमिक्स)

जगदानन्द झा "मनु" (सौजन्य- जगदानन्द झा "मनु")

चानहा (बाल उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

तरेगन (बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह)

नै धाड़ैए (बाल उपन्यास)

नन्द कुमार मिश्र 'नन्द' (सौजन्य- नन्द कुमार मिश्र 'नन्द')

स्वर्ण कमल (बाल उपन्यास)

वृषेश चन्द्र लाल (सौजन्य- वृषेश चन्द्र लाल)

ढालक (बाल कविता संग्रह)

सुजीत कुमार झा (सौजन्य- सुजीत कुमार झा)

कोइली घुरि आउ (बाल लघु-विहनि कथा संग्रह)

डॉ. शशिधर कुमर

उठि त सकी यत चिड़ै स्त्री हम (भाग १-२) (पृ. १०७४-१०९७)

खिस्सा अण्टार्कटिका कर (पृ. १०७४-१०९७)

बाल कविता (पृ. ९९३-१२१७)

बाल कविता (पृ. १००४-१११३)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४१-८३४)

सचित्र बाल कविता (पृ. १४६८-१८७१)

डॉ शशिधर कुमर आ सुप्रिया रवी कुमारी

सुकन्य (पृ. ६३८-६१४)

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद मुक्ता धीरु आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

रंगा बतक दश-उमंग

अणिमा सिंह (सौजन्य- नचिकेता)

शिशु गीत खेल

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

नशामुक्ति हित गाबी गीत

निनियाँ

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

प्रीति ठाकुर

(गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा -पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

नल (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

७ बी सी डी- प्रकृति अपन साथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सए खाऊँग अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बा ग्याउ वाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

नढ सर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) झाट आ येघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०१) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(११) हमर यनिवान (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

याथी १३: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अवाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

नीना झा (सौजन्य- नीना झा)

बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-नाटी

आर्या कॉकयिट म

दीया कनमाकन- सही संतुलन म

जंगल म अहाँक स्वागत अछि

फूल छथि आकाश म

रैया क मुस्कान क चानीलक

बीज संचयक

अर्वारिण कनय "रिवानावी"

शौचालयक खिस्सा

लाल बनसाती

गुल्लीक जाड़छी यटी

समीनाक निक0 राजन

निनाद म जाछी ठी

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमन माँछ! नै हमन माँछ!

रश्मि प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

कौया सकै छी, नदिया कऽ सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

वड़ी आ ववली

नीलिमा चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमन सरसँ नीक संगी

स्मारिका ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

गयू वृा नावल नै हाछ छै

गुलिका (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमना उा वाद्दी!

मधुलिका मिश्र (अनुदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

उंघाछन रीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संग हँट-घाँट

पूनम मण्डल

सूर्य कालक खिस्सा

गजेन्द्र ठाकुर

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

Learn Mithilakshar Script

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाढ़क बढ़ौना (बाल-पद्य संग्रह)

हS जाएब छू *(मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक हंसा

तनहनिम पनीलाक

बसी छुट्टी कम स्कूल

बड़द कनैत दाउन न यौ

बाल गजल

हिनिश लाइन

बाल साहित्य (अनुवाद- क्लासिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

मसाञ्जी कान यनिवर्निकानी नवका

सृनु

घन सर

एकटा नीक दिन

चलु हम गँ ठीक छी न!

की अहाँ ओ चिठ सरकँ दखन छी?

टास

वठीटा! कनियटा!

एगऽ हम सर नहे छी

रानगल्लक नाजकुमानी

रानगल्लक नाजकुमानी (विनू शद्धक)

नूया

कच-कच कचाक

चुन्नु-मुन्नुक नरुनाञ्ज

नना ज वेलुनसँ उनाञ्जग छल

अद्भुग दिवानाची अंक-शृंखला

हानू

अखन नै, अखन नै!

जन्मदिनक उत्सव आइ

माट नाजा पालन-पोषक कुकुर

बचिया ई अपन हँसी नै नुका सकैत छलि

अंग्रेजी

हम सूँघि सकै छी

छोट लाल-टुहटुह ऊनी

कनु नीक, रागु नीक

ओही सभटा विलातिक दाख अछि!

चारा आम!

हमन टालक बाट

जखन ओकरु स्कूल गेल

माछी हन आउ टाटा!

अमाबीक झलुम मशीन सए

टिंग टांग

याउ-म्याउ-नाद

कुकुरक एकटा दिन

हमना नीक लगैए

गीताक नव-सूलभ पहिल दिन

कनी हँसियौ ना!

लाल वनसागी

सुग-प्रगक नाग्यशाला

आउ पढ़न गानी

कत्s अछि ह्ली अंक ग?

विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग गीत-अलाउड ऑडियो बुक

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाल्ली कान पनिवर्णनकारी गवका)

https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गँ ठीक छी ना!)

https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सरए)

https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ ए चिउ सरकँ दखन छी?)

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादन)

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ६]

विदेह: सदेह ६ तिनहुता

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमान झा आ पञ्जीकान विद्यानन्द झा (सम्पादन)

English-Maithili Computer Dictionary

डॉ. कमला चौधनी (सौजन्य- कमला चौधनी)

मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

डॉ योगानन्द झा (सौजन्य- योगानन्द झा)

मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली २००९

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

गोविंद झा ((IGNCA Site आर्काइव)

Maithili-English Dictionary

रामदत्त झा (सौजन्य- शंकरदत्त झा)

मैथिली शब्द संचय

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (डायन सार्स)

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive

विस्तान नल्लाकन

OLE Nepal's e-Pustakalaya

पोथीक लिंक

IGNCA-ASI (search keyword Mithila)

History of Navya-Nyaya in Mithila

Studies in Jainism and Buddism in Mithila

Mithila in the Age of Vidyapati

Cultural Heritage of Mithila

Mithila under the Karnatas

Temple Survey Project ASI- English आ Hindi

मैथिली साहित्य संस्थान

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure 5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली

अनियन फाउण्डेशन

Pratham Books Maithili Storyweaver

मैथिली □तिया वृक्ष

Videha Read Aloud Talking Maithili Audio Books (including Maithili Sign Language- Ist time in Maithili)

पोथी डॉट कॉम

खिस्सा-पिहानी कथा गुटका लल

जानकी एफ.एम समाचार

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

....

विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादेमी, समानान्तर ललित कला अकादेमी आ समानान्तर संगीत-नाटक अकादेमी सम्मान/ पुरस्कार नामसँ विख्यात)

....

मैथिलीक वर्तनी

१

मैथिलीक वर्तनी- विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी [illegible] BMAF001 सँ प्रतीत बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उदाहरणमे उनटा-पुनटा दियौ, ताव ध्वनि पर्याप्त अछि।

यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सहायक पोथी पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकरा एकरा आन स्वास्थ-नीतिंग शासन-उखाड़ाम कनथि|

IGNOU क्लेल *BMAF-001*

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

[Search for Works (including Audio-Visual & Sign Language) relating to Mithila/ Maithili by Female Writers/ Artists](https://books.google.com/)

https://books.google.com/

(सूचना: व्यवसायिक उद्देश्य वा मात्र एकेडमिक प्रयोग लेल) सभ पोथी पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल क्रमानुसार नीचाँक लिंक सभपर उपलब्ध अछि। All the books are available for pdf download at the respective links below.

....

सखुआनाली (नारी विमर्श केन्द्रित) स्यटियाद्दीम स्ल ८३ म सगन नागि दीय जनयम यठि कथा सरक संकलन

सखुआनाली

अणिमा सिंह (सौजन्य- नविकता)

शिशु गीत खेल

उर्मिलारानी सिंह (सौजन्य- नविकता)

प्रेम- एक कविता (अनूदित नाटक)

अनुश्री देवी (सौजन्य- नमानन्द झा "नमश")

मिथिलाक विदुषी महिला

डॉ. कमला चौधरी (सौजन्य- कमला चौधरी)

मैथिलीक वस्त्र-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली २००८

समय-संकेत (कथा-संग्रह) २०१०

डॉ. ललिता झा (सौजन्य- ललिता झा)

मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली २०११

स्मिता पाठक (सौजन्य- कदम्ब कानन)

परिचिति (कविता संग्रह)

कलाकृति (कथा संग्रह)

नन्दिनी पाठक (सौजन्य- कदम्ब कानन)

पाथरक शहर (कविता संग्रह)

पन्ना झा (सौजन्य- नन्दू झा)

अनुभूति (लघुकथा संग्रह)

कल्पना झा (सौजन्य- कल्पना झा)

गोसाउनिक गीत

नशामुक्ति हेतु गाबी गीत

निनियाँ

यायावरी- शेफालिका वर्मा (हिन्दी अनुवाद कल्पना झा)

मुन्नी कामत (सौजन्य- मुन्नी कामत)

सुखल मन तरसल आँखि (पद्य आ गद्य)

सुखल मन तरसल आँखि (कविता)

अंतः (कविता संग्रह)

चुक्का (बाल कथा संग्रह)

नीता झा (सौजन्य- नीता झा)

बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)

शेफालिका वर्मा (सौजन्य- शेफालिका वर्मा)

यायावरी (यात्रावृत्तान्त)

यायावरी (हिन्दी अनुवाद- कल्पना झा)

अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)

उकटा प्रकास (लघुकथा संग्रह)

भावांजलि (गद्य गीत)

किछु-किछु जीवन (आत्म कथा)

आखर-आखर प्रीत

नागफांस (उपन्यास)

Naagphans (In English)

विभा रानी

विभा रानीक दूटा नाटक (भाग रौ आ बलचन्दा)

सुशीला झा (सौजन्य- प्रभा खेतान/ सुशीला झा)

छिन्नमस्ता- प्रभा खेतानक हिन्दी उपन्यासक मैथिली अनुवाद

कुसुम ठाकुर

प्रत्यावर्तन (आत्मकथा)(पृ. ४७९-७१२)

डॉ. कामिनी कामायनी

विदेह:सदेह ३१ (डॉ. कामिनी कामायनी आ कुमार मनोज कश्यप- अंक १-३७० सँ)

प्रीति ठाकुर

गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा-पहिल मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

मिथिलाक लोकदेवता (बाल साहित्य)

विद्यापतिक पुरुष परीक्षा (बाल साहित्य)

रस (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

ए बी सी डी- प्रकृति अक्षर पाथी (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

सभ खाइत अछि (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बा म्याउ बाह (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

रङ सभ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०६) छोट आ पैघ (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(०९) माल-जाल आ जानवर दिस देखू (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

(११) हमर परिवार (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

जानवर (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पाथी १२: १...२...३... (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

बाजाक अवाज (अनुवाद- बाल चित्रकथा)

पंजी (११००० मूल मिथिलाक्षर ताड़पत्र)

11000 PALM LEAF PANJI INSCRIPTIONS (VOLUME I TO XXII) Compiled, Scanned & Catalogued by Preeti Thakur

नीतू कुमारी

मैथिली चित्रकथा (बाल साहित्य)

किरण चौधरी (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

हमर बाल-गाड़ी

आर्या कॉकपिट मे

दीया करमाकर- सही संतुलन मे

जंगल मे अहाँक स्वागत अछि

फूल छथि आकाश म

रैया क मूस्कान क वानीलक

वीज संचयक

अर्चरिता कनय "रिवानावी"

(शौचालयक खिस्सा

लाल वनसाती

गुल्लीक जादू्ी यटी

समीनाक निक0 राजन

निनाद म जा्ी छी

प्रियंका झा (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा)

हमन माँछ! नै हमन माँछ!

नशि प्रिया (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा)

कैया सकै छी, नहिया कs सकै छी

सुनीता ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा)

वही आ वकी

नीलिमा चौधरी (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा)

हमन सरसँ नीक संगी

स्वास्तिका ठाकुर (अनुदित सचित्र मैथिली वाल कथा)

गयू बुग नावल नै हा्ू छै

गुलिका (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

रुमना आ चाही!

मधुलिका मिश्र (अनूदित सचित्र मैथिली बाल कथा)

आंधाऽऽन सीमा

लक्ष्मी ठाकुर

जानवर सभ संग सैर-घाँट

पूनम मण्डल

सूर्य कालक खिस्सा

कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद **नूया धीनू** आ धीरेन्द्र प्रेमर्षि, बाल साहित्य) (सौजन्य- धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

रंगा बढ़क दश-प्रमध

डॉ शशिधर कुमर आ **सुप्रिया रवी कुमारी**

रूकम्य (पृ. ६३८-६७४)

....

लेखकक आमंत्रित रचना आ अध्ययन आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज

१. **कामिनी**क पाँच टा कविता आ अध्ययन मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

३. **मुन्नी कामतक** एकांकी "जिनगीक मोल" आ अध्ययन गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

यसयूलटी गीता

एतिरर्स बाल्स सीनीज-१

मीना झा

एतिरर्स बाल्स सीनीज-२

जगदीश चन्द्र ठाकुर (३ टा बाल कविता आ २ **टा कविता सेहो बाल्लुडयन**)

एतिरर्स बाल्स सीनीज-३

....

विद्यापति गीत

गुलिका

गीत-गोविन्ददास (गायन **दीक्षा रानी**)

गोविन्ददास-१

गोविन्ददास-२

गोविन्ददास-३

गोविन्ददास-४

गोविन्ददास-७

गोविन्ददास-८

मैथिली गजल (गजल- गजेन्द्र ठाकुर, गायन **दीक्षा रानी**)

वरुण मृणालिनि

गजल-२

गजल-३

गजल-४

ग्राम मैथिल चैनल- **किसलय चौधरी** आ **संगीता** आनन्द- मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल

रजनी पल्लवी

पूनम मिश्र

रंजना झा

रूबी झा

मैथिली ठाकुर

These are print-on-demand books, send your queries to editorial.staff.videha@gmail.com. The eBooks of some of these are available for sale on Google Play [(c) Preeti Thakur, sales.videha@gmail.com], send your queries to sales.videha@gmail.com. The contents and

documents e-published by Videha (since 2000) ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) are periodically being checked for accessibility issues. People with disabilities should not have difficulty accessing these contents/ documents.

विदेह सूचना संपर्क अन्वेषण

वि दे ह विदेह Videha বিদেহ http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

[Search for Information relating to Mithila/ Maithili](https://books.google.com/)

https://books.google.com/

सूचना

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant.

- Robert Louis Stevenson

....

Videha: Maithili Literature Movement

Videha eJournal (link www.videha.co.in) is a multidisciplinary online journal dedicated to the promotion and preservation of the Maithili language, literature and culture. It is a platform for scholars, researchers, writers and poets to publish their works and share their knowledge about Maithili language, literature, and culture. The journal is published online to promote and preserve Maithili language and culture. The journal publishes articles, research papers, book reviews, and poetry in Maithili and English languages. It also features translations of literary works from other languages into Maithili. It is a peer-reviewed journal, which means that articles and papers are reviewed by experts in the field before they are accepted for publication.

"विदेहक जीवित साहित्यकार-सम्पादक आ रंगमंचकर्मी- रंगमंच-निर्देशक पर विशेषांक शृंखला"

विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांक

साक्षात्कार :अरविन्द ठाकुर -व्यक्तित्व सम्पादक आशीष) कृतित्व- [विदेह अरविन्द ठाकुर विशेषांकक प्रिंट रूप] (अनचिन्हार

विदेह जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक

विदेह रामलोचन ठाकुर विशेषांक

विदेह राजनन्दन लाल दास विशेषांक

विदेह रवीन्द्र नाथ ठाकुर विशेषांक

विदेह केदार नाथ चौधरी विशेषांक

विदेह प्रेमलता मिश्र प्रेम विशेषांक

विदेह शरदिन्दु चौधरी विशेषांक

विदेह कला-विमर्श विशेषांक (सन्दर्भ- संजय दास, कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला, एस.सी.सुमन आ श्वेता झा चौधरी)

विदेह नचनाकार अशोक विशेषांक

विदेह राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह द्वारा एक वर्षमे कोनो एकटा संस्थाक समग्र मूल्यांकन शृंखला"

विदेह अपन ३७१ म (०१ जून २०२३) अंकमे "मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.)" पर विशेषांक निकालत। मिथिला स्टूडेंट यूनियन (एम.एस.यू.) पर निम्न लिखल बिंदुपर मैथिलीमे आलेख आमंत्रित अछि।

१) एम.एस.यू. केर गठनक प्रामाणिक इतिहास,
२) एम.एस.यू. आ मिथिला केर नव चेतना,
३) एम.एस.यू. आ विभिन्न जाति केर समन्वय,
४) एम.एस.यू. द्वारा कएल विभिन्न आंदोलन आ ओकर लेखा-जोखा एवम् ओकर प्रभाव वा
५) एम.एस.यू. संदर्भित आन कोनो लेख।

३७१म अंकक विशेषांक लेल अहाँ अपन रचना २५ मई २०२३ धरि वर्ड फाइलमे ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छी।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

३

"विदेह मोनोग्राफ" शृंखला

विदेह अपन जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक शृंखलाक अन्तर्गत (१)अनिरुद्ध ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर, (६) केदार नाथ चौधरी, (७) प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', (८) शरदिन्दु चौधरी, (९) रचनाकार अशोक आ (१०) रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक निकालने अछि। एही सन्दर्भमे हिनका सभपर "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत "मोनोग्राफ" आमंत्रित कयल जा रहल अछि। "विदेह मोनोग्राफ" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:
(१) इच्छुक लेखक ऊपरमे कोनो एक लेखकपर अपन मोनोग्राफ लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छथि।
(२) विदेह लेखकक नाम मोनोग्राफ लिखबाक लेल चयनित कऽ ओकर सार्वजनिक घोषणा करत।
"विदेह मोनोग्राफ" लिखबाक नियम:
(१) मोनोग्राफ पूर्ण रूपेँ रचनाकार/ कलाकर्मीपर केन्द्रित हएत। साहित्य अकादमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत रूपेँ लिखल मोनोग्राफ/ बायोग्राफीमे लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग जोड़ि कए रचनाकार/ कलाकर्मीक बदला अपन-आत्म-प्रशंसा लिखै छथि। "विदेह मोनोग्राफ" फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल सन रहत। फीफा वर्ल्ड कप फुटबाल एहन एकमात्र टूर्नामेंट अछि जतय कोनो "डायविंग" वा "क्लाजिंग"

सेरेमनी अलगसँ नै होइ छै, पहिल आ अन्तिम मैचक संग होइ छै आ तकर कारण छै जे अलगसँ कएल "ओपनिंग" वा "क्लोजिंग" मे टूर्नामेण्टमे नै खेला रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि होइ छथि आ फोकस खिलाड़ी सँ दूर चलि जाइ छै। फीफा मात्र आ मात्र फुटबाल खिलाड़ीपर केन्द्रित रहैत अछि से ओकर टूर्नामेण्ट "ओपनिंग सेरेमनी" नै वरन् सोझ "ओपनिंग मैच" सँ आरम्भ होइत अछि आ ओकर समापन "क्लोजिंग सेरेमनी"सँ नै वरन् "फाइनल मैच आ ट्रॉफी"सँ खतम होइत अछि आ फोकस मात्र आ मात्र खिलाड़ी रहैत छथि। तहिना "विदेह मानाग्राह" मात्र आ मात्र ऐ रचनाकार/ कलाकर्मीपर केन्द्रित रहत आ कोनो संस्थाक आदि जाति कऽ फोकस रचनाकारसँ अपनापर केन्द्रित करबाक अनुमति नै रहत।

(२) मानाग्राह लेल "विदेह पेटार"मे उपलब्ध सामग्रीक सन्दर्भ सहित उपयोग कएल जा सकैए।

(३) विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।

(४) "विदेह मानाग्राह"क फॉर्मेट: रचनाकारक परिचय (रचनाकारक जन्म, निवास-स्थान आ कार्यस्थलक भौगोलिक-सांस्कृतिक विवेचना सहित) आ रचनावली (समीक्षा सहित)।

घोषणा: "विदेह मानुषीमिह" शृंखला अन्तर्गत (१) राजनन्दन लाल दास जी पर मानुषीमिह निर्मला कर्ण, (२) रवीन्द्र नाथ ठाकुर पर मुन्नी कामत आ (३) केदार नाथ चौधरी पर प्रेम मोहन मिश्र द्वारा लिखल जायत। शेष १ गोटेपर निर्णय शीघ्र कएल जायत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (१)

विदेह द्वारा जे विशेषांक प्रकाशित होइत छै तकर संग विदेह ओहेन लेखक-साहित्यकारपर अपन ध्यान सेहो केंद्रित करत जिनकापर विदेहक विशेषांक कोनो कारणवश नै प्रकाशित भऽ सकल। ऐ लेल विचारक मुख्य बिंदु एना अछि-

१) हम एकटा कोनो लेखक वा कलाकारपर एकाध आलोचना करब जकर भाषा मैथिली अथवा अंग्रेजी रहत। ऐ पाछाँक पहिल रूप ई-बुक केर रूपमे हेत आ प्रयास रहत जे एकर प्रिंट सेहो आबए जे कि परिस्थितिपर निर्भर करत।

२) ऐ शृंखलामे सुभाष चंद्र यादवपर केंद्रित "नित नवल सुभाष चंद्र यादव" एवं राजदेव मंडलपर केंद्रित "Rajdeo Mandal- Maithili Writer" प्रकाशित भेल अछि। दुनू पोथीक लोकार्पण ३१ दिसम्बर २०२२ केँ १११म सगर राति दीप जरय मे कएल गेल।

३)आगाँक घोषणा। लेल http://videha.co.in/investigation.htm देखैत रहू।

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सन्दर्भ उपन्यासकारपर किछु सिलेक्टेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्ड लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जेऽ ई सेहो जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ओहि पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

ओऽ एकटा दूल सुधार अछि, एकटा गोट सन्दर्भ लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिना पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम ओऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़ने छिऐ हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पढ़ि लिअ, कारण एखन बेसी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जइ उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि नै छै ओतऽ 'राजनीतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साठन धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त कएलन्हि। सुभाष चन्द्र

यादव जीक 'राट' जे २०२२मे आयल से सुरेश चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ई http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहूओ सुरेशजीक रचना शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक साइनक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुरेश चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ई http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुरेश चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैत कमलानन्द झा वामपंथक साइन पकड़ने छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बए चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन वातावरणमे तखन सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक इनाम भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली वातावरणक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

आब अहाँ पूछब जे तकर प्रतिकार समानान्तर धारा कोना कएलक, ओ तँ कन्नारोहट नै करैत, तँ तकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ केँ, तहू सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादमी गत दस

बर्खसँ गीत लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ई गीत पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी श्री राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यिक समीक्षा अछि जे हमर एखन पोथी मैथिली समीक्षाशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि। एकरा बाद जगदीश प्रसाद मण्डल जी पर पोथी लिखल गेल (११२ सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित) तकरा पोथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि। 'निर्मल दिनेश कुमार मिश्र' आ 'निर्मल सुशील' जारी अछि।

Rajdeo Mandal- Maithili Writer (Now with Supplement I & II)

निर्मल सुभाष चन्द्र यादव

निर्मल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

JAGDISH PRASAD MANDAL- Maithili Writer

निर्मल दिनेश कुमार मिश्र (जारी)

निर्मल सुशील (जारी)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

संगम पर्व कमलानन्द झा क ब्राह्मणवादपर प्रहार:

दुषद्य यङ्गी- The Black Book

दुषद्य यङ्गी- The Black Book (मिथिलाङन)

-गजह्ब ठाकून, सम्पादक विदह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४(२)

निग नवल दिनश कूमान मिश्र

दिनश कूमान मिश्रक 'दुञ्ञ याटन क वीच म' कासी नदीक ऊगिहासिक आम्मकथा थीक, ङा मिथिलाक आन धान सरक ऊगिहासिक आम्मकथा सहा लिखन छथि जना वहिनी महानद्दा, वागमगी की सङ्गि।, दुञ्ञ याटन क वीच मं.. (कासी नदी की कहानी), न घाट न घन, वगानग यन मजवून मिथिला की कमला नदी, गुग्ही नदी ऊन गकनीकी माउ- रूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankmentsl साहिग्य अकादमीक मैथिली यनामर्शदाग्री समिगिक सदस्य यंकज मा यनाशन ङ्गाना हिनकन याथी सरसँ यैनाक यैना मैथिली अनूवाद कs अयना नाम उयन्यास छयवाङल गल अछि, जकना छङ्म समीङक कमलानङ्ग मा ऊ चान लखकक निसर्व कहै छथि। ओगs स्यष्ट कs दी ज ञ्ञी चान लखक आ छङ्म समीङक दूनू अलीगढ मूस्लिम विद्यालयक हिङ्गी विराागम छथि। ञ्ञी निसर्व दिनश कूमान मिश्रक थीक, ज

आइ.आइ.टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङ म बी. टक. १९६८म आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङम एम.टक. १९७०म कन छथि, आ डाइ निरसर्व लल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयम नामांकन नै होइ छै तखन लोक हानि-थाकि दिल्लीम नामांकन लइए, नै तँ कमलानन्द झा कँ बूझऽ म आबि जाइ छन्हि जे ई निरसर्व कोनो सिविल इन्जीनियरक रऽ सकैत अछि, रऽ सकैए बूझला होइन्ह। दिल्ली मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक समस्यापर कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर भूमिसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै रऽ सकत, मुदा मूलस्थानाक पुनस्थान आ याइ लाल्य लाकसँ कृतघ्नता एटा स हुन सिद्ध हल। ओ लेखककेँ दस वानह वर्ख यदिन सहा गानानन्द नियोगी उद्धानक हएल छलखिन्ह जे लिखन नहथिन्ह जे ओ कनिगाम प्रस्तानित रऽ अनायास अपन नवनाम दासनक सामिग्री चानि कऽ लइ छथि, एहन सन। आव ओ कमलानन्द झा क आश्रय गकलन्हि मुदा दुर्गन्ध! जइ हिसाव ब्राह्मणवादकेँ आगाँ वढ़वैल कमलानन्द झा नामयंथक साढन यकऊ छथि आ सामाजिक न्यायक वलि वढ़वऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सक्रिय अछि। सीलिंगसँ वचवा लल जमीन-जठावला लाक कम्युनिस्ट वनला आ आव ब्राह्मणवाद वचवालल नामयंथक शनक, एहन लाक सभसँ कम्युनिज्मकेँ वहुत नुकसान हल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आव हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि

निदह आकीऽनम४

http://videha.co.in/pothi.htm

७Ts ७कटा गय मान याि दी ज जखन विल (गझकँ यूछल (गलहि ज की उा ७क्क वॉक्क रानाम याऽनशीक उनसँ दनीसँ आनि नहल छथि? गँ हूनकन उभ्न नहलिह ज माऽक्वासॉङ्क याऽनशीक उन कोना उयाद दनीसँ नै उानन अछि। स निदह यटानम हम सट जे गनहक निश्क नहिगा ७कना आन समृद्ध कनैा नहव, कानक्ष समानान्दन धानाम स७ल माँछ ह्वान याखनिक सट माँछ नै सउे७, ७गुक्का मलाह (गाट-(गाट कs स७ल माँछ निकालैग नहल छथि, निकालैग नहगा।

सिर्द्धाकटउ समीआयन अन्दिम ग्रहान।

मुल दिनश कुमान मिश्र (दूऽऽ याटन क वीच मं... २००६): यह ध्यान दन की वाग है कि 1923 स 1946 क वीच कासी उज्र मं मलनिया स 5,10,000, कालाजान स 2,10,000, हैज स 60,000 गथा चवक स 3,000 मौगं (कुल 7,83,000) हूऽऽी।

वान यंकज मा यनाशन (साहित्य अकादमीक मैथिली यनामशदाग्री समिगिक सदस्य) [जलप्रांगन २०११ (यृ. १०३)]:

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मुल दिनश कुमान मिश्र (दूऽऽ याटन क वीच मं... २००६): रानगवर्ष मं विहान मं कासी नदी का वांधन का काम 12वीं शगाद्दी मं किसी नाजा लक्ष्मक्ष ह्विगीय न कनवाया था। डौन ऽऽस काम क लि७ उसन प्रजा स 'वीन' की उयाधि याऽऽी डौन नदी का गटवन्ध 'वीन वांध' कहलाया।

इस तटबन्ध के अवशेष आज भी सुपौल जिले में भीम नगर से करीब 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इस किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छठम समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चारि उपन्यासकारक पी0 एच0डी0, देखू छठम समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चारि पंक्ति झा पनाशन (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २७१-२७८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत ब्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ ब्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चान पंकज झा पराशर (साहित्य अकादमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन ? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमान मिश्र (दुइ याटन क वीच मं... २००६): कासी क प्रवाह कि स्यानहरा की एक मलकफिनाजशाह गुगलक की फौज क सन् 1354 मं वंगाल स दिल्ली लौटन क समय मिलगी है। वगाया जागा है कि जव सुल्गान की फौजं कासी क किनान यहुँची गा दखा कि नदी क दूसन किनान यन हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजं मुकावल क लिए गैयान खडी हैं। यह नदी हाजी शम्सुद्दीन ने जिह्रांन हाजीयुन गथा समस्गीयुन शहन वसाय थ। फिनाज की फौजं शायद कुनसला क आस-यास किसी जगह यन कासी क किनान साव मं यड गइं। नदी की नफ्गान उइं आगे वढन स नाक नही थी। आखिनकान फैसला हुआ कि नदी क साथ-साथ उत्तन की ओन वढा जाय औन जहाँ नदी यान कनन लायक हा जाय वहाँ यानी की थाह ली जाय। सुल्गान की फौजं प्रायः सौ कास ऊयन गइं औन जियानन क यास, जा कि उसी स्थान यन अवस्थित था जहाँ नदी यहाडां स मैदानां मं उगनगी थी, नदी का यान किया। नदी की धाना गा यहाँ यगली जनून थी यन प्रवाह इगना गज था कि याँच-याँच सौ मन क यानी यत्थन नदी मं गिनकां की गनह वह नह थ। जहाँ नदी का यान कनना मुमकिन लगा उसक दानां ओन सुल्गान न हाथियां की कगान खडी कन दी औन नीच वाली कगान मं नस्स लटकाय गय जिसस कि यदि काइ आदमी वहगा हुआ हा गा इस नस्सां की मदद स उस वचाया जा सक। शम्सुद्दीन न कभी साचा भी न था कि सुल्गान की फौजं कासी का यान कन लेंगी औन जव उस का इस वाग का यगा लगा कि सुल्गान की फौजां न कासी का यान कनन मं कामयावी या ली है गा वह भाग निकला।

डा. पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०११ (पृ. १०७)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनेँ रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनारे उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनेँ कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनेँ शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कनेँ आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनेँ छल, जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(... शीघ्र अही लिंकपर आर स्क्रीनशॉट अपडेट कएल जायत।)

विदेहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ जनवरी २०२३ सँ प्रारम्भ... निग नवल दिनेश कुमार मिश्र

http://videha.co.in/ विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) पर।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

४ (३)

निग नवल सुशील

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि?

कारण ओ छद्म समीक्षक छथि।

ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तर्जातीय विवाहक रचना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।"

तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार- जे हम ककरा बढ़ा सकै छिऐ आ ककरा उजाड़ि सकै छिऐ- कोन रचनाकार ठीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण?

चलु अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा कोन स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादूवला साहित्यिक निश्छल दुनियाँमे।

अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यिक दुनियाँमे।

प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामवाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर।

पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामवाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि-

"विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।"

आ उपन्यास आरम्भ।

गामवालीक मृत्यु आ गरवन ममला, गामवालीक दाह संस्कान के कनतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?

मैथिलीक सिण्डीकरट समीजायन अन्दिम प्रहान।

निदहक ३६३ म अंक दिनांक ०१ रूनवरी २०२३ सँ प्रानम्भ... **निग ननल सुशील**

http://videha.co.in/ निदह: प्रथम मैथिली याक्षिक ह्नी-यत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) यन।

-गजेन्द्र ठाकुन, सम्पादक निदह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

ग।

निदहक "साहित्यिक ग्रन्थावान निशेषांक"

निदह "साहित्यिक ग्रन्थावान निशेषांक" लल निम्नलिखित निषययन आलख ह्नी-मल editorial.staff.videha@gmail.com यन आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सनकानी अकादमीः-

(क) यूनस्थानक नाजनीति

(ख) सनकानी अकादमीम यैसवाक गठन-लाकतांत्रिक निधान

(ग) सम्पागुट आ अकादमी कन काज कनवाक तनीका

(घ) सनकानी सम्पाक ठस्म निनाधम उयजल तात्कालिक समानांतन सम्पाक

कार्यपद्धति

(ख) अकादमी पुरस्कारम पाठ्य ईडेनः मिथक वा यथार्थ

२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

३. प्रकाशन जगतम पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण

५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागम पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, विद्यु, मंच-माला-माठ्यक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा

७. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी कर चुनाव , कैलेंडरवाद आ तकरा पाछुक राजनीति

८. दलित एवं लेखिका सबहक संग भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका

९. कोनो आन विषय।

६

विदेह ब्लॉगकार लिए

विदेह WWW.VIDEHA.CO.IN सम्बन्धी सूचना लेल अपन whatsapp नम्बर देमए whatsapp no +919560960721 पर पठाउ, आकर प्रयोग मात्र विदेह सम्बन्धी समाचार देबाक लेल कएल जाएत।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

……………………

Parallel Literature in Maithili and Videha Maithili Literature Movement

Issue No. 88 (November-December 2019) of Muse India at http://museindia.com/ displays Maithili literature in an extremely poor light. Moreover, it wrongly claims to be a representative review of Maithili Literature, whereas it was only in line with the Sahitya Akademi, Delhi; a mere representation of the so-called "dried main drain". It is expected that Muse India will correct itself by announcing an issue exclusively devoted to the parallel tradition of Maithili literature.

T.K. Oommen writes in the "Linguistic Diversity" Chapter of "Sociology", 1988, page 291, National Law School of India University/ Bar Council of India Trust book: "... the Maithili region is found to be

economically and culturally dominated by Brahmins and if a separate Maithili State is formed, they may easily get entrenched as the political elite also. This may not be to the liking and advantage of several other castes, the traditionally entrenched or currently ascendant castes. Therefore, in all possibility the latter groups may oppose the formation of a separate Maithili state although they also belong to the Maithili speech community. This type of opposition adversely affects the development of several languages."

T.K. Oomen further writes: "... even when a language is pronounced to be distinct from Hindi, it may be treated as a dialect of Hindi. For example, both Grierson who undertook the classic linguistic survey of India and S. K. Chatterjee, the national professor of linguistics, stated that Maithili is a distinct language. But yet it is treated as a dialect of Hindi". (Ibid, page 293)

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant. - Robert Louis Stevenson

...

Videha: Maithili Literature Movement

Parallel Literature

The references to parallel literature are found in Vedas, where Narashanshi is referred to as parallel literature.

Parallel Literature in Maithili

The need for parallel literature in Maithili arose due to the constant onslaught on literature and dignity by the Public and Private Academies, for example, Maithili-Bhojpuri Akademi of Delhi, Maithili Akademi of Patna, Sahitya Akademi of Delhi, Nepal's Prajna Pratishthan, all of which are government Academies. In addition to these Academies, the onslaught on Maithili Literature and dignity was constantly done by the so-called literary associations which were recognised by the Sahitya Akademi and were the main tool for usurping all the literary space meant for this language. Besides these, the funding to these and other parochial associations and organisations led to the presentation of an interface in the name of Maithili, which was mediocre and non-representative.

The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor)

This book contains five translations from non-representative Maithili short stories into English by Vidyanand Jha. Nagarjun (Maithili's Yatri) and Usha

Kiran Khan are from the Hindi quota though both got the Sahitya Akademi prize from the Maithili quota. Vibha Rani and Rajkamal Chaudhary are from the Maithili quota though both wrote in Hindi also.

This book is edited by Abhay K. who has read Samskrit only up to high school. Yet he pretends to translate Arthashastra directly from Samskrit into English. I am Kovid in Samskrit and from the quality of the translation, I can presume that he has used some intermediary language in translating Samskrit texts into English. It is a matter of ethics to acknowledge the source.

Vidyanand Jha's translation is below par, for example, he has no inkling what would be the English word for 'olak sanna', and there are plenty of such instances. I have some suggestions for him: First, read A Bird's Eye View on Mithila by Rajnath Mishra, it mentions all the terms for which you could not find English equivalents. Then go to the Videha archive (www.videha.co.in) and look for Umesh Mandal's Picture Dictionary containing vegetation, animals and skill sets of Mithila, here you will find the actual photographs too. Further, under A Parallel History of Maithili Literature (Videha www.videha.co.in), you will

find sample English translations of some Maithili short stories. Therefore, what Vidyanand Jha is presenting as exotic is the original thing of the Maithili Language (but not that of Maithili literature, as was two decades ago). Interestingly his choice of short stories reminds me of Contemporary Maithili Short Stories (Maithili short stories translated into English) edited by Murari Madhusudan Thakur and published by the Sahitya Akademi in 2005. It seems that the stories in this selection are leftover material from that collection. Rip Van Winkle awoke after two decades but Vidyanand Jha is still in slumber not realizing the changes that have happened during the period.

If you compare the translation of this selection vis-a-vis the English translation of Latin American Spanish literature, you would be able to understand the difference.

But these types of selections are not known for their literary excellence, Harper Collins publishes these types of selections for five-star hotels and Airport lounges. The publishers announced this book on March 22, 2022. So, in 6-7 months, you will get old materials only.

The Bride: The Maithili Classic Kanyadan by Harimohan Jha (1908-1984) translated into English by Lalit Kumar (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi)- Harper Perennial (Harper Collins Publishers)

I had pre-ordered the book, which was scheduled to be delivered to my kindle account on the 1st of December 2022, but the delivery date was postponed, and it was delivered to my account on the 14th of December 2022.

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

Sh. Harish Trivedi has committed the same mistake. In his foreword Harish Trivedi writes- "In Hindi, the language to which Maithili is the closest (and of which it was indeed an integral part until it was granted recognition as a separate language by the constitution in 1993) ..."

Harish Trivedi refers to the inclusion of Maithili in the eighth schedule of the constitution of India. Here the year mentioned should be 2003 instead of 1993. Moreover, Maithili was a separate language in 2003, 1993, and 1965 and during the time of pre-Jyotirishwara Vidyapati. The status granted to Maithili by Sahitya Akademi and the Constitution of India, on the other hand, strengthened the hands of the obscurantist elements like Ramanath Jha, Shardananda Jha (he is not a famous person but why I have taken his name, I will explain it later) and others who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha's Khattar Kakak Tarang, Pranamya Devata, Rangshala and Charchari all these books were eligible for the Sahitya Akademi Award initiated in 1966 for Maithili (because of recognition given to Maithili by Sahitya Akademi in 1965. But a philosophy treatise was awarded the prize in 1966, this philosophy book itself is a horrific one, and if one has read the book to understand the nuances of Indian Philosophy, then he will have to unlearn first to be able to grasp the philosophical concepts from a new book on Indian Philosophy. In 1967 no award was given for the Maithili Language.

Ramanath Jha's obscurantism vis-a-vis Panji is evident from one example (because Lalit Kumar also seems to have followed in his footstep, though he gives credit for his ignorance to some other writers). He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the Dooshan Panji secret- which has been released by us on google books in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila"-

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh Harimohan Jha? So, the Sahitya Akademi saved the Maithili

Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, is wrong and so is the assertion made by Sh. Harish Trivedi.

Mr Lalit Kumar is a young person, but he is being misused by some obscurantist elements, who gaslighted Harimohan Jha. Harimohan Jha stopped writing in Maithili following the recognition of it by Sahitya Akademi and was awarded the Sahitya Akademi prize for his autobiography in 1985, after his death, which means nothing.

Mr Lalit Kumar writes- "Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) and Shardananda Jha's Jayabara (1946) attack such social divisions that played a decisive role in marriages." Yoganand Jha's Bhalmanusha (1944) was indeed a pathbreaking novel, but Shardananda Jha's novel was reactionary. Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Yoganand Jha's 'Bhalamanusa' deals with the social problems connected with the problem of marriage. As a reply to this novel, Shardanand Jha wrote a second-rate novel 'Jayabara,' having little literary merit. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

Mr Lalit Kumar for his Panji-related ignorance gives credit to Mm. Parmeshwar Jha's "Mithila Tattva-Vimarsha." Prof Radha Krishna Choudhary rightly observes- "Mm. Parmeshwar Jha's 'Mithila Tattva-Vimarsha' is the history of Mithila in Maithili prose and is based mainly on tradition. Mm. Mukunda Jha Bakshi's 'Mithilabhashamaya Itihas' gives an account of the Khandawala dynasty. From the point of view of modern Maithili prose, these two works are important, though from the historical point of view, are unreliable. (RADHAKRISHNA CHOUDHARY A Survey of Maithili Literature)

The following excerprt from Our Panji Paband ((part I&II) is being reproduced below for ready-reference: -

महानाज हनसिंहदन- मिथिलाक कर्णाट नंशक। ग्गागिनीश्नन Oाक्नक नर्ष-नम्नाकनम हनसिंहदन नायक आकि नाजा छलाह। 1294 ईं. म जन्म आ 1307 ईं. म नाजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ईं. म हानिक वाद नयाल यलायन। मिथिलाक यञ्जी-प्रवद्यक व्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकानिक स्थायक, मैथिल व्राह्मणक हेतु गुणाकन झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकनदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त ओहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हनसिंहदनक प्रनणासँ- आ ईं हनसिंहदन नान्यदनक नंशज छलाह, ज नान्यदन कार्णाट नंशक १००९ शाकम

स्थापना कएल गेलथि- गङ्गेद शुद्धं शशि शाके वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पञ्जिकार लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे (था ओ वृद्धि निवासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files.

<u>Sh. Anshuman Pandey</u> [Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjīkara-s whose families have maintained these records for generations are often reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panjī records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the

University of Michigan 2014]. Later these Panji Manuscripts were uploaded to google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

Mr Lalit Kumar further tries to put his agenda by writing- "Harimohan choose a middle ground in his reformist agenda." He gives laughable reasons for his contention viz. "he espouses the significance of local traditions, languages, scripts, education system, and moral values" thereby meaning that these are conservative values!

(All the referred books are available for free pdf download from the link http://videha.co.in/pothi.htm)

VIDEHA MAITHILI LITERATURE MOVEMENT AND A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE

Therefore, the missing portions, the ignored and non-represented aspects of society, started to be chronicled. It led to the depiction marked by the richness of vocabulary and experiences and was a revolution in literature and art as far as people speaking Maithili are concerned. The quality now has not remained mediocre. The real power of the Maithili language was realised by the native speakers, mediocrity was replaced by excellence. This attempt at the writing of History of Parallel Literature for the Maithili Language arose as the mediocre agency (private and governmental) funded so-called mainstream literature, which has no readership, and no acceptance among the speakers of Maithili continued to be presented by these Akademies as representative literature. The mediocre interface of Maithili literature was presented by the government radio and television stations also. Literary journals like Museindia (www.museindia.com) & Publishers like Harper Collins were also used for their sinister design.

Pseudo-criticism in Maithili and the case of Kamalananda Jha

The title of Kamalanand Jha's book "Maithili Novel: Time, Society and Questions" (2021) is misleading. It is a collection of some syndicated so-called critical articles on some of his caste novelists. The 263-page book can only be sold in hardbound to libraries where it will rot. Here is a correction, a non-caste writer's work, i.e., Subhash Chandra Yadav's novel 'Gulo', has been dealt with by him in two lines, of course without reading it. I am presenting those two lines here for your entertainment. You must have read *Gulo*, if you haven't already, read it first because then you will have a more entertaining experience. Gulo is available on Videha Archive with the permission of Subhash Chandra Yadav at this link http://videha.co.in/pothi.htm.

"The weakness of the novel is the author's political bias. The partisanship towards a particular politics does not do justice to the work."

In a novel where politics is not remotely involved, there is no question of 'political bias and partisanship of a particular politics'. Dhumketu and Yatri used

political bias or partisanship. Subhash Chandra Yadav's 'Vote' which came out in 2022 and is available with permission of Subhash Chandra Yadav on Videha Archive at this link http://videha.co.in/pothi.htm, is on politics but even there Subhashji's enchanting style obviates the need of any political bias... Read my book 'Nit Naval Subhash Chandra Yadav' which is available at this link http://videha.co.in/pothi.htm. On the other hand, Mr Kamlanand Jha sounds like a spokesperson of some political party or a casteist organisation rather than a literary critic. Kamalananda Jha's Brahministic bias against Subhash Chandra Yadav is an alarm bell. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist stance to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. In his biodata, he proudly mentions the Maithili translation assignment bestowed on him by the Sahitya Akademi, and this assignment was allotted to him not on account of merit but solely on the ground of his caste title and in lieu of these deeds. For people like him, Maithili-related work is merely a line in their *curriculum vitae*, but it is a question of life and death for the people of the parallel stream. Why did I call Kamalananda Jha a pseudo-critic? Because he is a pseudo-critic. He writes: "After nearly a hundred years of journey, Gaurinath is

credited with writing a dignified novel on the dreams, struggles and ironies of inter-caste marriage. So, did Kamalananda Jha take away this credit from Sushil? Is this the culmination of the arrogance of his Brahministic upbringing ("*Through my whims and fancies I can place some literature on top and can downgrade some to the bottom*") or is this the evidence of his lack of study? Let me take you away from the selfish world of Kamalananda Jha, away from deception and disguise to the sincere world of Sushil's magical literature. Welcome to the world of Sushil's literature. Here is Sushil's 'Gambali' (1982) which is now available in the Videha Archive at the link http://videha.co.in/pothi.htm. In the first line of this novel, even before the novel begins, Sushil writes about the novel 'Gambali': "In support of widow marriage and inter-caste marriage" and here begins the novel. The death of a village woman and then the trouble ensues, who will cremate this village woman? Brahmin community or Yadav community of the village? Dinesh Kumar Mishra's 'Dui Patan Ke Bich Me' is a historical biography of the Kosi River. He has also written historical biographies of other rivers of Mithila like 'Bandini Mahananda,' 'Bagmati Ki Sadgati!', 'Dui Patan

Ke Bich Me... (Story of the Kosi River)', Na Ghat Na Ghar, Kamla River, 'Bhutahi River and Technical Herbalism', The Kamla River and People on Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a Ghost River and Engineering Witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments. Pankaj Jha Parashar, a member of the Maithili Advisory Committee of the Sahitya Akademi, Delhi has plagiarised paragraph after paragraph from his books and has published a novel in Maithili in his name, which pseudo-critic Kamalananda Jha mentions as research of this thief author Pankaj Jha Parashar! Let me clarify here that both the thief writer and the pseudo-critic are in the Hindi department of Aligarh Muslim University. This research is done by Dinesh Kumar Mishra, who is a graduate of IIT, Kharagpur in Civil Engineering (in 1968) and M. Tech in Structural Engineering (in 1970) and is qualified for that research. In Hindi, the cut-off for admission is the lowest across universities, otherwise, Kamalananda Jha would have known that this research could be done by a civil engineer only. The Hindi original and Maithili screenshots are attached below. Dinesh Kumar Mishra is not from Mithila, but he has authored the story of all the streams of Mithila. We are grateful to him, and

the people of Mithila will remain indebted to him for this. This thief writer Pankaj Jha Parashar is a habitual offender. More than a decade ago he found a saviour in Mr Taranand Viyogi who wrote that he (thief writer Pankaj Jha Parashar) gets influenced involuntarily stole others' material in his works. Now he has found another saviour in Kamalananda Jha. The parallel stream is conscious of how Kamalananda Jha takes the leftist side to promote Brahminism and wants to sacrifice social justice. Communism has suffered a lot from people who became communists to escape the land ceiling.

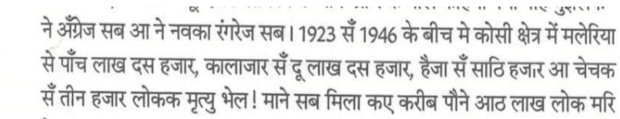
All books by Dinesh Kumar Mishra are now available in the Videha Archive with his permission:

http://videha.co.in/pothi.htm

Let us recall here that when Bill Gates was asked whether he was delaying the introduction of the X-Box in India for fear of piracy. His answer was Microsoft never delays the launch of products for fear of piracy. We will continue enriching Videha Archive (http://www.videha.co.in/archive.htm), despite such risks because not all the fish in the pond rot by some rotten fish in parallel streams. The fishermen here have been and will continue to remove such rotten fish.

The final blow to syndicated pseudo-literary criticism in Maithili.

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me… 2006): It is noteworthy that between 1923 and 1946, 5,10,000 people died of malaria, 2,10,000 from Kala Azar, 60,000 of Cholera and 3,000 of smallpox in the Kosi region (783,000 total deaths). Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 103)]:

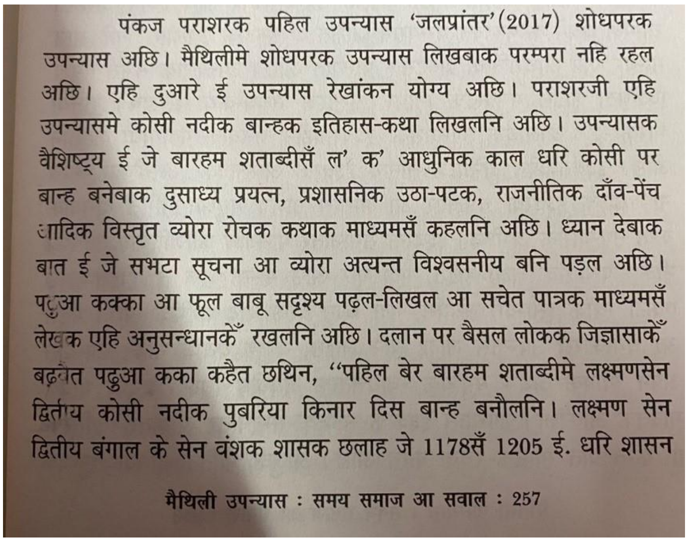


ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me… 2006): On the Kosi River in Bihar, India, a dam was built by King Laxman II in the 12th century and for this, he received the title of 'Bir' from the people and the embankment of the river was called 'Bir Dam' The remains of this embankment are still visible in Supaul district, about 5 km south of Bhim Nagar. Dr Francis Buchanan (1810-11) speculated that the dam must have been an outer wall built to protect a fort as it stretched over a distance of 32 kilometres from Tilyuga to its confluence on the western bank of the

Dhaus river. Dr W.W. Hunter (1877) did not agree with Buchanan's contention that the dam was the protective wall of a fort. Quoting locals, Hunter believed that most people did not consider it a fortress wall and according to him it was something else but he was not in a position to say anything. Yet the common impression is that it must have been an embankment built along the Kosi River to prevent the river's current from sliding westwards. People also said that it seemed that the construction of the embankment had suddenly stopped.

The pseudo-critic Kamalananda Jha's saviour of the habitual offender thief Pankaj Jha Parashar quoted the plagiarised work as follows: (Maithili Novel, Time, Society and Questions pp. 257-258):


पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 31)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप कें आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा कें लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनें छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक कें बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका कें आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

Original Dinesh Kumar Mishra (Dui Patan Ke Beech Me… 2006): A glimpse of the horrors of the Kosi River can be seen in the event when the army of Feroz Shah Tughlaq returned to Delhi from Bengal. It is said that when the troops of the Sultan reached the banks of the Kosi, they saw that on the other side of the river, the troops of Haji Shamsuddin Ilyas were

waiting, ready for a battle. This was the same Haji Shamsuddin who founded the cities of Hajipur and Samastipur. Feroze's troops were stranded on the banks of the Kosi somewhere around Kursela. The speed of the river was preventing them from moving forward. It was finally decided to proceed northward along the river and to locate the water where it was navigable. The troops of the Sultan went up about a hundred *kos* and crossed the river near Ziaran, situated at the same place where the river descended from the mountains into the plains. The river was thin, but the flow was so fast that heavy stones weighing five hundred *manas* were floating like straws in the river. On either side of the river where it was found possible to cross it the Sultan erected a row of elephants, and ropes were hung in the bottom row so that if a man loses control he could be rescued with the help of these ropes. Shamsuddin never thought that Sultan's troops would be able to cross the Kosi and when he came to know that Sultan's troops had managed to cross the Kosi, he fled.

Thief Pankaj Jha Parashar (Member of Maithili Advisory Committee of Sahitya Akademi, Delhi) [Jalpranthar 2017 (p. 105)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहैं फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

A Parallel History of Maithili Literature

I

Introduction

FESTIVAL OF LETTERS OR FESTIVAL OF SHAME

SAHITYA AKADEMI AND the DOWNFALL OF INDIAN LANGUAGES (IN SPECIAL CONTEXT OF MAITHILI LANGUAGE)

When Maithili was recognised by the Sahitya Akademi (National Academy of Letters- of India) way back in 1965, Late Ramanath Jha stated that his Maithili language is saved now (Maithilik Vartman Samasya, Ramanath Jha).

He was wrong on this on two counts. What he referred to as applicable, if it applied at all, only to the part of Maithili speaking area, geographically located in India. Maithili is spoken, natively, in India and Nepal. After the treaty of sugauli (ratified in 1816), which was in the aftermath of the Anlo-Nepalese war of 1814-16, the hilly regions were incorporated in British India, including the Nepalese-speaking Darjeeling Area. Similarly in 1816 and 1860, the Britishers ceded some Terai region to Nepal. As a result, part of Maithili speaking Area, which was earlier ruled by Malla Kings (when Maithili was an official language of the region), was ceded to Nepal. Even today some Maithili scholars

(!!) refer to the golden period of Maithili as the period of "Nepali (!!)" Malla Kings (Ramanath Jha, Introduction to Maithili Sahityak Itihas by Dr Durganath Jha "Shreesh").

Ramanath Jha himself admits that during his visit to "Vir Library" of Nepal (Kathmandu) he came to know about the Nepal legacy (his monograph on kirtaniya Natak, which he wrongly presents as Kirtaniya Nach) in respect of Maithili. So, he cannot be blamed for his lack of knowledge in this respect. He was wrong on the second count also, and this second count was an artificial creation. He began a tradition of elitism and conservatism in Sahitya Akademi, as the first convener of the Maithili language. The tradition got stronger and stronger in the last 55 years of the Existence of Maithili in that Akademi. So, he ensured that liberal writers, like Sh. Harimohan Jha, attacking casteism and conservatism did not get the award, even though the year 1967 went unrewarded and the Ist award in 1966 was given to a non-literary book in Maithili (academic book of Philosophy!!!).

He was casteist, conservative and confused. The inter-caste marriage in Panji was well known to him, and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father. But he informed Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya in a distorted way. Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila".

"The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila-Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name.", and he writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha. So how would this casteist-conservative-confused allow the award to be given to Sh? Harimohan Jha. So, the Sahitya Akademi saved the Maithili Language by recognizing it, as asserted by Prof. R. Jha, was wrong on those two counts.

Now come to Nepal, the Prajna Pratisthan and other organizations often recognize Indian Maithili writers, but Sahitya Akademi of India does not recognize Nepalese Maithili writers, be it the Seminars or the poets meet, be it an anthology of poems or prose

published by the Akademi. Regarding the treatment of Nepalese Maithili writers by Sahitya Akademi Sh. Ram Bharos Kapari "Bhramar" laments that there is demand in Nepal that they should also not award Indian Maithili writers/ publish them in their anthologies as reciprocity demands this.

The narrow-mindedness of the Maithili advisory board of the Indian Sahitya Akademi has its origin in the organizations that are recognized by the Sahitya Akademi, the basis of which is extra-literary credentials. These are pseudo-organizations running on paper, political organizations or casteist organizations pocket-run by a few. The complete list is:

MAITHILI LITERARY ASSOCIATIONs (!!!) RECOGNIZED by SAHITYA AKADEMI

1. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P.C. Banerjee Road, Allahabad-211 002.

2. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag, Darbhanga-846 004.

3. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001.

4. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007.

5. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004.

6. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

Now the Literary Association lists read as under. Serial no. 1 & 6 above have been derecognised and has been replaced by other non-literary associations at sr no 5, 6 & 7 below.

(1) The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, Professors' Colony, Digahi West, Opp. of Primary School, Darbhanga-846 004, (Bihar)

2) The Secretary, Chetna Samiti, Vidhya Pati Bhavan, Vidyapati Marg, Patna-800 001 (Bihar)

3) The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007, (West Bengal)

4) The Secretary, Vidhya Pati Sewa Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004, (Bihar)

5) The Secretary, Anand, Samajik Sanskritik Sahityik Manch, Rajkumarganj (Mirzapur Chowk), Darbhanga-846 004, (Bihar)

6) The General Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, Rosebery 5032, Sahara Garden City, Adityapur-2, Jamshedpur-831 014, (Jharkhand)

7) The General Secretary, Akhil Bharatiya Mithila Sangh, G-6, Hans Bhavan, Wing 2 I.T.O., Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (Delhi)

What is the literary credential of the Centre for the Study of Indian Traditions (now recognised and replaced by another pocket association)? Chetna Samiti and Vidyapati Seva Sansthan are casteist political outfits, vehemently displaying the casteist attire of a great ancient poet, whose caste is still uncertain (VIDYAPATI), but who was certainly not Brahmin. All India Maithili Sahitya Samiti (now derecognised and replaced by a non-literary association) became non-existent even during the lifetime of the Late Jaykant Mishra, same is the case with Akhil Bhartiya Maithili

Sahitya Parishad. Mithila Sanskritik Parishad has done a crime through an investiture ceremony of the great Vidyapati, they tried to convert Vidyapati and "Maithili" language to the language of only the Brahmins (the name of the artist who sketched the Vidyapati has still not been disclosed by this organisation). When these non-existent organizations exercise voting powers granted by Sahitya Akademi and chose a convener, it is not a coincidence that for successive times only conservative people among the Maithil Brahmin caste, are chosen. The complete list is:

1. Ramanath Jha, 2. Jaykant Mishra, 3. Surendra Jha Suman, 4. Sureshwar Jha, 5. Ramdeo Jha, 6. Chandranath Mishra Amar, 7. Vidyanath Jha Vidit, 8. Veena Thakur, 9. Prem Mohan Mishra, 10. Ashok Avichal.

The result is now for everybody to see. The complete list of Sahitya Akademi awards (till 2019) is:

Total booty distribution- 50 times, Maithil Brahmins- 42 times, Kayasthas- 6 times, Rajpoots- 3 times; Others- 0 times!!! (Now in 2021 Sh. Jagdish Prasad Mandal has been awarded this prize for his novel "Pangu", so the count is now not zero but one.

The result is not based on the quality of the books but solely upon the caste-based other considerations and the disease has its root in the faulty seedling that the Sahitya Akademi of India found through the faulty literary associations.

What were the objectives of the setting of this Akademi?

Sahitya Akademi was established (National Academy of Letters to be called Sahitya Akademi) by Government of India resolution No F-6-4/51G2(A) dated December 1952 "to set high literary standards, to foster and co-ordinate literary activities in all the Indian languages and to promote through them all the cultural unity of the country; to promote good taste and healthy reading habits, to keep alive the intimate dialogue among the various linguistic and literary zones and groups through seminars, lectures, symposia, discussions, readings and performances, to increase the pace of mutual translations through workshops and individual assignments and to develop a serious literary culture through the publications of journals, monographs, individual creative works of every genre, anthologies, encyclopedias, dictionaries, bibliographies, who's who of writers and histories of literature."

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, " along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year".

The Akademi recognises " Besides the twenty-two languages enumerated in the Constitution of India", English and Rajasthani as languages. Sahitya Akademi has constituted twenty-four language Advisory Boards "to render advice for implementing literary programmes in these 24 languages".

The Akademi gives prizes in twenty-four languages recognised by it for original and translated works. It gives " special awards called Bhasha Samman to a significant contribution to the languages not formally recognized by the Akademi as also for contribution to classical and medieval literature"; "It has also a system of electing eminent writers as Fellows and Honorary Fellows and has also established a fellowship in the names of Dr Anand Coomaraswamy and Premchand".

FESTIVAL OF LETTERS (SHAME)!!!!

In February every year, Sahitya Akademi "holds a week-long Festival of Letters; It begins with the ceremony to present the Akademi's Annual Awards for creative writing".

In February every year, there is a need to examine whether Sahitya Akademi is fulfilling its objective and whether Sahitya Akademi is aware of the rich cultural and linguistic variety prevalent in India.

On scrutiny it is revealed that Sahitya Akademi believes in "forced standardisation of culture through a bulldozing of levels and attitudes" and it is not "conscious of the deep inner cultural, spiritual, historical and experiential links that unify India's diverse manifestations of literature".

The Akademi boasts of publishing "one book every thirty hours" and holding "at least thirty seminars every year" at regional, national, and international levels, "along with the workshops and literary gatherings-about two hundred in number per year". If we see the data in respect of Maithili it comes out that every year around twelve books should have been published in Maithili and the Maithili writers might have attended thirty seminars every year at regional,

national, and international levels and might have participated in eight literary gatherings every year. The number of Maithili books published by the Akademi is pathetically low, and when we see the assignments, through which these books get artificially prepared (be it translation, anthology or monograph), then the people getting these assignments are often related to the members of the advisory board (as the answer to RTI application by Sh. Vinit Utpal brings forth). The quality suffers, and as a result, there is no readership.

How this Akademi failed? And why this Akademi failed? And what action should be taken against Akademi for its intentional failure?

Firstly, Akademi is not the name of a man or woman. Akademi or its member of the Advisory Board consists of persons, and if the group of persons is failing the Akademi, that language itself is to blame! But again, the language is not the name of a man or woman. So, the people speaking that language are to be blamed for the failures of the Akademi. Really!!

Even if it is partially true, the Sahitya Akademy cannot shirk its responsibilities. How an advisory committee can be considered representative of Maithili-speaking

people (even that of India), when the Convener of that language is nominated by six organisations (recognised by the Sahitya Akademi for reasons best known to it), having no remote connection with literature? Sahitya Akademi sowed seeds of Acacia and expected Mango fruit. Having said that it is also true that the Akademi or any organisation can transform itself, but only when the conservative people representing these find pressure from the literary fraternity, change themselves or are replaced.

What is the solution?

The literary fraternity has already taken initiative by establishing parallel Sahitya Akademi awards and parallel literary meets. It should be taken further. All legal means should be explored to take the Akademi to the task. On all available forums, the fact is made clear that the literature being prepared by Sahitya Akademi through assignments is not grammatically correct, that it is not up to mark and is of inferior quality. On all available forums, it should be made clear that the thin, casteist-looking (quantitatively and qualitatively) and pale Maithili literature, which is being shown by the Sahitya Akademi of India to the world, has no readership or respect in its native

speaking area of India and Nepal. And that Maithili has moved not because of Sahitya Akademi but despite it.

Demand

The six organisations representing Maithili should be derecognized with immediate effect and an inquiry initiated to ascertain their genuineness. A committee should be set up to scrutinize the work done by the Sahitya Akademi (in respect of Maithili) in the last 55 years. The awards should be kept in abeyance till the results of the inquiry are made public and corrective steps are taken.

II

THE CELEBRATION BEGINS

Videha Ist Maithili Fortnightly International e-journal has e-published more than three hundred issues to date. Meanwhile, we will enumerate the problems faced and the solutions found by us. The Journey began in the year 2000 at yahoo Geocities- the first words on the internet in Maithili were written by me on the yahoo Geocities sites (now yahoo has discontinued Geocities) towards the end of 2000 when I suffered a major accident which kept me confined to crutches for one and a half years. But that shaped my destiny. I

could concentrate on my Maithili writings and my research on Tirhuta Manuscripts. On 5th July 2004, the first blog in Maithili came (gajendrathakur.blogspot.com) as "Bhalsarik Gachh", which was rechristened as Videha ejournal from 1st January 2008. From Ist January 2008 it came to be published as a fortnightly journal. The first rechristened issue brought the story of the life and creations of a forgotten Maithili poet Late Ramji Choudhary (1878-1952).

Till the eighth issue of Videha the columns on Music, Mithila Painting, Children column, learn samskrit through Maithili got strengthened. Moreover, the projects on digitalisation of Maithili Classics and Panji Manuscript-leafs got started. The searchable dictionary (Maithili-English_Maithili) was designed and strengthened. From the eighth issue, a latest unpublished Maithili Play of Nachiketa "No Entry Maa Pravish" began its e-publication in Videha. Nachiketa, the greatest dramatist of Maithili Literature was silent for the last 25 years, as far as the drama was concerned.

Technology has two aspects, bad (its chances of misuse) and good (its effective use). It is a great leveller; it challenges status quo forces. It is applicable in all areas of knowledge. So, school-going children today have a clearer understanding of the universe and atoms than the Aryabhata or Sir Issac Newton had. After mass-scale use of printing education and literature expanded its wings, but only after the "Internet and electronic transformation of tools of knowledge", it has become universal, it has jumped geographical boundaries. All shackles unfurled, the weak links of the chain were identified, and the chain which tried to capture knowledge, which tried to thwart its expansion, started breaking down. And the greatest beneficiary became the Maithili Literature. What is Videha, nothing, it is only its commitment to the Maithili Language, which helped it expand its base, and Videha became the means that were able to bind together the Maithili-speaking areas in both parts of the boundary (India & Nepal). Videha gave Maithili a batch of committed writers and a batch of committed readers. It challenged the status quo and casteist forces. It challenged confused writers, who were using

Maithili as a tool to ride the ladder of Hindi. The lack of criticism, the lack of teeth in criticism was the reason that some writers and dramatists were using Hindi-Mix Maithili for cheap popularity, they were using derogatory language for the so-called lower castes of their society (some were finding plea in Natyashastra- when even the modern-day Samskrit Drama is not using Prakrit etc.!!), and for their mimicry, those castes started keeping distance with this kind of literature. And once the confusion of the confused thinned, a new type of awakened literature, stage, and drama (top-class) became the norm.

Videha is regularly getting some excellent brains. Since its inception, Videha, the idea factory, is dependent upon them. As far as their versatile qualities are concerned, people associated with Videha are different. All are known for their perseverance and resilience. All are known for their arduous work. All are known for their quality work. All are known for their discipline. And all are committed; committed to Maithili and the Mithila. The cumulative force resulted in a natural revolution. A revolution in the field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. The only

international e-journal in Maithili started this quality movement in Maithili. Nothing less than world standard was acceptable. The awards were instituted to recognize the parallel field of Maithili Literature, art, music, craft, stage, and drama. Only the best was selected, there was no scope for the second best. The participation of readers in the decision-making processes was encouraged. The readers got full access to the digitalised Maithili Literature. More than five hundred Maithili books and around 11000 palm-leaf mithilakshar manuscripts were digitalised and made available online under the "Videha Archive" section of www.videha.co.in (and the number is increasing every day). The audio-video-paintings-photographs were archived, and all these archived "art and lifestyle" of the people of Mithila were then placed online. The Videha Archive is a unique gift to the world.

So, what is the ideology of people associated with Videha? Is it collective thinking? No, of course not. In Videha all are welcome. Here all are welcome to discuss their respective ideology. Having said this, it needs emphasis that there are some basic human principles where no compromise is possible. The

casteists, those having genetic superiority complex (which is another name for an inferiority complex), the practitioners of plagiarism, those who are unable to take part in a healthy discussion and persons who are not able to withstand the criticism of their creation, Videha is not a platform for them. The ideology of people associated with Videha may have different tinges, not all need to toe the line taken by any member of the editorial board. Videha believes in the individuality of ideas and the editorial board never imposes its ideology upon its members. At the same time, it is being emphasized that each member of the Videha editorial board has a strong ideological leaning, the ideology of humanism is practised by all.

Videha-Maithili Literature Movement has its roots in the year 2000 when I started making Maithili Websites on Yahoo Geocities. After Yahoo Closed Geocities these sites were automatically deleted. However, the early form of Videha "Bhalsari Gachh" was started on 5 July 2004, and it is the earliest presence of Maithili on the internet. Videha and its vibrant members did their utmost in translating lacs of words on Wikipedia, and they successfully opposed the nomenclature "Bihari

Languages" (Gerard M accepted the role of Umesh Mandal, the co-editor of Videha, go to Gerard M's blog and click the Dasipat Aripan photo from Videha archive (Preeti Thakur) placed at his blog, you will reach http://videha.co.in/). In Google translate/Wikipedia localisation drive, in Tirhuta and Kaithi script research and the localisation of Braille in consonance with the Maithili Language, Videha shouldered the responsibility as a pioneer in technology viz-a-viz Maithili Language. It was a pioneer in many respects. It started for the first time a Maithili Websites Aggregator at http://videha-aggregator.blogspot.com/, the first braille site in Maithili, the first mithilakshar site in Maithili among others (total list).

Videha has organised several dozen Maithili book fairs to date. The 16th Videha Maithili book fair was held at Sagar Rati Deep Jaray, Patna on 10-11th December 2011 and the 17th Videha Maithili book fair was held at Guwahati, on 22-23 December next year at the Vidyapati Parv organised by Mithila Sanskritik Samanvay Samiti. The detailed list of all the venues (datewise). Videha also organised a parallel Sahitya Akademi Kavi Sammelan, besides awarding parallel Sahitya Akademi prizes, as corrective measures, as the

awards and Kavi Sammellans of Sahitya Akademi were awarded/ organised in a unilateral manner where merit took a beating. Videha has, thus, fulfilled its obligation by interfering in the murky affairs of government organisations. Videha cannot remain a silent spectator, be it plagiarism or copyright violations. So, the authors like Pankaj Parashar, and Ashok Sahu, who were engaged in lifting other articles/ stories/ poems were banned after verifying the sources and target writings.

Literature in translation is a major issue with Videha. Lack of translation in America resulted in Americans lagging in quality literature. We practise literature in translation in both directions- from Maithili into English and from other languages into Maithili. As far as translations from other languages into Maithili are concerned English, Nepali, Sanskrit and Hindi function as buffer languages in the process. Direct translations into Maithili are limited; and it is done directly only from English, Sanskrit, Hindi, Nepali and Bengali, although there are some exceptions. As far as the question of translations from Maithili into other languages is concerned, directed translations are again limited; and it is again done directly only into English,

Hindi, Sanskrit, Bengali and Nepali, barring some exceptions. Videha contacted some notable personalities of class literature, took permission, and translated that literature into Maithili. Most of the time English was used as a buffer language and translation work from English, Hindi, Konkani, Telugu, Gujarati, Odia, Kannada, Nepali and Telugu into Maithili was completed; and these works were regularly published in Videha. Maithili novels, poems, and short stories, on the other hand, were translated from Maithili into English and were published regularly in Videha.

VIDEHA became a Maithili Literature movement. No, VIDEHA was from day one of the Maithili Literature movement. Many established misconceptions got cleared through VIDEHA. The well-known facts, the not-so-obvious plot of some people to kill Maithili through its twin institutions the Sahitya Akademi and the CIIL was unearthed. The Right to Information came in handy. Sri Vinit Utpal asked for information from Sahitya Akademi through his RTI application dated 23.09.2011 (file no. RTI-125) and sought information on "Assignment assigned by Maithili Advisory Board, Sahitya Akademi under the convener ship of Sri Vidyanath Jha 'Vidit'". The information included a

proposal received, a proposal rejected, and a proposal kept in abeyance." The statutory mandatory information supplied by the Sahitya Akademi unearthed a vicious circle of Maithili-speaking so-called litterateurs, hell-bent upon making Maithili a language- "of the Maithil Brahmin, for the Maithil Brahmin and by the Maithil Brahmin". More than 90% of the assignments went to the friends, relatives, and acquaintances of the 10-member Maithili Advisory Board. No assignment to Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Bechan Thakur (the greatest Short-story-novel writer of Maithili, the greatest living poet of Maithili and the greatest living Maithili dramatist; respectively), Sh. Umesh Paswan, Sh. Umesh Mandal, Sh. Ramdev Prasad Mandal "Jharudar", Sh. Durganand Mandal, Sh. Sandeep Kumar Safi or to Sh. Anand Kumar Jha. When every member of the Maithili advisory board is hand in glove with the Sahitya Akademi to kill the Maithili language then where lies the hope? The demand for Mithila state by these people will see that 10 Maithil Brahmin families would loot the Mithila state. Then where lies the hope? Here lies hope. Sh. Bechan Thakur has created a parallel Maithili stage and theatre, a slap on the existing

slapstick humouristic Maithili theatre. Sh. Umesh Paswan is a discovery of the Parallel Sahitya Akademi Poetry festival organised by Videha. Sh. Jagdish Prasad Mandal, Sh. Rajdeo Mandal, Sh. Jharudar, Sh. Sandeep Kumar Safi and Sh Umesh Mandal have pumped their energy, wealth, and time into our Maithili Language. This language will live...proofs are given below: -

Google Translate:

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

then Wikipedia translate:

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator
http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai
http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

[Monday, May 09, 2011

The #Bihari #Wikipedia is written in #Bhojpuri

This is the kind of article that has many people's eyes glazed over. It is about standards and scientific documents, and it is about languages most of my readers have never heard about. For the people that do speak one of the languages that are considered

Bihari, it is extremely relevant, and it has implications for Wikipedia.

This is information provided by Umesh Mandal that explains the "Bihari group of languages" with the Maithili language:

Kellogg (1876/1893) and Hoernle (1880) regarded Maithili as a dialect of Eastern Hindi; Beames (1872/reprint 1966: 84-85), regarded Maithili as a dialect of Bengali, Grierson has done a great service to the Maithili language, however, he erred when he gave a false notional term of "Bihari" language after that western linguists started categorizing Maithili as a dialect of "Bihari" language; although there is nothing known as "Bihari Language" and both Maithili and Bhojpuri are spoken in Bihar (of India) as well as in Nepal.

Umesh is working on the localisation of MediaWiki for the Maithili language and as this language is currently in the Incubator, the language committee does its due diligence and trying to understand if Maithili can have a place in the Bihari Wikipedia. The information provided by Umesh makes it quite clear: "no".

This still leaves us with the misnomer that is the Bihari Wikipedia. The language used for the localisation and the articles is Bhojpuri. Bhojpuri has the ISO-639-3 code "bho".

Are you still following all this? Ok, there is one question I am not asking: How about the Kaithi script?

Thanks, GerardM]

Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.]।

TIRHUTA UNICODE See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman Pandey at Page 23 of the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in

References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

The Maithili Speaking area is shrinking. It is shrinking due to a conscious-subconscious policy of the Governments of India and Nepal, and the situation became critical due to the invasion of Hindi and Nepali media and the biased educational system in Maithili-speaking areas, and due to the large-scale migration, which has happened in one single generation. The question of Hindi saw to it that Vajjika, Angika and now Thethi, Surjapuri etc. languages should get the tacit support of supporters of Hindi, first in the name of religion and second in the name of caste. Through this they did not support Vajjika, Angika, Thethi or Surjapuri; but they tried to weaken Maithili, which resulted in the weakening of Vajjika, Angika, Thethi

and Surjapuri. For all this, the Maithili-speaking people, more so the officials (I will explain it later), are also responsible, as they tried to delimit Maithili within the two castes and four districts. All other people and areas, than these, were considered northern, southern, eastern, and western deviations of so-called pure Maithili, which was fictitiously considered as being spoken by these Maithil Brahmins/ Karna Kayasthas of Madhubani, Darbhanga, Saharsa and Supaul districts. For the last 45 years the officials, yes, I call them officials, the officials of the Maithili Department of Sahitya Akademi, did not try to accommodate the people outside this fictitiously delimited domain. But the major problem lies somewhere else. The slow poisoning was given in many disguises, be it the faulty top-heavy education system, which neglected primary and middle school education through the Mother Language Maithili, or be it through the concept of dialect, which initially conveniently declared languages like Maithili as dialects. Elementary education through Maithili was a non-starter because the Maithili books published by the Bihar State Textbook Publishing Corporation Limited seemed to be in Avahatt, it was

not fit for children. Further, the authors and subjects selected for these books had a casteist bias. Maithili became a tool for caste-based politics, as once Hindi had been a tool for religion-based politics. Still, these officials, of the Maithili Department of Sahitya Akademi, are residing in their own built ghetto, bereft of any thinking or vision. Another reason for the present plight of Maithili is the policy undertaken by the tax collectors of Mithila (permanent settlement Zamindars of Cornwallis), whom the sycophants call King or the great king (Raja/ Maharaja) or Mithilesh (King of Mithila) these were mere tax collectors, the right for which were given to the highest bidders permanently; and there was not one such Mithilesh (tax collectors), but many within the borders of Mithila. These tax collectors employed mostly those two castes from four districts in their merchandise venture, and as the selection was based on sycophancy, so the work suffered. So, they imported the lathiyals from outside the Mithila region. The masses of Mithila suffered a blow from the double-edged weapon. First, from their people who did not consider them as their own and second, the outsiders looted them. Now after some

time these outsiders, the non-Maithili speaking people, found it convenient to declare the masses (not belonging to the two castes from four districts) as non-Maithili speaking people, and the officials/ sycophants from those two castes from four districts tacitly agreed to it. Now these outsiders, the non-Maithili speaking people, formed a majority in many places of Mithila, and they led the rumour that Maithili, like Samskrit, is an upper-caste phenomenon, and thus they legitimized their anti-Maithili stance (all these facts have been brilliantly dealt with in the Maithili Novels of Sh. Jagdish Prasad Mandal) and they propagated the case of Hindi, first based on religion and second based on caste. But why our people fell into their trap, why these tax-collector Maharajas did not consider the masses of Mithila as their own and imported the perpetrators to loot their masses? The simple answer is that merit took a downward leap in auction-based tax collection rights allocation.

We started from one and reached number three, then thirty and now three hundred!! and we are growing-… and are three hundred not out and are creating a grand history. http://www.videha.co.in/ Videha Ist

Maithili Fortnightly e-Journal ISSN 2229-547X has e-published its 300th issue recently. When I began this venture in the year 2000 with a Samsung TV net appliance, and when the existing was posted on 5th of July 2004, I moved all alone. Then on 31st January 2007, I suddenly thought to include the public, as after some groundwork I was ready for it. I decided to e-publish Videha and did publish it, on a fortnightly basis, the first issue that came on 1st January 2008 tried to include all the previous posts.

From all corners of this planet earth, the people tried to change the destiny of Mithila and Maithili. Now Sh. Ashish Anchinhar, Sh. Munnaji (Manoj Kumar Karn), are part of our team; and together we are three hundred not out now. With three hundred plus issues, 30,000 pages of Maithili literature (one hundred lac words corpora) creation and 11000 Tirhuta manuscript transcription we maintained a 50000-word Maithili-English vocabulary database. Now we are 350 strong, with 350 authors.

Videha has faced challenges and has withstood them. We never shirk from any question and/ or problem.

The question of the state of Mithila is one such question which often comes calling. We are in favour of the states of Mithila within the sovereign borders of India and Nepal. We are in favour of Mithila. But which type of Mithila, that type that we had during the Zamindari Raj, where means of sustenance and avenues of existence remained limited for a few castes? Or that culture that existed within "Aryavarta-Indian Nation newspaper" and other Industries during that Raj. A dozen families of Mithila galloped all these mostly from a single caste!! No, we are not in support of that Mithila, that Mithila where Maithili would be swallowed, as it is being swallowed by the Sahitya Akademi and the CIIL, swallowed by another dozen families. We are not in favour of that Mithila where the proceeding of the legislative assembly would be held in a language other than Maithili. Till the misgivings of the people of Mithila are addressed, we cannot support any Mithila state movement. So the people striving hard for Mithila state should sit on a protest before the advisory board members of the Sahitya Akademi/ CIIL and sing patriotic songs in front of their houses, and pressurise them not to misuse government funds by unscrupulously awarding functions of Akademi outside Mithila and not to misuse

the power of assigning translation and other rights to themselves and to those people who are hell-bent upon destroying our language. The RTI application by Sh. Vinit Utpal has thwarted an attempt to strangulate Maithili, but if the supplementary work is not done the sinister design would resurface again. We request the Maithili advisory board members of Sahitya Akademi immediately return their assignments taken in their name and the name of the members of their family. Otherwise, pressure should be mounted to force these 10-member Maithili Advisory Board members to voluntarily resign from their membership in the larger interest of Maithili. So, what is our answer viz-a-viz demand of Mithila state: it is a categorical Yes.

The technology-centric venture called Videha became a success. The native speakers of Maithili reside in Bihar (of India) and South-East Nepal. The net connectivity had been extremely poor in these areas. Then how the authors, new and old, started using Unicode for writing for Videha. The Nepal Side of Mithila had been using Preeti, Kantipur, Himala etc. fonts, the Kolkata Maithili-speaking population had been using the Marathi fonts and the rest had been using the fonts based on the old Remington keyboard. All these three types of fonts are ASCII fonts. We researched these fonts and

provided font converters to our Nepal-based authors. We also provided phonetic and Remington-based Unicode writers to all Maithili authors, who asked for them. We asked the authors if they may send their creations in any font, but at the same time, we encouraged them to use Unicode fonts. The technical support that we provided resulted in numerous receipts of typed entries from persons like Sh. Gangesh Gunjan, who in earlier stages had been sending their creations in their handwritings. As Sh. Gangesh Gunjan was well versed in Remington keyboard typing, so he made wonderful use of the Remington Unicode typewriter. He sent that software to some of his friends too and he was courteous enough to intimate about this to us, although there was no need for that. Sh. Saketanand also used that software and sent his short story कालनाग्निश्च दानूक्षा in Unicode, and it was published in one of the issues of Videha. The technology-centric venture called Videha became a success because we made it simple and intelligible at a time when even the technologists were not sure about the future of this Unicode. The virtual medium was being seen with anxiety by the literary fraternity, and the copy-paste system of theft was rampant in those days. But we assured the authors that with Videha they may rest

assured that the copyright thieves would not be spared, while at the same time we were firm, that only for fear of misuse of technology we should not stop our venture midway. With the internet and technology, the geographic barrier became non-existing. The end of the problem of distribution in Maithili literature became possible due to our technology-friendly attitude and it proved a boon for our Maithili language. And it made the technology-centric venture called Videha a success... It is the success of the parallel Maithili literature movement.

III

HONOUR KILLING OF GANGESH UPADHYAYA (FIRST BY RAMANATH JHA, THEN BY UDAYANATH JHA 'ASHOK' *(A PARALLEL HISTORY OF MITHILA AND MAITHILI LITERATURE, WHY TODAY ITS NEED BEING FELT MORE INTENSELY?)*

I was not surprised, though I must have been when I saw a monograph on Gangesh Upadhyaya, whose copyright is being held by Sahitya Akademi, the author of the monograph is Udayanath Jha ' Ashok'. I thought that Udayanath Jha ' Ashok', who has been given

Bhasha Samman also, by the same Sahitya Akademi, would do some justice. But truth and research seem elusive in Sahitya Akademi monographs, at least that I found in this monograph.

I searched and searched through chapters, that now the author will show courage. But the author like Ramanath Jha seems ashamed of the roots and offspring of Gangesh Upadhyaya. He tries to confuse the issue, but there is no confusion now at least since 2009. But in 2016 Sahitya Akademi seems to carry out the casteist agenda. Udayanath Jha mockingly pretends to search his name, lineage etc, where nothing is there to search for, yet he could not muster the courage, to tell the truth, and ends up just repeating the facts in 2016 that Dineshchandra Bhattacharya already has published way back in 1958.

The honour killing of Gangesh Upadhyaya by Prof. Ramanath Jha is being taken forward by Sahitya Akademi, Delhi in a most hypocritical way.

Ramanath Jha's obscurantism *vis-a-vis* Panji is evident from one example. The inter-caste marriage in Panji was well known to him (but he chose to keep the

Dooshan Panji secret- which has been released by us in 2009), and it was apparent that the great navya-nyaya philosopher Gangesh Upadhyaya married a "Charmkarini" and was born five years after the death of his father (see our Panji Books Vol I & II available at http://videha.co.in/pothi.htm). Sh. Dinesh Chandra Bhattacharya writes in the "History of Navya-Nyaya in Mithila". (1958)

"*The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila----- Gangesha's family is completely ignored and we are not expected to know even his father's name-----...As there is no other reference to Gangesa we can assume that the family dwindled into insignificance again and became extinct soon after his son's death.*" [1958, Chapter III pages 96-99), which is a total falsehood. He writes further that all this information was given to him by Prof. R. Jha, and he seemed thankful to him.

The following excerpt from Our Panji Prabandh (parts I&II) is being reproduced below for ready reference:

-

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आ राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त ओहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकमे स्थापना कने रहथि- नन्देन्दु शून्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाक)... मिथिलाक पञ्जि लोकनि शाक १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे (थोड़ बहुत विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबौलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (करबा काल वर्णित १६०० शाक मान १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

So, the Srotriyas as a sub-caste arose around 1800 CE as per authentic panji files. <u>*Sh. Anshuman Pandey*</u> *[Gajendra Thakur of New Delhi provided me with digitized copies of the genealogical records of the Maithil Brahmins. The panjikara-s whose families have maintained these records for generations are often*

reluctant to allow others to pursue their records. It is a matter of 'intellectual property' to them. I was fortunate enough to receive a complete digitized set of panji records from Gajendra Thakur of New Delhi in 2007. [Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar by Anshuman Pandey, A dissertation submitted in partial fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (History) in the University of Michigan 2014].

Later these Panji Manuscripts were uploaded to Videha Pothi at **www.videha.co.in** and google books in 2009).

The so-called Maharajas of Darbhanga were permanent settlement zamindars of Cornwallis, and there were so many in British India, but in Nepal there were none. In the annexure of our book (Panji Prabandh vol I&II), we have attached copies of genealogy-based upgradation orders (proof of upgradation for cash). So, before 1800 CE, there was no srotriya sub-caste in British India and there is no such sub-caste within Maithil Brahmins in Nepal part of Mithila even today. Srotriya before that referred to following some education stream in British India, in Nepal it still has that meaning.

ORIGINAL PANJI REFERENCES ARE PLACED BELOW:

<u>DOOSHAN PANJI- THE BLACKBOOK</u>

४९.

१८८/२	चर्मकानिधी	माधुन	नरनियाम	छादन
गत्नविंतामधि कानकगंगेश	छादनगंगेशक	नाँऊी	नत्नाकनक- मातृक (अज्ञात)	गंगेश
	नल्लरा	रनाऊ	माहश्चन	
			जीव	

२१//१० छादनसँ गत्न चिन्तामधि कानक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ गत्व चिन्तामधि कानक

गंगेशक नल्लरा चर्मकानिधी यितृ यनाऊ यञ्च नर्ष न्यनीत गत्व चिन्तामधि कानक गंगेशोपाध्यि- **चर्मकानिधी मधाक सन्तानक लागिम छलाह**

छादन सँ गत्न चिन्तामधि कानक म०म० गंगेश

<u>**"गत्न चिन्तामधि कानक म. म. या. गंगेशक निषयक लख प्राचीन यञ्जीसँ उपलब्ध�।।**</u>

<u>***यितृ यनाऊ यंच नर्ष च्यनीत गंगेशोयाध्यि: ऊति प्राचीन लखनीय: कुत्रायि***</u>

दनानन्द यञ्जी ३९-२ छादनसँ जगदगुरु गुंरु गंगेश सुताय नरनियामसँ जयादित्य सुत साधूकन यत्नी

दवानन्द पञ्जी ३३९-३ जगदगुरु गंगेश सुत सूयन दौ रघुनिसमसँ हनादिय दौ।। पुत्र सुताव गोना जजिवाल सँ जीव पञ्जी ७ सुत सहगहि रवङ्गा। अग्रस्थान सूयनत्रातृ हनिशर्म्म दानिनि क्वचित् जजिवाल ग्राम

दवानन्द पञ्जी ३०=७ छादनसँ उपाध्यायकानक म.म. या. वर्द्धमान सुताव खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पञ्जी गंगेश- म.म. वर्द्धमान/ सूयन/ हनिशर्म्म

Gangesh, the author of the Tattvachintamani, wrote one text equivalent to 12,000 texts. Now come to the fact mentioned in the Panji- it clearly states that Gangesh of Tattvachintamani was born five years after the death of his father and he married a tanner, so why did Ramanath Jha hide this from Dinesh Chandra Bhattacharya? Vardhamana, son of Gangesh, calls Gangesh *sukavikairavakananenduh*. But the conspiracy under which the poems of a famous scholar like Gangesh are not available today is clear from the example given above. Vasudev of Bengal was a classmate of Pakshadhar Mishra of Mithila, he came to study in Mithila, passed the *shalaka* examination and received the title of *sarvabhaum*. Vasudeva memorised the *tattvachintamani* of Gangesh and the *nyayakusumanjali karika* of Udayana. Pakshadhar and other Mithila teachers did not allow writing (copying) *tattvachintamani*. Raghunath Shiromani, a disciple of Vasudeva, took the right of certification after he defeated his guru Pakshadhar Mishra in a scriptural

debate *(shastrartha)*. The *Navya Nyaya* school was founded in Navadvipa by Vasudeva-Raghunath. Pakshadhar Mishra was a contemporary of Vidyapati (distinct from the Padavali writer who was of the pre-Jyotirishwar period) who wrote in Sanskrit and Avahatta. And the arrival of Mithila students of Bengal from Bengal stopped after Raghunath Shiromani. Gangesh Upadhyaya enjoyed *'param guru'* as well as *'jagad guru'* titles, the highest titles of the time and as per Panji only Vacaspati Mishra II was the other person who enjoyed the title of *'param guru'.* The extinction of Navya-Nyaya School from Mithila, as described above, was a revenge of nature against the honour killing of Gangesh Upadhyaya and his family.

[Translation of the Maithili Short Story, 'Shabdashastram' (based on the true Panji records of Gangesh Upadhyaya) was done by the author Gajendra Thakur himself: published as 'The Science of Words' Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

3

Kamlanand Jha has written a book on Nagarjun (Maithili's Yatri) where he credits him with giving a new direction to Maithili literature. Chandradhar Sharma Guleri wrote 'Usne kaha tha', a marvellous short story in Hindi, the best one of its time. But his literary corpora is very little in quantity, so if anyone tried to give him credit for giving direction to Hindi short story writing would make himself a laughing stock. And Yatri's Maithili literary corpora is even thinner than Guleri's. Moreover, Rajkamal Chaudhary calls him of the medieval age (Rajkamal Monograph, Subhash Chandra Yadav, Page no 14). He wrote Chitra (25 poems). He wrote, rather hurriedly published his 'Patrahin Nagn Gachh' (44 poems) for Sahitya Akademi Award in Maithili, which he got in 1968. After that he stopped writing in Maithili, so how can he influence anybody when after getting the award one stops writing in that language? This is one example of his instability so far as his ideology is concerned. He became a Buddhist monk when he left for Sri Lanka and became a Brahmin again when he returned after a 2nd sacred thread ceremony performed in his village. This is another example of his instability so far as his ideology is concerned.

Kamlanand Jha does not know Maithili literature. His comments should be exposed, as he tries to give a bad name to the great tradition of Maithili literature. There were mainstream writers, but there were writers of parallel tradition also (see below Annexures 1 & 2). He has confused the Sanskrit and Avahatt Vidyapati Thakkurah with the Padavali writer pre-Jyotirishwar Vidyapti. He should read the writing of Vijay Kumar Thakur, a leftist historian, who has given ample light on pre-Jyotirishwar Vidyapati. [*My article on Vidyapati in Prabandh Nibandh Samalochna Vol.II (available in Videha Archive) covers all these, the logo of Videha is the photograph of Pre-Jyotirishwar Vidyapati, sketched by Panak Lal Mandal, recipient of Videha Samman for fine arts.*]

Annexure 1

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारूछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिअर्सनकँ मैथिलीक प्रसंगम मुख्य सहायता कनिहार। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

𑓑

𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒏𑒔𑒯𑒩𑒲 𑒢𑒰𑒧।

𑒮𑒦 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒟𑒰𑒧॥

𑒮𑒞𑓂𑒨 𑒥𑒔𑒢 𑒥𑒱𑒏𑒪 𑒖𑒢 𑒯𑒰𑒟।

𑒮𑒦 𑒧𑒢 𑒡𑒢𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒁𑒦𑒱𑒪𑒰𑒭॥

𑒏𑒣𑒙 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒏𑒞 𑒏𑒰𑒙𑒱𑒏 𑒏𑒰𑒙𑒱।

𑒏𑒏𑒩 𑒢 𑒏𑒩 𑒧𑒩𑓂𑒨𑒰𑒠𑒰 𑒕𑒰𑒙𑒱॥

𑒯𑒧 𑒏𑒫𑒱 '𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩' 𑒏𑒔𑒯𑒩𑒲 𑒒𑒴𑒮।

𑒮𑒦 𑒮𑒯𑒧𑒞 𑒏𑒏𑒩𑒰 𑒏 𑒠𑒴𑒮।

𑓒

𑒢𑒲𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒳𑒩𑒑𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧!

𑒑𑒼𑒮𑒻𑒨𑒰 𑒖𑒑𑒞𑒏 𑒧𑒻𑒨𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧

𑒏𑒙𑒨 𑒏𑒮𑒻𑒨𑒰 𑒯𑒰𑒟

𑒯𑒰𑒏𑒱𑒧 𑒯𑒼𑒪 𑒢𑒱𑒩𑒠𑒻𑒨𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧

𑒏𑒞𑒨 𑒪𑒑𑒰𑒨𑒥 𑒧𑒰𑒟

𑒥𑒢𑒮𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒪 𑒮𑒢𑒮𑒰 𑒯𑒹 𑒩𑒰𑒧

𑒁𑒢𑒮𑒰 𑒏𑒞 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒯

नगिया दिन दुनगिया ह राला

जन गन जिवन संदह

मुखिया व७ व७ सुखिया ह राला

अन्नवक दुखिया जाल

क सह कान कनखिया ह राला

सुखिया विनना टाल

३

अस्रु शस्रु नाक आव मामिलाक मानि।

रा[illegible] रा[illegible]कँ यरैछ निय निय गानि॥

0क्क लाक हक्क याव साधु कँ उजानि।

रैन ज ललाट लख क सकैछ टानि?

चाही नहि धन, ललितनाम, यकनान जिलवी,

मनाविनादक हतु अमनयणि सदन न टवी।

[illegible]ी अन्दन अभिलाष हमन कनुधामयि दवी

रकि रान सँ सगा अहिंक यदयंकज सवी॥

अन्न महग, जगमग अछि रानग, हयग काना निष्काना

उन्दन यश्चिम रुमि अगम्या यर्वग असह गुमाना।

धर्म-विनाशी सहसह कलयुग, क्रमश कथा विस्तारा

करथु कृपा जगजननी देवी महिषीवाली तारा॥

मिथिला की छलि की भय गेलि,

याज्ञवल्क्य मुनि, जनक नृपतिजन

ज्ञान रवि सौं गेलि।

वाचस्पति मिश्रादि जगद्गुरु

निर्जित बौद्ध समालि

से शारदा स्वर्ग जनि गेली

बचल कुविद्या कालि।

वर्णाश्रम विधि ककरहु रुचि नहि

श्रुति श्रद्धाकँ ठेलि

पूजा पाठ ध्यान बकमुद्रा

सरटा वंचन खेलि।

कह कलिबद्ध करहनी रतिदिन

बहुत राग कर जलि,

कलह करय धर्म धन नाश

कलिक दरिद्रा चलि।

४

मय करुन रुल घान रु शिव!

गोधन नियति, धनम अननति दखि कत हिय कनव कठोन॥

साधु समाज नाजसँ यीति अति दुनषित-वित चान।

अकुलिन लाकँ धनधि यनियुनित कुलिन समादन थाउ॥

धनम सुनीति ग्रीति ककानहु नहि, खलहिक वलऽऽठ जान।

कन्द-मूल-फल सहा अव दुनलन अन्न गेल दशक उान॥

किछ शुन साधन वनि नहि यउऽऽठ थाकल मन, मति हान।

कर कवि चन्द्र हमन दुख मटत हायत कृपा शिव तान॥

ग।

सुमनु सुमनु मन! शंकन समय रुयंकन जानि।

ककन हृदय नहि कलुषित शासन कलि नृप यानि॥

कनल शिव कनूणाकन सवयित नहि जन हानि॥

रुकि कल्यलति जानद यनम यनशमनि खानि॥

कतहु विषयम न लागह त्यागह अनुचित मानि।

सुखसँ अन्त विलसवह 'चन्द्र' चुउ नजधानि॥

ANNEXURE 2

१

रघुनीलालक अकाली कविताअकाली कविन्द /

रघुनीलालक रुसली वर्ख १२८१ .१४ ई्ली-१८१३)सन सालक (
अकाली कविता

[ग्रियर्सन [(मैथिली क्रस्टमेथी ओर वाकावूलनी)

साल ओकासिक वर्णन सुनुवौदिस यउल अकाल /
रल वनिसाग खिन्न ने सालककहाँ लगि ननौं हाल /
नाहिधि आदि थीक वनिसागक /जहिँ ओला गहिँ गेला
म्रिगिसिना मन यूनल मनानथई मीसा किछु गेला /
अनदउा आतम्रन रानीगनजा हूँ वह् उान /
यूख नूख नाखल धननी कनरल वनखा कन उान /
यूनर्वसु थिक वउ यूनीताउाहा वउा कसनस /
विआ विउानक ज किछु उयटलधनि वनिसल असनस /
मघा रल मंगाहिआ कल्लनजगरनि क नै जान /
यूनवा यून यठ नै नाखलककना कनव वखान /
उन्दना आइ्ह जाय घन वैसलसयनौं लै नै वून /
हथिआ शृंग मुँउ दै मूनलगनिकौं लागल घून /
चिगना चिग मिग नै नाखलउाहा रल ताकु धानी /
नाक नंगौलहि सरै नछन्दनदाम नूकौलहि खानी /

जाणिष यढिसाधि रुगोल-साधि /यढि ज जन जेलाह-
नखागढिण वीजसँ डाआकिरुणनि कौँ कत्री वाल /
श्रीनाम कृयागणि डाहा न जानथिजाहि कृया सर काज /
यानिक प्रश्न कवौं जौं यूछिजेंहिसहा कहैन हाऊहि लाज /
जहिखन नदी नाल नै रनलाहिखन नौदी सनी /
विना जल जग किछु नै उयजलदगध रल छथि धनी /
ण नन नौदीक आगम वूमलज छल कृषि किसान /
दैन वयछ यछ नै नाखलजाउ कटौलक धान /
कादा मठआ जका न उयजलनै उयजल किछु साम /
गम्हउी गहुनि खाहि सुखाजलरल निधाण नाम /
मणिुवनम क कन नछाकहाँ जाऊ कँ हागि /
सुखल यणल हाल नै डाहूँसगनहूँ लागल आगि /
धृक जीवन डाऊ नृयणि ऊछकँज नाकल गहि यानि /
जीवाजन्-णु निकल यूरुमीमणाकँ हा नै आनि /
नवीन खढी डो चीन /नाय जका नै उयजल-
घनदुनदिन रल अव वीन /नानी-घन साव करै नन-
धनिक लाक सर मनहि मगन छथिनाखथि वहुणा ढनि /
हसाथि नृयैया घन कै नाखथिमहगी रल अव सन /
कडा कुनथी खण मास् वसाहलजाहि कौउ छल अयना /
कणक जना हनिवासन ०नलरणा वहुण कै सयना /
कणक जना मिलि जनन वसाहलनिनधन वैसल णकऊ /
रल धनन्हिनि दुऊ हसिल जगनाहउ आडान मकऊ /
काल यउल णिनहुणिम हानीँ ऊी वहि णल हाना /

घनस्याँकि मकऴ्ऴ् कन लाना /नानी-घन मगन कनै नन-मालिक ऊैन महाजन सरकँघन ठनी ञन्न-घन /
लाक वृसाउान डाहा गकै ह्ठथिमूँह / गनीवक सन समै दखि वनिआँ सर सनकलतनँ लगोलक टङ्गी /
सन्न दाकान सहनम यनि (गलसन्न रुल सर वङ्गी /
सुखल गाग वाग रो लटयटकाक वाग ञव सहना /
नन नानी सर सान गआगलविकनी रुल ञव गहना /
मँगटीका खुटी ऊै गउकीनकमूह्नी नै नाक /
कटसनि विह्ठिआ ऊै मिममिमिआँवाङ्ववह ऊै वाक /
वङ्कहान, हैकल ऊै सिकउीऊैन घमैनिक दाना /
सुगि, ननग्रह ऊै यवखँउीलगुनी रुल निदाना /
गायन दर्वजाग नै ववलकनम रुल निखङ्ग /
गमघेल, ञटैआ ऊै यिकदानीनै गसला ऊै गटु /
वाटी, वङ्गा ऊै यनवङ्गारााजन कनैक थानी /
माधन सीहि सहिग सावननानै ववल घन माउी /
धन संयगि घन किछ्ठ नै ववल/ सरटा यउ (गल वंधक
गैडा टुख ह्ठटल नै ककनाउहन यट रुल खंधक /
दैव ञंश ञवगानल कम्यनीजा यन नाम सहाउ /
मिथिलायुन वृउन जव लागयस सुनि यहँवल धाउ /
खनिद ञनाज जहाजहिँ वासलरनगी कनि कनि वाना /
सदन गिलंगा डाआ यन रनगीऊैन डालाऴ्गि (गाना /
हाजीयुनम लाख हजानमकै लाखन हऴ्ऴ् यटना /
वाजिगयुन सुलगानयुन (गालानै जानग हौँ कगना /

गाउी, वेल, ठकउ, ऊँट विद्दानउवदन दु्‍ं सर दाना /
मिसन कट्टेआ कँ याखनन मयदिलुक अउी (0काना /
श्री लक्ष्मीश्वन सिंह नृयगिमद्दानाज मिथिलग /
अवल नाज दउिरंगाश्रीयगि दनहिं कलग /
गाउी वेल लाखन दजाननाकँ यन घउन /
यदिलुक (गाला मधूवन, रोउाजदना ओन अउन /
वनीयट्टी, ओ यवमदलाकृष्टनोल ओ कमगेल /
दनिदनयून, यिउानुठ वननोंकानज कगकाँ वनिओल /
वानि याखनि, विनसायन वननोंय(ओल का ने जान /
ननदद, सनिसा उा रटयूना, गा साँ दजिश्च उजान
मंमानयून, मदनेल, कट्टेलीम(धयून दु्‍ं खास /
वनीयून, कमान, ननेदिओवननों दूलयनास /
ममना दु्‍ं जगजानिग जगममदथा ओन वठोन /
दूदवी ओ मदिनाथयूनओन ओनगन गक दु्‍ं दोन /
वलदवयून ओ ढंगा वननोंमिनजायून लघू दाट /
सीवीयटी ओ कयसीआसदन (गाला सोना0 /
गुनवाकँ यनवनसी दाकिमकन गिनदूगम आक /
ने गा मनग कग नन नानीवाल वव सूखा क /
कग मूनदा गनदा मे मिलगअसंख जीव वल जागा /
सन समधी कँ संगा न लसूननो ववग जलदागा /
सरकँ सर उयठो रे (गलधून याखन ओ सउक /
नदि (गल व्राह्मग सागी यज्ञिगकायथ यठिमा 0कून दनक /
कउा ओनसिअन नाम लिखाओलकउा मादनिन रँट /

धर्मकार्यमे लूटथि न्यैआगाँ रहल सए कान रोँए /
कतौ जमाना देखैँ बचलाहजिनका अमला नहि /
ककरा मानि कहँ पिठि पाछेहिछेगेलैहि जन्मक पछि /
ककनहुँ गाना गाए सुखाउलबहुए हाअय चलाना /
मातुपिता घर पनिजन नानयबाबू पिलाह जहलखाना /
ककनहुँ घर रहल खानापलासीरहए माहर्निन घाँठ /
कतौ अदालतिमे तितिआछ्ह छथिककनहुँ उपनैहि माँठ /
भगना सुनि हाकिम निसिआउलगँ लागल जन ठीका /
नाक नंगोलहि सए माहर्निनलागल चुनक टीका /
जाग, विकौआ,लौकिक वंशककिनिआमंग सकुल /
गाछी, बाँस, बेल औ महिसिजगह कौल एकरूल /
गाहि न्यैआ सौँ कना गजनलै कानए सौँ नीन /
गँ कानन बहुए घर मगभाराछ्ह रपीजा रीन /
आभ लाए बहादुर औ /दतिरंगा धाम
बाबू औ बबूआन सहिए मिलिकीह्र कुमेटी खान /

......

......

......

भह सए संग बेठि कैजाय कुमेटी रल /
अजब कान सनकान कागिनहुए पहुँचल नल /
वाजियूनसँ सभक निकालैआय सौतिह सौतै /
हहया गंतक पूल बह्मभआभ चौनहि चौनी /
धर्मधीन, बलबीन, कम्पनी जानए हछ्ह /जगदीशन

लछमी सागन क याखनिमगादि कीह्र ञ्सटीसन /
वञा लाट कलकफ्नालश्रीदुर्गा हा७ संग /
आगना क छाटा लाल वहादुनवे(0 सर ७कनंग /
ज्ञट कमिश्नन ञैन कलङ्नवालहिं वाग नअंट /
७ह याचा ञ्जलास यन वे(0संग जाग ञेह ञंट /
खवनि ग७ अखवान मौमैथिल क ७ह हाल /
सुनद्र हिनंगी अनध दैकँमटह्र दुख क जाल /
हकुम दीह्र दाउ लाट कासुनद्र हमान वेन /
मदगि कनद्र नआआनकाझा वे(0 हो वेन /
वञा लाट दाउ वीन उ0।७साख्व ञै जननैल /
मजन मजिस्ट्रन ञैन कलङ्नसंगजाग कननैल /
दस दससौँ अन्न मंगाडालदीह्र सरनि क दाम /
महामूँग, गहूम ञै चाउनवजञा ञैन वदाम /
ञाली, यटना ञै रटसानदीली ञै अजमन /
आगना ञैन काह्नयून ढाकाजहाँ अन्न क ढन /
र७ नमाना अन्न गिनद्रुगिमलादि गाञी ञैन वेल /
गज, गुनंग, गदहा ञै छक७संग सियाही छैल /
छठ्री ञै यै0ान मागल सरवाँकावीन नजयुग /
सारा वननि नजाग हञ्जैस हनुमन्द दुग /
आ(ग सरून ञा मैनायलटन वीन जमान /
वनछी ञै गनुआनि गहैकन गहे गीन कमान /
चढि गुनंग यन कनै कनाञ्जमादान हा७ संग /
सारा वननि न जाग हञ्दखि गखनूक नंग /

कतेक काम सए धामसरूट अए सए लूट /
ढाहि रौ गाछी सहितवाड़ी स‍एक ओ फूल /
जिल पटन ओ [illegible] महिसौन /
जहाँ बसहिँ एक सज्जनादि घन जा लक्ष्मी [illegible] /
श्री [illegible] प्रशादितधर्मधीन बुद्धिमान /
[illegible] कानन क खासाजानहिं सकल जहान /
बाबू [illegible] प्रसाद [illegible] मधुवनम आए /
हुकुम दीह [illegible] टाल [illegible] /
मन यँचा मनगन [illegible] लिखल [illegible] /
धन्य धन्य अंगनज बहादुरसरकँ [illegible] गान /
गनिव, गनी, गुनवा, कनू ओ, ओब्राह्मण [illegible] असीस /
श्री रघुनाथ वरू [illegible] लाख वरीस /
[illegible] लाल कवि [illegible] चौदी क हाल /
[illegible] बहादुर[illegible] [illegible] बहाल /

२

राधाकृष्ण चौधरी (मिथिलाक इतिहास) (विदेह पटानम उपलब्ध)

"1770 क अकाल मिथिलाक इतिहासम अद्वितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकँ एक तृतीय कम्म रहि गेल छल। 1873 74 म पुनः एकटा भयंकर अकाल मिथिलाम भेल छल जकरा विवरण हमरा हलुनी लाल कविक अकाली कवित्तसँ [illegible], अकाली कवित्त अप्रकाशित अछि। अकालकँ दुर करवाक हेतु आ मनुष्यकँ राजी रखवाक हेतु [illegible]

काल नलगाउीक याजना चलाउाल (गल जकना सम्बन्धम रूगुनीलाल लिखैत छथि-

'कम्पनी अजान जान कलनका वनाय भाना। यनन का छकाय मैदानम धनाया है। छाउग ह अउदान वउ वीच धाय धाया। सरलाग हटाजाग कगाजाग खउ है। गानकी अयानकान खवनि दग नान नाना। चग गया टिकसदान नल की उनाड़ी है। कनग ह अनान (भान यीछ कग लगग छाना। जान की धमाक स मशीन की वउाड़ी है। कम्पूसन यहनदान काथी सव अजवदाना। काड़ला रन कनल कान धुआँस उउाया है। वाजा ७क वजन लाग हाथी असा। यिकन लाग जैसा जा चढनदान वैसाधन याया है। गंगार्क रनल धान उानि गया हूान यान गाउीकी। अजवकान कनिष यह वनाया है।'"

-Gajendra Thakur, editor, Videha (be part of Videha www.videha.co.in -send your WhatsApp no to +919560960721 so that it can be added to the Videha WhatsApp Broadcast List.)

अयन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com यन यठाउ।

मैथिली आ मिथिलासँ संबंधित किछु मुख्य साइट:- आन लिंकक विषयमे सूचना *editorial.staff.videha@gmail.com* *पर ई मेलसँ पठाबी।*

http://www.videha.co.in/ ("विदेह" प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका)

http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाई २००४)

http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (इंटरनेटपर मैथिली भाषाक प्राचीनतम उपस्थिति/ मैथिलीक पहिल ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर, ५ जुलाई २००४)

भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसिटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html, http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाई २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)* केर रूपमे इंटरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल

अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA पल्लवमिथिला (धीरेन्द्र प्रेमर्षि) २०५९ माघ संक्रान्ति- २००३ जनवरी मैथिलीक पहिल इन्टरनेट पत्रिका अछि जे ऐ लिंक www.pallavmithila.mainpage.net पर छल मुदा आब ई उपलब्ध नै अछि। ई टिप्पणी मात्र इतिहास शुद्धता लेल अछि।

....

http://videha-aggregator.blogspot.com/ (मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://www.videha.com/ (इन्टरनेटपर मैथिली भाषाक सभसँ पुरान उपलब्ध उपस्थिति/ लोकप्रिय ब्लॉग- मैथिली भाषा ब्लॉगक एग्रीगेटर १ जुलाई २००४ www.gajendrathakur.blogspot.com)

http://esamaad.blogspot.com/ (पूनम मंडल आ प्रियंका झाक पहिल मैथिली न्यूज पोर्टल, ९ अगस्त २००४ सँ)

http://prakarantar.blogspot.com/ (प्रकारान्तर मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, फरबरी २००५)

http://vidyapati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

http://www.vidyapati.org/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग, अगस्त २००५)

http://hellomithila.blogspot.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, नूतन झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, ३ मई २००६)

http://pallav.blogsome.com/ (हेलो मिथिला- धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सम्पादक-प्रकाशक, नूतन झा, सम्पादन सहयोग, पल्लव, मैथिली साहित्यिक, १७ मई २००६)

http://hellomithilaa.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://www.hellomithila.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, सितम्बर २००७)

http://shampadak.wordpress.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

http://www.esamaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल, जनवरी-फरबरी २००८)

http://hellomithilaa.wordpress.com/

http://premarshi.wordpress.com/ (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

....

http://anchinharakharkolkata.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय गजलक ब्लॉग)

....

https://vigyanprasar.gov.in/vigyan-ratnakar/ (विज्ञान रत्नाकर)

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

………………………

ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

https://doordarshan.gov.in/

आकाशवाणी मैथिली पाडकास्ट http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रीजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-1 http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रीजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-2 http://newsonair.com/Regional-Text.aspx

आकाशवाणी दरभंगा http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्युब चैनल https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWiTEMxVA

आकाशवाणी भागलपुर http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359

आकाशवाणी पूर्णियाँ http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256

आकाशवाणी पटना http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122

ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS

ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE

ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS

RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS

SANSAD TV

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXiOHp7A

…………………………

http://bramhanews.blogspot.com/ (मैथिली समाचार)

http://www.mithilakhabar.com/ (नेपालक मैथिली न्यूज़ पत्रिका)

http://mithilanews.com/

http://www.maithilinews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.hamargam.in/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithiladotcom.blogspot.com/ (मैथिली राष्ट्रीय दैनिक)

https://mppdainik.com/ (मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश, मैथिली दैनिक)

http://mithilasamad.blogspot.com/ (मिथिला समाद, मैथिली दैनिक)

http://janakpurnews.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.mithilalok.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://mithimedia.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

http://www.mithimedia.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://mithiladharohar.blogspot.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://simanchal.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

https://maithilijindabaad.com/ (मैथिली न्यूज पोर्टल)

....

https://kirtinath.blogspot.com/ (कीर्तिनाथ झा ब्लॉग)

http://jct27novmaithili.blogspot.com/ (जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" क ब्लॉग)

http://brikhesh.blogspot.com/ (वृषेश चन्द्र लाल)

http://www.chetnasamiti.org/ (चेतना समिति, पटनाक वेबसाइट)

http://shiva-pustak-bhandar.blogspot.com/ (मैथिली पोथी दोकान)

https://mishrarn.blogspot.com/ (रानसँ साँझ धनि)

https://rjanakpuri.blogspot.com/ (साहित्यपूनी)

http://bataahmaithil.in/

http://maithilpravahika.org/

http://ganeshbawra.blogspot.com/

http://maithilinews.com/

http://anandjhakavitakahani.blogspot.com/

http://chaaywala.blogspot.com/

http://maithilputr.blogspot.com/

http://maithilputramanu.blogspot.com/

http://mithilanchalpatrika.blogspot.com/

http://mithilakbat.blogspot.com/

http://maithilitimesonline.blogspot.com/

http://mithilavidehavajjitirhut.blogspot.com/

http://samadiya.blogspot.com/

http://jitumaithili.blogspot.com/

http://pratipadamaithili.blogspot.com/

http://bhatsimar.blogspot.com/

http://maithilirangmanch.blogspot.com/

http://www.mithilavaani.blogspot.com/

http://www.maithilisongsjagat.co.in/

http://mithilablog.com/

http://www.lahakchahak.com/

http://www.jaimithila.com/

http://www.dahejmuktmithila.org/

http://mithilavaani.blogspot.com/

http://www.chamundanagarpachahi.com/

http://kisunsankalplok.wordpress.com/

http://www.kisunsankalplok.co.nr/

http://maithilisongshub.blogspot.com/

http://www.rajnipallavi.com/

https://maithilinewsnetwork.com/

https://mithilamirror.com/

https://www.emithila.in/

http://csts.org.in/ (CSTS)

http://www.samaysaal.com/ (समय साल)

https://www.maithili.org.in/ (नाशन चौधनी)

https://doorvaksata.org/ (मिशन दूर्वाक्षत)

http://mithilakshsharshikshaabhiyan.in.net/ (मिथिलाक्षर शिक्षा अभियान)

http://mithilakshar.in/ (मिथिलाज्ञन शिज्ञा अभियान)

https://missionmithilakshar.blogspot.com/ (सिद्धिरस्तु- मिशन मिथिलाज्ञन लिपि)

https://mithilani.in/ (मिथिलानी)

https://www.maithilmanch.in/ (मैथिल मंच)

http://madhubani.co.in/

http://www.premkumarmallik.com

http://apandalan.wordpress.com/

http://www.mithilaworld.tk/

http://www.mithilachowk.com/

http://maithilisongsgeet.blogspot.com/

http://rayprabhatbhatt.blogspot.com/

http://amitmohanjha83.blogspot.com/

https://maithiliswasthyaparicharcha.blogspot.com/ (मैथिली स्वास्थ्य परिचर्चा- नमोकन चौधरीक ब्लॉग)

http://maithili-darpan.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilatol.blogspot.com (मिथिलाटोल मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilicinema.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithilifilms.blogspot.com/ (मैथिली फिल्म्स)

http://maithili-drama.blogspot.com/ (विदेह मैथिली नाट्य उत्सव- बेचन ठाकुरक ब्लॉग)

http://mjnk.co.cc/ (मैथिली जनकपुर न्यूज, नेपाली मॉडल, मिथिला इन्टरटेनमेन्ट)

http://www.TeraiNepal.co.cc/ (नेपाली नयाल मिथिला जनकपुर मधेश हालचाल Anytime Anywhere see)

http://maithilaurmithila.blogspot.com/ (मैथिलक आ मिथिलाक लोकप्रिय ब्लॉग)

https://www.mithiladainik.in/ (मिथिला दैनिक)

http://www.mithilaamanch.blogspot.com (मिथिला मंच)

http://maithilisong.blogspot.com/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक ब्लॉग)

http://maithilifoundation.blogspot.com/ (मैथिली फाउन्डेशन)

http://maithilibhasha.blogspot.com/ (कामेश्वर कमलक ब्लॉग)

http://rkjteoth.blogspot.com/ (राजेश कुमार झा "ग्रंथ"क ब्लॉग)

http://paraati.blogspot.com/ (मैथिलीक लोकप्रिय ब्लॉग)

http://singarhaar.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://vaachik.wordpress.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://mithilainfo.blogspot.com (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://mithlasamachaar.blogspot.com (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://pilakhwar.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://desilbayna.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://maithilynjha.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://gaam-ghar.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://mithila-mihir.blogspot.com/ (मैथिलीक लाकप्रिय ब्लॉग)

http://www.maithililekhaksangh.blogspot.com/ (मैथिली लखक संघक जालस्थल)

http://www.maithili.co.uk/ (मिथिला कल्चरल ऑगेनाइजेशन, यू.क.)

http://minapjanakpur.org/ (मिनाप, जनकपुर)

http://www.airdarbhanga.org/ (आकाशवाणी दरभंगाक साइट)

http://mithilangan.org/ (मिथिलांगनक साइट)

http://www.desilbayana.com/ (देसिल बयना, हैदराबाद)

http://www.vmym.in/ (विद्यापति मैथिल युवा मंच)

http://www.jaimithila.com/ (मिथिलाक सभ्यता, संस्कृति, विभूति, गीत-संगीत आ बहुत रास जानकारीक लल)

http://sobhagyamithilatv.com/ (सौभाग्य मिथिला- पहिल मैथिली चैनल)

http://kashyap-mithila.blogspot.com/

https://kashyapartschool.wordpress.com/ (कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबालाक साइट)

http://mithilapaintingtraining.blogspot.com/

http://dularuababumaithilifilm.blogspot.com/

http://senuraklaajmaithilifilm.blogspot.com/

http://maithlivideosongs.blogspot.com/

http://kalikantjhabuch.org/ (काली कांत झा "बूच")

http://saketanands.blogspot.com/ (साकेतानन्दजीक जालवृत्त)

http://gunjang.blogspot.com/ (गुंजनजीक जालवृत्त)

http://darihare.blogspot.com/ (श्याम दरिहरेक जालवृत्त)

http://deoshankarnavin.blogspot.com/ (देवशंकर नवीनक ब्लॉग)

http://www.udayanarayana.com/ (नचिकेताक साइट)

http://www.indianembassy.org.np/ (भारतीय दूतावास नेपाल)

http://www.purvottarmaithilsamaj.com/ (पूर्वोत्तर मैथिल समाज)

http://www.purvottarmaithil.blogspot.com/ (मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समितिक त्रैमासिक पत्रिका)

http://apanmithladhaam.blogspot.com/

http://maithilikavita.blogspot.com/

http://pankajjha23.blogspot.com/

http://maithili-haiku.blogspot.com/

http://manak-maithili.blogspot.com/

http://mithilauday.org/

http://dsal.uchicago.edu/lsi/ (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings)

http://dsal.uchicago.edu/lsi/taxonomy/term/1718 (Linguistic Survey of India, Gramophone recordings, Maithili)

http://music2.cooltoad.com/music/category.php?id=10576

http://maithiliacademy.org/

https://maithiliacademybihar.org/ (मैथिली अकादमी, पटना)

मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली

http://artandculture.delhigovt.nic.in/wps/wcm/connect/doit_art/Art+Culture+and+Language/Home/Maithili-Bhojpuri+Academy/

http://maithili.sourceforge.net/

http://ansiss.org/

http://fedoraproject.org/

https://fedorahosted.org/fuel/wiki/fuel-maithili

http://l10n.gnome.org/teams/mai

http://translate.fedoraproject.org/languages/mai

http://www.biharlokmanch.org/ (मिथिला-मैथिली पोथी ऑनलाइन कीनू)

http://www.biharlokmanch.org/mithila_products_online.php (Buy Mithila-Maithili books online)

http://mithila-haat.com/ (Buy Mithila-Maithili books/ other materials online)

http://www.antikaprakashan.com/ (अंतिका प्रकाशनक साइट- मैथिली प्रकाशक)

https://shashiprakashan.blogspot.com/ (शशि प्रकाशन- - मैथिली प्रकाशक)

https://pallavipublication.blogspot.com/ (पल्लवी प्रकाशन- - मैथिली प्रकाशक)

http://www.navarambh.com/ (नवारम्भ- - मैथिली प्रकाशक)

http://www.gorkhapatra.org.np/

http://www.sajha.org.np/

http://www.kantipuronline.com/

http://mithilahyd.org/

http://www.jyoticonsultant.com/ (मैथिलक नोकरी ओतए काम)

http://www.mithilamanthan.com/

http://www.brandbihar.com/

http://www.biharbrains.org/

http://maithilijokes.blogspot.com/

http://www.rdo91fm.blogspot.com/

http://www.kfm961.com/ (हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रत्येक शनिकेँ नेपाली समयानुसार साँझ ६.३० बजेसँ ११ बजेधरि आ राजनीतिक विश्लेषणयुक्त कार्यक्रम चौबटिया कार्यक्रम प्रत्येक सोमकेँ साँझ १० सँ ११ बजेधरि प्रसारित)

http://www.radiokantipur.com/ (हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रत्येक शनिकेँ नेपाली समयानुसार साँझ ६.३० बजेसँ ११ बजेधरि आ राजनीतिक विश्लेषणयुक्त कार्यक्रम चौबटिया कार्यक्रम प्रत्येक सोमकेँ साँझ १० सँ ११ बजेधरि प्रसारित)

http://www.jumptv.com/en/channel/nepal1/ (नेपाल१ टी.वी.-जम्प टी.वी. मैथिली कार्यक्रम सूचना)

http://janakifm.org.np/ (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो)

http://www.mithilaradio.com/ (मैथिली रेडियो)

http://www.youtube.com/user/Janakifm (जानकी एफ.एम., मैथिली समाचार रेडियो Youtube channel)

http://www.radiomithila.org/ (मैथिली रेडियो)

http://www.appanmithila.org/ (रेडियो अप्पन मिथिला ९४.४ MHZ)

http://www.janakpurtoday.com.np/

http://madanpuraskar.org/

http://www.madheshuk.org/ (एसोसिएशन ऑफ नेपाली मधेसीज इन यू.के.)

http://www.mithilaart.com/ (श्रीमति पुष्पा झाक साइट)

http://www.mithilavihar.com/

http://www.sugatisopan.com/

http://www.maithilsamaj.org.in/

http://www.maithilsamaj.com/

http://www.janakpurcity.com/

http://www.janakpur.com.np/

http://home.att.net/~maithils/

http://shyamprakashjha.com/

http://ramanathjha.com/

http://www.ramajha.com/

http://sudhakar.co.in/maithili

http://www.maithils.net/

http://www.getpredictiononline.com/

http://www.bihartimes.com/

http://www.bihar.ws/

http://www.patnadaily.com/

http://www.krraman.blogspot.com/

http://www.adi-maithili-kavita.blogspot.com/

http://www.mithilasevasamiti.blogspot.com/

http://www.jankitoday.blogspot.com/

http://opjha.blogspot.com/

http://chitthajagat.in/ (देवनागरी लिपिक ब्लॉगक एग्रीगेटर)

http://mailorang.blogspot.com/ (मैलोरंग नाट्य संस्थाक ब्लॉग)

http://mailorang.in/ (मैलोरंग)

http://vandanasgeet.blogspot.com/

http://www.darbhangaraj.blogspot.com/

http://mithila_samachar.tripod.com/mithilasamachar/ (मिथिला आ मैथिलीक समाचारक साइट)

http://www.ciilcorpora.net/maisam.htm

http://www.ildc.in/Maithili/MIindex.aspx (मैथिली अध्ययन आ शोध)

http://www.mithilaarts.com/

http://www.mithilapainting.org/

http://www.maithili.net/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.mithilaonline.com/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.onlinemithila.in/ (मिथिला-मैथिल-मैथिलीक लोकप्रिय साइट)

http://www.nnl.gov.np/

http://www.nepalacademy.org.np/

http://www.karnagoshthi.org/

http://surmasti.com/

http://www.maithiliworld.com/

http://www.mithila-museum.com/aboutMM/Eindex.html

http://www.tribhuvan-university.edu.np/

http://www.swastifoundation.com/ (स्वस्ति फाउन्डेशनक साइट)

http://foundationsaarcwriters.com/

http://www.opmcm.gov.np/

http://www.moe.gov.np/ (नेपाल सरकारक साइट)

http://lnmu.bih.nic.in/

http://gov.bih.nic.in/ (बिहार सरकारक साइट)

http://www.india.gov.in/

http://rajbhasha.nic.in/

http://www.hindinideshalaya.nic.in/

http://themithila.tripod.com/

http://www.mithilaconnect.com/

http://www.esabha.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilvivah.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kanyadan.net/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.maithilbrahminvivahbandhan.org/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.mithilashaadi.com/ (मैथिल विवाहक साइट)

http://www.kalyanifoundation.org/

http://www.madhubani.com/

http://www.janakpur.org/

http://www.darbhanga-friends.com/

http://www.hindisansthan.org/

http://www.biharassociation.net/

http://www.nationallibrary.gov.in/ (नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता)

http://dpl.gov.in/ (दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी)

http://www.connemarapubliclibrarychennai.com/ (कोनेमारा पब्लिक लाइब्रेरी)

http://rrrlf.nic.in/ (राजा राम मोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन)

http://www.sahitya-akademi.gov.in/(साहित्य अकादमीक साइट)

http://www.nbtindia.org.in/ (नेशनल बुक ट्रस्टक साइट)

http://www.csuchico.edu/anth/mithila/

http://web.mac.com/nadjagrimm/iWeb/JWDC/Mithila%20Art%20.html

http://www.southasianist.info/india/mithila/index.html

http://www.mithilalive.com/

http://www.ethnologue.com/show_language.asp?code=mai

http://linguistlist.org/forms/langs/LLDescription.cfm?code=mai

http://www.languageshome.com/English-Maithili.htm

http://www.rosettaproject.org/archive/mai

http://www.nepalgov.gov.np/

http://maithili-mp3-songs.folkmusicindia.com/

http://www.ciil.org/ (भारतीय भाषा संस्थानक साइट)

http://www.ciillibrary.org/

http://www.lisindia.net/Maithili/Maithili.html

http://www.ntm.org.in/languages/maithili/default_maithili.asp (राष्ट्रीय अनुवाद मिशन)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2012/tagore-literature-awards-bring-together-india-best-literary-talent (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/news/localnews/2011/samsung-felicitates-the-winners-of-tagore-literature-awards-2010 (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://www.samsung.com/in/Tagore-Awards/index.html (TAGORE LITERATURE AWARD)

http://jnanpith.net/ (रानीय ज्ञानयी0क साट)

http://bparishad.in/ (रानीय राषा यनिषद, कालकाताक साट)

http://www.bharatiyabhashaparishad.com/ (रानीय राषा यनिषद, कालकाताक नागर्थ)

http://www.themanbookerprize.com/ (मैन-वूकन यूनष्कानक साट)

http://www.commonwealthfoundation.com/ (कॉमनवल्ठ फाउन्डेशनक साट)

http://www.crossword.in/ (नातारुान-क्रॉसवर्डक साट)

http://www.pulitzer.org/ (यूलिटन यूनष्कानक साट)

http://nobelprize.org/ (नावल यूनष्कानक साट)

http://www.goakonkaniakademi.org/akademi/aims.htm (गाना कांकणी अकादमीक साट)

http://www.museindia.com/

http://www.asiawrites.org

http://indianorway.wordpress.com/

http://samanvayindianlanguagesfestival.org/

http://jaipurliteraturefestival.org/

http://dscprize.com/

http://www.hindu.com/lr/2011/04/03/stories/2011040350010100.htm

http://southasianlitfest.com/

http://www.varnamala.org/

http://india.poetryinternationalweb.org/

http://www.fortunecity.com/victorian/charcoal/49/

http://www.tarainews.com.np/

VIDEHA IST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

http://videha-archive.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली याक्षिक ई यत्रिका मैथिली याथीक आर्काइव

http://videha-pothi.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली याक्षिक ई यत्रिका ऑडियो आर्काइव

http://videha-audio.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली याक्षिक ई यत्रिका वीडियो आर्काइव

http://videha-video.blogspot.com/

विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

http://videha-paintings-photos.blogspot.com/

विदेह ई-पत्रिकाक सभटा पुरान अंक Videha e journal's all old issues

http://sites.google.com/a/videha.com/videha/

विदेह ई-पत्रिकाक पहिल ५० अंक

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-i/
विदेह ई-पत्रिकाक ५०म सँ १४९ म अंक

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-ii/
विदेह ई-पत्रिकाक १५०म आ आगाँक अंक

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archive-part-iii/

मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi

मैथिली ऑडियो संकलन Maithili Audio Downloads

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio

मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-video

मिथिला चित्रकला/ आधुनिक चित्रकला आ चित्र Mithila Painting/ Modern Art and Photos

http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/

सगर राति दीप जरय

http://sagarraatideepjaray.blogspot.com/
http://sagarraatideepjaray.wordpress.com/

विदेह मैथिली क्विज :
http://videhaquiz.blogspot.com/

विदेह मैथिली जालवृत्त एग्रीगेटर :

http://videha-aggregator.blogspot.com/
विदेह मैथिली साहित्य अंग्रेजीमे अनूदित

http://madhubani-art.blogspot.com/
विदेहक पूर्व-रूप "भालसरिक गाछ" :

http://gajendrathakur.blogspot.com/
विदेह इंडेक्स :

http://videha123.blogspot.com/
विदेह फाइल :

http://videha123.wordpress.com/

Maithili Sign Language- पहिल मैथिली संकेत लिपि ब्लॉग

https://maithili-sign-language.blogspot.com/

विदेह ब्राह्मी- ब्राह्मी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-brahmi.blogspot.com/

विदेह खरोष्ठी- खरोष्ठी लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-kharoshthi.blogspot.com/

विदेह कैथी लिपिमे- मैथिलीक कैथी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-kaithi.blogspot.com/

विदेह नेवारी लिपिमे- मैथिलीक नेवारी लिपिमे पहिल ब्लॉग

https://maithili-newari.blogspot.com/

विदेह आइ.पी.ए. लिपिमे- मैथिलीक आइ.पी.ए.मे पहिल ब्लॉग

https://maithili-ipa.blogspot.com/

विदेह- उर्दू नस्तालिक लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-urdu.blogspot.com/

विदेह- तिब्बती लिपिमे मैथिलीक पहिल ब्लॉग

https://maithili-tibetan.blogspot.com/

विदेह: सदेह : पहिल तिरहुता (मिथिलाक्षर) जालवृत्त (ब्लॉग)

http://videha-sadeha.blogspot.com/

विदेह:ब्रेल: मैथिली ब्रेलमे: पहिल बेर विदेह द्वारा

http://videha-braille.blogspot.com/

विदेह गूगल-ग्रुप

https://groups.google.com/g/videha

गजेन्द्र ठाकुर

http://gajendrathakur123.blogspot.com

मंगन गुटका

http://mangan-khabas.blogspot.com/

Videha Radio विदेह रेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिल पोडकास्ट साइट

http://videha123radio.wordpress.com/

http://videha.listen2myradio.com/

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव

http://maithili-drama.blogspot.com/

समदिया

http://esamaad.blogspot.com/

मैथिली फिल्म्स

http://maithilifilms.blogspot.com/

मैथिली हाइकू

http://maithili-haiku.blogspot.com/

मानक मैथिली
http://manak-maithili.blogspot.com/

बिहनि कथा

http://bihanikatha.blogspot.com/

मैथिली कविता

http://maithili-kavita.blogspot.com/

मैथिली कथा
http://maithili-katha.blogspot.com/

मैथिली समालोचना
http://maithili-samalochna.blogspot.com/
Maithili Literature in English

http://madhubani-art.blogspot.com/

तिरहुता- कैथी फॉन्ट/ मैथिल ब्राह्मणक पञ्जी आधारित इतिहास

https://deepblue.lib.umich.edu/bitstream/handle/2027.42/110341/pandey_1.pdf?sequence=1 (उपनयन-विवाहक मैथिल ब्राह्मणम जाति)

https://www.unicode.org/L2/L2009/09329-maithili.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉन्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९- विदेहक सहयोग)

https://www.unicode.org/L2/L2011/11175r-tirhuta.pdf (यूनीकोड तिरहुता फॉन्ट लेल आवेदन ७ मई २०११- विदेहक सहयोग)

http://www.tirhutalipi.4t.com/ (देवनागरी-तिरहुता फॉन्ट- वर्सन आधारित)

http://www.anujha.co.cc/ (देवनागरी यूनीकोड आधारित तिरहुता फॉन्ट-मिथिला)

"विकीपीडिया"म मैथिली

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

ओमि पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्ट अछि। अहि लिंक सऽ एतय जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढाउ।

यूनीकोड तिरहुता फॉन्ट, "विकीपीडिया"मे मैथिली आ आब मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो। अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"
गूगल ट्रान्सलेट
गूगल ट्रान्सलेटक लिंक
https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate
गूगल ट्रान्सलेटकेँ आर शुद्ध करबाक खगता छै तेँ लेल अगिला काज अहाँ करू छी:
https://translate.google.com/about/contribute/
Crowdsource Maithili Community
Please fill the form
Next Step
Download the Crowdsource app from android play store and start contributing
or go to web on the following link for contributing:
https://crowdsource.google.com/about/
Crowdsource by Google is a gamified platform that empowers users to directly train Google's artificial intelligence systems and make Google products work equally well for everyone, everywhere.

प्रमाण:
विकीपीडिया ०१ फरवरी २००८ लिंक
https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false (मैथिली देवनागरी)
https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली तिरहुता)
https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली ब्रेल)
गूगल ट्रान्सलेट २३ जून २०११क लिंक
https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/
गूगल ट्रांसलेशन टूलस
"बिहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रांसलेशन टूल बनबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कोनठा मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नामक कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन केलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh (link closed)

मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉन्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ हुन संशोधित आवेदन ७ मई २०११ केँ श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर ओइमे विदेहक सहयोगक वर्णन केलनि। ११ जूनकेँ श्री अंशुमन पाण्डेय एकर स्वीकृतिक सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलनि। आब ई फॉन्ट बनि कऽ तैयार अछि आ नीचाँक लिंकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

तिरहुता, नेवारी आ कैथी फॉन्ट डाउनलोड Google's Noto Fonts project/ GitHub

तिरहुता नोटो फॉन्ट	कैथी ओटीएफ	कैथी टीटीएफ	नेवारी ओ.टी.एफ.	नेवारी टी.टी.एफ.

https://fonts.google.com/ (Google Open Fonts download)

Tirhuta Offline Keyboard download

Keyman Tirhuta/ Vedic Devanagari Keyboards Download

https://malarproject.gitlab.io/tirhuta (Tirhuta Keyboard Online)

https://keymanweb.com/?_ga=2.7155890.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_tirhuta

https://keymanweb.com/?_ga=2.241635586.1818820209.1675749426-2042013574.1675749426#mai-tirh,Keyboard_malar_tirhuta

https://aksharamukha.appspot.com/converter (Script/ Website Convertor)

https://aksharamukha.appspot.com/keyboards [Input (IME]

https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts (fonts- opensource)

https://www.cdac.in/ (Tirhuta/ Unicode Typing Tool)

अमजन अलक्सा मैथिली (शीघ्र....)

किछु मैथिली विकिपिडिया यजक लिंक:

निदरु (यत्रिका) https://mai.wikipedia.org/s/kgv
ऽऽन्ननटक संसानम मैथिली राषा https://mai.wikipedia.org/s/s6h

रालसनिक गाछ https://mai.wikipedia.org/s/ipm

निदरु https://mai.wikipedia.org/s/ie1

निदरुक रुसवूक रर्सन https://mai.wikipedia.org/s/iu1

निदरु सम्मान https://mai.wikipedia.org/s/jc2

निदरु आर्काऽऽर https://mai.wikipedia.org/s/jc0

निदरु मिथिला नम्र https://mai.wikipedia.org/s/jc3

निदरु मिथिलाक खाज https://mai.wikipedia.org/s/jc4

निदरु सूवना संयर्क अन्नषध https://mai.wikipedia.org/s/jc5

श्रुगि प्रकाशन https://mai.wikipedia.org/s/iu7

अनविज्ञान आखन https://mai.wikipedia.org/s/ion

मैथिली गजल https://mai.wikipedia.org/s/idz

मैथिली वाल गजल https://mai.wikipedia.org/s/iex

मैथिली रकि गजल https://mai.wikipedia.org/s/if1

....

किछु मैथिल याथी, ▯तिया-नीतिया, कलाकृगि/ यु ट्युव चैनल ताउनलात साऽऽर (डायन सार्स)
NCERT BHASHA SANGAM
NCERT (Maithili-English-Hindi Conversations)
मैथिली-हिन्दी नार्गालाय (३ घण्टा)
मैथिली (मैथिली संकग राषा सहित- मैथिलीम यढिल वन)
https://www.youtube.com/@videha_ejournal
https://youtu.be/TebuC-lrSs8
https://ncert.nic.in/bs-2021.php
SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

अखियासल (नमानहु मा नमध)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

सुआयल कनकनी- महेन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन कन दीय पर्व- सं कदान कानन आ अनिरुद्ध ठाकुर

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

ARCHIVE.ORG (विजयदेव झा)

https://archive.org/details/vijay_deo_jha

Videha Maithili eBooks/ eJournals/ Video Archive

http://videha.co.in/archive.htm

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm (MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

मिथिला दर्शन

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

तीरभुक्ति

https://archive.org/details/@teerbhukti_journal

OLE NEPAL's E-PUSTAKALAYA (https://pustakalaya.org/en/)

याथीक लिंक

आइ.जी.एन.सी.ए.- ए.एस.आइ. https://ignca.gov.in/divisionss/asi-books/

https://ignca.gov.in/Asi_data/16612.pdf (History of Navya-Nyaya in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/42365.pdf (Studies in Jainism and Buddhism in Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/63227.pdf (Mithila in the Age of Vidyapati)
https://ignca.gov.in/Asi_data/64994.pdf (Cultural Heritage of Mithila)
https://ignca.gov.in/Asi_data/72754.pdf (Mithila under the Karnatas)

ए.एस.आइ.अंग्रेजी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temples_of_mithila_english.pdf

ए.एस.आइ.हिन्दी https://tspasibhopal.nic.in/assets/pdf/publication/temple_of_mithila_hindi.pdf

मैथिली साहित्य संस्थान https://www.maithilisahityasansthan.org/resources

दर्शनीय मिथिला (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure_1 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure_2 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure_3 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure_4 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

Brochure_5 (मैथिली साहित्य संस्थान लिंक)

https://bloomlibrary.org/language:mai (ब्लूम लाइब्रेरी मैथिली)

अरिपन फाउण्डेशन (http://www.aripanafoundation.org/)

PRATHAM_BOOKS_MAITHILI_STORYWEAVER

https://www.youtube.com/playlist?list=PLAT74nNc2fmYaW29mRVAIgzRq63_9zWbI (मैथिली □तिया वृक्ष)

https://www.youtube.com/channel/UCE1HEUJEzc-NUbMsHzklHLw (विदेह मैथिली-अंग्रेजी टॉकिंग रीड-अलाउड □तिया वृक्ष आ संगम मैथिली संकेत भाषा- दूनू मैथिलीमे पहिल बेर)

https://bloomlibrary.org/player/Wcf6zr5CoF (मसाल्ली कान यनिवर्णनकानी नवका)
https://bloomlibrary.org/player/p3sHdYBgiT (चलू हम गँ ठीक छी ने!)
https://bloomlibrary.org/player/f19pSdhGMo (एकटा नीक दिन)

https://bloomlibrary.org/player/b2l5wesxCp (घन सर)
https://bloomlibrary.org/player/dAzCOFubt7 (की अहाँ उ चिउ सरकँ देखने छी?)

पोथी डॉट कॉम

https://store.pothi.com/browse/free-ebooks/?language=Maithili

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/maithili-books-pdf-free-download/ (पोथी डाउनलोड लिंक)

https://www.ilovemithila.com/ *(online maithili journal)*

https://maithili.com.np/ *(owner I Love Mithila)*

ग्राम मैथिल

https://www.youtube.com/channel/UCq3OLlck2tNw8BI4t8jjzQg (*ग्राम मैथिल चैनल- किरण चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सबसँ लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल)*

https://www.youtube.com/@mithiranglokt arang677 (मिथिरंग लोक तरंग)
https://www.youtube.com/MithilaChapter (मिथिला चैप्टर)

https://www.youtube.com/soumyajha (खिस्सा-पिहानी नना गुटका लल)

https://www.youtube.com/@maithilirangmanch9536 (मैथिली रंगमंच)

https://www.youtube.com/@kokilmanch4330 (कोकिल मंच)

https://www.youtube.com/@MithilaDarshan (मिथिला दर्शन)

https://www.youtube.com/@neelammaithili (नीलम मैथिली)

https://www.youtube.com/@maithiliganga4714 (मैथिली गंगा)

https://www.youtube.com/@UdayaSingh (नरु कश्न, नविकगा)

https://www.youtube.com/@kunjbiharimithilaratna (कुंज विहानी)

https://www.youtube.com/@RAMBABUJHA (नाम वावू मा)

https://www.youtube.com/@VJEntertainments008 (वी. ज., विकास मा)

https://www.youtube.com/c/ilovemithila (आइ लव मिथिला)

https://www.youtube.com/@rajnipallavi (नजनी यल्लवी)

https://www.youtube.com/@PoonamMishra (यूनम मिश्र)

https://www.youtube.com/@ranjanajhasangeetdivyam2908 (नंजना मा)

https://www.youtube.com/@julijhaofficial8057 (ज्ञली मा)

https://www.youtube.com/@maithilithakur (मैथिली ठाकुन)

जानकी एफ.एम समाचान

https://www.youtube.com/user/Janakifm/videos (जानकी एफ.एम समाचान)

Videha e-Learning

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXiOHp7A

संघ लाक सवा आयाग/ विहान लाक सवा आयागक यनीजा लल मैथिली (अनिवार्य आ वैकल्पिक) आ आन वैकल्पिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नट-मैथिली लल सेहा]

....

http://www.youtube.com/user/ggajendra71(विदह)

https://www.youtube.com/gunjanshree

http://www.youtube.com/user/Maithilinews
http://www.youtube.com/user/jitumaithil (जितेन्द्र मा, जनकयून)
http://www.youtube.com/user/sobhagya8 (सौभाग्य मिथिला)
http://www.youtube.com/user/rajnipallavi (नजनी यल्लवी)
http://www.youtube.com/user/bhaskaranjha (भास्कन मा)
http://www.youtube.com/user/mahakalijha
http://www.youtube.com/user/karia1885
http://www.youtube.com/user/omuniv
http://www.youtube.com/user/sumankumar137
http://www.youtube.com/user/gyansjha
http://www.youtube.com/user/bclalan
http://www.youtube.com/user/gareri1986
http://www.youtube.com/user/avinashjha84
http://www.youtube.com/user/chandankumarjha1

http://www.youtube.com/user/mailorang
http://www.youtube.com/user/chandanmishra2010

http://www.youtube.com/user/nirmaana

http://www.youtube.com/user/Janakifm1

http://www.youtube.com/watch?v=XpSuVHtbaQ8&feature=mfu_in_order&list=UL

http://www.youtube.com/user/gxcng

http://www.youtube.com/user/gautamkrishna85

http://youtu.be/3i3OG5Nf3y8

http://youtu.be/sJnxSe-ckmo

http://www.youtube.com/user/jitmohanjha

http://www.youtube.com/user/MiTJnPNN

http://www.youtube.com/watch?v=-9KaC8ji9t4

http://www.youtube.com/user/luvvivek2k7

http://www.youtube.com/user/bindassatyandra

http://www.youtube.com/user/rustymind1

http://www.youtube.com/user/MrDeveshKarna

http://www.youtube.com/user/rambabushah

http://www.youtube.com/user/mukeshjha84

http://www.youtube.com/user/Mauahi
www.youtube.com/user/MrBasantjha
http://www.youtube.com/user/themadan
http://www.youtube.com/user/sentukhu

http://www.youtube.com/user/yarowjha

http://www.youtube.com/user/mkoxp
http://www.youtube.com/user/luvvick21

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/MrRamkisor

http://www.youtube.com/user/pratyushsangita/
http://www.youtube.com/user/hellomithilaa

http://www.youtube.com/user/mariyoshj

http://www.youtube.com/user/dearshantanu/

www.youtube.com/user/RajuPrasadRajbanshi

www.youtube.com/user/premarshi
http://www.youtube.com/user/Dhipre (धीरेन्द्र प्रेमर्षि)

http://www.youtube.com/user/TheShubhaprabhat

http://www.youtube.com/user/njyclubashok

http://www.youtube.com/user/mithilaconnect

http://www.youtube.com/user/NAYAKSAURABH80

http://www.youtube.com/user/Rabindra888

http://www.youtube.com/user/uday88mandal

http://www.youtube.com/user/nimesdeath

http://www.youtube.com/user/pawanks6102
http://www.youtube.com/user/sahayogee
http://www.youtube.com/user/sunilkumarpawan

http://www.youtube.com/user/videhuk

http://www.dailymotion.com/video/xjophq_documentary-kosi-katha_shortfilms#from=embed

http://blackbuddhas.com/

http://youtu.be/CPwpkn5YI1I

अयन मंग्ब editorial.staff.videha@gmail.com यन य0।3।

देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

प्रस्तुत अछि विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति आ तिरहुतक नामसँ विख्यात वर्तमान राज्य आ नेपालक स्थल सभक प्राचीन आ नव स्थापत्य, चित्रकला, अभिलेख आ मूर्तिकलाक एकटा छोट संग्रह। ऐ संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रह editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आर्कियोलोजिकल सर्वेक्षण नवनालन्दा, सम्बन्धित स्रोतसभसँ आ संग्रहकर्तासँ लेल गेल छवि। स्रोत सभ पठेबा लेल धन्यवाद पठओनाइ। साभार। विशेष विवरण देखबा लेल क्लिक करू **दर्शनीय मिथिला**, **Brochure 1**, **Brochure 2**, **Brochure 3**, **Brochure 4**, **Brochure 5** (**मैथिली साहित्य संस्थान लिंक**), **IGNCA ASI** (**Cultural Heritage of Mithila**-search keyword Mithila), **Temple Survey Project ASI-English** आ **Hindi**. पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र शैक्षणिक प्रयोग लेल।



भुवनेश्वरी भगवतीपुर (Madhubani, Bihar) बौद्ध तारा सँ समानता नाकमे कुण्डल देखू



सूर्य भगवतीपुर (Madhubani Bihar)



विष्णु भगवतीपुर (Madhubani, Bihar)



दुर्गा, पोखरिसँ भेटल, डाकहि बहुनी मन्दिर (वज्रासँ दक्षिण)मे स्थापित

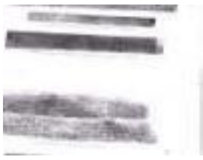


हनुमान मन्दिर घनश्यामपुर (दरभंगा)- चोरि भऽ गेल



(गौरीशंकर, जमथरि, हरिपुर ब्लॉक, मधुबनी

 गौरीशंकर, जमथरि, हँठी वाली, मधुबनी	 गौरीशंकर, जमथरि, हँठी वाली, मधुबनी	 गौरीशंकर, जमथरि, हँठी वाली, मधुबनी
 गौरीशंकर, जमथरि, हँठी वाली, मधुबनी	 गौरीशंकर, जमथरि, हँठी वाली, मधुबनी	 वाऽऽसी- वसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख
 वाऽऽसी- वसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख	 वाऽऽसी- वसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख	 वाऽऽसी- वसैटी, अररिया मिथिलाक्षर ताम्रलेख
 धनहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, नरसिंह अवतार	 धनहरा, बनमनखी, पूर्णियाँ, नरसिंह अवतार	 पूरनदेवी, पूर्णियाँ



विदेश्वर स्थान अभिलेख, मधुबनी



अन्धराठाढी अभिलेख, मधुबनी



बुद्ध अष्टधातु, सिसव वसंग्रहन, व गया



12 शताब्दी, काष्ठलेख, मधुबनी



अग्नि विदेश्वर स्थान, मधुबनी बुद्ध, मुंगेर



अहिल्या स्थान



अन्धराठाढी, मधुबनी



अशोक स्तंभ, बसाढ, वैशाली



बुद्ध



अवलोकितेश्वर नाना, भागलपुर



बसाढ, वैशाली



बुद्ध भूमिस्पर्श







बुद्ध, ताम्र	बुद्ध मस्तक, सुल्तानगंज	वैशाली मूर्त्ति
		
चामुण्डा नाग-नागिनी, मुंगेर	मुकुटधारी बुद्ध, अंतीचक, भागलपुर	नाचैत गणेश, 10म शताब्दी, दरभंगा
		
दरभंगा म्यूजियम	दरभंगा म्यूजियम	दुर्गा, कार्त्तिकेय
		
10म शताब्दी, शीट भगवानपुर, अन्धरा ठाढ़ी	गणेश बुद्ध	गौतम बुद्ध, वैशाली
		
बलिराज बुद्ध	चिउँकँ खुआबैत महिला, नाजमहल	लौरिया नन्दनगढ़, अशोक स्तंभ



लामश सुदामा गुफा



मुंगेर



नागराज तीर्थंकर



कुमारिल स्टट स्कलार, नालन्दा



विक्रमशिला विश्वविद्यालय, रागल यून



OIG बुद्ध



पार्वती



नामायध



नामयूनना वृषर



नामयूनना



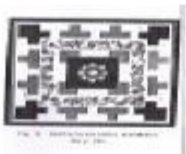
वुद्धक अवशेष



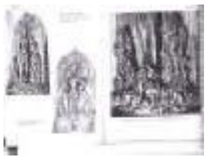
संकिसा



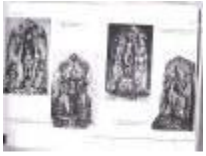
सप्तमातृका



सर्वा रुद्र मण्डल



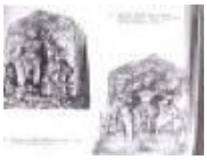
सूर्य



सूर्य



सूर्यक संगी



सूर्य, मधुबनी आ भागलपुर



मूर्ति



मूर्ति



मूर्ति, वैशाली



उमा माहेश्वर, कल्याणसुन्दर



वैशाली वृषभ शीर्ष



वैशाली, शालभंजिका भागलपुर



विष्णु बुद्ध



पाँखियुक्त महिला



अहिल्या



अष्टयोगिनी मन्दिर, सहरसा



वनगंगा



दरभंगा



दरभंगा नगर,
1934



दरभंगा मेडिकल कॉलेज



दूल्हदुल्हिन मन्दिर, जनकपुर



गन्धीश्वर



गंगासागर पोखरि, मधुबनी



हनुमान मन्दिर, मधुबनी



हरिहरस्थान



मधुबनी हॉस्पीटल



जनकपुर जानकी मन्दिर



जानकी मन्दिर



जानकी मन्दिर, सीतामढ़ी



जानकी मन्दिर, सीतामढ़ी





कलनेश्वर बाबा



कपिलेश्वर

जिला स्वास्थ्य कार्यालय नाजविनाज, नयाल		
 कावलखाकार्यालय, नाजविनाज, नयाल	 मिथिला विश्वविद्यालय, दनरंगा।	 लक्ष्मीश्वन यैलस, 1934
 माध्यमिकविद्यालय , जनकपुन	 मरुह्र चौक, जनकपुन	 जनकपुन मंतय
 मिथिला, 1988 स्कन्य	 यगलावावा धर्मशाला, जनकपुन, नयाल	 यंतौल अरुल्या
 मधुवनी वस स्टैंत	 नाज रुत □रिस, 1934	 नाज हॉस्पीटल, दनरंगा, 1934



सौना0 सरा



शिव मन्दिर, 1934



शिवशंकर सिनेमा, मधुबनी



श्यामा मन्दिर



विद्यापति मूर्त्ति, बिस्फी



उग्रनाथ, गानास्थान, मरिबी, सहरसा



विद्यापति स्मारक, बिस्फी



बिस्फी, उदना महादेव



बिस्फी, विश्वेश्वरी भगवती



अहल्या मन्दिर, अहियारी



अशोक स्तंभ, वैशाली



स्तूप अशोक स्तंभ, वैशाली



बलिराजगढ़ किला पूर्वी गेट



बलिराजगढ़ किला मीनार



चण्डी स्थान, विराटपुर, सहरसा



गाँधी आश्रम, ढाका, मोतिहारी



गाँधी विद्यालय, ढाका, मोतिहारी



गिरिजा स्थान, मधुबनी



हरिहर मन्दिर, सोनपुर



जैन मन्दिर, भागलपुर



जैन मन्दिर, वैशाली



कमलादित्य स्थान



कपिलेश्वर शिव मन्दिर



लौरिया नन्दनगढ़



मदनेश्वर शिव मन्दिर



मन्दार पर्वत, बाँका



मोतिहारी सत्याग्रह स्मारक



भुवनेश्वरी मन्दिर, भौढ़ी, मधुबनी



रामजानकी मन्दिर, सीतामढ़ी



सत्याग्रह स्मारक, सीतामढ़ी

 शांति स्तूप, वैशाली	 उच्चैठ भगवती	 उच्चैठ मन्दिर
 सिंघेश्वर स्थान, मधेपुरा	 सूर्यधाम, पनसा	 उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा
 वैशाली स्तूप	 विक्रमशिला विश्वविद्यालय, भागलपुर	 विराटपुर मन्दिर, मधेपुरा
 वृषभ शीर्ष, रामपुरवा	 सिंह शीर्ष, रामपुरवा	 शरभ, नेपाल
 यक्षियुक्त देवी, वैशाली	 बाबा वटेश्वर, ददना, बनगाँव	 वट वृक्ष, बनगाँव



रुगवान विष्नु, दवना, वनगाँव



शास्त्रार्थ स्थल,गानास्थान महिषी



शास्त्रार्थ स्थल,गानास्थान महिषी



गानास्थान महिषी



माता गाना, गानास्थान महिषी



उग्रगाना (खादन वाली गाना) मुर्ति , महिषी



वशिष्ठ मुनि, गानास्थान महिषी



आवर्धित काली उच्चैठ



वौद्धदवी गाना वाली समस्तीपुर



रुगवती दवली



रुगवती गिनिजा रूद्रन



रुगवती मृतमूर्ति गन्ववारि



रुगवती वाली समस्तीपुर

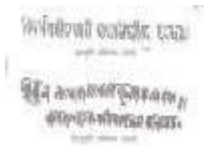


गुवनश्वरी कार्थ



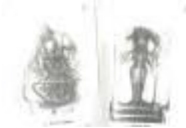
दवीकाली कार्थ

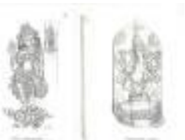
 गंगामूर्ति नगनठीद दनरंगा	 (गासाउनि मन्दिन कार्थ	 देवदु दवी दावीठीद
 काली उच्चै0	 मदिषासुनमर्दिनी वदनी दनरंगा	 मदिषासुनमर्दिनी दावीठीद
 मदिषासुनमर्दिनी नादन-दगनमीयुन	 उमा शुम्भमर्दिनी मिर्जापुन दनरंगा	 यमुना दैनव वलिया मधुवनी
 दैनव, दैनव-वलिया	 नटनाज, गानालाढी	 शिव- पार्वती मन्दिन, कपिलश्वनस्थान
		

शिव- यार्वती मन्दिन, कयिलश्वनस्थान	शिव मन्दिन, सिंगिया, निर्मली	उमामाहेश्वन, महादेवम0
		
उमामाहेश्वन, गिनहुा	विष्णु, रुलानीयुन	विष्णु, रुी0 रुगलानयुन
		
विष्णु, जयनगन	विष्णु, लदहा	विष्णु, साहा- यननी, हावीडीह
		
(शषशायी विष्णु, सवास, मुजङ्कनयुन	वनाह मूर्ति, गिलकेश्वनस्थान	मिथिलाक्षन अभिलेख, विष्णु वृद्ध मूर्ति
		
रुगवती उग्रे0, वनीयही	रुगवती वाग्धेश्वनी, रुंडानीसम	चामुण्डा मन्दिन, कटना, मुजङ्कनयुन

		
अष्टभुज गणेश, हावीडीह	अष्टभुज गणेश, कार्थ	गंगा, आन्ध्रा-ठाढ़ी
		
महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा	महिषमर्दिनी मन्दिर, मिर्जापुर, दरभं गा	नटराज
		
नाममन्दिर, अहिल्यास्थान	सरुनी, वैशाली, विष्णु तिलक-यज्ञोपवीतधारी	नृपनगर शिव मन्दिर
		
सूर्य, दकूली	सूर्य मूर्ति, तिलाही	सूर्य मूर्ति, विष्णु, वनआन
		

उमामाहेश्वर	यमुना, आन्ध्रा-०।ढ़ी	सिमरौनागढ़ मूर्ति
		
आदि काली, वैनयुन सहरसा वैनयुन सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगम आदिकालीन रुद्र काली- मन्दिर सेहो एहि गामम अछि। महा शिवनात्रि आ कालीयूजा व७ धूमधाम सँ वैनयुनम होइत अछि।	ग्राथागढ़क स्वामी माधवानन्द कौलाचा र्य काली मन्दिर ग्राथा गढ लग। यूनान गढ। एक न यूवम ब्रह्मयूनाक वावा हनिहन नाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणम उग्रे० रुगवती छथि।	ग्राथागढ़क दसमूखी काली ग्राथा गढ लग। यूनान गढ। एक न यूवम ब्रह्मयूनाक वावा हनिहन नाथ महादेव मन्दिर आ दक्षिणम उग्रे० रुगवती छथि।
		
काठलख (मधुवनी) देवीक मन्दिर	अकौन, वनीयट्टी, रुगवती दुर्गा, रुगवतीयी०	अकौन, वनीयट्टी, रुगवती दुर्गा, रुगवतीयी०
		
१.अष्टभुज गणेश, कार्थ २.शिव मन्दि न, सिंघिया, विरडी	१. वौद्ध देवी तारा, वानी, समस्तीयु न २.उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सह नसा	१.रुगवती, वानी २.रुगवती, दक्ल ली

		
१. रुगवती गिनिजा, फूलहन २.का ली, उच्चैठ	१. रैनव, रैनव वलिया २. उमामा हृश्वन, महादलम0	१. दवीकाली, कार्थ २. गुसाउनि स्थल मह्निन, कार्थ
		
१. गाधेश, लहनियासनाय २.उमा माहेश्वन ३. नटनाज, ४. विष्णु, गिल क, जनउ धानी, सहान, वैशाली	१. गंगा मूर्ति, नगनडीह, दनरुंगा २. रुगवती मृण्मूर्ति, गव्रनानि	१. रुहरु दवी, हावीडीह २.गुवन श्वनी, कार्थ
		
१. कथिन काली, उच्चैठ, २.अष्टगुज गाधेश, कार्थ	१. महिषासुन मर्दिनी, हावीडीह, २.उमा, म्लेच्छमर्दिनी, मिर्जापुन, दन रुंगा	१.महिषासुनमर्दिनी, रुगवतीपुन, नाहन, महिषासुन मर्दिनी, वहनी, दनरुंगा
		
१. म्लेच्छमर्दिनी रुगवती, मिर्जापुन, दन रुंगा २. नाम मह्निन, अहिल्यास्थान	१. म्लेच्छमर्दिनी रुगवती, मिर्जापुन, दनरुंगा २.सिंहेश्वन स्थान, मधेपु ना	१. नटनाज, गानालाही २. उमामा हृश्वन

		
१_शेषसायी, सवास, मूजङ्कनयून, २_नटनाज_पानालाही ३_ रुगवती ४_ उमा माहेश्वनी	१- शिव पार्वती मन्दिन, कपिलेश्वन स्थान २. सूर्य मूर्ति तिलाही	१_ सूर्यमूर्ति, विष्णु वनुआन २. गंगा, आन्ध्रा ठाढी
		
१_उग्रे० हुगवती, वनीयट्ठी २_महिषासुनमर्दिनी, दुर्गा ३_ चामुण्डा मन्दिन, कटना, मूजङ्कनयून ४._रुगवती वानश्वनी, रुण्डानिसम	१. वनाहमूर्ति, पिलकश्वनस्थान, २. विष्णु, रुवानीपून	१. विष्णु, जयनगन २.विष्णु, रौ० रुगवानपून
		
१_विष्णु, लदहा, २.सूर्य, दकुली	१_विष्णु_साहा यनठी, स्थापित- हारीठीह २.वृद्ध- विष्णु मूर्ति अभिलेख	१_विष्णु, सहान, २_वनाह ३_गणेश ४.शिव मन्दिन_नूपनगन
		
१_यमूना, आन्ध्रा ठाढी, २.अष्टभुज गणेश, हावीठीह	१_यमूना, रौनव वलिया, २_शेषसायी, सवास, मूजङ्कनयून, ३_नट	कथित, काली, उग्रे०, वनीयट्ठी

	नाज_गानालाही ४_ रुगनगी ग_ उमा माहुश्नी	
 मूर्त्ति (मिथिला उग्र)	 सम्भवतः सूर्य	 बध्(गोयाल, मिथिला
 विष्णु, जाल, दनरंगा	 विष्णु	 विष्णु, डामोल, दनरंगा

मिथिलाक खोज

ॐ आलख हमन दशकसँ जयनक मिथिलाक यात्राक उयनान्हक सूत्र-वृक्षान्ह अछि आ ओम ओ सर स्थानक स्थानीय निवासी आ गाछत सरक अकथनीय योगदान छन्हि । कखनो कालेँ राउतक गाठीक जाइनन लोकनि सहो नीक गाछत सिद्ध रुला। -गजेन्द्र ठाकुर

"मिथिलायदयश्च मध्यं नियता ऊगि मिथिला नगरी" - मिथिला जाऽ शत्रुकँ मथल जाइग अछि- यादिनीक विवरण।

किला आ गढ

वलिनाजपुर किला- मधुवनी जिलाक वावुवनही प्रखण्डसँ ग किलामीटर पुव वलिनाजपुर गाम अछि। एकर दक्षिण दिशाम एकटा पुनान

किलाक अवशेष अछि। किला चारि किलामीटर नमगर आ एक किलामीटर चाकर अछि। दस फीटक मोट देबालसँ ई घेरल अछि।

असुरगढ़ किला- मिथिलाक दोसर किला मधुबनी जिलाक पूब आ उत्तर सीमा पर भेटल। थानक कातमे महादेव मठ लग ५० एकड़मे पसरल अछि।

जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि दरभंगा नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्तमान जयनगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

नन्दनगढ़- बेतियासँ १२ मील पश्चिम-उत्तरमे ई किला अछि। तीन पंक्तिमे १५ टा ऊँच टीला अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

दकुलीगढ़- शिवहर जिलासँ तीन किलामीटर पूब हाइवे कात कातमे दू टा किलाक अवशेष अछि। चारू दिस खधाइ अछि।

कटरागढ़- मुजफ्फरपुरमे कटरा गाममे विशाल गढ़ अछि, दकुली गढ़ जकाँ चारू कात खधाइ खूनल अछि।

नौलागढ़-बेगुसरायसँ २५ किलामीटर उत्तर ३५० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

जयमंगलगढ़- बेगूसरायमे बनियानपुर थानामे काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच डीह अछि। एतऽ छोट गढ़ अछि। नाउनकोठी (मझौल) गाम लग छोट गढ़ अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलामे हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग दउरह गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो कएलन्हि।

अलौलीगढ़- खगड़ियासँ १७ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल छोट गढ़ अछि।

कीचकगढ़- पूर्णिया जिलामे डंगरघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे छोट गढ़ अछि।

बेनूगढ़- टेढ़गाछ थानामे कबल धारक कातमे छोट गढ़ अछि।

बनिजनगढ़- बहादुरगंजसँ छह किलोमीटर दक्षिणमे लोनसबरी धारक कातमे छोट गढ़ अछि।

नउनी- दरभंगाक बिरौल प्रखण्डसँ १३ किलोमीटर पश्चिममे एकटा गढ़ अछि जे लोरिकक मानल जाइत अछि।

बुद्ध

कुण्डग्राम- हाजीपुरसँ बत्तीस किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे बसाढ़-वैशाली आ लगमे वासुकुण्ड लग गाम गढ़-टीलासँ २ कि.मी. उत्तर-पूर्व अछि कुण्डग्राम , जतऽ जैनक २४म तीर्थंकर महावीरक जन्म भेल छलन्हि। एतऽ बुद्धक छाउर, अभिषेक पुष्करणी (राजा अभिषेकसँ पूर्व एतऽ

नहाइत छथि), अशोक स्तम्भ आ संसद-भवन (राजा विशालक गढ़) अछि।

पजवागढ़ बनही टोल- एतऽ एकटा बुद्ध मूर्ति भेटल छल, मुदा ओकर आब कोनो पता नै अछि। ई स्थल सेहो नखवारी गामक लग अछि।

मंगलगढ़- समस्तीपुर जिलाक हसनपुर ब्लॉकमे दुधपुरा बजार लग दउरि गाम लग। भगवान बुद्धक उपदेश एतऽ भेल, स्थानीय राजा मंगलदेवक आग्रहपर बुद्ध किछु दिन एतऽ निवास सेहो कएलन्हि।

मुसहरनियाँ डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊँच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्ति, पात्र, बर्तनक टुकड़ी आ पजवाक अवशेष एतऽ अछि।

अकौर- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उच्चैठसँ अकौर गाममे एकटा ऊँच डीह अछि, जतऽ बौद्धकालक मूर्ति अछि।

लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतऽ अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

विक्रमशिला- भागलपुरमे स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय। भागलपुर जिलाक अंतीचक गाममे राजा धर्मपालक बनाओल बुद्ध विश्वविद्यालय अछि। १०८ व्याख्याता लेल रहबाक स्थान आ बाहरसँ पढ़य बला लेल सेहो स्थान एतऽ निर्मित अछि।

चम्पानगर- भागलपुरक पश्चिममे, आब नगरसँ सटि गेल अछि। ई जैन लोकनिक एकटा पवित्रस्थल अछि, एतऽ महावीर तीनटा वर्षावास

कएल नहि। ई दू टा जैन मन्दिर छैक अछि, जे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथकेँ समर्पित अछि। महावीर मिथिलामे छह टा वर्षावास बितेलन्हि। बर्खा ऋतुक चारि मास एक ठाम बितेबाक वर्षावास कहल जाइत छल। बुद्ध एकटा वर्षावास मिथिलामे नै बितेलन्हि, मुदा वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ संघ दान छला। आम्रपालीसँ भिक्षा ग्रहण कऽ बुद्ध गेला वेलुग्राम करय चारि मासक वर्षावास।

अभिलेख

गौरी-शंकर स्थान, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्ति आ ओतय मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेख। विदेश्वरस्थानसँ २-३ किलोमीटर उत्तर दिशामे ई स्थान अछि।

भीठ-भगवानपुर अभिलेख- राजा नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवसँ संबंधित अभिलेख छैक अछि। मधुबनी जिलाक मधेपुर थानामे ई स्थल अछि।

भगीरथपुर- पण्डौल लग भगीरथपुर गाममे अभिलेख अछि जाहिसँ ओइनवार वंशक अंतिम दू शासक रामभद्रदेव आ लक्ष्मीनाथक प्रशासनक विषयमे सूचना भेटैत अछि।

मंदार पर्वत- बांका स्थित स्थलमे मिथिलाक्षरक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छला। निकटमे चौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्ति अछि, येह

मुर्गि लाल याथनक अछि गँ दासन काँसाक जकन सामाँ दुटा यदविह्न अछि। जैनक वानहम गीर्थंकन वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगनम आ निर्वाण अहि हल छलन्हि।

विदश्वन- मधुवनी जिलाम लाहनानाउ स्टेशन लग स्थिग शिवधामक स्थापना महानाज माधवसिंह कलन्हि। गऽऽ युगक मिथिलाउनक अभिलेख सहो अगs अछि।

वसैटी (वाऽऽसी-वसैटी), अननिया अभिलेख - पुणियाँम श्रीनगन लग मिथिलाउनक ऽऽी अभिलेख मिथिलाक यहिल महिला शासक नानी ऽऽद्रानवीक नाज्यकालक नर्णन कनैग अछि। नानी ऽऽद्भानवी (११८४-१८०२) ज अकालक समय रूट-रॉन-नर्क आ अन्य कल्याणकानी कार्यक प्रानम्भ कन नहथि।

जयनगन किला- मिथिलाक गसन किला अछि हानग नयाल सीमा यन प्राचीन जययुन आ नर्गमान जयनगन लग। दननंगा लग पंचाह गामसँ प्राप्त गाम्र अभिलेख यन जययुन कन नर्णन अछि।

विष्णु

हलासयट्टी- मधुवनी जिलाक रूलयनास थानाक जागेश्वन स्थान लग हलासयट्टी गाम अछि। कानी याथनक विष्णु हगवानक मूर्ति अगs अछि।

यियनाही- लौकहा थानाक यियनाही गामम विष्णुक मूर्तिक चानु हाथ हश्न हs गेल अछि।

मधुवन- पिपराहीसँ १० किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुवन गाममे चतुर्भुज विष्णुक मूर्त्ति अछि।

कमलादित्य स्थान- अंधरा ठाढ़ी लगमे कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल।

भगवानपुर अनुमण्डलक रखवारी गाममे वृक्षक नीचाँ राखल विष्णु मूर्त्ति, गांधारशैली मे बनाओल गेल अछि।

मटिहानी- विष्णु मन्दिर

जनकपुर- वृहद् विष्णुपुराणमे मिथिलामाहात्म्यमे जनकपुर ओतुक वर्णन अछि। सत्रहम शताब्दीमे संत सुर किशोरकेँ अयोध्यामे सरयू धारमे राम आ जानकीक दु टा भव्य मूर्त्ति भेटलन्हि, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जनकपुरमे स्थापित कऽ देलन्हि। वर्तमान मन्दिरक स्थापना टीकमगढ़क महारानी द्वारा १९११ ई. मे भेल। नगरक चारुकात पोखरि, गेरुखा आ दूधमती धार अछि। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी),जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) आ विवाह पंचमी (अगहन शुक्ल पंचमी) पर एतऽ मेला लगैए।

अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय वाचस्पति संग्रहालय- गोठ गामक यक्षिणीक भव्य मूर्त्ति एतऽ राखल अछि।

गौतम तीर्थ- कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पश्चिम ब्रह्मपुर गाम लग एकटा गौतम कुण्ड पुष्करणी अछि।

मुंगेरक पूब 'सीता-कुण्ड'गर्म कुण्ड अछि, सीता जी एतहि पृथ्वीमे समाहित भेल छली। ठंढा जलक कुण्ड 'रामकुण्ड', लक्ष्मण कुण्ड, भरत कुण्ड, आ शत्रुघ्न कुण्ड सेहो अछि, स्थानीयमे बड़ मिलान। ई मिलान बाबू ७८ रानिकलमे सेहो छै, बसी पढ़ल लिखल गाममे ई आब कहाँ?

हलावर्दि- जनकपुरसँ ३७ किलोमीटर दक्षिण पश्चिममे सीतामढ़ी नगरमे हलेश्वर शिव मन्दिर आ जानकी मन्दिर अछि। एतसँ ३८ किलोमीटर पर पुण्डरीक क्षेत्रमे सीताकुण्ड अछि। हलावर्दिमे जनक द्वार हर चलबा काल सीता भेटलि छली। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) पर एतऽ मेला लगैत।

फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पवाटिका छल जतऽ सीता फूल लोढ़ै छली।

धनुषा- जनकपुरसँ १७ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि। रामक तोड़ल ओही धनुष अछि। ओतसँ पूब बाणगंगा धार बहैत जे लक्ष्मण द्वारा बाणसँ उत्पादित भेल छल।

सुग्गा- जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्राममे शुकदेवजीक आश्रम अछि। शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला ऐल छला-ओ ठाम हुनका ठहरबाक व्यवस्था भेल छल।

सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ७ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि।

कपिलेश्वर- कपिल मुनि द्वारा स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिमम अछि।

कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूब, लहेरियासरायसँ ६० किलोमीटर दक्षिण-पूब आ सहरसासँ २१ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि। एतऽ चिड़ै-अभ्यारण्य सेहो अछि जतऽ उज्जर आ कारी लेसर, लालसर, दिघौंछ, मैल, नकटा, लैरी, गगन, सिल्ली, अधानी, हरिअल, चाहा, करन, गैबा चिड़ै सभ नवम्बरसँ मार्च धरि देखबामे अबैए।

सिमरदह- थलवारा स्टेशन लग शिवसिंह द्वारा बसाओल शिवसिंहपुर गाम लग ई शिवमन्दिर अछि।

सोमनाथ- मधुबनी जिलाक सौराठ गाममे सभागाछी लग सोमदेव महादेव छथि।

मदनेश्वर- मधुबनी जिलाक अंधरा ठाढ़ीसँ ४ किलोमीटर पूब मदनेश्वर शिव स्थान अछि।

बल्लेश्वर- संसारपुरमे हरनौ गाम लग बल्लेश्वर ठाकुर द्वारा स्थापित बल्लेश्वर शिवस्थान अछि।

शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि।

उग्रनाथ- मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर गाममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि। विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पियौलखिन्ह। विद्यापतिक हठ

पलायन ओ स्थान जत उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह।

उच्चैठ छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चैठमे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छला। भगवतीक मौलिक मूर्त्ति मस्तक विहीन अछि।

उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि।

भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे भद्रकालिका मंदिर अछि।

चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लक्ष्मणा वा लखनदेइ धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल। ओहि स्थानपर देवी मन्दिर अछि।

परसा सूर्य मन्दिर- झंझारपुरमे सग्रामसँ पाँच किलोमीटर पूर्व परसा गाममे साढ़े चारि फीटक भव्य सूर्य मूर्त्ति भेटल अछि।

बेनीपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली-मन्दिर सेहो ओहि गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ बेनीपुरमे होइत अछि।

धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह अवतारक स्थान अछि, एकटा खाढ़ जकाँ पेघ पाया अछि जाहिमे जँ किछु फेकबै तँ बड़ी काल धरि गों-गोँ अवाज होइत रहत। ओहि स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्त्ति

आ मन्दिरक कारणसँ बस विकसित भऽ गेल अछि। एहि नरसिंह पाया फाड़ि अवतरित भेल छला।

बिसफी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानाक कमतौल रेलवे स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिसफी गाम अछि। ख्यातिनीश्वर पूर्व महाकवि विद्यापतिक जन्म-स्थान ई गाम अछि।

मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ- १.गिरिजास्थान (फुलहर, मधुबनी), २.दुर्गास्थान (उचैठ, मधुबनी), ३.भद्रेश्वरी (दाखन, मधुबनी), ४.भुवनेश्वरीस्थान (भगवतीपुर, मधुबनी), ५. भद्रकालिका (कोइलख, मधुबनी), ६.चामुण्डा स्थान (पचाही, मधुबनी), ७.सोनामाइ (जनकपुर, नेपाल), ८.योगनिद्रा (जनकपुर, नेपाल), ९.कालिका स्थान (जनकपुर स्थान), १०.राजेश्वरी देवी (जनकपुर, नेपाल), ११.छिन्नमस्ता देवी (उजान, मधुबनी), १२.वनदुर्गा (खररख, मधुबनी), १३.सिद्धेश्वरी देवी (सरिसब, मधुबनी), १४.देवी-स्थान (अंधरा ठाढ़ी, मधुबनी), १५.कंकाली देवी (भारत नेपाल सीमा आ रामबाग प्लेस, दरभंगा), १६.उग्रतारा (महिषी, सहरसा), १७.कात्यायनी देवी (बदलाघाट, सहरसा), १८.पूरन देवी(पूर्णियाँ), १९.काली स्थान (दरभंगा), २०.जयमंगलास्थान(मुंगेर), ५२. जनकपुर परिक्रमाक १५ स्थल आ ओकर मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी, २.कल्याणेश्वर- शिवलिंग, ३.गिरिजा-स्थान- शक्ति, ४.मटिहानी- विष्णु मन्दिर, ५.जलेश्वर- शिवलिंग, ६.मड़ाइ- माण्डव्य ऋषि, ७. ध्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर, ८.कंचन वन- कोनो मन्दिर नै मात्र मनोरम दृश्य, ९.पर्वत- पाँच

टा यर्वत, १०.धनुषा- शिव धनुषक टुकडी, ११.सगरमठी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड, १२.हनुमाहा- विमलागंगा, १३. कनुधा- कारा मन्दिर नै मात्र मनानम दृश्य, १४. विसौल- विश्वामित्र मन्दिर आ १५.जनकपुर।

दनरंगा कैथोलिक चर्च- १८९१म स्थापित ई चर्च १८९१ कान हुकम्यम उत्तिग्रस्त ह्s गेल। एकरा हाली नाजनी चर्च सहा कहल जाइछ। संट फ्रांसिस □सिसी चर्च मूजकनयूनम अछि।

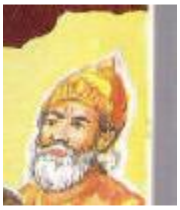
रिखा सलामी मजार- गंगासागर याखरि दनरंगाक महानयन ई मजार अछि। मकदुम वावाक मजार:ललित नानायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दनरंगाक बीच स्थित ई मजार हिन्दू आ मुस्लिम मतावलम्बीक एकटा यावन स्थान अछि। दनरंगा टावर मस्जिद इस्लाम मतावलम्बीक एकटा रुख्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि।

विदेह मिथिला नम्र

वि द ह विदेह Videha विदेह http://www.videha.co.in विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका Videha Ist Maithili Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका नव अंक देखबाक लेल पृष्ठ सभकेँ रिफ्रेश कए देखू। Always refresh the pages for viewing new issue of VIDEHA.

रानग आ नयालक माटिम यसनल मिथिलाक धनगी प्राचीन कालसँ महान पुरुष आ महिला लोकनिक कर्मभूमि रहल अछि। प्रस्तुत अछि मिथिला नम्रक एकटा छोट संग्रह। ई संग्रहकेँ पूर्ण करबाक हेतु अपन बहुमूल्य संग्रहकेँ editorial.staff.videha@gmail.com केँ पठाउ। आकस्मिक सर्वाधिकार नवनाकान, सम्बन्धित स्रोताधारक आ संग्रहकर्ताक लगम छन्हि। स्रोत सभ पठावा लेल धन्यवाद पाठकगण। सामान्य पूर्णतः अव्यवसायिक उद्देश्य आ मात्र एकतमिक प्रयोग लेल। विशेष विवरण देखवा लेल क्लिक

करू **VIDEHA_346, VIDEHA_347, VIDEHA_366** *आ* **मिथिला नम्र/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक यावनि गिहान (कथा) आ मिथिलाक संगीत।**



वैदिक जनक

'वैदेह नाजा' भृगवदिक कालक नमी सथाक नामसँ छलाह, यह्न कनेत सदह स्वर्ग गेलाह, भृगवदम वर्णन अछि। ओ ऋषिक संग दलहि असुर नमुचीक विरुद्ध आ नाहिम ऋषि हुनका ववउालहि। शतपथ



वाल्मीकि



सीतायति नाम

ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एक छथि आ एतऽसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरोहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग **जयन्त** आ मिथि -जिनका मिथिला नामसँ सेहो स्मरण कएल जाइत छन्हि, **मिथिला** नगरक निर्माण कएलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भऽ सकल अछि, अनुमानित अछि जनकपुरक लग। �सीरध्वज जनक� सीताक पिता छथि आ एतयसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ परम्परा देखबामे अबैत अछि। �कृति जनक� सीरध्वजक बादक 18म पुस्तमे भेल छलाह। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह। याज्ञवल्क्य हिरण्याभक शिष्य छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भऽ गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र)।



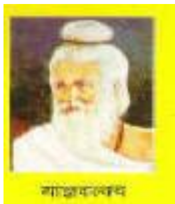
लव कुश



विदेघ माथव

शतपथ ब्राह्मणक विदेघ माथवक विदेह आगमन, आगिक सदानीरासँ आगाँ नहि बढबाक बात।

शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू

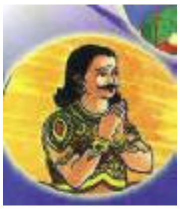


वाजसनेयी याज्ञवल्क्य

याज्ञवल्क्य मिथिलाक दार्शनिक राजा कृति जनकक दरबारमे छलाह। हुनकर माताक वा पिताक नाम सम्भवतः वाजसनी छलन्हि। ओना हुनकर पिता देवरातकेँ मानल जाइत छन्हि। याज्ञवल्क्य १. शुक्ल यजुर्वेद, २. शतपथ

एक छथि आ एहिसँ विदेह नामक प्रान्त।

ब्राह्मण, ३.वृहदारण्यक उपनिषद आ ४.याज्ञवल्क्य स्मृतिक द्रष्टा/लेखक छथि।



अंगराज कर्ण



वैशेषिक दर्शन कणाद

वैशेषिक दर्शन कणाद



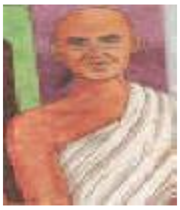
महावीर जैन 599-527

महावीर विदेहमे छह टा वर्षावास बितौलन्हि।



गौतम बुद्ध BC 563-483

ओना त' महावीर विदेहमे छह टा वर्षावास बितौलन्हि मुदा बुद्ध एकोटा नै मुदा मिथिलामे बौद्ध धर्मक प्रचार पहिने बढ़ल। बुद्ध वैशाली नगरीमे आम्रपालीक उद्यानमे लिच्छवीगणकेँ सन्देश देने छलाह।



चाणक्य BC 350-283

धर्म आ विधिक उत्तम कौटिल्यक अर्थशास्त्र आ याज्ञवल्क्य स्मृतिमे बड्ड समानता अछि जे चाणक्यक मिथिलावासी होयबाक प्रमाण अछि।

अर्थशास्त्रम(१.६ विनयाधिकारिक प्रथमाधिकरणम षष्ठोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक सेहो चर्चा अछि।

तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यामभिमन्यमानः सबन्धुराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।



चन्द्रगुप्त मौर्य चाणक्यक शिष्य BC 340-293

चाणक्यक शिष्य



आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550

पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण- (२१) (३४/०८) महियसिः मंगरौनी मालछेन सँ पीताम्बर न सुत दामू वौ माधव सँ नीती विनयभट्टः ७ सुता ***आर्यभट्टः*** ७ सुता उदयभट्टः ७ सुता विजयभट्ट ७ सुता सुलोचनभट्ट (सुनयभट्ट) ७ सुता भट्ट ७ सुता धर्मजटीमिश्र ७ सुता धनाजटी मिश्र ७ सुताब्रह्मजटी मिश्र ७ सुता प्रियूजटी मिश्र ७ सुत विघूजटी मिश्र ७ सुता अजयसिंहः ७ सुता विजयसिंहः ७ सुता ७ सुता आदित्यनाहः ७ सुता महानाहः ७ सुता दूर्योधन सिंहः ७ सुता साढन जयसिंहर्कावार्यान्कृस महाम्र विद्या पानळगण महामहोपाध्या। यः ननसिंहः।।



सिद्ध सरहपाद 700-780

सरहपाद-सिद्धिनाक महल यठम पढिआउ, महो पिवन्नी विसनउ अमहलउ। मिथिलामे अजनानम्र सिद्धिनम्नु अकन पूर्णमे सिद्धिनम्नु, गणेशजीक अंकुश आँडी, लिखल जाइत अछि। मिथिलामे हुनी धानक जे माँउ पिलासँ मानय शक्ति जीव हाइत अछि; हुनी सरहपादक मिथिलावासी हाएवाक प्रमाण अछि।

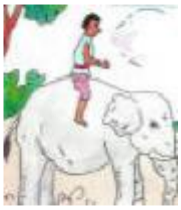


आदि शंकराचार्य 788-820 मंडन मिश्रसँ शास्त्रार्थ



म.म. गोनू झा 1050-1150

कानमह सानकनियाम गोनू झाक वर्णन पञ्जीमे अछि- महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनू। पञ्जीक अनुसार पीढ़ीक गणना कएलासँ गोनूक जन्म (गोनूक सानकनियाम कानमह-वत्सम २४म पीढ़ी चलि रहल अछि) *आर्यभट्टक बाद (आर्यभट्टक मालछन-काश्यम ३९ म पीढ़ी चलि रहल अछि) आ विद्यापतिक पहिने (विद्यापतिक बिसइवार बिसी-काश्यम १४म पीढ़ी चलि रहल अछि)* लगभग १०५०



कृष्णनाम आ हाथी सवनन

मिथिलाक यादव (गुआर) जातिक लोकदेवता कृष्णनाम अपन हाथी सवननपर सवार।



वंशीधर ब्राह्मण

ई.म सिद्ध होइत अछि। काल्ह एहि गनहुँ एक पीढ़ीकेँ ४० सँ गुणा कला सँ आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६ ई. आ विद्यापतिक जन्म लगभग १३७० ई. अबैत अछि जे इतिहाससम्मत अछि।



छेछन महराज

मिथिलाक डोम जातिक लोकदेवता



दीना- भदरी

मिथिलाक मुसहर जातिक लोकदेवता



ऋषि याँजियान



राजा सलहेस

मिथिलाक दुसधवंशी (दुसाध) जातिक लोकदेवता



दुलरा दयाल

(रानू माक गाम रसौढ़ाक राजकुमार, "बहुरा गोढ़िन नटुआ दयाल" लोककथाक मलाह कथानायक। रसौढ़ामे एखनो हिनकर गहबर छन्हि।

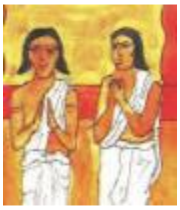


कालिदास



बाधि कायस्थ

विद्यापतिक पुरुष-परीक्षाम मृत्युकालम गंगा नदीक आयब आ बाधि-कायस्थकेँ अपनाम समवाक खिसा वर्णित अछि जे



राधाकृष्ण आ करताराम मल्लिक

मिथिलाक अमता घरानक प्रारम्भिक गवैया



महाराज नान्यदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक 1097 ई. म स्थापना। 1147 ई. म मृत्यु।

बादमे विद्यापतिकेँ लऽ कऽ सेहो प्रचलित भेल।



मल्लदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र। मिथिलाक गंधवरिया राजपूत मल्लदेवकेँ अपन बीजीपुरुष मानैत छथि।



महाराज हरिसिंहदेव

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरिसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरिसिंहदेवक प्ररणासँ- आ ई हरिसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकमे स्थापना केने रहथि- नन्देद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाक)... मिथिलाक पञ्जिक लोकनि शाक १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोड़ वृद्धि बिलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाक माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई.क आसपास) *श्रोत्रिय*नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।



मंत्री गणेश्वर

मिथिलाक कर्णाट वंशक नरेश हरिसिंहदेवक मंत्री। *सुगतिसोपान*मे मिथिलाक सांवैधानिक इतिहासक वर्णन।



मीनां साहेव

मिथिलाक मुस्लिम लोकनिक वीच प्रसिद्ध लोकगाथाक नायक।



अमन वावा

मिथिलाक मलाह जातिक लोकदेवता।



गनीवन वावा

मिथिलाक धोवि जातिक लोकदेवता।



लालवन वावा

मिथिलाक चर्मकार जातिक लोकदेवता।



वंठा चमान



कानिख यजियान



लानिक



नाय नधयाल



अयाची मिश्र

यद्भस्म शास्त्रीक रत्ननाथ मिश्र वड येघ नैयायिक छलाह आ कहिया ककनासँ वाना वस्तुक याचना नहि कएलहि, ताहि लेल सरा हुनका अयाची मिश्र कहए लगलहि।



शंकन मिश्र



यज्ञधन मिश्र



"बालाऽहं जगदानन्द न मे बाला सरस्वती। अपूर्णे पंचमे वर्षे वर्णयामि जगत्त्रयम् ॥" के रचल। पन्द्रहम शताब्दीमे रत्नाकर मिश्रक घरमे मधुबनी जिलाक सरिसव ग्राममे शंकर मिश्रक जन्म भेल। शंकर मिश्र महाराज भैरव सिंहक कनिष्ठ पुत्र राजा पुरुषोत्तमदेवक आश्रित छलाह। शंकर वर्धन रसार्णव ग्रंथमे भेटैत अछि। शंकर मिश्र कवि, नाटककार, धर्मशास्त्री आ न्याय-वैशेषिकक व्याख्याकार रहथि। शंकर मिश्र ग्रंथावली- १.गौरी दिगम्बर प्रहसन २.कृष्ण विनोद नाटक ३.मनोभवपराभव नाटक४.रसार्णव५.दुर्गा-टीका६.वादिविनोद७.वैशेषिक सूत्र पर उपस्कार८.कुसुमांजलि पर आमोद९.खण्डनखण्ड-खाद्य टीका १०.छन्दोगाह्निकोद्धार ११.श्राद्ध प्रदीप १२.प्रायश्चित्त प्रदीप।

विद्यापतिक समकालीन जयदेव मिश्र, जे अपन अकाट्य तर्कक कारण पक्षधर मिश्रक नामसँ जानल गेलाह।

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)

कवीश्वर ज्योतिरीश्वर(लगभग १२७५-१३५०)सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठाकुरसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक वात्स्य कायस्थ श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक विद्यापति नामक विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय हस्तगत अछि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति:- कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ �ईश्वर प्रत्यभिज्ञा-विवृतिविमर्शिनी� मे विद्यापतिक उल्लेख करैत छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०५, मध्यकालीन मिथिला, वि.कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत करैत छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाग छी।

�जाव न मालती कर परगास

ताव न ताहि मधुकर विलास।� आ

�मुकुला मुकुल करय मकरन्द�

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) **षष्ठः कल्लोल**- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ **अष्टमः कल्लोलः**- ॥अथ नायक वर्णना॥ मे उल्लेख।



महाराज शिव सिंह

मिथिला नरेश विद्यापतिक आश्रयदाता ओइनवार वंशक महाराज शिव सिंह।



उगना महादेव

महादेव विद्यापतिक अहिठाम गीत सुनबा लेल उगना चाकर बनि रहैत छलाह।



महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435 (मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठमे लेखन)

महाकवि विद्यापति ठाकुर 1350-1435

विद्यापति ठाकुरः 1350-1435 बिसफीवाल विद्दी-कायथ (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ सभ विपुल संख्याम कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (शालिनीधन पूर्व)सँ भिन्न छथि।

(चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल , कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।)



शंकरदेव 1449-1569

पारिजातहरण।



जगज्ज्योतिर्मल्ल १६१३-३१

हरगौरी विवाह नाटक, कुञ्ज विहार नाटक।



सुनीति कुमार चटर्जी मैथिली प्रेमी 1890-1977



अरविन्द घोष मैथिली प्रेमी 1872-1950

विद्यापति गीतक अंग्रेजीमे अनुवाद

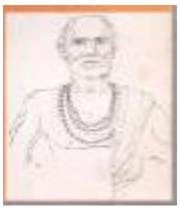


डॉ. सर आशुतोष मुखर्जी मैथिली प्रेमी 1864-1924



सर जी. ए. ग्रियर्सन मैथिली प्रेमी 1851-1941







कवि चन्दा झा 1831-1907

मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिअर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता कयलन्हि।

कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

महाकवि लालदास 1856-1921

हिनक जन्म खड़ौआ ग्राममे १८५६ ई. मे तथा मृत्यु १९२१ ई. मे भेलन्हि। हिनक अनेक रचना उपलब्ध भऽ रहल अछि, यथा�रमेश्वर चरित रामायण,� स्त्री शिक्षा,� �सावित्री-सत्यवान,� �चण्डी चरित,� �विनयावली,� �दुर्गा सप्तशती,� तन्त्रक मिथिला माहात्म्य� आदि। मैथिलीक अतिरिक्त ई संस्कृत, हिन्दी तथा बंगलाक ज्ञाता छलाह। कविताक अतिरिक्त गद्यमे सेहो ई रचना कयल। रमेश्वर चरित रामायण हिनक सभसँ विशिष्ट ग्रन्थ अछि। राम-कथाक उल्लेखमे सीताक महिमाक महत्व दय मिथिला तथा मैथिलीक प्रति ई अपन श्रद्धा तथा भक्तिकेँ व्यक्त कयल अछि।

म. म. परमेश्वर झा 1856-1924

जन्म 1856 ई. मे तरौनी ग्राम (दरभंगा) जिलामे भेल छलन्हि तथा निधन 1924 ई. मे। संस्कृत व्याकरणक ई दिग्गज विद्वान् छलाह तथा �वैयाकरण केशरी� क उपाधिसँ विभूषित छलाह। मैथिली साहित्यमे अपन कृति �मिथिलातत्व विमर्श� तथा �सीमन्तिनी आख्यायिका�क कारणे महत्वपूर्ण स्थान रखैत छथि। ई महाराज रमेश्वर सिंहक दरबारमे राज-पण्डितक पदपर अनेको वर्ष धरि सुप्रतिष्ठित छलाह।



अवध बिहारी प्रसाद शास्त्री 1859-1929



सर्वतंत्र स्वतंत्र बच्चा झा 1860-1921

मधुबनी जिलांतर्गत लवानी(नवानी) गाममे हिनकर जन्म भेलन्हि। हिनक कृति सभ अछि। 1. सुलोचन-माधव चम्पू काव्य, 2.न्यायवार्तिक तात्पर्य व्याख्यान, 3.गूढार्थ तत्वलोक(श्री मद्भगवद्गीता व्याख्यात्मक मधुसूदनी टीका पर) 4.व्याप्तिपंचक टीका 5.अवच्छेदकत्व निरुक्ति विवरण 6.सव्यभिचार टिप्पणी 7.सत्प्रतिपक्ष टिप्पणी 8.व्याप्त्यनुगम विवरण 9.सिद्धांत लक्षण विवेक 10.युक्तिवाद गूढार्थ तत्वालोक 11.शक्तिवाद टिप्पणी 12.खण्डन-खण्ड खाद्य टिप्पणी 13. अद्वैत सिद्धि चन्द्रिका टिप्पणी 14.कुसुमाञ्जलि प्रकाश टिप्पणी।



म. म. शशिनाथ झा 1860-1930



मुंशी रघुनन्दन दास 1860-1945

गाम-सखवार, जिला-मधुबनी। "मिथिला नाटक" आ "दूतांगद व्यायोग"क लेखक।



मधुसूदन ओझा 1866-1939



म.म. मुरलीधर झा १८६८-१९२९

जन्म- गाम- रहाम (जिला मधुबनी), अपन मातृक धामसीधयम बसि गेलाह। काशीसँ १९०६ ई. मे ई "मिथिलामोद" नामक मासिक मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन शुरू कलन्हि। हितोपदेश (अनुवाद), मैथिली व्याकरण, "अर्जुन रयथा" (उपन्यास) प्रकाशित।



मुकुन्द झा "बक्षी" 1869-1936

जन्म हरिपुर बक्षी टोल ग्राम (मधुबनी जिला) मे 1869 ई. मे भेल तथा हुनक निधन काशीमे 1937 ई. मे भेलन्हि। हुनक लिखल संस्कृत मे अनेक ग्रंथ अछि। मैथिलीमे हुनक महत्वपूर्ण कृति अछि �मिथिला भाषामय इतिहास�। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हुनक फूट निबन्ध सभ सेहो प्रकाशित भेल। मिथिलाक ऐतिहासिक वर्णन सभसँ पहिल हुनक प्रकाशित भेल। एहि इतिहासमे मिथिलाक सर्वांगमुखी परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि।



डॉ. सर गंगानाथ झा 1871-1941

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब-पाही ग्राममे 1871 ई. मे भेल तथा निधन प्रयागमे 1941 ई. मे। ई अपना समयक संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान म. म. चित्रधर मिश्र, म. म. जयदेव मिश्र तथा म. म. शिवकुमार शास्त्रीसँ मीमांसा एवं दर्शनक अध्ययन कएलन्हि तथा दर्शनक विभिन्न दुरूह ग्रंथक अंग्रेजीमे अनुवाद कए पाश्चात्य संसारक ध्यान आकृष्ट कएलन्हि। ई गवर्नमेन्ट संस्कृत कॉलेज बनारसमे 1917 सँ 1923 धरि प्रिंसिपल छलाह तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालयक 1923 सँ 1932 पर्यन्त कुलपति रहलाह। मैथिलीमे हुनक सम्पादित बच्चा झाक �महेशवाणी संग्रह� तथा �गंगानाथ-विश्वनाथ पदावली� प्रकाशित अछि। मैथिली साहित्य परिषद् द्वारा प्रकाशित हुनक �वेदान्त दीपक� (दर्शन) विषयक अपूर्व ग्रंथ अछि। एहिसँ भिन्न हुनक निबंध सभ सामयिक मैथिली पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अछि।



जनार्दन झा जनसीदन 1872-1951



नासविदानी लालदास 1872-1940

"मिथिला दर्पंध" क लखक।



नामवन्द्र मिश्र "चन्द्र" 1873-1937 मैथिल प्रगा



महावैयाकनणाचार्य यं दीनवन्नु मा 1878-1955



रघनाथ मिश्र 1879-1933

मैथिली शब्दकाष "मिथिला शब्द प्रकाश"क लखक।



कीर्त्यानन्द सिंह



टंकनाथ चौधनी 1884-1928



रघग्रीनानन्द ठाझा 1886-1970



कपिलश्वन मिश्र 1887-1987

ग्राम सलमपुन, थाना- उजियानपुन, जिला समस्तीपुन। �सीतादाल्ह� यूल्फक रंठानसँ प्रकाशित।



वालकृष्ण मिश्र 1888-1948







बलदेव मिश्र 1890-1975

हिनक जन्म सहरसा जिलाक बनगाँव ग्राममे 1890 ई. मे एवं निधन रुनबनी, 1975मे भेलन्हि। ग्रामहिमे पं. गेनालाल चौधरीसँ ज्योतिष पढ़ि ई काशीमे पं. सुधाकर द्विवेदीजीक शिष्य भेलाह। बहुत वर्ष धरि सरस्वती भवन (वाराणसी) मे हस्तलिखित विभागमे कार्य कएल। पश्चात् पटनाक काशीप्रसाद जयसवाल रिसर्च संस्थानमे अनेक प्राचीन पोथी हस्तलिपिकेँ देवनागरीमे लिप्यन्तरित कएला। �मिथिलामोद� प्रकाशन एवं म.म. मुरलीधर झाक प्रयाससँ ज्योतिषीजी १९१० ई.सँ �मोद�मे लिखए लगलाह। हिनक प्रकाशित रचना अछि��नामायध शिक्षा�, �बच्चा झा�, �संस्कृति�, �राना शिक्षा�, �गद्य-सद्य निबन्ध�, �समाज� आदि। ज्योतिषीजी पाकल् धरि पटना रहलाह वनावनि �मिहिर�मे लिखैत रहलाह।

आचार्य रामलोचन शरण 1889-1971

सीतामढ़ीमे जन्म आ दरभंगामे मृत्यु। "मैथिली रामचरित मानस" सहित तुलसीदासक समस्त रचनाक मैथिलीमे लेखन। मिथिलाक्षरमे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ कनिहार। प्रकाशन संस्था "पुस्तक भण्डार", लहेरियासराय, पटनाक संस्थापक।

सीताराम झा 1891-1975

जन्म चौगामा ग्राममे १८९१ ई.मे तथा निधन १९७५ ई. मे भेलन्हि। संस्कृतमे ज्योतिष शास्त्रक अनेक रचनाक अतिरिक्त मैथिलीमे हिनक �अम्ब चरित� (महाकाव्य), �सूक्ति सुधा,� लोक लक्षण,� �पद्यावली,� �पूर्वायन व्यवहार,� उचटा वसात,� �अलंकार दर्पण�, �भूकम्प वर्णन�, �काव्य षट-रस�, �मैथिली काव्यायतन�, आदि ग्रन्थ उपलब्ध अछि। हिनक गीताक मैथिली अनुवाद सेहो उपलब्ध अछि। मिथिला मोदक सम्पादन १९२० ई.सँ १९२१ ई. धरि ई कएल।







तारानन्द झा 1892-1928

बद्रीनाथ झा 1893-1973

जन्म मधुबनी जिलाक सरिसब ग्राममे १८९३ ई. मे भेलन्हि तथा १९७४ ई. मे ई काशी लाभ कएलन्हि। बहुत दिन धरि ई मुजफ्फरपुरक धर्म समाज संस्कृत कॉलेजमे साहित्यक अध्यापक छलाह। मैथिलीक विख्यात कवि लोकनि यथा सुमनजी, मधुपजी, मोहनजी आदि हिनक शिष्य छथि। संस्कृत साहित्यमे हिनक अनेक रचना

जीवनाथ राय 1893-1964

अछि। आदिम नाथा यनिश्चय� (महाकाव्य) क स्थान विशिष्ट अछि। मैथिलीम हिनक �एकावली यनिश्चय� (महाकाव्य) एक नवीन कीर्तिमान स्थापित कएलका वाना अलंकारक दृष्टान्त गकवाक हेतु �एकावली यनिश्चय� यर्याप्त अछि।



उमश मिश्र 1895-1967

जन्म मधुवनी जिलाक गजहरा ग्रामम 1895 ई. म हेल छलहि। ई एकरुनि वर्षक आयुम १९६७ ई. म प्रयागम स्वर्गवासी हेलाह। ई अयन स्वनाम-धन्य यिता म. म. जयदव मिश्र तथा म. म. डा. गंगानाथ झाक सान्निध्यम विद्यार्जन कएला। १९२३ सँ १९५९ धरि मिश्रजी एलाहावाद विश्वविद्यालयम संस्कृतक प्राध्यापक छलाह। दरभंगा �मिथिला शोध संस्थान�क निदेशक यदयर किछु समय कार्य कए १९६२ सँ ६७ धरि कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलयति रहलाह। म. म. मुरलीधर झासँ प्रभावित भए �मिथिलामोद�म ई लिखब प्रारम्भ कएलहि तथा अयन विविध प्रकारक रचनासँ मैथिलीक गद्यकँ समृद्ध कएलहि। मैथिलीम हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थ अछि��कमला� (शेक्सपीयरक �टेम्पेस्ट�क रुपान्तर), �नलाख्यान�, �मैथिली-संस्कृति� तथा अनेक वर्णनात्मक एवं आलोचनात्मक निबन्ध; मनबोधक कृष्णजन्मक सम्पादन, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, गोरक्ष विजय आदिक अनुवाद-सम्पादन सेहो कएला।



वाबू भुवनेश्वरी दास 1895-1965

मैथिलीम विद्यापति कविक अनुवाद प्रकाशित।



अमरनाथ झा 1897-1955

सरिसव पाहीटोल ग्रामम १८९७ ई. म हेल। हिनक पिता सर गंगानाथ झा एहन ई विद्वान लोक सभा अग्रगण्य अध्यक्ष छलाह, १९३७ म रहलहि। ई एलाहावाद विश्वविद्यालयक नओ वर्ष धरि कुलयति रहि यश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालयक सेहो कुलयतिक यदकँ सुशोभित कएलहि। ई अंगरेजीक प्रकाण्ड विद्वान् छलाह, ताहि संग हिन्दी, उर्दू, फारसी, संस्कृत, बङ्गला एवं मैथिलीक सेहो अद्भुत विद्वान् छलाह। मैथिलीम हिनका द्वारा सम्पादित �हर्षनाथ काव्य ग्रन्थावली� तथा �गोविन्ददासक शृङ्गाररञ्जन� महत्त्वपूर्ण अछि। एहिसँ भिन्न हिनक मैथिली साहित्य यत्रिकादिक अध्यक्षीय भाषण तथा अन्य लेख प्रकाशित अछि।



भोलालाल दास 1897-1977

हिनक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर म भेलन्हि। साहित्य सर्जनाक अतिरिक्त अपन संगठन क्षमता तथा मैथिली साहित्यक सर्वांगीण विकासक हेतु सतत प्रयत्न करबाक कारणेँ भोला बाबू मैथिली संसारक एक स्तम्भक रूपम रहलाह। हिनक निधन 1977 ई. म भेल। मैथिलीक प्रचार-प्रसारम ई अपन जीवन समर्पित कएने छलाह। पाठ्यक्रमम मैथिलीकेँ स्थान भेटबाक हेतु ई बीड़ा उठौलन्हि। विद्यालय स्तरक अनेक पाठ्य पुस्तक निर्माण कएल। मैथिली साहित्य परिषदक ई संस्थापक मण्डलक सदस्य छलाह। 1931 सँ 1940 ई. पर्यन्त ओकर प्रधान मन्त्री रहलाह। हिनक मन्त्रित्वकालम �भारती� नामक मासिक पत्रक प्रकाशन भेल। एहिसँ पूर्व (१९२९-३१) कृष्णेश्वर कुमरजीक संग संयुक्त सम्पादनम �मिथिला� नामक पत्र चलाओल। ई नवीन एवं प्रगतिशील विचारक लोक छलाह। नवीन लेखककेँ प्रोत्साहित करब, शैलीम एकरूपता आनब, नव प्रकाशनसँ मैथिलीक साहित्य भंडारक पूर्ति करब हिनक कर्तव्य बनि गेल छल। हिनक लिखल �मैथिली व्याकरण� तथा हिनकहि द्वारा सम्पादित �गद्यकुसुमांजलि बहुत दिन धरि विद्यालयम पढ़ाओल जाइत रहल। हिनक लिखल अनेक निबन्ध समालोचना, कविता, संस्मरण, जीवनी-साहित्य मैथिलीक पत्र-पत्रिकाम छिड़िआएल अछि।



कुमार गंगानन्द सिंह 1898-1971

जन्म�बनैली राजपरिवारम 24-9-1898, मृत्यु:-श्रीनगर पूर्णिआ 17-1-1970। भूतपूर्व शिक्षामंत्री, बिहार एवं कुलपति, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय। रचना�अगिलही (अपूर्ण उपन्यास) तथा अनेक कथा एवं एकांकी। युगक अनुरूप सामाजिक कुरीति आदिकेँ आधार बनाए सुधारवादी दृष्टिएँ कथा सभहिक रचना।



ब्रजमोहन ठाकुर 1899-1977



गुवनश्वन प्रसाद 1902-

दनरंगा जिलाक वनौली गाम, निवास नायसाहव याखनि लहनियासनाया सनस्नी स्कूल लहनियासनायम १९३०-१९६४ ई. धनि अध्यापना मैथिलीम "वाल नामायध� प्रकाशिना



जयनानायध सा 'विनीन'

1902-1991



नन्छ्र नाथ दास विद्यालंकान १९०४-१९९३



सुधाकन सा "शास्त्री"

1904-1974



दामादन लाल दास विशानद 1904-1981



ववूआजी सा 'अस्नान'

1904-1996

२००१- ववूआजी सा �अस्नान� (प्रनिस्ना याग्उन, महाकाव्य)लल साहित्य अकादमी युनस्कान।



श्रीवल्लर सा हाटी 1905-1940



नमानाथ सा 1906-1971

जन्म दनरंगा जिलाक उजान (धर्मयुन) ग्रामम 1906 ई. म एवं दिनक निधन दनरंगाम १९७१ ई. म रलहि। 1930 ई. म अळनजीम एम. ए. कएलाक वाद ई कएक वर्ष धनि मधयुन उव्व विद्यालयक



काशीकान्द मिश्र "मधुय"

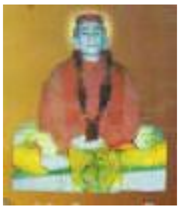
1906-1987

१९७०- काशीकान्द मिश्र �मधुय� (नाधा विनद, महाकाव्य) यन साहित्य अकादमी युनस्कान ग्राप्क मैथिलीक प्रशस्क कवि आ मैथिलीक प्रवान-प्रसानक समर्पिन कार्यकर्ता �संकान� कविनासँ क्रान्दि गीनक आह्वान कएलनि ।

प्रधानाध्यापक छलाह, तकरा बाद दरभंगा-राज-लाइब्रेरीक पुस्तकालयाध्यक्ष नियुक्त 1936 सँ अन्तिम समय धरि रहलाह। 1952 सँ 62 चन्द्रधारी मिथिला कॉलेजमे प्रा. भा अध्ययनीक प्राध्यापक नियुक्त कालka पश्चात् ओही कॉलेजमे मैथिली विभागाध्यक्ष बनाओल गेलाह। 1965 मे रमानाथ बाबू साहित्य अकादमीक मैथिलीक प्रतिनिधि निर्वाचित भेलाह जाहि पद पर ओ जीवनक अन्त समय तक रहलाह।

हिनक रचनाक ज्ञान बहुत व्यापक छल। हिनक अनुसंधानात्मक निबंधक दू गोट संग्रह �निबन्धमाला� तथा �प्रबंध संग्रह� प्रकाशित अछि। संकलित सम्पादित पुस्तक सभमे �मैथिली पद्य-संग्रह�, �मैथिली गद्य-संग्रह�, �प्राचीन गीत�, �कथा काव्य�, �नवीन गीत�, �कविता कुसुम�, �कथा संग्रह� आदि अछि। �कथासरित्सागर�क आधार पर प्राञ्जल गद्य शैलीमे हिनक �उदयन-कथा� तथा �वररुचि-कथा� बेश ख्याति पओलक। व्याकरणक �मिथिला भाषा प्रकाश�, �अलङ्कारप्रवेश� आदि अनेक ग्रन्थ प्रकाशित अछि। �मैथिली साहित्य पत्र� त्रैमासिक पत्रिकाक संपादक।

प्रकृति प्रेमक विलक्षण कवि। �घसल अठन्नी कविताक लेल कथ्य आ शिल्प-संवेदना�दुहू स्तर पर बेस लोकप्रियता भेटलनि।



लक्ष्मीनाथ गोसाञि 1793-1872



मही दास

धनहरा कोठी_बनमनखी_असली नाम_नामानुग्रहलाल दास_आश्रम_मायामोहल्ला, कुप्पाघाट, भागलपुर



वृवन रगत, सत 1928-1991



अिरनाम दास

मिथिलाक प्रसिद्ध रागवत वाचक।



स्नहलता 1909-1993

गाम- उनाउी, समस्तीपुर। पूर्ण नाम- कपिलदव ठाकुर "स्नहलता"। नामाश्रयी रसिक सम्प्रदायक संत। हिनकर रचित वैदही विवाह संकीर्तन, विनय पदावली, गितवाली, चयावली, मूला-संकीर्तन, सीतायनम प्रबन्धकाव्य आ स्नहशतक- दाहावली-कवित आदि मिथिलाक महिला वर्ग आ संकीर्तनकार लाकनिक कंठम पतिष्ठापित अछि आ लाकमंगलक अनुष्ठानम वायक नूपँ प्रचलित अछि। हिनक "वैदही विवाह" मिथिलाक कीर्तनिया नाट्य परम्परावँ लाकन्रियक अनुकूल वर्णन अछि।



स्वतंत्रता सनानी स्व. रामफल मण्डल



सुदन झा "शास्त्री" 1930-1998

जनकपुर, नपाल, पूर्वावस्थाक जलक दूर्लेर रहाट। नपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक मानद सदस्या- स्व. सुदन झा शास्त्री।



कांचीनाथ झा "किरण" 1906-1988

जन्म स्थान-धर्मपुर,लाहना नाठ, दरभंगा। विद्वान । मैथिली राषा आंदालनम महत्वपूर्ण रूमिका। �पराशर� महाकाव्य लल साहित्य अकादमी उा �कथा किरण� लल वैदही पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: चंद्रग्रहण (उपन्यास), वीन-प्रसून (बालकथा), जय जन्मभूमि (एकांकी), विजया विद्यापति (नाटक), कथा-किरण (कथा-संग्रह), किरण-कवितावली, कवक दिनक बाद (कविता-संग्रह), पराशर



श्यामानन्द झा 1906-1949

(महाकाव्य) आ किरण-निबंधावली (निबंध-संग्रह) आदि। १९८९- काशीनाथ झा �किरण� (यनाशन, महाकाव्य)यन मैथिली म साहित्य अकादमी युनस्कानसँ सम्मानित।



नमाकांत झा, नयाल 1907-1971



ठ्ठीशनाथ झा 1907-1965

वहूमुखी य्रतिभाक कवि । य्राचीन आ नवीन यद्धतिक काव्य-नवनाक विलक्षण संयाग हिनकन कविताम स्टैष्ट अछि । दलित वर्ग, शाषणक समस्या, स्वदश प्रमक यथार्थवादी नवनाक संग संग व्यक्तिनिष्ठ कल्यनाक अनक विशिष्ट कविता मैथिलीम लिखलनि ।



गुवनश्वन सिंह 'गुवन' 1907-1944

अयन खाढीक वहूमुखी य्रतिभाक कवि । य्राचीन आ नवीन नीतिक कविताक नवना वियुल संख्याम कएलनि । �गुवन हानजी� कविता संकलन प्रकाशनसँ मैथिली डाज आ नव वानाक शंख फूकलनि।



हनिमाहन झा 1908-1984

हिनकन मैथिली कृति १९३३ म �कन्यादान� (उयन्यास), १९४३ म "द्विनागमन�(उयन्यास), १९४७ म �य्रणम्य दवता� (कथा-संग्रह), १९४९ म �नंगशाला�(कथा-संग्रह), १९६० म �चर्चनी�(कथा-संग्रह) आऽ १९४८ ई. म �खट्टन ककाक तनंग� (यंथ) अछि। मृत्युयनांत १९८७म (जीवन



कालीकान्द झा 1909-

मूल ग्राम ठेंगा (हनियुन), मधुवनी। हुन मातृक वनदवड़ा,य्रा. उनलाहा, राया-मदनयुन, जिला-यूर्णियाम वसि गलाह। सायघना (मधुवनी), मदनयुन आ काशीम यायिनी व्याकनणक अध्ययन। "हनूमान चनित"क लखक।



गंगानाथ झा 1909-1984

जन्म १९०९ ई म दनरंगा जिलाक धर्मयुन ग्राम्म हलइ मृत्यु ४-७-�८४,नाजधानी मिथिला कॉलजम अर्थशास्त्रक य्राध्यायक छलाह । अवकाश ग्रहण क काव्य साधनाम लागल नहलाह । महाकाव्य, मुक्तक, एकांकी सह विधाम ई सिद्ध हस्त छलाह । हिनक �कीचक वंध� महाकाव्य अढनजीक �वैष्ण हर्स� (अमित्राक्षन छन्द) म लिखल अछि । मैथिलीम �सौनट� एवं

यात्रा, आत्मकथा) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

ईश्वर दर्श�क ई प्रथम प्रयास थिकाह। संस्कृत छन्दमे काव्य रचना करितहुँ पाश्चात्य शैलीक नवीनता हिनका रचनामे छल। हिनक �कीचक वध� आ �कृष्ण चरित� महाकाव्य��मङ्गल-पञ्जिका� एवं �नमस्या� मैथिली साहित्यमे अपन विशिष्ट स्थान रखैछ। एकर आंगिक मुक्तक काव्यमे विषय वस्तुक व्यापकता एवं शिल्प शैलिक प्रचुरता अछैत अछि। एक दिस यदि प्राचीन ढंगक ईश्वर वन्दनाक रचना कएलन्हि तँ दोसर दिस �सोनेट� (चतुर्दशपदी) �बैलड� आदि लिखबामे पूर्ण सफलता प्राप्त कएलन्हि। �कृष्ण चरित� महाकाव्य पर हिनका 1979 ई. क साहित्यिक अकादमी पुरस्कार भेटलन्हि। 1980 ई. मे हिनका अभिनन्दन ग्रन्थसमर्पित कएल गेलन्हि।



जीवनाथ झा 1910-1977



सुरेन्द्र झा 'सुमन' 1910-2002

जन्म: ग्राम : बल्लीपुर, जिला-समस्तीपुर। प्रकाशित कृति: प्रतिपदा, अर्चना, साओन-भादव, अंकावली, अन्तर्नाद, पयस्विनी, उत्तरा आदि तीससँ अधिक मौलिक कविता-पुस्तक; पुरुष-परीक्षा, अनुगीतांजलि, ऋतु शृंगार तथा वर्णरत्नाकर, पारिजात-हरण, कृष्णजन्म, आनन्द-विजय आदि कतिपय ग्रन्थक अनुवाद-संपादन; �मैथिली काव्य पर संस्कृतक प्रभाव� नामक समीक्षा-ग्रंथ। �पयस्विनी� लेल १९७१ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा �उत्तरा� पर १९१८ मे मैथिली अकादमीक विद्यापति पुरस्कार प्राप्त। मैथिलीक प्रथम दैनिक पत्र �स्वदेश�क लब्धप्रतिष्ठ सम्पादक। १९९७- सुरेन्द्र झा �सुमन� (रवीन्द्र नाटकावली- रवीन्द्रनाथ टैगोर, बांग्ला) लेल साहित्य अकादमी



पं. रामचन्द्र झा 1910-

गाम तरौली। काशी मिथिला ग्रन्थमालाक सम्पादक।

मैथिली अनुवाद पुरस्कार। २०००
ई.- पं.सुरेन्द्र
झा �सुमन�, दरभंगा;यात्री-चेतना
पुरस्कार।



'नागार्जुन' वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' 1911-1998

जन्म अपन मामागाम सतलखाम भेलन्हि, ओ हुनकर गाम तरौनीक समीपहिमे अछि, जिला-दरभंगा। मूल नाम: वैद्यनाथ मिश्र। हिन्दीमे नागार्जुन नामसँ प्रख्यात। प्रकाशित कृति: चित्रा, पत्रहीन नग्न गाछ (मैथिली कविता-संग्रह); पारो, बलचनमा, नवतुरिया (मैथिली उपन्यास); युगधारा, सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई आँखें, खिचड़ी विप्लव देखा हमने, तुमने कहा था, हजार हजार बाहों वाली, पुरानी जूतियों का कोरस, तालाब की मछलियाँ, भस्मांकुर, ऐसे भी हम क्या ! ऐसे भी तुम क्या ! (हिन्दी कविता-संग्रह); रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नई पौध, बाबा बटेसरनाथ, वरुण के बेटे, दुखमोचन, कुंभीपाक, अभिनन्दन, उग्रतारा, इमरतिया (हिन्दी उपन्यास); आसमान में चन्दा तैरे (कहानी संग्रह); भस्मांकुर (हिन्दी खण्ड काव्य); अन्नहीनम् क्रियाहीनम् (निबन्ध-संग्रह); गीत गोविन्द; मेघदूत; विद्यापति के गीत, विद्यापति की कहानियाँ (अनुवाद)। �पत्रहीन नग्न गाछ� लेल १९६८ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त। यायावरी जीवन। मैथिली प्रतिनिधिक रूपमे रूस गेलाह। नागार्जुन (**स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र �यात्री�**), हिन्दी आ मैथिली कवि, १९९४ ई.मे **साहित्य अकादमीक फेलो** (भारतक सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार)।



आरसीप्रसाद सिंह 1911-1996

जन्म: ग्राम-एरौत, जिला-समस्तीपुर। प्रकाशित कृति: माटिक दीप, पूजाक फूल, सूर्यमुखी (कविता-संग्रह), मेघदूत (अनुवाद), आरसी, नन्ददास, संजीवनी (हिन्दी काव्य संग्रह)। �सूर्यमुखी� लेल १९८४ मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।



गुरु जयदत्त मिश्र 1911-1991 शिष्य गंगानाथ झा







यशोधन झा

मिथिला वैभव, दर्शन मैथिली पाठीयन 1966 म पहिल साहित्य अकादमी पुरस्कार मैथिली लेल प्राप्त।

वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' 1912-1987

१९७६- वैद्यनाथ मल्लिक �विधु� (सीतायन, महाकाव्य) लेल मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कार।

रीम झा 1912-

पूर्णिया जिलाक मदनपुर गामक। जन्म ७ नवम्बर १९१२ ई.। वर्नेलीक श्री श्यामानन्द सिंहक अध्यक्षतामे �नारायण संकीर्तन महामण्डली�क स्थापना।



नाधानाथ दास १९१२-



उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' 1913-1980

जन्म १९१३ ई. म दरभंगा जिलाक बलिया ग्राममे भेलहि। मृत्यु २४-७-१९८० । संस्कृत शिक्षामे साहित्याचार्य आ बरौदा नामक विद्वत्-परिषदसँ �साहित्य-रत्न�क उपाधिसँ विभूषित भेलाह। दैनिक आर्यावर्त आदि पत्रिसँ, पश्चात् १९६० सँ मिथिला मिहिरक उप-सम्पादक एवं सह-सम्पादक रूपेँ कार्य करैत १९७७ म सेवा निवृत्त भेलाह। मोहनजी करीब पचास वर्ष साहित्य साधनामे लागल रहलाह। विजयानन्द, कुंजरंजन, सुदर्शन, पुण्डरीक, शास्त्री, वामन आदि छद्म नामसँ पत्र-पत्रिकामे विविध विषयपर हिनक लेख सभ प्रकाशित भेल अछि। मोहन जीक �बाजि उठल मुरली�मे १०१ गोट कविताक संकलन अछि जाहिमे हिनक सुदीर्घ काव्य-आराधनाक विशिष्ट विधानधाराक आ विशिष्ट अनुभूतिक सामग्री उपलब्ध अछि। एहि पुस्तकपर मोहन�जीकेँ १९७८ म साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटलहि। एहिसँ बहुत पूर्व हिनक �कूलताली� नामक कविता संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छल।



जयनाथ मिश्र 1913-1985



श्रीकांत ठाकुर "विद्यालंकार"



पण्डीकान मादानन्द झा 1914-1998



आनन्द झा 1914-1988

लब्ध (धौग यञ्जीशास्त्र मार्फण्ड यञ्जीकान मादानन्द मा, शिवनगन, अननिया, पूर्णिया। यिग-स्व. श्री रिखिया मा। गुन्- यञ्जीकान रिखिया मा। पूर्णिया जिलाक वनैली लगक शिवनगन गामक। जन्म २२ सिगम्बन १९१४ ई.। सौना0म अयन मौसा स्व. लुटनमा सँ यंजीशास्त्रक अध्ययन। १९४८-१९७१ ई. धनि दनरंगाम नहि आचार्य नमानाथ माकँ याँजि यढ़डालनि। शास्त्रार्थ यनीजा- दनरंगा। महानाज कुमान जीवश्वन सिंहक यञ्जायवीग संस्थानक अवसन यन महानाजाधिनाज(दनरंगा) कामश्वन सिंह द्वाना आयाजिग यनीजा-1937 ई. जाहिम मौखिक यनीजाक मुख्य यनीजक म.म. डॉ. सन गंगानाथ मा छलाह।



टाक्का हासगावा, निदशक मिथिला म्युजियम, निगाटा



माँगनि खवास 1908-1943 संगीतज्ञ

यवगछियाम जन्म आ अग्य वहसम मृत्यु। यवगछियाक नायवहादुन लक्ष्मीनानायण सिंहक शिष्य।



नामाश्रय मा 'नामनंग' अन्ग्नि न हागखण्ड 1928-2009

जन्म ११ अगस्त १९२८ ई. गदनुसानहाद्र कृष्णयज्ञ एकादशी गिथिकँ मधुवनी जिलान्तर्गग खज्ञना नामक गामम हलहि। अन्गिनव गीगांजलि, हुनकान उद्बकाटिक शास्त्र नवना अछि। मिथिलावासी श्री नामनंग नाग गीनगुक्ति, नाग वैदही हैनव, आs नाग विद्यायगि कल्याण कान नवना सहा कएन छथि आs मैथिली हाषाम हुनकान खयाल �नंजयगि ई्गि नाग�� कान अनुनुय अछि।



नामवगुन मल्लिक ध्रुयद संगीग 1905-1990



अन्ग्यनानायण मल्लिक



कुमान गानानन्द सिंह, संगीगज्ञ



संगीताचार्य रायबहादुर लक्ष्मी नारायण सिंह



पंडित परमानन्द चौधरी, संगीतज्ञ



हृदयनारायण झा



संगीत रत्न राजकुमार श्यामा नन्द सिंह १९१५-१९९४



मिथिलेश कुमार झा, तबला वादक



नागेश्वर लाल कर्ण, तबला वादक



वाबु साहेब चौधरी 1916-1998

दरभंगा जिलाक दुलारपुर गामक। १९४३ ई. मे जीविकार्थ कलकत्ता अएलाह। ततय कलाम स्वनाथ आन्दोलनमे वामि कते शिक्षक ट्रेनिंग। कलकत्तामे स्थानीय मैथिल संघमे प्रवेश। कलकत्तामे मैथिली आर्ट प्रेस. ९/१, खिलात घोष लेन, कलकत्ता-७००००६ सँ मैथिली-मिथिला आन्दोलनमे सक्रिय। �कुहेस� आ �चाणक्य� दुटा नाटक। १९७१-७९ धरि �मिथिला दर्शन� आ �मैथिली दर्शन� मैथिली मासिकक सम्पादन।



लक्ष्मण (लखन) झा 1916-2000

मिथिला राज्य अभियानी।

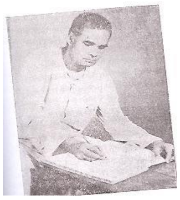


शुभदत्त झा 'उत्पल' 1916-

गोड्डा जिलाक अलखदत्त-मरूनपुरक निवासी। जन्म १६ अक्टूबर १९१६ ई.।



नामवनिद्र याढ्य "अद्यू" १९११-२०१०



लक्ष्मीनाथ मा मिथिला चित्रकला 1917-1990



उयन्द्र नाथ मा 'व्यास' 1917-2002

जन्म स्थान-ल्हनियून नकशीटाल, मधूवनी, विल्हान। १९६९- उयन्द्रनाथ मा �व्यास� (दु यत्र, उयन्यास) लेल साल्हिय अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानिग। साल्हिय अकादमीक अनूवाद यूनस्कान प्राप्त। प्रकाशिग कृगि: कूमान, दु यत्र (उयन्यास), नितंवना, रजना रजल (कथा-संग्रल्ह), यान संन्यासी, प्रगीक (काव्य), मल्हारानग (यल्हिल दु यर्व) आदि।



मनमाल्हन मा 1918-2009

जन्म सनिसवम, अधूकध, वीनरगथा, मिथिलाक निशायूनमा। २००९- स्व.मनमाल्हन मा (गंगायूत्र, कथासंग्रल्ह)यन मृत्यायनांग साल्हिय अकादमी यूनस्काना।



व्रजकिशोन नर्मा 'मधियन्न'

1918-1986

जन्म स्थान-वल्हआ, दनरंगा विल्हान। १९७३- व्रजकिशोन नर्मा �मधियन्न� (नैका वनिजाना, उयन्यास) लेल साल्हिय अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानिग। उयन्यासकान, कथाकान आ कवि। प्रकाशिग कृगि: कावाग्ली, कनकी, अर्द्धनानीश्वन, लानिक निजय, नैका-वनिजाना, लनल्हिन-कृशल्हिन, नाय नधयाल, आदिम गुलाम आदि उयन्यास आ कं0ल्हान (नाटक) आदि।



यं. सल्हदन मा १९१९-

"मिथिला की धनाल्हन" याथी प्रकाशिग।



वृद्धिधानी सिंह नमाकन 1919-1991

जन्म मधुवनीम 1919 ई. म रहल। अपन पिता स्व. उमधानी सिंहसँ विभिन्न विषयक शिक्षा ग्रहण कएलहि। ई नामकृष्ण कॉलेज, मधुवनीक मैथिली विभागाध्यक्ष छलाह। ओतएसँ अवकाश प्राप्त कएलहि। बाल्या-वस्थहिसँ ई कवितार्यम लागल नहलाह अछि। संस्कृत तथा मैथिली दुनू भाषाम हिनक नचना प्रकाशित अछि। यथा�मैथिलीम�प्रयास� (कथा-संग्रह), �मधुस्मी�, �समनवायु� (कविता-संग्रह), �शनशय्या� (खंड-काव्य) �स्मृति साहस्री� (महाकाव्य) आदि।



आद्याचनण झा 1920-



वद्ध राजू सिंह 1922-

२००४- वद्धराजू सिंह (शकुन्तला, महाकाव्य)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



सुधांशु शेखन चौधनी 1922-1990

जन्म दनभंगाक मिश्रटालाम 1922 ई. म रहलहि तथा मृत्यु 1990 ई. म रहलहि। किछु दिन विभिन्न जीविकाम नहि पश्चात् साहित्यकानक जीवन प्रारम्भ कएल। किछु दिन �वैदेही�क सम्पादन श्री सुमनजी एवं श्री कृष्णकान्त मिश्रजीक संग कएल तत्पश्चात् 1960 ई. सँ 1982 ई. धनि पटनाम �मिथिला मिहिन��क सहल सम्पादन कएल। हिनक दू गोट नाट्यकृति-�भफाइत चाहक जिनगी�, लेटाइत आँचन�, तथा �पहिल साँझ� हिनक नाटकक नीक व्यावहारिक अनुभवक परिचायक अछि। छद्मनामसँ हिनक दू गोट उपन्यास मिहिन� म प्रकाशित रहल अछि। हिनक उपन्यास ई बतहा संसान� ज मैथिली अकादमी द्वाना



गोविन्द झा 1923-

जन्मस्थान- इसहपुर, सनिसव पाही, मधुवनी, विहान। सिद्ध कथाकान, उपन्यासकान, नाटककान, भाषा वैज्ञानिक ओ अनुवादक। साहित्य अकादमी पुनस्कान, साहित्य अकादमी अनुवाद पुनस्कानसँ सम्मानित। विहान सनकानसँ कामिल वुल्क पुनस्कान, ग्रियर्सन पुनस्कान आदिसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: उपन्यास, नाटक, कथा, कविता, भाषा विज्ञान आदि विभिन्न विधाम अठतीस टा पोथी प्रकाशित। प्रकाशन: सामाक पौती,नेपाली साहित्यक इतिहास (अनु) आदि। १९९३- गोविन्द झा (सामाक पौती, कथा)पुस्तक लेल साहित्य अकादमी पुनस्कानसँ सम्मानित।१९९३- गोविन्द झा (नेपाली साहित्यक इतिहास- कुमान प्रधान, अंग्रेजी) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुनस्कान। प्रबोध सम्मान 2006 सँ



योगानन्द झा 1923-1986

हिनक जन्म मधुवनी जिलाक कोइलख ग्रामम 1923 ई. म रहलहि। मृत्यु 1986 म रहलनि। अंग्रेजीम एम. ए. कएलाक पश्चात् ई किछु दिन चन्द्रधनी मिथिला कॉलेजम प्राध्यापक नहलाह। विहान प्रशासनिक सेवाम 1981 धनि विभिन्न पदपन कार्य कएल। तत्पश्चात्मैथिली अकादमीक निदेशक �84 धनि।योगानन्द झाजी मैथिली साहित्यम अपन उपन्यास �रहलमानुस� एवं �पतिव्रता�क हेतु ख्यात छथि। हिनक नाटक �मुनिक मतिभ्रम� एवं कथा संग्रह �उठैत वंशी� पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त कएने अछि। एकन अतिनिक्त ई महात्मा गांधीक आत्मकथाक अनुवाद एवं �आमक जलखरी� नामक एक कथा संग्रहक सम्पादन सेहो कएने छथि।

प्रकाशित भेल आ जाहि पर 1980 क साहित्य अकादमीक पुरस्कार देल गेल।

सम्मानित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी सेहो पुरस्कार २०१० (समग्र योगदान लेल)



रामकृष्ण झा 'किसुन' 1923-1970

आधुनिक धाराक विशिष्ट कवि, कथाकार, चिन्तक। प्रकाशित कृति: आत्मनेपद (कविता संग्रह), मैथिली नवकविता (सम्पादन)।



उमानाथ झा 1923-2009

जन्म:-01-01-1923, मृत्यु 07-12-2009 महरैल, मधुबनी। पूर्व अङ्ग्रेजी विभागाध्यक्ष एवं प्रति-कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा। रचना:-रेखाचित्र, अतीत (कथा संग्रह); मैथिली नवीन साहित्य, ऊँछ धनुष, विद्यापति गीतशती (सम्पादन)। १९८१- उमानाथ झा (अतीत, कथा) पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



जटाशंकर दास 1923-2006



प्रबोध नारायण सिंह 1924-2005

हिन्दी, संस्कृत, मैथिली, पाली एवं प्राकृतक विद्वान्। मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक प्रति अनन्य सेवक छथि। कलकत्ता नगर मिथिला दर्शन�, मैथिली कविता�, मैथिली नवसंसार� आदि पत्रिकाक प्रकाशनक माध्यमसँ श्री प्रबोधजी मैथिलीक जे सेवा कएल अछि तकर वर्णन थोड़मे सम्भव नहि। अनेक बङ्गला कृतिक सेहो अनुवाद सेहो कएल अछि। हिन्दीमे सेहो दिनक �कविता संग्रह� प्रकाशित अछि। कलकत्ता विश्वविद्यालयमे हिन्दीक पूर्व अध्यक्ष। २००२- डॉ. प्रबोध नारायण



मदनेश्वर मिश्र 1924-2004

"एक छलीह महारानी" प्रकाशित।



अमोघ नारायण झा "अमोघ" 1924-

सिंह (पाकिस्तानक स्वप्न- कुर्तुल ऐन हैदर, उर्दू) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



मुरलीधर सिंह, ब्रजमोहन ठाकुर, शुभंकर झा, मदनमोहन मिश्र 1924-2004, ललित नारायण मिश्र, दलनाथ राय



मणिनाथ मिश्र मतंग 1924-



आनन्द मिश्र 1924-2007



डॉ. जयमन्त मिश्र १९२७-२०१०

जन्म १७-१०-१९२७ मृत्यु ०१-०९-२०१०, गाम-डंगा-हरिपुर-मजरही।

१९९७- जयमन्त मिश्र (कविता कुसुमांजलि, पद्य) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार- मैथिली।



चन्द्रनाथ मिश्र अमर 1925-

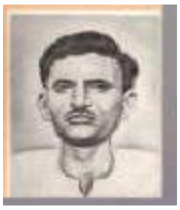
जन्म: खाजपुर, मधुबनी। वरिष्ठ कवि, कथाकार-उपन्यासकार। हास्य-व्यंग्यक कविताक बेजोड़। मैथिलीक लेल समर्पित व्यक्तित्व। पाँच दर्जनसँ बेसी कथा आ विदागरी, बीनकन्या (उपन्यास) जल समाधि (कथा संग्रह) प्रकाशित।१९८३- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (मैथिली पत्रकारिताक इतिहास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। एम. एल. एकेडमी, लहेरियासरायसँ शिक्षकक रूपमे अवकाश प्राप्त। आशा दिशा, गुदगुदी, युगचक्र, उनटा पाल आदि कविता संग्रह प्रकाशित। १९९८- चन्द्रनाथ मिश्र �अमर� (परशुरामक बीछल बेरायल कथा- राजशेखर बसु, बांग्ला) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। चन्द्रनाथ मिश्र अमर २०१० म मैथिली साहित्य लेल **साहित्य अकादमीक फेलो** (भारत देशक सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार)।



मुक्तिनाथ झा (1926-2009)



शुभंकर झा 1926-



दीनानाथ पाठक 'बन्धु' 1928-1962



अनंग विहारी लाल दास "इन्दु" 1928-2010

२००७- अनङ्ग विहारी लाल दास "इन्दु" (युद्ध आ योद्धा-अगम सिंह गिरि, नेपाली)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



कृष्णकान्त मिश्र १९२८-२०००



जगदानन्द झा 1928-



दुर्गानाथ झा "श्रीश"

हिनकर जन्म मधुबनी जिलाक बेल्हा गाममे १९२९ ई. मे भेलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीमे एम.ए. आ बी.एड. कयलाक बाद किछु दिन स्कूलमे अध्यापन, फेर मिल्लत कॉलेज, लहेरियासरायमे मैथिली आ हिन्दी विभागक अध्यक्ष। मैथिली भाषामे पहिल पी.एच.डी.। "श्रीश" जीक मैथिलीमे प्रकाशित रचना अछि- "मैथिली साहित्यक इतिहास", "गुंजन रागिनी" (सम्पादन), "महामात्य ओ मनु" (कविता), "नाट्य कथा सार"(सम्पादन), "पुरुषार्थ"(पद्य नाटक) आ अनेक कविता, एकांकी आ आलोचनात्मक निबन्ध।







राजकमल चौधरी 1929-1967

महिषी, सहरसा। रचना:- आदि कथा, आंदोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन)। हिन्दीमे अनेक उपन्यास, कविताक रचना, चौरंगी (बंगला उपन्यासक हिन्दी अनुवाद) अत्यन्त प्रसिद्ध।

विश्वनाथ झा "विषपायी" 1929-2005

"राम सुयश सागर" (मैथिली रामायण) १९८० ई. मे प्रकाशित। २१ जनवरी २००५ केँ मृत्यु।

जयधारी सिंह 1929-2007

समीक्षक, कवि। प्रकाशन: बौद्धगानक दार्शनिक सिद्धांत, समीक्षा शास्त्र आदि। रामकृष्ण कॉलेज, मधुबनीमे मैथिली विभागक पूर्व अध्यक्ष।



शैलेन्द्र मोहन झा 1929-1994

१९९२- शैलेन्द्र मोहन झा (शरत्चन्द्र व्यक्ति आ कलाकार-सुबोधचन्द्र सेन, अंग्रेजी)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



विजयनाथ ठाकुर 1929-2008



रमेशचन्द्र वर्मा 1930-



गोपालजी झा 'गोपेश' 1931-2008

जन्म मधुबनी जिलाक मेंहथ गाममे १९३१ ई.मे भेलन्हि। हिनकर रचित �सान दालक चिट्ठी�, �गुम भेल ठाढ़ छी�, �शलभम� �आब कहू मन कहन लागैअ�, "मखानक पात" प्रकाशित भेल छन्हि। सानदालक चिट्ठी बड़ लोकप्रिय भेल। २००६ ई.-श्री गोपालजी



विवेकानन्द ठाकुर 1931-

२००७- विवेकानन्द ठाकुर (चानन घन गछिया, पद्य)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



रामाकान्त मिश्र 1931-

मा (गायश, मंरुथ, मधुवनी;यात्री-वगना यूनस्कान।



ललिग 1932-1983

जन्म स्थान वसै0 वानयूना मधुवनी, विरुान । प्रसिद्ध कथाकान उा उयन्यासकान । प्रकाशिग कृगि: प्रगिनिधि, (कथा संग्रर), यृथ्वी-यूत्र (उयन्यास) आदि।



मूनागि मधुसूदन 0ाकुन 1932-

गानाशंकन वंदायाध्यायक वंगला उयन्यास "आनाथ निकगन"क मैथिली अनूवाद लल साहित्य अकादमीक अनूवाद यूनस्कान 1999 रुटल छथि।



निद्यानानायश 0ाकुन 1933-



धूमकगु 1932-2000

जन्म स्थान काञ्ञलख, मधुवनी, विरुान । प्रसिद्ध कथाकान, उयन्यासकान उा कवि । प्रकाशिग कृगि : दु टा कथा संग्रर उा शक टा उयन्यास ।



नाजमारुन मा 1934-

जन्म स्थान कुमनवाजिगयून, वैशाली, विरुान । प्रख्याग कथाकान उा संयादक । आञ्ञ काल्हि यनसू (कथा-संग्रर) लल १९९६ म साहित्य अकादमीसँ सम्मानिग । प्रकाशिग कृगि : शक आदि शकांग, मू0 साँच, शकटा गसन, अनूलक्षक, आञ्ञ काल्हि यनसू (कथा संग्रर), गलगीनामा, रुनदि निद्यायगि, टीयग्नीयादि (आलाचना)। �आनम्द� यत्रिकाक संयादन। प्रवाध सम्मान 2009 सँ सम्मानिग।



डॉ. धीनम्द्र 1934-2004

जन्म स्थान लारुना, मधुवनी, विरुान । प्रसिद्ध कथाकान,उयन्यासकान उा कवि । प्रकाशिग कृगि: कुरुस आ किनश, यमाञ्ञग घूनक आगि, शगनुया उा मनू अयन महिन (कथसंग्रर) रुँगनम टाँगल काट, काल्हि उा आञ्ञ (कविगा संग्रर) सहिग कैक निधाम निरिम्न याथी।



नमश नानायश १९३४- २०११





मायानम्द मिश्र 1934-

नाम- नमश नानायध दास, जन्म १७ मार्च १९३४ कँ मधुवनीक वहना गाममा पिता-श्री हनिकान्त लाल दासा शिक्षा मध्ेयुन, मधुवनी आ यटनामा १९६१ ई.सँ १९९४ ई. धनि ज.अन. कॉलेज, यटनाम हिन्दी विभागम अध्यायना याथनक नाव (मैथिली कथा संग्रह, १९७२) प्रकाशिता मृत्यु १२ जनवनी २०११ कँ यटनामा

वावू श्री सत्यनानायध सिंह आ नाघनाचार्य

हिनक जन्म ११ अगस्त १९३४ ई. कँ सुयौल जिलाक वर्नीनियाँ गामम हलनि। शङ्क लाटा, आगि माम आ� याथन आडान वङ्क- विन्दु- हिनकान सथा संग्रह सर छथि। विहा७ याग याथन, मंत्र- यूत, खाता आ� विउ आ� सूर्याम्त हिनकान उयन्यास सर अछि। दिशांगन हिनकान कविता संग्रह अछि। अकन अगिनिक ताल की नैया माटी क लाग, प्रथमं ठेल यूत्री व,मंत्रयूत, यूनाहित आ� स्त्री-धन हिनकान हिन्दीक कृति अछि। १९८८- मायानन्द मिश्र (मंत्रयूत, उयन्यास)यन मैथिलीक साहित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानिता

प्रवोध सम्मान 2007सँ सम्मानिता







गानानन्द गनूध १९३७-२०११

सामदव 1934-

उयन्यासकान ओ कवि । साहित्य अकादमी यूनस्कानसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: वानादाळू, खटल अनानकली (उयन्यास), काल ध्वनि (कविता संग्रह), वर्नेवनि (गीति नाट्य) साम सगसळू (दाह्य)। २००२- सामदव (सहस्रमूखी चौक यन, यद्य) लल साहित्य अकादमी यूनस्काना २००१ ई. - श्री सामदव, दनरंगा;यात्री-चाना यूनस्कान, प्रवोध साहित्य सम्मान २०११।

नाजनन्दन लाल दास 1934-

"कर्णामृत"क सम्यादना "चित्रा-विचित्रा" प्रकाशिता







नमानन्द नेधु 1934-2011

जन्म स्थान
उसमाम0, दनरंगा, विहान ।
वनिष्ठ कवि, कथाकान उा
उयय्यासकाना। साहित्य अकादमी
युनयानसँ सम्मानित। प्रकाशित
कृति: कवाट, प्रिवाध, अंगहीन
आकाश (कथा-संग्रह), दुधफूल
(उयय्यास), अंगत:, उाकन नाम
(कविता-संग्रह)।
२000- नमानन्द नेधु (कत्तक
नास वात, यद्य)लल साहित्य
अकादमी युनयाना। विदह
सम्पादकक समानान्तन साहित्य
अकादमी दूला युनयान
२0११ (समग्र योगदान लल)



कालीकांत झा "वूव" 1934-2009

हिनक जन्म, महान दार्शनिक
उदयनाचार्यक कर्मभूमि
समस्तीयुन जिलाक करियन
ग्रामम 1934 ई. म भेलनि ।
पिता स्व. यंडित राजकिशोन झा
गामक मध्य विद्यालयक प्रथम
प्रधानाध्यायक छलाह । माता
स्व. कला दवी गृहिणी छलीह ।
अंतनस्नातक समस्तीयुन
काॅलेज, समस्तीयुनसँ कयलाक
यश्चात् बिहान सनकानक प्रखंड
कर्मचानीक रूयम सवा प्रानंभ
कयलनि । बालहिं कालसँ
कविता लेखनम विशेष रूचि छल
। मैथिली यत्रिका - मिथिला
मिहिन, माटि - यानि, भाखा तथा
मैथिली अकादमी यटना द्वाना
प्रकाशित यत्रिकाम समय - समय
यन हिनक नचना प्रकाशित
होइत नहलनि । जीवनक
विविध विधाकेँ अयन कविता
एवं गीत प्रस्तुत कयलनि ।
साहित्य अकादमी दिल्ली द्वाना
प्रकाशित मैथिली कथाक
विकास (संयादक डाॅ
वासुकीनाथ झा) म हास्य कथा
कानक सूची म डाॅ विद्यायति
झा हिनक नचना ��धर्म
शास्त्राचार्यक उल्लेख कयलनि ।
मैथिली अकादमी यटना एवं
मिथिला मिहिन द्वाना प्रशंसा यत्र
भेजल जाइत छल । शृंगानरस
एवं हास्य नसक संग-संग
विचान मूलक कविताक नचना
सेहो कयलनि । डाॅ दुर्गानाथ
झा श्रीश संकलित मैथिली
साहित्यक इतिहासम कविक
रूयम हिनक उल्लेख कएल गेल
अछि । **प्रकाशित कृति (मृत्युयनांत)** : कलानिधि-
कविता-संग्रह।



श्याम चन्द्र 1934-

उयय्यास "नूया दीदी" प्रकाशित।
गाम मलंगिया, जिला- मधुबनी।



ज्ञानीलाल शर्मा "श्रोत्रिय" १९३७-

"मिथिला की साहित्य साधना" सेहो प्रकाशित।

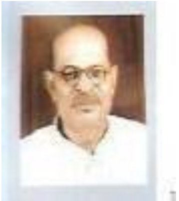
नागेन्द्र, धनुषा, नेपाल १९३७-२020

साहित्य तथा अन्यान्य अनेक कलाक सफल व्यक्तिसभ अपन प्रेरणास्रोत आ पथ-प्रदर्शक मानैत छथि। मैथिली साहित्य-जगत हिनक पत्रिकाक माध्यम ओगाओ कएल पर्याप्त ख्याति आ मैथिलीक मूर्धन्य साहित्यकार डा. धीरेन्द्र हिनका मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ कथाकार मानैत छथि। हिनक कथामे प्रतीकात्मकताक अद्भुत प्रयोगहिटा नहि, अपितु एकटा आदर्श कथाक समस्त वैशिष्ट्यसभ विद्यमान रहैत अछि। कथाकारक अतिरिक्त ई उत्कृष्ट समालोचक, नाटककार आ कवि सेहो छथि। नेपालमे मैथिलीक पहिल मानाक्षरमा लिखबाक श्रेय सेहो हिनका जाइत छनि। सामाजिक कुरीतिसभकेँ कुशलतासँ चित्रण करबाक, चिन्तनीय बनएबाक आ मन-मस्तिष्कपर अमिट छाप छोड़बामे नागेन्द्र सिद्धहस्त छथि। धनुषा जिलाक कुर्था गाममे जनमल नागेन्द्रक पूर्ण नाम नागेन्द्र कर्ण छनि। अनुमानतः विषयक अवकाशप्राप्त शिक्षक नागेन्द्र व्याकरण, पाठ्यपुस्तक आ सहायक पुस्तकसभ लिखबाक काजमे निरन्तर सक्रिय छथि।

केदारनाथ चौधरी (१९३६-)

मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गावय गीत' केर निर्माता द्वयमेसँ एकटा निर्माता छथि केदारनाथ चौधरी आ दोसर मदनमोहन दास। बादमे आर्थिक मजबूरीवश ई सहनिर्माता रखलनि उदयभानु सिंह। माता-स्व. कुसुमवती देवी, पिता- स्व. किशोरी चौधरी, जन्म: 03/01/1936

ग्रा.+पो. नेहरा (दरभंगा), अन्य पारिवारिक सदस्य-पत्नी-श्रीमती कुमुद चौधरी, संतान-प्रथम पुत्री-श्रीमती किरण झा, द्वितीय पुत्री-श्रीमती अर्चना चौधरी, शिक्षा- १९५८ ई.मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९५९ ई.मे लॉ। १९६९ ई.मे कैलिफोर्निया वि.वि.सँ अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९७१ ई.मे मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन विषयमे गोल्डेन गेट यूनिवर्सिटी, सानफ्रांसिस्को, USA सँ एम.बी.ए., १९७८ मे स्वदेश आगमन। १९८१-८६ क बीच तेहरान आ फ्रैंकफुर्टमे। फेर बम्बई, पुने होइत रिटायरमेंटक बाद २००० सँ लहेरियासराय, दरभंगामे निवास। ६ टा उपन्यास- चमेलीरानी २००४, करार २००६, माहुर २००८, अबारा नहितन २०१२, हीना २०१३, अयना २०१८. सम्मान- १) विदेह साहित्य सम्मान, वर्ष-२०१३ (मानखंड मैथिली मंच, राँची द्वारा), २) प्रबोध साहित्य सम्मान, वर्ष-२०१६ आ ३) केदार सम्मान, वर्ष-२०१६,'अबारा नहितन' लेल।



जीवकांत 1936-

नाम- जीवकान्त झा,पिता-गुणानन्द झा, माता-महेश्वरी देवी, जन्म- २७.०१.१९३६ अड़ुआर, जिला-सुपौल। नौकरी-विज्ञान शिक्षक (उ.वि.खजौली १९५७-६१), हिन्दी शिक्षक (उ.वि.डेओढ़ एवं उ.वि.पाखनाम १९६१-९६)। पहिल रचना-इजोरिया आ टिटही (कविता, जननी १९६७ मिथिला मिहिर)। पहिल छपल पोथी- दू कुहेसक बाट (उपन्यास १९६८)। नूतन पोथी-खिखिरक बीअनि (२००७ बाल पद्य कथा), अठन्नी खसलइ वनमे (पद्य-कथा संग्रह) आ पंजनि प्रेम प्रकासिया (जीवन-वृत्तक अंश)। पुरस्कार-साहित्य अकादमी 1998 तकै अछि चिडै, पद्य , किरण सम्मान (१९९८), वैदेही सम्मान (१९८७)। प्रकाशित पोथी-

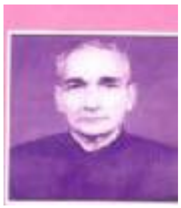
कविता संग्रह:नाचू हे पृथ्वी (७७), धार नहि होइछ मुक्त (९७), तकैत अछि चिडै (९५), खाँड़ो (१९९६), पानिमे जागल अछि वन्शी (९८), हमरो नीलाकाशमे (२०००), गाछ मूल-मूल (२००४), छाह सोहाओन (२००६), खिखिरक बीअनि (२००७)

कथा-संग्रह: एकसरि ठाढ़ि कदम तर (७२), सूर्य गलि रहल अछि (७५), वस्तु (८३), कनमी मील (९८)

उपन्यास:दू कुहेसक बाट(६८), पनिपत(७७), नहि, कतहु नहि (७६), पीयर गुलाब छल (७७), अगिनवान (८१)



देवकांत झा 1936-



डॉ अमरेश पाठक 1936-

हिनक जन्म सीतामढ़ी जिलाक अन्तर्गत सामानि ग्राममे १९३६ मे भेलन्हि। १९५७ मे पटना विश्वविद्यालयसँ मैथिलीक एम. ए. परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथमस्थान पाओल। १९५७ सँ १९६० धरि रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनीमे व्याख्याता रूपेँ रहला बाद पटना विश्वविद्यालयमे व्याख्याता रूपमे कार्य करए लगलाह। पटना विश्वविद्यालयमे मैथिली विभागाध्यक्ष रूपेँ। मैथिली उपन्यासक आलोचनात्मक अध्ययन� शोध प्रबन्धपर हिनका बिहार विश्व-विद्यालय द्वारा डि. लिट् उपाधि भेटलन्हि। ई शोध प्रबन्ध पुस्तकाकार रूपेँ सद्य प्रकाशित भेल अछि बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक विद्यापति ग्रन्थावलीक सम्पादक मण्डलक सदस्य। हिनक अन्य प्रकाशित रचना अछि �निबन्ध संकलन�। एकरा छाड़ि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक कतेको निबन्ध प्रकाशित छन्हि। मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित कथा-संग्रहक इन्हे एक सम्पादक छथि। ई अधिकतर उच्च स्तरीय आलोचनात्मक निबन्ध लिखैत छथि।
२०००- डॉ. अमरेश पाठक, (तमस- भीष्म साहनी, हिन्दी)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

हिन्दी अनुवाद- निशान्त की चिड़िया (मकेँ अछि चिड़ै, साहित्य अकादमी, दिल्ली २००३)।

प्रबोध सम्मान 2010 सँ सम्मानित।



बलराम 1936-2008

जन्म स्थान पचही, मधुबनी, बिहार। विशिष्ट कथाकार। प्रकाशित कृति : दकचल देवाल (कथा-संग्रह)।



मैथिलीपुत्र प्रदीप 1936-

ग्राम- कथवार, दरभंगा। प्रशिक्षित एम.ए., साहित्य रत्न, नवीन शास्त्री, पंचाग्नि साधक। हिनकर रचित "जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर" आ "सबरक सुधि अहाँ लए छी हे अम्ब, हमरा किए बिसरै छी यै" मिथिलामे लोकगीत भए गेल अछि।



रामदेव झा 1936-

कथाकार, समीक्षक, अनुवादक, ग्रंथ सम्पादक। साहित्य अकादमीक मूल एवं अनुवाद पुरस्कार प्राप्त कर्मी ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगाक मैथिली विभागक पूर्व प्राचार्य। प्रकाशन: पसिझैत पाथर, (अनु.) आदि। १९९१- रामदेव झा (पसिझैत पाथर, एकांकी)लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। १९९४- रामदेव झा (सगाइ- राजिन्दर सिंह बेदी, उर्दू) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



रवीन्द्र नाथ ठाकुर 1936-

जन्म पूर्णिआ जिलाक धमदाहा ग्राममे 1936 ई. मे भेलन्हि। नेन अवस्थासँ गीत गएबामे एवं कविता लिखबामे विशेष रुचि। कोनो मंच पर ठाढ़ भेला पर ई सहजहि श्रोताकेँ आह्लादित करैत छथि। हिनक सात गोट मैथिलीक गीत संग्रह, एक मिनी महाकाव्य, एक प्रयोगधर्मी काव्य, एक उपन्यास, एक



विनोद बिहारी वर्मा 1937-2003

मैथिल कर्ण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण, बलानक बानिहार ओ पल्लवी तथा अन्य कथा (कथा संग्रह)



धीरेन्द्र मल्लिक 1937-

जन्म- 3 जनवरी 1937 ई. पनसौनी, मधुबनीमे। कवि, सम्पादक, समीक्षक। आखर, अग्निपत्रक सम्पादन। अग्नि-शिखा (कविता संग्रह)।

नाटक�एक नाति� एवं एक हिन्दी नाटक, प्रकाशित भेल छथि ।



कीर्तिनारायण मिश्र 1937-

जन्म ११ जुलाई १९३१ ई. कँ ग्राम शोकहारा (बरौनी), जिला बगूसराय भेलछि। हुनकर प्रकाशित कृति अछि सीमान्त,महानगर (दीर्घ कविता), हम करब नहि लिखब, ध्वस्त होइत शान्ति स्तूप (एहि पाथीपर साहित्य अकादमी 1997 पुरस्कार), आदमीकँ जाइत (कविता संग्रह)। संस्मरण-अपन एकांत, स्मृति यात्रा, पत्रक दर्पणमे। सम्पादन- आखर मासिक पत्रिका, आधुनिक मैथिली साहित्य, '63, राजकमल जीवन आ साहित्य, '68, कथा-संकलन- काल कोठरी। आलोचना- अर्थान्त-2004



गौरीकान्त चौधरीकान्त 1937-2001



युगल किशोर मिश्र १९३८-२००१

मैथिली शब्दकोष।



प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन' 1938-

ग्राम+पत्र- हसनपुर, जिला-समस्तीपुर। मैथिलीमे १.नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास(विराटनगर,१९७२ई.), २.ब्रह्मग्राम(रिपोर्ताज दरभंगा १९७२ ई.), ३.�मैथिली� त्रैमासिकक सम्पादन (विराटनगर,नेपाल १९७०-७३ई.), ४.मैथिलीक नवगीत (पटना, १९८८ ई.), ५.नेपालक आधुनिक मैथिली साहित्य (पटना, १९९८ ई.), ६. प्रेमचन्द चयनित कथा, भाग- १ आऽ २ (अनुवाद), ७. वाल्मीकिक देशमे (महुआ, २००५ ई.)। २००४- डॉ. प्रफुल्ल कुमार सिंह �मौन� (प्रेमचन्द की कहानी-



महेन्द्रनाथ मल्लिक 1938-



परशुराम झा १९३८-

गाम- मंगरौ (मधुबनी), कृति- जाइमहल □हु पीस इन इंग्लिश ड्रामा,क्रिश्चियन पार्टिक ड्रामा।

प्रमचन्द्र, दिल्ली) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



कुलानन्द मिश्र 1940-2000

जन्म पकड़ी
काठी, सीतामढ़ी, बिहार।
सुविख्यात
कवि,, संपादक, समालोचक।
प्रकाशित कृति- पावस
भाव, रागक प्रतीक्षाम (कविता
संग्रह), रागाक राखा
सर्वेश्वर, यात्री, राजकमल चौधरी
की श्रेष्ठ
कहानियाँ (अनुवाद)।



विलट पासवान 'विहंगम' 1940-

जन्म मधुबनी जिलाक एकहरा ग्राममे १९४० ई. मे भेलन्हि।



फजलुर रहमान हासमी 1940-2011

जन्म-पटना जिलाक बनाह गाममे। वृत्ति अध्यापक। हिन्दी कविता संग्रह "रश्मि राशि" आ मैथिली कविता
संग्रह "निर्मोही" प्रकाशित। १९९६मे
अबुलकलाम आजाद- अबुलकवी दसनवी, उर्दूसँ मैथिली अनुवादपर साहित्य अकादमीक मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



गुणनाथ झा

गुणनाथ झा "लोक मञ्च" मैथिली नाट्य पत्रिकाक संचालन- सम्पादन करैत छथि। मैथिलीमे आधुनिक नाटकक प्रणयन। हिनकर नाटक सभ अछि:

मधुयामिनी: एकाङ्क नाट्य शैलीमे दूटा पात्र, पुरुष संयुक्त परिवारक पढ़ लिखल आ स्त्री गाम निवासी।

पाथेय: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित, मुद्रा पूर्णाङ्कक सभ विशेषता ओहिमे भेटत। मुख्य अस्मिता मिथिलाक अधोगतिसँ दुखी भऽ गामकेँ कर्मस्थली बनबैत छथि, सृजन विकास करैत छथि।

लाल-बुझक्कड़: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित। हाही नौटीसँ समाजक निम्न आ मध्य-निम्न वर्ग



प्रभास कुमार चौधरी 1941-1998

गाम- पिंडारूछ, जिला- दरभंगा। प्रख्यात कथाकार ओ उपन्यासकार। प्रभासक प्रकाशित कृति : कथा-प्रभास, प्रभासक कथा, नव घर उठय पुरान घर खसय, हिलकोर (कथासंग्रह), अभिशप्त, युगपुरुष, हमरा लग रहब, रनानह, राजा पोखरिमे कतेक मछरी (उपन्यास)। विभिन्न महत्वपूर्ण पत्रिकाक सम्पादन। त्रैमासिक कथा गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' केर प्रारम्भ। १९९०- प्रभास कुमार चौधरी (प्रभासक कथा, कथा) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।



साकेतानन्द 1940-

वरिष्ठ कथाकार, गणनायक (कथा-संग्रह) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित। प्रकाशित कृति: मैथिली कथा
साहित्यमे 1962 स� सक्रिय। लगातार चालिस_पचास टा कथा, रिपोर्ताज. संस्मरण, यात्रा_विवरण मैथिलीमे प्रकाशित अधिकांश पत्र_पत्रिकामे छपल। पहिल मैथिली कथा �ग्लेसियर�
1962मे �मिथिलामिहिर�मे प्रकाशित। हिन्दीयोमे दू दर्जन कथा आदि प्रकाशित। सन 99मे छपल पहिल कथा_संग्रह �गणनायक� के ओही वर्ष �साहित्य अकादमी पुरस्कार। येह बात� स� अवैला निष्पक्ष रेखांकित करैत, पर्यावरण क कथा रूप् बना क� राजकमल

स्वांग्रगाक पहिरहिया आ बाद जीविकोपार्जन लेल प्रवास करबा लेल अभिशप्त छथि।

सागम चरित्र: एकांक नाट्य शैलीम रचित। मैथिली रंगमंचपर महिला अभिनेत्रीक अभाव, सागम चरित्रक प्रतीकात्मक पूर्वाभ्यास स्वरूप रहि जाइत अछि।

शेष नहि: आधुनिक सामाजिक पूर्णांक नाटक। पिता-माताक मृत्युक बाद अग्रजक अनुजक प्रति पितृवत व्यवहार।

आङनक लोक: पूर्णांक नाटक। विषय निम्नमध्यवर्गीय बेरोजगारी आ पितापक दायित्वक बोध।

जय मैथिली: पूर्णांक नाटक। मिथिलाक आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या एकर कथावस्तु अछि।

महाकवि विद्यापति: विद्यापतिक नव विश्लेषण।

प्रकाशन स� प्रकाशित एवं अत्यंत चर्चित उपन्यास (�तौकुमंद्री रिक्शान�) �सर्वस्वांत�। आकाशवाणीक राष्ट्रीय कार्यक्रमम प्रसारित दु टा उल्लेखनीय नृत्य नाटक_ �महानन्दा अभयारण्य� पर आधारित �जंगल बाला है� एवं मानसरोवर क ग्रामीण उत्तरक ज्वलंत ताल्लुक समस्या पर आधारित नृत्यनाटक� नैना जोगन� चर्चित एवं प्रसिद्ध ।



गंगेश गुंजन 1942-

जन्म स्थान- पिलखवाड़, मधुबनी। श्री गंगेश गुंजन मैथिलीक प्रथम चौबटिया नाटक बुधिबधियाक लेखक छथि आ हिनका उचितवक्ता (कथा संग्रह) क लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छन्हि। एकर अतिरिक्त मैथिलीमे हम एकटा मिथ्या परिचय, लोक सुनू (कविता संग्रह), अन्हार- इजोत (कथा संग्रह), पहिल लोक (उपन्यास), आइ रातुक (नाटक)प्रकाशित। हिन्दीमे मिथिलांचल की लोक कथाएँ, मणिपद्मक नैका- बनिजाराक मैथिलीसँ हिन्दी अनुवाद आ शब्द शैयाने है (कविता संग्रह)। १९९४- गंगेश गुंजन (उचितवक्ता, कथा)पुरस्कृत



प्रेमशंकर सिंह 1942-

ग्राम+पोस्ट- जोगियारा, थाना- जाले, जिला- दरभंगा। मौलिक मैथिली: १.मैथिली नाटक ओ रंगमंच,मैथिली अकादमी, पटना, १९७८ २.मैथिली नाटक परिचय, मैथिली अकादमी, पटना, १९८१ ३.पुरुषार्थ ओ विद्यापति, चित्रा प्रकाशन, भागलपुर, १९८६ ४.मिथिलाक विभूति जीवन झा, मैथिली अकादमी, पटना, १९८७७.नाट्यान्वेषण, शेखर प्रकाशन, पटना २००२ ६.आधुनिक मैथिली साहित्यमे हास्य-व्यंग्य, मैथिली अकादमी, पटना, २००४ ७.प्रपाणिका, कर्णगोष्ठी, कोलकाता २००७, ८.ईक्षण, चित्रा प्रकाशन भागलपुर २००८ ९.युगसंधिक प्रतिमान, चित्रा प्रकाशन, भागलपुर २००८ १०.चेतना समिति ओ नाट्यमंच, चेतना समिति, पटना २००८। २००९ ई.-श्री प्रेमशंकर सिंह, जोगियारा, दरभंगा यात्री-चेतना पुरस्कार।



मार्कण्डेय प्रवासी 1942-2010

जन्म ग्राम: गरुआरा, जिला: समस्तीपुर । प्रकाशित कृति: अगस्त्यायिनी (महाकाव्य); एतदर्थ (कविता संग्रह), अरुण चेतना (काव्य संग्रह)। अभियान, हम कालिदास (उपन्यास)। �अगस्त्यायिनी� लेल १९८१मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त।

लेल साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित ।



देवेन्द्र झा १९४३-

ग्राम- चानपुरा (मधुबनी), कृति- विद्यापतिक शृंगारिक पदक काव्यशास्त्रीय अध्ययन, लालदास, सुधाकर झा "शास्त्री", अनुभव, बदलि जाइछ घर टा।



डॉ. भीमनाथ झा 1945-

जन्म:कोइलख, मधुबनी, बिहार । प्रखर कवि, समालोचक, प्राध्यापक । �विविधा�निबन्ध पुस्तक लेल सन् १९९२मे साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित । प्रकाशित कृति: विधाता, बीछा, की फूलैत की नहि, नाम मैं थिक डाउढ (कविता संकलन), परिचायिका, सीताराम झा, कवि चूड़ामणिक काव्य साधना, विविधा (निबंध, आलोचना),टाकन चौकसँ आदि ।



महेन्द्र मलंगिया 1946-

ग्राम- मलंगिया, जिला- मधुबनी । मैथिलीक सुपरिचित नाटककार, रंग निर्देशक एवं मैलोरंगक संस्थापक अध्यक्ष । लोक साहित्य पर गंभीर शोध आलेख । मैथिलीमे 13टा नाटक, 19टा एकांकी, 14टा नुक्कड़ आ 10टा रेडियो नाटक प्रकाशित आ आकाशवाणी सँ प्रसारित । सीनियर फेलोशिप (भारत सरकार), इन्टरनेशनल थिएटर इन्स्टिच्यूट (नेपाल), प्रबोध साहित्य सम्मान आदि सँ सम्मानित । संप्रति ज्योतिरीश्वर लिखित मैथिलीक प्रथम पुस्तक वर्णरत्नाकर पर शोध कार्य । श्री महेन्द्र मलंगियाक जन्म २० जनवरी १९४६ मे मधुबनी जिलाक मलंगिया गाममे भेलन्हि। मलंगियाजी मैथिली हिन्दी, अंग्रेजी आ नेपाली भाषाक जानकार आ थियेटर शिक्षा, पटकथा लेखन आ रंगमंची शोधक फ्रीलान्स शिक्षक छथि। २००२ ई.- श्री महेन्द्र मलंगिया, मलंगिया;यात्री-चेतना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2005 सँ सम्मानित।



डॉ राम दयाल राकेश, सर्लाही, नेपाल 1942-

मैथिली मातृभाषा, हिन्दीक प्राध्यापक आ नेपालीक लेखक ई तीनू भाषा �राकेश�क



उपेन्द्र दोषी 1943-2001

जन्म स्थान नामपुर- कोनिगामा, दरभंगा । कवि-



उदयचन्द्र झा "विनोद" 1943-

जन्म 5 अप्रैल 1943 ई.। ग्राम- रहिका, मधुबनी । जन्म-

व्यक्तित्वम ओना न मिमनाओल छैक ज कानदूसँ हिनका रिष्ठ नहि कओल जा सकैत अछि। ई विशेषता: नयालीम लिखैत छथि, मुदा लखनक विषय मूलत: मैथिलीक संस्कृति नहैत छनि। ओना मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीम सेहो ई अनेक नचना कओन छथि। नयालक नाजकीय-प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक सदस्य �नाकण� दिल्ली विश्वविद्यालयसँ पीओचडी आ अमनिकाक्षित इंडियाना युनिवर्सिटीसँ याद्ध ताकनल निसर्व कओन छथि। डा. �नाकण�क जन्म २१ जुलाई १९४२ ई. कऽ सर्लाही जिलाक सिसौटियाम हल छनि। नयाली, मैथिली, हिन्दी आ अंग्रेजीम मौलिक, सम्पादित आ अनूदित कऽ कनीव दु दर्जन पोथी प्रकाशित, दर्जनहनि दशक ग्रमध सेहो कओन छथि। नयाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्या- श्री नाम दयाल नाकण (1999)।

कथाकान, गीत-गजलकान। प्रकाशित कृति: यंत्रधाक उधम (कविता संग्रह)। हिन्दीम अनेक पोथी प्रकाशित। उडियासँ मैथिली अनुवाद हेतु मृत्युंजय नान्द साहित्य अकादमीसँ पुनस्कृत। २००३- उपह्द दावी (कथा कहिनी- मनाज दास, उडिया) लल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुनस्कान।

ग्राम- दुलहा, मधुबनी। प्रकाशित कृति: संक्रान्ति, मौसम अयला यन, ओहना स्थिति, हनि दह गौना, ओहि जनपदम, दाहा तीन सय दु, कहलनि पत्नी, सहनजमीन, अयज, प्रश्नवाचक (कविता- संग्रह), धूनी (सहयोगी कविता संग्रह); जाँत (कथा संग्रह), उदास गाछक नसँत (नाटक)। �माटि पानि�क नवध सम्पादक। २००१ ई.-श्री उदय चन्द्र झा �विनोद�, नहिका, मधुबनी; यात्री- चेतना पुनस्कान।



नवनी नमध लाल, जनकपुन 1943-



मंत्रेश्वन झा 1944-

जन्म ६ जनवनी १९४४ ई. ग्राम-लालगंज, जिला- मधुबनीम। प्रकाशित कृति: खाधि, अग्निनहान गाम, वहसल नाविक ईजात (कविता संग्रह); ओक बट दु (कथा संग्रह), ओझा लेख गाम बताह (ललित निबन्ध)। मैथिली कथा संग्रहक हिन्दी अनुवाद �कूंतली� नामसँ प्रकाशित। दि कुल्स पैनाताईज (अंग्रेजीम ललित निबन्ध)। २००८ ई.-श्री मंत्रेश्वन झा, लालगंज,मधुबनी यात्री-चेतना पुनस्कान। २००८- मंत्रेश्वन झा (कतक तानि यन, आत्मकथा) यन साहित्य अकादमी पुनस्कान।



नवेश्वन मिश्र 1945-

अनुवादक, निबंधकान। प्रकाशन: तमिल साहित्यक इतिहास,स्वस्ति (दुनू अनुवाद)।



जगदीश प्रसाद मंडल

गाम-बेरमा, तमुरिया, जिला-मधुबनी। एम.ए.। कथाकार (गामक जिनगी-कथा संग्रह आ तरेगन- बाल-प्रेरक लघुकथा संग्रह), नाटककार(मिथिलाक बेटी-नाटक), उपन्यासकार(मौलाइल गाछक फूल, जीवन संघर्ष, जीवन मरण, उत्थान-पतन, जिनगीक जीत- उपन्यास)। मार्क्सवादक गहन अध्ययन। हिनकर कथामे गामक लोकक जिजीविषाक वर्णन आ नव दृष्टिकोण दृष्टिगोचर होइत अछि। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)। मैथिली उपन्यास 'पंगु' लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार २०२१



राज



महाराजाधिराज लक्ष्मीश्वर सिंह 1858-1898



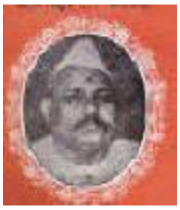
महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह 1860-1929



महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह 1907-1962



सर हरगोविन्द मिश्र, अलीगढ़ आ कामेश्वर सिंह



विनोदानन्द झा 1895-1971



ललित नारायण मिश्र 1922-1975



डॉ. रामबरन यादव, नेपाल राष्ट्रपति



स्वर्गीय विन्ध्येश्वरी प्रसाद मंडल, राजनेता 1919-1982



सुरेन्द्र नारायण मण्डल



कर्पूरी ठाकुर 1921-1988



रामविलास पासवान १९४६-

जन्म ५ जुलाई १९४६, ग्राम- शहरबन्नी, जिला खगड़िया। राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ।



राम लखन राम "रमण"



राजेन्द्र झा



चतुरानन मिश्र



रमाकांत मिश्र



रमानाथ मिश्र "मिहिर"

"मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश" प्रकाशित।



गजेन्द्र नारायण चौधरी, पत्रकार 1929-2008



मोहन भारद्वाज 1943-

ग्राम- नवानी, जिला- मधुबनी। मैथिलीक प्रखर समालोचक। २००७ ई.-श्री आनन्द मोहन झा, भारद्वाज, नवानी, मधुबनी; यात्री-



योगानन्द झा 1955-

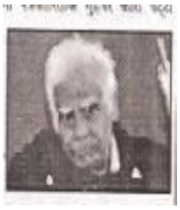
२००७- डॉ. योगानन्द झा (बिहारक लोककथा- पी.सी.राय चौधरी, अंग्रेजी)लेल साहित्य

रचना पुरस्कार। प्रबोध सम्मान 2008 सँ सम्मानित।

अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार। **प्रकाशित कृति:** लोकजीवन ओ लोक साहित्य (निबन्ध) 1986, पनिधीरा (कथाकाव्यांश) 1987, फकीर मोहन सेनापति (अनुवाद) 2000, आलेख सञ्चयन (निबन्ध) 2002, विदेहक लोककथा (अनुवाद) 2003, स्नेहलता (विनिबन्ध) 2006, मैथिली पत्रकारिताक सौ वर्ष (निबन्ध) 2006, गहवरगीत (निबन्ध) 2007, लोक-साहित्य ओ शब्द-सम्पदा (निबन्ध) 2007, मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली (शोध-ग्रन्थ) 2009



दीनानन्द झा "शास्त्री" ,पत्रकार



दीनानाथ झा, पत्रकार



नरेन्द्र झा, अर्थशास्त्र-पत्रकार

"विकास ओ अर्थतंत्र" प्रकाशित।



प्रेमशंकर झा, पत्रकार



शरदिन्दु चौधरी, पत्रकार



राजेश्वर झा (१९२३-१९७७)

जन्म- सहरसा जिलाक रसुआर गाम (आब सुपौल जिला)।

कृति- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास, अवहट्ठ: उद्भव ओ विकास, मैथिली साहित्यक आदिकाल, विद्यापतिक संगीतम

वर्णित नायक-नायिका छद एवं राग-रागिनी वर्गीकरण।

महाकवि विद्यापति नाटक, शास्त्रार्थ नाटक, कहर्यीघाट नाटक, एकादशी, विद्याधन- कथा, उर्वशी, धर्मव्याध- कथा, मनका।



एस. एन. सत्यार्थी

मिथिलाक कला आ शिल्पकलायन लेखन।



राधाकृष्ण चौधरी, इतिहासकार 1921-1985

मिथिलाक इतिहास, A Survey of Maithili Literature, THE POLITICAL AND CULTURALHERITAGE OF MITHILA प्रकाशित।



प्रो. रामशरण शर्मा १९२०-२०११



विजयकान्त मिश्र इतिहासकार 1927-1994

डॉ. विजयकांत मिश्रक जन्म १० अगस्त १९२१ मंगरौनी ग्राम- जे नव्य न्याय आ तांत्रिक साधनाक जन्म-स्थली अछि- (जिला मधुबनी) मे भेलन्हि। ओ 1948 मे प्राचीन भारतीय इतिहास आ संस्कृति विषयमे इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ स्नातकोत्तर उपाधि कएलाक बाद कतेक बरख धरि बिहार सरकार आ पटना विश्वविद्यालयसँ सम्बद्ध रहलाह आ 1957 ई. सँ भारतीय पुरातत्व विभागमे काज कएलन्हि आ ओकर शिशुपालगढ़, कौशाम्बी, वैशाली, हस्तिनापुर, कुम्हरार, पाटलिपुत्र, करियन, सारपुर, विलावली, नालन्दा, राजगीर, चन्द्रवल्ली, आ हम्पी खुदाइमे विशिष्ट भूमिकामे भाग ललन्हि। हिनकर लिखल-सम्पादित पोथी सभ अछि: 1.वैशाली,1950 2.कुम्हरार एक्सकवेशंस: 1950-1957 3.पुरातत्व की दृष्टिमे वैशाली 4.रागेश एहाज



द्विजेन्द्र नारायण झा, इतिहासकार



सुरेश्वर झा, राजनीति विज्ञान

२००१- सुरेश्वर झा (अन्तिम विराट- जयन्त विष्णु नार्लीकर, मराठी)लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।

पाण्डुलिपि/लेखन 5.मिथिला आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर (सम्पादित) 6.कल्चरल हेरिटेज ऑफ मिथिला 7.शृंगार रत्नावली- एक अध्ययन 8.उग्र पुरातत्वविज्ञान- 9.पुरातत्व शब्दावली।



भगीरथ लाल दास

भारतक कएक देशमे राजदूत रहल छथि आ जी.ए.टी.टी. मे भारतक प्रतिनिधि सेहो छलाह।



लक्ष्मीकान्त झा रिजर्व बैंक गवर्नर 1913-1988



एन. एन. झा डिप्लोमेट



कामेश्वरनाथ झा "अमल" 1938-

जन्म- 4 जनवरी 1938, गाम कोइलख (मधुबनी)। विध्वंस (कथासंग्रह) प्रकाशित।



भवनारायण झा 1941-



रमाकांत राय "रमा" 1947

जन्म- भाद्र पूर्णिमा सम्वत् 2003, प्रथम रचना- वटुक, बाल मासिक प्रयाग, कथा विशेषांक द्वितीय भाग 1964ई., प्रकाशित कृति(क) गीरटा बाबाजी-(रूसीसँ मैथिलीमे मैथिलीमे टाल्स्टायक कथाक अनुवाद-1967ई.मे, (ख) फूलपात, कविता संग्रह 1978, (ग) भांगक गोला (2004 ई.मे), (घ) कटैत पाँखि: हँसैत आँखि , कथा संग्रह- 2005, शीघ्र प्रकाश्य- कृष्णकान्त मिश्र (विनिबन्ध) साहित्य अकादमी नई दिल्ली। प्रायः ३८ सए रचना (कथा-निबन्ध कविता) मैथिली हिन्दीक पत्र-पत्रिका, आकाशवाणी एवं दूरदर्शनसँ प्रकाशित/ प्रसारित। साहित्य अकादमी द्वारा

आयोजित कवि सम्मेलनक आयोजनक क्रमम भेलक पचटम पतिदहिना पद्मन छावा धनिगमा विकलांग। सेवा निवृत्त अध्यापक (उच्च विद्यालय) सम्पर्क- श्री नमानिवास, मानानाथ टोल पो. ननहुन (समस्तीपुर)।



प्रारुसन महेन्द्र 1947-

जन्म: रुलाही, सुपौल, बिहार । प्रसिद्ध कवि, कथाकार, आलोचक । वृत्ति: भू.ना. विश्वविद्यालयक स्नातकोत्तर केन्द्र, सहरसाम मैथिली विभागाध्यक्ष। प्रकाशित कृति साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित मोनोग्राफ शैलेन्द्र मोहन झा । सहयोगी संकलन-संकल्प । �राजकमल जयन्ती प्रसंगक संपादन।



महेन्द्र 1944-2009

जन्म मधुबनी जिलाक जमसम गाममे। प्रसिद्ध मैथिली गीतकार आ गायक।



सुभाषचन्द्र यादव 1948-

जन्म ०१ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल। घरदेखिया (मैथिली कथा-संग्रह), मैथिली अकादमी, पटना, १९८३, हाली (अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९८८, बीछल कथा (हरिमोहन झाक कथाक चयन एवं भूमिका), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, १९९९, बिहाड़ि आउ (बंगला सँ मैथिली अनुवाद), किसुन संकल्प लोक, सुपौल, १९९७, भारत-विभाजन और हिन्दी उपन्यास (हिन्दी आलोचना), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, २००१, राजकमल चौधरी का सफर (हिन्दी जीवनी) सारांश प्रकाशन, नई दिल्ली, २००१, बनैत-बिगड़ैत (कथा-संग्रह) २००९। मैथिलीमे करीब सत्तरि टा कथा, तीस टा समीक्षा आ हिन्दी, बंगला तथा अंग्रेजी मे अनेक अनुवाद प्रकाशित।



सुरेन्द्र झा 1909-2000

"फॉर्मेशन ऑफ मैथिली लैंग्वेज"क लेखक।



रामावतार यादव, मैथिली भाषिकी, नेपाल 1942-

देश-विदेशक भाषाविज्ञान जर्नलमे पचासो आलेखक द्वारा मैथिलीक विशिष्टताकेँ उजागर कएलन्हि। *मैथिली*



योगेन्द्र प्रसाद यादव, भाषिकी ,सिरहा, नेपाल 1946-

1998 ई. मे जर्मनीसँ प्रकाशित *इश्युज इन मैथिली सिंटैक्सआ टॉपिक्स इन नेपालीज*

१९८६- सुरेन्द्र झा (नातिक पत्रक उत्तर, निबन्ध)पर मैथिलीक साहित्य अकादमी पुरस्कारसँ सम्मानित।

*ध्वनिशास्त्र*1984 ई. मे जर्मनीसँ आ *मैथिलीक सन्दर्भ व्याकरण*1996 ई. मे बर्लिन आ न्यूयार्कसँ प्रकाशित। 2000 ई..मे लंदनसँ प्रकाशित *भारतीय आर्यभाषा*पुस्तक मे संकलित हिनकर मैथिली भाषा संबंधी आलेख विशेष उल्लेखनीय। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ पासाङ ल्हामु प्रज्ञा-पुरस्कारसँ सम्मानित।

लिंग्विस्टिक्स, रीडिंग्स इन मैथिली लैंग्वेज- लिटरेचर एण्ड कल्चर आ लेक्सिकोग्राफी इन नेपाल (सम्पादित) प्रकाशित। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमे भाषा-विभागक प्रमुख रहि कतेक महत्त्वपूर्ण कार्यक सम्पादन। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव (1994)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान आजीवन सदस्यता श्री योगेन्द्र प्रसाद यादव।



रमानन्द झा 'रमण' 1949-

जन्म: 02 जनवरी 1949, शिक्षा- एम.ए., पी.एच.डी., आजीविका- भारतीय रिजर्व बैंक, पटना (सेवा निवृत्त)। **प्रकाशन:** 1. नवीन मैथिली कविता,1982, 2. मैथिली नव कविता,1993, 3. मैथिली साहित्य ओ राजनीति, 1994, 4. अखियासल, 1995, 5. बसात,2003, 6. रेखांकन, 2005., 7. निर्णय कैसे शुरू करें? हिन्दी- रिजर्व बैंक, पटनाक प्रकाशन सम्पादित 8. मैथिलीक आरम्भिक कथा, 1978 समीक्षा, 9. श्यामानन्द रचनावली, 1981, 10. जनार्दन झा जनसीदन कृत निर्दयीसासु (1914) आ पुनर्विवाह (1926), 1984, 11. व्रजनाथझाकृत श्रीजगन्नाथपुरी यात्रा (1910), 1994, 12. गजनाथ झाकृत सुन्दराजविजय नाटक (1919), 1994, 13. रासबिहारीलाल दासकृत सुमति (1918), 1996, 14. जीवछ मिश्रकृत रामेश्वर (1916), 1996, 15. रेडघाँट (रेडवार्ता), 1998, 16. चुबय गँ सय न गँ छूसि, 1998, 17. पुण्यानन्द झाकृत मिथिला दर्पण (1925), 2003, 18. पदुमन रचनावली (1888-1934) 2003, 19. श्रीवल्लभ झा (1905-1940) कृत विद्यापति विवरण, 2005, 20. मैथिली उपन्यासमे चित्रित समाज, 2003। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान** 2004-



रामलोचन ठाकुर 1949-

श्री रामलोचन ठाकुर, जन्म १८ मार्च १९४९ ई.पलिमोहन, मधुबनीमे। वरिष्ठ कवि, रंगकर्मी, सम्पादक, समीक्षक। भाषाई आन्दोलनमे सक्रिय भागीदारी। **प्रकाशित कृति**- इतिहासहन्ता, माटियानिक गीत, देशक नाम छल सोन चिड़ैया, अपूर्णा (कविता संग्रह), बेताल कथा (व्यंग्य), मैथिली लोक कथा (लोककथा), प्रतिध्वनि (अनूदित कविता), *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ*(अनूदित कविता), लाख प्रश्न अनुत्तरित (कविता), जादूगर (अनुवाद), स्मृतिक धोखरल रंग (संस्मरणात्मक निबन्ध), आँखि मुनने: आँखि खोलने (निबन्ध)। अनुवाद लेल **भाषा-भारती सम्मान 2003-04** (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) *जा सकै छी, किन्तु किए जाउ*- शक्ति चट्टोपाध्याय बांग्ला कविता-संग्रहक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मानदीक माझी, बांग्लासँ मैथिली अनुवाद, बांग्ला-उपन्यास - मानिक बंद्योपाध्याय)



गंगा प्रसाद मंडल "अकेला", नेपाल 1944-

पं सूरज झा शास्त्री राष्ट्रिय प्रतिभा पुरस्कारसँ सम्मानित। मिथिलांचलक किछु लोक कथा (संकलन आ सम्पादन) आ शिरीषक फूल (अनुवाद) प्रकाशित।

05 (सी.आइ.आइ.एल., मैसूर) द्वारा विगत ३० वर्ष- स्वीन मारुन सनायनिक डाॅटिया उपन्यासक मैथिली अनुवाद लेल प्राप्त।



महेन्द्रनारायण निधि, धनुषा, नेपाल



घनश्याम कार्की, धनुषा, नेपाल



जयनारायण झा "जिज्ञासु", नेपाल



सुरेश झा, नेपाल 1920-1995



नारिश्री रमण झा 1950-



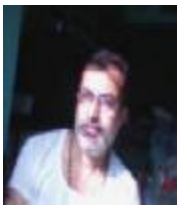
डॉ. कमलाकान्त भण्डारी 1952-

कवीन (मैथिली) यन पोथा।



विनोद बिहारी लाल 1953-

जन्म स्थान यवही, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार। सयसँ उपर कथा प्रकाशित।



अनिरुद्ध ठाकुर 1954-

यनी टूटि नहल अछि (कविता संग्रह), अज्ञानक निनाश्रम (कथा संग्रह), बहुरुपिया प्रदेश म (गजल संग्रह)।



श्याम दरिहरे 1954-

जन्म स्थान वनहा, बनीपट्टी मधुबनी, बिहार। कवि, कथाकार। प्रकाशित कृति : सनिसाम रूप (कथा संग्रह) अनूदित कृति : कनिप्रिया (धर्मवीर भारती)



दिनेश कुमार झा

मैथिलीक इतिहासपर लेखन।



अशोक कुमार ठाकुर

जन्म 2 जनवरी 1944 ई.। गाम बड़गाँव (पंडौल)। नागमंडल (नाटक-अनुवाद), निशांत, वसुधाक संसार (उपन्यास)



प्राणनारायण झा, नेपाल



शीतल झा, नेपाल



उग्रनारायण मिश्र "कनक"



डॉ. शम्भुनाथ चौधरी 1920-2008



इन्द्रकांत झा



पंचानन मिश्र



प्राह्सन गुनमैना

ग्रामीणजनपर लेखन।



महेन्द्र नारायण सिंह "मगन"



सूर्यकांत झा, जनकपुर



रमेश झा (1957-)

रचना: पश्चात्ताप (कथा-संग्रह)- 1995, काव्य-वाटिका (कविता-संग्रह)- 1999, अलंकार-

राघ्नन (पूर्व-खण्ड) - 2002, अलंकार-राघ्नन (अलंकार शास्त्र)- 2003, भिन्न-अभिन्न (समीक्षा)- 2008, संग सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका) - 1996, सम्पादन: मैथिली (मिथिला विश्वविद्यालय, मैथिली विभागक शोध-पत्रिका)- 2007,2008



विजयनाथ झा

"अहींक लेल" (गीत-गजल संग्रह प्रकाशित)।



योगानन्द हीरा



बाबा बैद्यनाथ

पहुना हनुमानयन (गजल संग्रह)



जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल" १९५०-

मूल नाम जगदीश चन्द्र ठाकुर, जन्म: 27.11.1950, गंगुआर, मधुबनी। सेवा निवृत्त बैंक अधिकारी। मैथिलीमे प्रकाशित पोथी-
1. धारा अतनाम -गीत संग्रह-1978;
2. धारक उल्टा पार-दीर्घ कविता-1999, गीत गंगा (गीत संग्रह), गजल गंगा (गजल संग्रह)।



विद्यानन्द झा 1965-

बुद्धपूर्णिमा, १९६५केँ कोठियाँ, मंगरौनी मधुबनीमे जन्म। पत्नी छथि, विकटल काल पीतल छथि, दरेकक फूल छथि (कविता संग्रह) प्रकाशित। मूलतः कवि, थोड़ कथा लिखलनि, जे अपन मार्मिक अभिव्यक्तिक कारण चर्चित रहल। वितण्डापूर्ण पलिस्थितिक पाछू जिम्मेदार समाजार्थिक कारणक खोज हिनकर मूल सृजन प्रेरणा थिक।



हरेकृष्ण झा 1950-

जन्म १० जुलाई १९५० ई. गाम- कोइलख। अर्थशास्त्रक अध्ययन छात्र मार्क्सवादी राजनीतिमे सक्रिय। अनेक कविता आ आलोचनात्मक निबन्ध प्रकाशित। अनुवाद एवं विकास विषयक शोध कार्यमे रुचि। स्वतंत्र लेखन। प्रकृति एवं जीवनक तादात्म्य बोधक अग्रणी कवि। "एना त� नहि जे" (कविता संग्रह)। २००८ ई. -श्री हरेकृष्ण झाकेँ कविता संग्रह �एना त नहि जे�लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



उदय नानायध सिंह नचिकता 1951-

जन्म-१९५१ ई. कलकत्तामे। पहिल काव्य संग्रह �कवयो वदन्ति�। १९७१ �अमृतस्य पुत्राः� (कविता संकलन) आऽ �नायकक नाम जीवन� (नाटक)| १९७४ म �एक छल राजा�/ �नाटकक लेल� (नाटक)। १९७६-७७ �प्रत्यावर्त्तन�/ �रामलीला�(नाटक)। १९७८म जनक आऽ अन्य एकांकी। १९८१ �अनुत्तरण�(कविता-संकलन)। १९८८ �प्रियंवदा� (नाटिका)। १९९१-�रवीन्द्रनाथक बाल-साहित्य�(अनुवाद)। १९९७ �अनुकृति�- आधुनिक मैथिली कविताक बंगलामे अनुवाद, संगहि बंगलामे दूटा कविता संकलन। १९९९ �अश्रु ओ परिहास�। २००२ �खाम खयाली�। २००६म �मध्यमपुरुष एकवचन�(कविता संग्रह। २००८ ई. म नाटक "नो एंट्री: मा प्रविश" सम्पूर्ण रूपेँ "विदेह" ई- पत्रिकामे धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भए एकटा कीर्तिमान बनलक। २००९ ई.-श्री उदय नारायण सिंह �नचिकेता�केँ नाटक नो एंट्री: मा प्रविश लेल कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान।



आशीष अनचिन्हार

मूल

लेखन: अर्चिस् (गजल संग्रह), ... (गजल संग्रह), अनचिन्हार आखर (गजल, रुबाइ आ कताक संग्रह), मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास, मैथिली नव पत्रकारिताक इतिहास, मैथिली गजलक नवी सकारण, शब्द-अर्थ-शक्ति।

गजेन्द्र ठाकुर आ आशीष अनचिन्हार (सम्पादन): मैथिलीक प्रतिनिधि गजल, मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)



कुमार पवन 1958

गाम मुरैठा। कथा संग्रह, कविता संग्रह आ व्यंग्य संग्रह शीघ्र प्रकाश्य। मैथिलीमे १९९० ई सँ नियमित लेखन। २००८ ई. सँ दस सालक मौन रंगक बाद पुनः नचनाक दासन पालीक प्रारम्भ।



कीर्तिनाथ झा 1955-

कृति: मैथिली रामायणानुवाद



महेन्द्र हजारी



स्व. चन्द्रकान्त मिश्र, आसी, दरभंगा।



स्व. महेश्वर नारायण झा, वलौंजा, मधुबनी



स्व. राजकुमार मल्लिक, सारुनाथ (पाखनिरौआ), मधुबनी



लक्ष्मीपति सिंह



फूलचन्द्र मिश्र रमण



किशोरनाथ झा

गाम- विहटा, पो. सरिसवपाही, मधुबनी। "लोकवेद" पोथी प्रकाशित।



सूर्यनारायण झा "सरस"

पोथी "मैथिली श्री सीतारामचरितमानस" प्रकाशित।



कलानन्द भट्ट

कान्ह पर लहास हमर मैथिली गजल संग्रह



दयानाथ झा

गाम नागदह, मधुबनी। मैथिली रंगमंच मिथि-यात्रिक, कोलकाता।



डॉ. सुधाकर चौधरी १९४६-

जन्म १७ मार्च १९४६ ई.। प्रकाशित पोथी: काजर, तीन रंग तेरह चित्र (कथा संग्रह), पंडी जी हुक्का (प्रहसन), बिजली सुराख (नाटक)।



स्व. चुनचुन मिश्र, नरिका, मधुबनी।



सत्यनारायण लाल कर्ण

मिथिला चित्रकला



ले. कर्नल मायानाथ झा 1945-

जन्म 1 अप्रैल 1945 ई.।
गाम- हनाम (मधुबनी)। ऊकन नानि वानु

मिथिला नाटक आन्दोलन कर्मी।

हाल्लू (मैथिली लोक कथा संग्रह) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नानी बाजुन हाल्लू, कथा संग्रह)



श्याम किशोर सिंह



रविन्द्रनाथ झा

मिथिला लोक चित्रकला



कालीनाथ ठाकुर

ग्राम सर्वसीमा



राजेन्द्र विमल, जनकपुर, नेपाल 1949-

मैथिली, नेपाली आ हिन्दी भाषाक प्राज्ञ विमल शिक्षाक क्षेत्रमे विद्यावारिधि (पी.एच.डी.)क उपाधि प्राप्त कएने छथि। कथा लिखिकऽ यथेष्ट यश अर्जन केनिहार डा. विमलक लेखनीक प्रशंसा मैथिलीक सङ्गसङ्ग नेपाली आ हिन्दी साहित्यमे सेहो होइत रहलनि अछि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा.रा.ब. कैम्पस, जनकपुरधाममे प्राध्यापन केनिहार डा. विमलक पूर्ण नाम राजेन्द्र लाल छियनि। हिनक जन्म २६ जुलाई १९४९ ई. कऽ भेल अछि। साहित्यकारक नव पीढ़ीकेँ निरन्तर उत्प्रेरित करबाक कारणे ई डा. धीरेन्द्रक बाद जनकपुर-परिसरक साहित्यिक गुरुक रूपमे स्थापित भऽ गेल छथि।



नरेश कुमार विकल 1950-

जन्म २१ जुलाई १९५० रघुनाथपुर दसौत (समस्तीपुर)। काव्य- अनिपल, महुआ मदन रस टपकाय, बिन बाती दीप जरय। कथा-संग्रह- रनि भेल दर्दक फूलाना। उपन्यास- टहकैत टीस। नाटक- चाखगन खोंच।



जनक किशोर लाल दास







कृष्णचन्द्र झा "मयंक"

लक्ष्मण झा "सागर"

1953-

"उगलि बैसू कौआ" मैथिली कविता संग्रह प्रकाशित।

रघुवीर मोची







शारदानन्द दास "परिमल"

शशिनाथ मिश्र "शशि"

1946-

सुरेन्द्रनाथ







अमरनाथ

१९७७ ई. मे "उधिका" लघुकथा संग्रह प्रकाशित। हास्य कथाकार।

बच्चा ठाकुर

बुद्धिनाथ मिश्र







राजाराम सिंह राठौर, धनुषा

वैद्यनाथ विमल 1955-

डॉ बासुकीनाथ झा 1940-







जितेन्द्र मिश्र "जीवन"

दीनेन्द्र नारायण झा

दीनेन्द्र झा 1956-

गोनू झा पर

लेखन।



वैकुण्ठ झा 1954-

पिता-स्वर्गीय रामचन्द्र झा, जन्म-
२४ - ०१ - १९५४ (ग्राम-रूपनाथ, जिला-दरभंगा), शिक्षा-
स्नातकोत्तर (अर्थशास्त्र), पेशा- शिक्षक।
मैथिली, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा मे लगभग २०० गीतक रचना। गोनू झा पर आधारित नाटक "हास्यशिरोमणि गोनू झा तथा अन्य कहानी" क लेखन।
एकर अलावा हिन्दीमे लगभग १७ उपन्यास तथा कथाक लेखन।



वैकुण्ठ झा



विद्यानन्द झा 'पञ्जीकार'

1957-

जन्म-
09.04.1957,पण्डुआ, गौल, ककरौड़(मधुबनी), नवाढय(पूर्णिया), शिवनगर (अररिया) आ सम्प्रति पूर्णिया। पिता लब्ध प्रतिष्ठ पञ्जीशास्त्र मार्तण्ड पञ्जीकार मोदानन्द झा, शिवनगर, अररिया, पूर्णिया| पितामह- स्व. श्री भिखिया झा। पञ्जीशास्त्रक दस वर्ष धरि 1970 ई.सँ 1979 ई. धरि अध्ययन, 22 वर्षक वयससँ पञ्जी-प्रबंधक संवर्द्धन आ संरक्षणमे संलग्न। कृति- पञ्जी शाखा पुस्तकक लिप्यंतरण आ संवर्द्धन।



महेन्द्र नारायण कर्ण



डॉ. विश्वम्भर मिश्र



अर्जुन नारायण चौधरी



नरेन्द्र

गजलकार।



महेन्द्र मिश्र, नेपाल



कमल कांत झा 1943-



महाप्रकाश 1946-

जन्म: बनगाँव, सहरसा, बिहार। वरिष्ठ कवि आ कथाकार। प्रकाशित कृति: कविता संरला, संग समय के (कविता संग्रह)। कीर्तिनारायण मिश्र साहित्य सम्मान २०१० ई.- श्री महाप्रकाश (कविता संग्रह �संग समय के�)।



छत्रानन्द सिंह झा 1946-



अयोध्यानाथ चौधरी, धनुषा, नेपाल 1947-

मूलत: कविक रूपमे परिचित छथि। नेपालक आधुनिक कविताक उपरमे हिनक नाम उल्लेखनीय अछि। श्री चौधरीक लेखनमे मानवीय संवेदनाक प्रतिबिम्ब पाओल जाइत अछि। कविताक संग कथा आ निबन्धमे सेहो ई कलम चलबैत छथि। हास्यात्मक लेखन हिनक विशेषता थिकनि। धनुषा जिलाक दुहबी गामक नहनिहार श्री चौधरीक जन्म ६ अक्टूबर १९४७ क' भेल छनि। हिनक क्षितिजक ओहिपार नामसँ एक कविता-संग्रह प्रकाशित छनि।



विद्यानाथ झा 'विदित'



सियाराम झा "सरस" 1948-

जन्म स्थान मेंहथ, मधुबनी बिहार। प्रसिद्ध गीतकार, बादमे कथा लेखन प्रारम्भ कयलनि। प्रकाशित कृति आँजुर भरि सिंगरहार, शोणिताएल उगैत सूर्यक धमक (कथा संग्रह)।



अग्निपुष्प 1948-

जन्म: गनौली, दरभंगा। मूलनाम: महेन्द्र झा। मैथिलीमे सहस्रबाढ़ कविता संग्रह प्रकाशित। मुक्ति प्रसंगक अनुवाद प्रकाशित। वामपंथी आन्दोलनमे सक्रिय। शिक्षा, सम्वाद आदि पत्रिकाक सम्पादन। वामपंथी विचारधाराक सशक्त कवि।







मधुकांत झा 1949-	दीनू राय	सच्चिदानन्द पाठक
 योगीराज	 कुणाल 1951-	 राम भरोस कापड़ि भ्रमर, धनुषा, नेपाल 1951- जन्म-बघचौरा, जिला धनुषा (नेपाल)। रचनाकृति: तौलाइत धुँआ (कविता संग्रह), नहि, आब नहि (दीर्घ कविता), नाना रंग जनौं र कुजवा (कथा संग्रह, मैथिली अकादमी पटना, १९८४), मोमक पघलैत अधर (गीत, गजल संग्रह, १९८३), अप्पन अनचिन्हार (कविता संग्रह, १९९० ई.), रानी चन्द्रावती (नाटक), एकटा आओर वसन्त (नाटक), महिषासुर मुर्दाबाद एवं अन्य नाटक (नाटक संग्रह), अन्तः (कथा-संग्रह), मैथिली संस्कृति बीच रमाउंदा (सांस्कृतिक निबन्ध सङ्कलन संग्रह), बिसरल-बिसरल सन (कविता-संग्रह), जनकपुर लोक चित्र (मिथिला पेंटिङ्स), लोक नाट्य: जट-जटिन (अनुसन्धान)। नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सदस्य- श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' (2010)।
 धीरेन्द्रनाथ मिश्र	 शिवेन्द्रलाल कर्ण, धनुषा, नेपाल 1951- लेखकसँ अधिक शिक्षकक रूपमे परिचित आ प्रतिष्ठित छथि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयअन्तर्गत रा. रा. व. क्याम्पस, जनकपुर-धामक सह-प्राध्यापक श्री कर्णक ऐतिहासिक विषय-वस्तुपर लिखल कतोक लेख मैथिली, हिन्दी आ अङ्ग्रेजी तीनू भाषामे प्रकाशित अछि। स्वान्त-सुखाय ई कहियो कालकऽ कविता-कथा सेहो लिखि लैत छथि। हिनक लेखन स्थानवर्द्धक, जानकारीमूलक एवं सामान्यतः रहैत अछि। देखलापर बूझना जाइत अछि जे ई हिनक गम्भीन	 ब्रह्मदेव लाल दास

अध्ययनक परिणति थिक। सामाजिक तथा साहित्यिक संघ-संस्थासभ सङ्ग सक्रिय प्राध्यापक कर्णक जन्म धनुषा जिलाक दतौड़ा गाममे २ जनवरी १९७१ ई. कऽ भेल छनि।



चहुशबन खान

गाम- पट्टीटोल, जिला मधुबनी। लघुकथा लेल चर्चित प्रशंसित।



दयाकान्त झा



गजेन्द्र नारायण सिंह, नेपाल



पद्मश्री श्री गजेन्द्र नारायण सिंह



हरिकान्त झा



कृष्णनारायण झा



प्रवासी साहित्यालंकार



सीताराम सिंह



गुलानन्द मिश्र



शैलेन्द्र कुमार झा 1952-

जन्म स्थान हरिपुर, बकशी टोल, मधुबनी बिहार। प्रकाशित कृति: आगाँ अन्हार, दग्ध खड्डी



शिवशंकर श्रीनिवास 1953-

जन्म स्थान लोहना मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार आ आलोचक। गीत आ कविता सेहो कहियो काल लिखैत छथि।



अशोक 1953-

जन्म स्थान लोहना, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, कवि आ सम्पादक। प्रकाशित कृति : चक्रव्यूह

(कथा संग्रह), ऐतिहासिक हिस्ट्री ऑफ मिथिला (अंग्रेजी) ।

प्रकाशित कृति : प्रिया, अदहन, गाछ-पात, गामक लोक (कथा संग्रह)।

(कविता संग्रह) प्रिया (सहयोगी कथा संग्रह), उठि नाचिक रान (कथा-संग्रह), मानवन (कथा संग्रह)।



विभूति आनन्द 1953-

जन्म: शिवनगर, मधुबनी, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार, संपादक । प्रकाशित कृति दूटा उपन्यास दूटा समीक्षा, तीन टा कथ संग्रह, दूटा गीत-गजल संग्रह ओ बानिटा कथा-संग्रह प्रकाशित। २००६- विभूति आनन्द (का0, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।



केदार कानन 1959-

जन्म स्थान सुपौल, बिहार। चर्चित कवि, कथाकार ओ संपादक। प्रकाशित कृति : आकार लैत शब्द (कविता संग्रह), अनुदित कृति नाडा नाम माइल नाय, प्रायश्चित। सम्पादन संकल्प, रानी मंडन (पत्रिका)।



डॉ. शशिनाथ झा 1954-

गाम-दीप, जिला- मधुबनी। मैथिली, बांग्ला, नेवारी आ देवनागरी पांडुलिपिक विशेषज्ञ। साहित्य अकादमीक भाषा सम्मान 2007 क्लासिकल आ मध्यकालीन साहित्य लेल।



धनुर्धर झा

गाम- विशौल। "वाक्यार्थविवेचनम्" लेल श्रीवाणीपुत्रालंकरण पुरस्कार 2010 प्राप्त।



शिवकान्त पाठक



डॉ. योगेन्द्र पाठक "वियोगी" , वैज्ञानिक

"विज्ञानक बतकही" प्रकाशित।



राजनन्द झा

२००६- राजनन्द झा (कालबेला- समरेश मजूमदार, बांग्ला)लेल साहित्य



आद्यानाथ झा "नवीन"



अमलतास 1956-

अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



यंत्रनाथ मिश्र



दिगम्बर ठाकुर



गणेश झा 1950-



कन्दर्पनारायण लाल कर्ण



शैलेन्द्र आनन्द 1955-



कमलाकांत झा

अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना



ललन प्रसाद ठाकुर 1951-1995

जन्म ५ फरवरी १९५१ मुंगेर मे श्रीमती सुभद्रा देवी आ श्री दीनानंद ठाकुरक द्वितीय बालक। हिनक ग्राम-समौल,जिला-मधुबनी। सिविल इंजीनियर, टाटा स्टील मे नोकरी। प्रकाश झाक फिल्म "कथा माधोपुर की" मे मुख्य भूमिका। नाटककार आ मंच अभिनेता। हिनक लिखल किछु प्रसिद्ध मैथिली नाटक छन्हि :बड़का साहेब,मिस्टर नीलो काका, लौंगिया मिरचाई,बकलेल आदि ता अनेक।



डॉ. कमलानन्द झा



लोकनाथ मिश्र



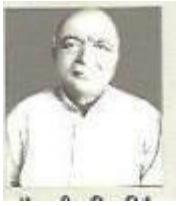
तॉ. नवीन्द्र कुमान चौधनी 1966 -

जन्म: 5 मार्च 1966 ई. गनयतगंज, सुयौल। मैथिलीक प्राध्यापक। नज्ञामंत्रीक यदक आ विहान आ मानखण्ड सनकान द्वाना युनस्कृत। मानखण्डक मैथिली आन्दोलनम अग्रणी।



अशोक अविचल

जन्म- ७ जनवनी १९६७, गाम- नहूआ संग्राम, जिला मधुवनी। मैथिली प्राध्यापक। नचना: एक वनू नक वनू (लघु नाटक), मैथिली राषा: सर्वेक्षण आ विश्लेषण, हमना दशक रागम (मैथिलीक प्रथम असंगत नाटक), सम्पादन: मानखण्डक सनश, कचाट (नौ अंक), मानखण्ड वाणी (हिन्दी साप्ताहिक), सम्मान: अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनम सम्मान (२०००), यनमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी समिति सम्मान (२००८)



तॉ. श्रीयति सिंह १९४४-

"उमंग-तनंग" कविता-संग्रह प्रकाशित।



तॉ. उमाकान्त

मैथिली ग्रंथ-आलखक याथी "अयन वात" प्रकाशित।



सुशील 1942-

अस्मिता (लघुकथा संग्रह), रामनी (नाटक) प्रकाशित।



श्रीदत्त

मूल नाम- नागेश्वर झा। कथा-सँग्रह "हिलकान", नाटक "लाल्हक कळना", गीत-प्रबन्ध "यूलामा" प्रकाशित।



सुकांत सोम 1950-

जन्म दनभंगा जिलाक नौनी गाममे 1950 ई. म हलहि। वी. ए. यास कए ई यटनाक



तॉ. दवकांत मिश्र 1952-



तॉ. नित्यानन्द लाल दास

यिता स्वर्गीय सूर्यनानायण दास। हानविसगंज कॉलज, हानविसगंज सँ अंग्रेजी विरागाध्यक्ष यदसँ १९९८ म

दैनिक �जनशक्ति�क सहायक सम्पादक छलाह । हुनक नव रचना टाइम्स, पटनामा प्रकाशमे आयल पौरुष (पिता पात्रीजी) गद्य कविता कनवाक तथा कथा लिखबामे सेहो यश अर्जन कएलन्हि अछि । वर्तमान राजनीति सामाजिक विषयसँ सम्बद्ध व्यंग्यात्मक, सरल रचनाम लिखल नव कविता हिनक विशेषता छन्हि । रामघनक पनिकशा पदनकुल शब्द एवं विम्ब नवनाम क्रमहि सिद्ध छथि ।

पिता कविचूड़ामणि पं. काशीकान्त मिश्र "मधुप", "वनीपून अनुमण्डलम मैथिली" पाथी प्रकाशित।

अवकाशप्राप्त। डॉ. सुरेन्द्र झा "सुमन"क संयोजकत्वक कार्यकालमे "मैथिली परामर्शदातृ समिति" (साहित्य अकादमी, दिल्ली)क सदस्य। मैथिली पत्रिका सरल जना वटुक, प्रयाग; मिथिला मिहिर, पटना; स्वदेश, दरभंगा; पल्लव, पटना आ पत्नी पलान, अननियाम नवना प्रकाशित। १९६७ ई. सँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मे सक्रिय। प्रांतीय प्रतिनिधि २००४ धरि जिला सनसंघचालक। ज.पी.आन्दोलनमे लाकांत्र सनानी। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलामक अंग्रेजी पाथी "विंग्स ऑफ फायर"क मैथिलीमे "प्रज्वलित प्रज्ञा" नामसँ अनुवाद। साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार २०१०- डॉ. नित्यानन्द लाल दास- (विंग्स ऑफ फायर- डॉ. ए.पी.जे. कलाम, अंग्रेजी) लेल।



नाजनाथ मिश्र 1950-

"अ वर्षा आल्ह बू दन मिथिला" प्रकाशित।



पशुपतिनाथ झा, मधुबनी, नेपाल 1954-

हिनक लेखन चिन्तनात्मक होइत अछि आ सम्बद्ध विषयमे नीकजकाँ जानकारी दैत अछि । विभिन्न पत्र-पत्रिकाम हिनक लेख-रचना बराबरि देखबामे अबैत रहैछ । ना.ना.व. कैम्पस, जनकपुरधाममे मैथिली विषयक प्राध्यापनमे संलग्न श्री झा मैथिलीसम्बन्धी सङ्गठनात्मक गतिविधिसँ सेहो जुड़ल छथि । मैथिली भाषाक भाषाशास्त्रीय अनुसन्धानमे नहल अयन लिपि निर्माणमे विशेषज्ञता रखनिहार श्री झा एकर संरक्षण-सम्वर्द्धनक दिशामे सेहो क्रियाशील छथि । प्राध्यापक झा मैथिली महाकाव्यमे रस निरूपण विषयपर विद्यावारिधि कएने छथि आ शिक्षा तथा कानून विषयमे सेहो स्नातक छथि । महोत्तरी जिलाक एकडरिया गाम्मनिहार श्री झाक जन्म ४ दिसम्बर १९५४ कऽ भेलछनि । वर्तमान मिथिला नगरसँ सम्मानित।



अनिलचन्द्र ठाकुर 1954-2009

जन्म 13 सितम्बर 1954 ई.कँ कटिहार जिलाक समेली गाममे भेलन्हि। 1982 ई.मे हिन्दी साहित्यमे स्नातकोत्तर कलाक बाद नवम्बर '93 सँ नवम्बर '94 धरि "सुबह" हस्तलिखित पत्रिकाक सम्पादन-प्रकाशन कएलन्हि आ काशी क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकमे अधिकारी रहथि। मैथिली, अंगिका, हिन्दी आ अंग्रेजीमे समानरूपेँ लेखन। मृत्युक पूर्व ब्रेन ट्यूमरसँ बीमार चलि रहल छलाह। **प्रकाशित कृति**: आब मानि जाउ(मैथिली उपन्यास)- पहिल रानी-मंडन पत्रिकामे प्रकाशित भेल, हुन मैलानंग द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित भेल। ; कच(अंगिकाक पहिल खण्ड काव्य,1975); एक दौन नाम (हिन्दी नाटक,1981); एक घर सड़क पर (हिन्दी उपन्यास, 1982); द पयस (अंग्रेजी उपन्यास, 1990); अन्त कहाँ सुख पावै (हिन्दी कहानी संग्रह,2007)। आब मानि जाउ (मैथिली उपन्यास) - एहि

उयन्यासम ७क ७रुन यूनीक संघर्ष-गाथा अंकिा अछि ज अयन लगनसँ जीनन वदलौ अछि। असंख्य गामक ऽ्री कथा कुलीनाक अधःयानक कथा, संस्कानविहीनाक उद्घाटन आ रनिष्यक यीढीकँ ववजवाक चौनी छी।



वृषण चन्द्र लाल

जन्म 29 मार्च 1955 ऽ्री. कँ रलिह। यिाः स्व. उदिानानायण लाल,माााः श्रीमी ुवनश्वनी दवा। रिनकन छ0िहानक नाम निश्वेश्वन छहि। मूलाः नाजनीािककर्मी । नयालम लाकान्त्रलल निनन्दन संघर्षक क्रमम ११ वन िगनश्चन । लगरग ८ नर्ष जल ।सम्प्रि ानाऽ्री�मधेश लाकाान्त्रिक यार्टीक नाष्ट्र�ीय उयाध्यऊ । मैथिलीम किछ कथा निरिन्न यत्रयत्रिकाम प्रकाशि । आन्दालन कनिा संग्रह आ वी.यीं काऽ्ऽनालाक प्रसिद्ध लघ् उयन्यास मादिआऽ्ऽनक मैथिली नूयान्दनण तथा नयालीम संघीय शासनािन नामक यूस्क प्रकाशि । डा निश्वेश्वन प्रसाद काऽ्ऽनालाक प्रिवद्ध नाजनीि अनूयायी आ नयालक प्रजाांत्रिक आन्दालनक सक्रिय याद्धा छथि। नयाली नाजनीियन वनावनि लिखै नहै छथि।



नानायणजी 1956-

जन्म: घाघनतील्ह (मधूवनी)। मैथिली राषा-साहित्यम ७म. ७., यी-७च. ती. कामश्वन ला संस्कृा निद्यालय, घाघनतीलाम अध्यायन । प्रकाशि कृािः �घनि घूनि नरूल छी� (काव्य-संग्रह)।



ताॅ. श्री श्रीशंकन मा 1952-



जगदीयनानायण "दीयक"



नाजदन मंतल



शिनप्रसाद यादन

शिक्षा- एम.ए.द्वय, एल एल बी.,पता- ग्राम- मुसहरनियाँ, रतनसारा (निर्मली, मधुबनी)। **प्रकाशित कृति**- अम्बरा-कविता-संग्रह, हमर टोल (उपन्यास), वसुंधरा(कविता संग्रह), जाल (पद्य कथा), लाज (एकांकी), जल रंगल (उपन्यास), त्रिवेणीक रंग (विहनि आ लघु कथा संग्रह), पंचैती (लघु पद्यकथा), बायसी।



दीनेन्द्र कुमार झा 1958-

जन्म 30 अगस्त 1958,गाम- कोइलख (मधुबनी) , पिता श्री कामेश्वर नाथ झा। ध्वांसदर्शन (मैथिली कथा संग्रह) प्रकाशित।



मानेश्वर मनुज 1958-

जन्म गढ़निया (मानपौर, मधुबनी)मे, 1978सँ 1992 धरि मैथिलीक विभिन्न पत्रपत्रिका कार्यरत, हम पाणी चलमे। सम्बन्ध (कथा संग्रह) प्रकाशित।



नवानाथ झा



महेन्द्र नारायण राम 1958-



तारानन्द वियोगी 1966-

महिषी, सहरसामे जन्म। पहिल पोथी अपन युद्धक साक्ष्य (गजल संग्रह) १९९१ मे प्रकाशित। अन्य पुस्तक हस्तक्षेप, प्रलय रहस्य(कविता-संग्रह), अतिक्रमण (कथा-संग्रह), शिलालेख (लघुकथा संग्रह), कर्मधारय। राजकमल चौधरीक कथाकृति एकटा चंपाकली एकटा विषधर संकलन-सम्पादन। साहित्य अकादमी मैथिली बाल साहित्य पुरस्कार २०१०-तारानन्द वियोगीकेँ पोथी "ई भेटल तँ की भेटल" लेल। यात्री-चेतना पुरस्कार २०१० ई.- डॉ. तारानन्द वियोगी।



प्रेमचन्द्र झा

ए.टी.डी., बी.ए., (अर्थशास्त्र), मुम्बईसँ थिएटर कलामे डिप्लोमा। मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी आ गुजरातीमे निष्णात। १९७४ ई.सँ मराठी आ हिन्दी थिएटरमे निदेशक। महाराष्ट्र राज्य उपाधि १९८६ आ १९९९ मे। आइ.एन.टी. द्वारा लेल नाटक �सीता� क निर्देशन। �वासुदेव संगति� आइ.एन.टी.क लोक कलाक शोध आ प्रदर्शनसँ जुड़ल छथि आ नाट्यशालासँ जुड़ल छथि विकलांग बाल लेल थिएटरसँ। नित्य टी.वी. सीरियलमे रचनात्मक निदेशक रूपेँ कार्य। लेखन-वीछल बेरायल मराठी एकांकी(अनुवाद), सिंहावलोकन

(मराठी साहित्यक १५० वर्ष), आकाश (डी.टी.वी.क साप्ताहिक ३० एपीसोड), जीवन सन्ध्या (मराठी साप्ताहिक, डी.डी, मुम्बई), धनाजी नाना चौधरी (मराठी), स्वप्नवन (मराठी), हिन नहीं करी नहीं (हिन्दी), आहट (हिन्दी), यात्रा (मराठी सीरियल), मधुरयक्ष (मराठी बाल-साप्ताहिक), हलुकअन टून २०० ए.डी.) (डी.डी.)। २००९ मे- हालचन्द्र झा (वीठल वनायल मराठी एकांकी- सम्पादक सुधा जोशी आ रत्नाकर मतकरी, मराठी) लेल साहित्य अकादमी मैथिली अनुवाद पुरस्कार।



मनमोहन झा



कुमार शैलेन्द्र



रमेश 1961-

जन्म स्थान महथ, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार आ कवि। प्रकाशित कृति: समांग, समानांतर, दखल (कथा संग्रह), नागफेनी (गजल संग्रह), संगोर, समवेत स्वरक आगू, कासी धानक सपना, पाथर पर दूभि (काव्य संग्रह), प्रतिक्रिया (आलोचनात्मक निबंध)।



मघन प्रसाद 1961-



प्रदीप बिहारी 1963-

जन्म स्थान कछौली मल्लिक टोल, खजौली, मधुबनी, बिहार। चर्चित कथाकार, उपन्यासकार आ



चन्द्रमोहन झा पर्वा

रंगकर्मी। प्रकाशित कृति: गुमकी आ बिहाड़ि, बिसुबियस (उपन्यास), औतीह कमला जयतीह कमला, खण्ड-खण्ड जिनगी, सरोकार (कथा संग्रह)। २००७- प्रदीप बिहारी (सरोकार, कथा)मैथिली लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार ।



डॉ. सुरेन्द्र लाभ, नेपाल



रोशन जनकपुरी, नेपाल



डॉ. अरविन्द अक्कू 1957-



फूलचन्द्र झा "प्रवीण" 1961-

गाम तुमौल दरभंगा, आयल नवल प्रभात, पांगल गाछक छाहरि, हमरा मनक खजन चिड़ैया, बसंतक बजनिआं (कविता संग्रह), फूल हँसत भविष्य (कथा संग्रह)।



देवशंकर नवीन 1962-

ओ ना मा सी (गद्य-पद्य मिश्रित हिन्दी-मैथिलीक प्रारम्भिक सर्जना), चानन-काजर (मैथिली कविता संग्रह), आधुनिक (मैथिली) साहित्यक परिदृश्य, गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली, राजकमल चौधरी का रचनाकर्म (आलोचना), जमाना बदल गया, सोना बाबू का यार, पहचान (हिन्दी कहानी), अभिधा (हिन्दी कविता-संग्रह), हाथी चलए बजार (कथा-संग्रह)।



कुमार मनीष अरविन्द 1964-







बदरी नारायण वर्मा

राजेन्द्र किशोर, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, नेपाल

श्याम सुन्दर शशि, जनकपुरधाम, नेपाल। पेशा- पत्रकारिता। शिक्षा: त्रिभुवन विश्वविद्यालयसँ एम. ए. मैथिली, प्रथम श्रेणीमे प्रथम स्थान। मैथिलीक प्रायः सभ विधामे रचनारत। बहुत रास रचना विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित। हिन्दी, नेपाली आऽ अंग्रेजी भाषामे सेहो रचनारत आऽ बहुतरास रचना प्रकाशित। सम्प्रति- कान्तिपुर प्रकाशनक अनव युनाम कार्यरत।



हिमांशु चौधरी, नेपाल

पिता : स्वर्गीय रामशरण चौधरी, माता: श्रीमती चन्द्रावती चौधरी, जन्म: वि स २०२०/६/७ लहान, सिरहा, शिक्षा: स्नातकोत्तर(नेपाली), पेशा: पत्रकारिता (सम्प्रति : राष्ट्रिय समाचार समिति), कृति : की रहल साँझ ? (मैथिली कविता संग्रह), विगत दु दशकसं नेपाली आ मैथिली लेखन तथा अभियानमे निरन्तर क्रियाशील आ विभिन्न संघ संस्थासं आबद्ध ।



सत्यनारायण महतो



गुननश्नन पाठक



राजेन्द्र झा, धनुषा



अशोक कुमार महतो



धर्मेन्द्र विह्वल, सिरहा, नेपाल 1967-

नक्सा ताकैत जिनगी, एक सृष्टि एक कविता, एक समयक बात, धूमिलाएल आकृति सभ (मैथिली कविता संग्रह), प्रमुख उत्कृष्ट नाटकसभ, भानुभक्तका कथासभ (मैथिलीसँ नेपाली अनुवाद), मैथिलीक कक्षा 1 सँ 5 आ बाल-साहित्य संदर्भक तीनटा पोथीक सह-लेखक। पत्रकारिताक मूल सिद्धांत (मैथिली, प्रसम), दलित रिपोर्टिंग मैनुअल (नेपाली, प्रसम)।



धीरेन्द्र कुमार झा



निमिष झा, नेपाल



गौरीनाथ (अनलकान्त)

"अन्तिका"क सम्पादन।



आनन्द कुमार झा 1977-

जन्म स्थान: मंहथ, मधुबनी; पिता स्व. अच्युतकांत झा, माता श्रीमती इन्द्रकाली देवी, प्रकाशन- "धधाएल नवकी कनियाँक लहास", "हठात् पुनर्निर्माण", "बदलैत समाज", "टाकाक माल", "कलह" (पाँचू मैथिली नाटक) प्रकाशित। विदेह सम्पादकक समानान्तर साहित्य अकादमी पुरस्कार २०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)



नन्दिनीपुत्र रघुनाथ, नाटककार



चन्द्रेश







राम सेवक सिंह

शहीद दुर्गानन्द झा, नेपाल

उदयनाथ झा "अशोक"







कपिलेश्वर राउत

उपहार (विहनि - लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।

कपिलेश्वर साहु

डॉ. शम्भु कुमार सिंह

जन्म: 18 अप्रील 1965 सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गाममहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, 1995] �मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन� विषय पर पी-एच.डी. वर्ष 2008, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार सँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-6 मे कार्यरत।







कृष्णचन्द्र यादव, नेपाल

शिवकान्त ठाकुर

शोभाकान्त झा







उमाकान्त झा आ प्रियंका, मैथिली नंगमंच



शशिनाथ ठाकुर, नेपाल

श्यामानन्द ठाकुर



दुर्गानन्द मंडल

संचयिका, कथा कुसुम (विहनि आ लघु कथा संग्रह), वहु प्रकाशित।

हरिकांत लाल दास, नेपाल



शिव कुमार झा 1973-

शिव कुमार झा ��टिल्लू��,पिताक नामः स्व. काली कान्त झा ��बूच��, माताक नामः स्व. चन्द्रकला देवी,जन्म तिथिः 11-12-1973,शिक्षाः स्नातक (प्रतिष्ठा),जन्म स्थानः मातृक- मालीपुर मोड़तर, जि. - बेगूसराय, मूलग्रामः ग्राम- पत्रालय - करियन, जिला - समस्तीपुर, पिन: 848101,संप्रतिः प्रबंधक, संग्रहण,जे. एम. ए. स्टोर्स लि.,मेन रोड, बिस्टुपुर जमशेदपुर - 831 001, अन्य गतिविधिः वर्ष 1996 सँ वर्ष 2002 धरि विद्यापति परिषद समस्तीपुरक सांस्कृतिक ,गतिवधि एवं मैथिलीक प्रचार-प्रसार हेतु डॉ. नरेश कुमार विकल आ श्री उदय नारायण चौधरी (राज्यपति पुरस्कार प्राप्त शिक्षक) क संग संलग्न। **प्रकाशित कृति:** अंशुमाला- कविता-संग्रह, अंशु-समालोचना।



राम विलास साहु

मनक मौल, अंकुर- लघुकथा संग्रह, नथक चक्का उलटि च लै बाट (कविता/ टनका संग्रह), कर्म दिनु उगत सूर्य (हाइकु कविता/ टनका संग्रह), खूनक खिचड़ी



महाकान्त ठाकुर



बचेश्वर झा, निर्मली

"निबन्ध-निकुञ्ज" प्रकाशित।

(विहनि/ लघु कथा संग्रह), दुश्वबनी (लघु कथा संग्रह) प्रकाशित।



धीरेन्द्र कुमार, निर्मली



चन्द्रशेखर कामति 1959-

मैथिली कवि। शिक्षा- एम.ए. (राजनीतिशास्त्र), पिता- स्व. योगेन्द्र कामति , ग्राम-पोस्ट- बनियन, पाया- ॐलमास नगर, थाना- नासओ, जिला- समस्तीपुर, बिहार। संप्रतिप्रखण्ड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी (बनीपट्टी)।



नन्द विलास राय

"सनद्दितिया", "छठिक डाला", "हुमर बाबूधाम" प्रकाशित।



विनय रुखह

उजना यनवाक खाज (कविता संग्रह)



सुधाकर झा, महादनी , नेपाल

सओँ वर्षा सओक नाटकम मंचन।



सदन आलम "गौहर"

ग्राम-पुनसौलिया, पाया- जयनगर, जिला मधुबनी।



डॉ. भुवन किशोर मिश्र "भुवनेश"

मैथिली कथा संग्रह- गोवनछपा।



दिनकर कुमार

"पूर्वांचल मैथिल"क सम्पादन।



डॉ. विनय विश्वबन्धु



रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार

मैथिलीक रिखानी ०कुनक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल �झारूदार�।

"रचना बिनु जगत सूना छै" आ "गीताञ्जलि झारू" प्रकाशित।



उमेश पासवान

"वर्णित रस" प्रकाशित।



ओम प्रकाश झा

घाघनटोला (मधुबनी)।

"किया बुझि नै सकल रचना" (गजल, रुबाइ आ कता संग्रह) प्रकाशित।



जगदानन्द झा मनु

नढिया गुजैत रचन घनाठीयन (गजल संग्रह), गा रच कागक रंग (विहनि कथा संग्रह), बानरा- (बाल उपन्यास), ब्यथा- (कविता-गीत संग्रह)।



अच्छेलाल शास्त्री



डॉ. अमोल राय



नन्द कुमार मिश्र नन्द



डॉ. नन्द कुमार मिश्र



शिव कुमार प्रसाद



दिलीप कुमार झा



डॉ. ताराकान्त झा



अमरकान्त, नेपाल



मुरलीधर झा

कविलपुर, दरभंगा। बाल कथा संग्रह "पिलपिलहा गाछ" (2010) प्रकाशित।



कमलधर दास

"मैथिल कर्ण कायस्थक गोत्र, प्रवर, मूल आ वैवाहिक सम्बन्ध" पोथी प्रकाशित।



श्रीकान्त मण्डल, मैथिली रंगमंच



बचन ठाकुर

गाम: बनौनागंज, मधुबनी। प्रकाशित कृति: बेटीक अपमान आ छीनरदेवी (नाटक), बाप भेल पित्ती आ अधिकार (नाटक), विश्वासघात (नाटक), ऊँच-नीच (नाटक), खोँट (नाटक); एक दर्जनसँ बेशी नाटक प्रकाशनक प्रतीक्षामे।



गंगा झा

मैथिली रंगमंच कोकिल मंच, कोलकाता। कोलकाता आ गाम यज्ञआनितीर टोलमे मैथिली रंगमंच निर्देशन।



नवानारायण मिश्र 1955-

पिता-श्री गोविन्द मिश्र, माता- श्रीमति अढुला देवी। ग्राम- कुशमौल, पो. नागदह-बलाइन, थाना-अन्धराठाढ़ी, जिला-मधुबनी। मैथिली रंगमंचसँ सम्बद्ध "कोकिल मंच" संस्थाक माध्यमसँ।



कमलेश कुमार दास, रंगमंच कलाकार



किशोर कर्ण, मैथिली रंगमंच



कुमार गगन, मैथिली रंगमंच







अशोक दत्त, जनकपुर

मदन ठाकुर

वरिष्ठ नंगकर्मी, जनकपुनक वरिष्ठ संस्था मिथिला नाट्यकला यनिषदक संस्थायक। तीन दशकसँ वसी समयसँ नंगउम्रम सक्रिया करीव ३०�४० गोट मंचीय नाटकक सया प्रस्तुति, २०�२७ गोट सउक नाटकक रुजानसँ वसी प्रदर्शनम अभिनय।२० गोट टली-सीनियल आ आधा दर्जन मैथिली रीचन फिल्मम अभिनय। पुनस्कान: सयाम अन्तर्नाष्ट्रिय महात्सवम सर्वश्रेष्ठ अभिनता २०४९ वि.स., उष्ट्रीय प्रतिभा पुनस्कान (नपाल सनकान) २०६३ वि.स.।

अरुण कुमान यादव, मैथिली नंगमंच







आशुतोष यादव अभिषेक

कृष्ण कुमान कश्यप 1949-

जन्म १७ सितम्बन १९४९ ई.। यिता- कवि-उयन्यासकान स्व. लक्ष्मीनानायण लाल "साँवलिया"। जनवनी १९६७ ई. म नना सरु लल "नाट्ट स्कूल", १९८१ ई. म "कला आधानित जीवन आ शिक्षा यद्धति"क प्रवर्तन आ तकन कार्यान्वयन लल शिवा कश्यप आ शशिवालाक सहयागसँ "रानी विकास संस्था"क स्थायना। नचना: शशिवालाक संग "मघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-राग, मिथिला चित्र-शिक्षा, राग-१, मिथिला चित्र-कान, राग-३।

ललित कुमार







वटाही झा, मिथिला चित्रकला

प्रवीण कुमान ठाकुन

जन्म तिथि -31 दिसम्बन 1977; जन्म स्थान - कछोली , सकनी , मधुवनी ; शिक्षा- सूर्य नानायण हाई स्कूल - ननयनिनगन , वी . एस . सी - ममानिअल कॉलज - दनभंगा , डिप्लोमा ड्रून एफॅशन डिजाइीन (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ एफॅशन डिजाइीन - नयी दिल्ली) , चित्रकला �आडान एफॅशन यूर्वानुमानम विशेष याश्यना, निवास स्थान- दिल्ली , इंडिया; पिता- श्री सत्य नानायण ठाकुन , सकनी - कछोली� ; माता- श्रीमती मालती ठाकुन , सकनी - कछोली । वर्तमानम अयन एक्सपोर्ट विजनस एस्टट) �क नामसँ शुरुआत , यूर्वम प्रातक्र डवलापमेंट आडान मर्चेंडाइजिंग नूयम कार्यनत।

लाला यंडित, मिथिला मूर्तिकला



नाजेन्द्र यंडित, मिथिला मूर्तिकला



गिनीश चन्द्र लाल



ननेन्द्र कुमान झा, यत्रकान



चन्द्र किशोन लाल, यत्रकान, नेयाल



उयेन्द्र एगश नागवंशी, नेयाल

सउक नाटक।



नमेश नंजन, यननाहा, नेयाल 1966-

यननाहा, नेयालम जन्म । नेयालीय कथा-जगतक नवीन मुदा सम्मानित नाम । जनयउाधन कथा-दृष्टि आ मारुक शिल्प । थोड लिखलनि, मुदा वन-वन चर्चित नहलाह ।



विनीत ठाकुर

"बाँकी अछि दृश्मन दुश्क कर्जे" प्रकाशित।



सुजीत कुमार झा, नयाल

जिद्दी (लघुकथा संग्रह), बिउ (लघुकथा-संग्रह), नियाटन तायनी (नियाांज), गन्न (लघु कथा संग्रह), खड़ नीवाली (लघु कथा संग्रह), काङ्ली घुनि आउ (वाल लघु-निहनि कथा संग्रह), दुश्मनी- (सम्यादन- नयाली आ मैथिलीम)।



सनाज खिलाठी

नयालक यहिल मैथिली नतिया नाटक संचालक



हनांशु नम

जन्म- गुलायट्टी, सुयौल। मास कम्युनिकशनम एम.ए., हिन्दी, अंग्रेजी आ मैथिलीक विभिन्न यत्र-यत्रिकाम कथा, लघुकथा, विज्ञान-कथा, चित्र-कथा, कार्टून, चित्र-प्रहलिका इत्यादिक प्रकाशन। विशेष: गुजनात नाय्य शाला याथ-यूस्तक मंडल द्वाना आठम कक्षाक लल विज्ञान कथा �डंग� प्रकाशित (2004 ई.), वर्तमान: मैथिलीक यहिल-चित्र-शृंखला (कॉमिक्स) प्रकाशित।



संतोष मिश्र, नयाल

यासयूत (लघुकथा-संग्रह), उदास मान (लघुकथा-संग्रह), एना-किए (कविता-संग्रह), अएना (संयादन- कविता-संग्रह)।



सुनील कुमान मल्लिक, गायक, जनकयुन, नयाल 1968-

मैथिलीक गायक-सङ्गीतकानक नुयम प्रसिद्ध छथि। मैथिली हाषाक गीतसहम मौलिक तथा सार्थक सङ्गीतक सृजनम हिनक सक्रियता प्रशंसनीय छनि। सुनीलक गायन तथा सङ्गीतम कैसट एलबमसह सह्य वाहन हल अछि। लखनदिस हिनक सक्रियता यनिमाधात्मक नुयम कम नहितहुँ गुणात्मक दृष्टिएँ हृदयस्पर्शी मानल जाइत अछि। यशासँ विज्ञान-शिक्षक छथि।



धीनन्द्र प्रमर्षि, सिनहा, नयाल 1967-

वि.सं.२०२४ साल हादव १८ गत सिनहा जिलाक गोविन्दयून-१, वस्तीयून गामम जन्म लनिहान प्रमर्षिक यूर्ण नाम धीनन्द्र झा



नवीन्द्र नानायण मिश्र

यिताक नामःस्वर्गीय सूर्य नानायण मिश्र, माताक नामःस्वर्गीया दया काशी दवी, यैतृक ग्रामःअतन तीह, मातृकःसिंघिआ घाटी। वृत्तिः याजना आयागक उय सचिव, दिल्लीम स्थगल मन्त्रालयिटन मजिस्ट्र ट। आब सना निवृत्त। शिक्षा: चन्द्रधानी मिथिला महाविद्यालयसँ वी.एस-



कुमान हासन

छथिन। कान्तिपुरसँ हेल्लो मिथिला कार्यक्रम प्रस्तुत करैत जाइत नुआ-धोतबक धोतबक अवाज गामक बच्चा-बच्चा चिन्हैत अछि। �पल्लव� मैथिली साहित्यिक पत्रिका आ �समाज� मैथिली सामाजिक पत्रिकाक सम्पादन।

सी. रौतिकी विज्ञानमे प्रतिष्ठा; दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक। प्रकाशित कृति : मैथिली:-

१. �हारलसँ साँस धरि� (आत्म कथा), २. �प्रसंगवश� (निबंध), ३. �स्वर्ग एतहि अछि� (यात्रा प्रसंग), ४. �हुसाद� (कथा संग्रह) ५. `नमस्ते� (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध) ७.महराज (मैथिली उपन्यास) ,८.लकडाउन (मैथिली उपन्यास) ,९.सीमाक ओहि पार (मैथिली उपन्यास) १०.समाधान(निबंध संग्रह) ११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास) १३.शंखनाद(उपन्यास)।



अमरेन्द्र यादव, नेपाल



रघुनाथ मुखिया



प्रदीप पुष्प



संदीप कुमार साफी

"वैशाखमे दलानपर" प्रकाशित।



उमेश मंडल

निश्तुकी- कविता संग्रह, मिथिलाक संस्कार गीत, विध-व्यवहार गीत आ गीतनाद (संकलन), "मिथिलाक वनस्पति स्लाइड शो मिथिलाक जीव-जन्तु स्लाइड शो मिथिलाक जिनगी स्लाइड शो", सगर राति दीप जरय- इतिहास, दूध-पानि रत्नाकर-रत्नाकर (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल), हिन्दुस्तानी मुसलमान औन हिन्दुस्तानियत - मूल हिन्दी लेख- गीतेश शर्मा, मैथिली अनुवाद- उमेश मण्डल।



चन्द्रमणि



स्व. हेमकान्त झा, गायक



मुरलीधर, मैथिली फिल्म निर्देशक



कुंज बिहारी, मैथिली गायक



नामबाबू झा, गायक



वि.वि.उदासी



जितेन्द्र सहयोगी



उदितनारायण झा फिल्म गायक



प्रकाश झा, फिल्म निर्देशक



कीर्ति आजाद क्रिकेट



श्रीराम झा शतरंज



अभिषेक झा गोल्फ



अशोक कुमार 1981-

साधारण काष्ठकारक परिवारमे समस्तीपुर जिलाक मोहियारपुर सखवानी गाममे जनमल अशोक कुमार कहियो स्कूल नहि गेलाह। दिनमे पचास टाका कमाइबला दिल्लीक एकटा गोल्फ क्लबक एहि कैडीकेँ 1994 ई. मे चानिक मिथ्यारोप लगा कऽ गोल्फ कोर्ससँ बाहर कऽ देल गेल। वैह कैडी दस सालक भीतर राष्ट्रक नम्बर एक गोल्फर बनि गेल।







राजेश रंजन, मैथिली रचना प्रज्ञ

संजय झा

सुल्तानगंज, भागलपुर। माटामालाक सी.ई.ओ.।

विश्वम्भर पाठक







विनोद मिश्र

डॉ. विनोद मिश्र सम्प्रति आई आई टी रुड़की, उत्तराखंडमे अंग्रेजी पढ़बैत छथि आ हिनक रचना अंग्रेजी आ हिंदी मे प्रकाशित भेल छन्हि। अहि वर्ष हिनक कविता संग्रह Silent Steps and Other Poems प्रकाशित भेल छन्हि। एकर अतिरिक्त ई अंग्रेजीमे आलोचनाक उत्तम आठ टा पोथी संपादित कने छथि। हिनक पोथी Communication Skills for Engineers and Scientists बहुत इंजीनियरिंग संस्थानमे पाठ्य पुस्तक रूपमे पढ़ाओल जाइत अछि।

राजकमल झा, अंग्रेजी लेखक, पत्रकार

हिनकर अंग्रेजी उपन्यास "द ब्लू बेडस्प्रेड" , "इफ यू आर अफ्रेड ऑफ हाइट्स" आ "फायरबर्ड" प्रकाशित छन्हि। "द ब्लू बेडस्प्रेड" (१९९९)पर हुनका "कॉमनवेल्थ राइटर्स प्राइज फॉर बेस्ट फर्स्ट बुक- यूरेशिया" भेटल छन्हि। राजकमल झा श्री मुनीश्वर झा आ श्रीमती रंजना झाक पुत्र छथि, "आइ.आइ.टी.खड़गपुर"सँ बी.टेक.छथि, आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि, जतए ओ "इण्डियन एक्सप्रेस" मे एडिटर छथि।

मानस बिहारी वर्मा, वैज्ञानिक



फणीश्वर नाथ 'रेणु' मिथिला रत्न 1921-1977



रामधारी सिंह 'दिनकर' मिथिला रत्न 1908-1974



रामवृक्ष बेनीपुरी 1899-1967







डॉ. हरिवंश तरुण 1927-2009

जन्म 21 जून 1927 ई.।
गाम- बकसलम, पो.- पटोरी, जिला- समस्तीपुर।
तीन दर्जन सँ बेसी हिन्दी पोथी जाहिमे काव्य-कथा-प्रबन्ध सम्मिलित अछि।

हरिशंकर श्रीवास्तव "शलभ" 1934-

स्व. जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज'

हिन्दीक साहित्यकार।







रामेश्वर प्रेम

हिन्दीक नाटककार।

डॉ. नवल किशोर दास "नवल"

माहरानन्द झा 1955-







रामाज्ञा शशिधर

गणेश चंचल १९३०-२०११

डॉ. अमरेन्द्र







गोरेलाल मनीषी

कुन्दन अमिताभ

शंभु अगेही

जन्म ८ जनवरी १९४१, प्रकाशित कृति: आमनाजल टीस (कथा-काव्य) १९९८, साँझ (कथा संग्रह)१९९९, रसरी बनिआ (कथा काव्य)२००३, वज्जिका छंद विधान २००१



यात्रान नामालनान अनूध १९२३-१९९९



मजरुन ॐमाम १९३०-२०१२



अनूध प्रकाश १९४८-२०१२



अंशुमन या७य

गिनरुगा यूनीकाउक आवदनकर्गा।



दिनेश कुमान मिश्र

मिथिलाक वाढिक श्कुम्पटी। मिथिलाक माटा-माटी सए धानयन किगाव प्रकाशिग। उप्फन विरुान की थ्रथा कथा (१९९०), कासी- उम्र कौद स सजा-७-मौग गक (१९९२) वंदिनी मरुानंदा (१९९४), वाया य७ ववूल का- वा८ नियंत्रध का नरुय़ (२०००), वगाक्ग यन मजवून मिथिला की कमला नदी (२००४), गुारुी नदी ऊौन गकनीकी मा७- कूक (२००७), , दूऌी याटन क वीच मं- कासी नदी की करुानी (२००६) गथा वागमगी की सङ्गगि (२०१०)।



उामप्रकाश रानगी १९६८-

कासी नदीक लाक सांस्कृगिक अध्ययन - नदियाँ गागी हैं, विरुान क यानस्थनिक नाट्य आ मैथिलीक लाक नाट्य प्रकाशिग



वैदरुी सीगा



यारुवल्क्य यगी मैत्रयी

यारुवल्क्यक दु टा यगी छलथिह यरुिल कात्यायनी आ दासन मैत्रयी। मैत्रयी व्रह्मवादिनी छलीरु। कात्यायनीसँ रुनका गीनटा यूत्र



मागीदाॐ

मिथिलाक नजक (थावि) आगिक लाकदवगा

छलहि- वङ्कान्का, मल्हामघ आ विजया।



विद्दुला

बम्यानगनक विद्दुला।



गांगा दवी

मिथिलाक मलाह जातिक लाकदवता। गांगादवीक रगाता अखना मिथिलाक मलाह लाकनिम प्रचलित अछि।



अशमा, कुसुमा, रूल्ला



मानंगक मागीसायन



विन्ध्यवासिनी दवी मैथिली लाकगीत 1920-2006



कामश्वरी दवी 1922-

मधुवनी जिलाक नवानी गामक। जन्म १९२२ ई. म अयन मातृक नाहनम रलनि। यति यं मदनमाहन मा। वनौनीवासी प्रसिद्ध गान्धिक यण्डित कशव मिश्र ज्निक पिता छलथिना "मिथिला संस्कार गीत" पाथी।



कुसुमलता कर्ण



अणिमा सिंह 1924-

समीजिका, अनुवादिका, सम्पादिका। प्रकाशन: मैथिली लाकगीत, वसवश्वन (अनू.), शिशु खल गीत आदि। लडी ब्रवार्न कॉलज, कलकत्ताम पूर्व प्राध्यापिका।



लिली र 1933-

जन्म:२६ जनवरी, १९३३,पिता:रीमनाथ मिश्र,पति:डॉ. ए.व.एन्.र, दुर्गागंज, मैथिलीक विशिष्ट कथाकार एवं उपन्यासकार। मरीचिका उपन्यासयन साहित्य अकादमीक १९८२ ई. म पुरस्कार। मैथिलीम लगभग दू सय कथा आ पाँच टा उपन्यास प्रकाशित। विपुल बाल साहित्यक

सृजन। अनेक स्तरीय रचनाक कथाक अनुवाद-प्रकाशित। यहिले प्रबोध सम्मान 2004 सँ सम्मानित।



विप्रलेखा देवी 1935-



माहिनी झा 1937-



डॉ. सावित्री झा



कविता देवी 1942-



प्रमिला झा



शान्ति सुमन 1942-

जन्म 15 सितम्बर 1942, कासिमपुर, सहरसा, बिहार, प्रकाशित कृति, ओ प्रतीति, पनसोखा है टूटी, सुलगते पसीने, पसीने के निश, मौसम हुआ कबीर, समय चेतावनी नहीं देता, तप रहे कचनार, सीपन-सीपन आग, मेघ इन्द्रनील (मैथिली गीत संग्रह), शोध प्रबंध: मध्यवर्गीय चेतना और हिन्दी का आधुनिक काव्य, उपन्यास: जल झुका हिलना। सम्मान: साहित्य सेवा सम्मान, कवि रत्न सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान। अध्यापन कार्य।



प्रभावती झा 1945-1999



स्व. शैलानानी सिंह 1945-1993

शैलानानी सिंह: जन्म 1 जुलाई, 1945, निधन : 13 जून, 1993, पिता : स्व. प्रबोध नारायण सिंह सम्पादिका : मिथिला दर्शन, विशेष अध्ययन : मैथिली, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी, भाषा



उषाकिरण खान 1945-

जन्म:२४ अक्टूबर १९४७,कथा एवं उपन्यास लेखनमे प्रख्यात । मैथिली तथा हिन्दी दुनू भाषाक चर्चित लेखिका ।प्रकाशित कृति:अनुत्तरित प्रश्न, दूर्वाक्षत, हसीना मंजिल, भामती (उपन्यास) । २०१०-श्रीमति उषाकिरण

विज्ञान एवं लोक साहित्य। प्रकाशित कृति : सलामा (आस्कर वाइल्डक ऊँच नाटकक अनुवाद 1965), प्रेम एक कविता (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विषवृक्ष (1968) बंगला नाटकक अनुवाद, विहंगी (1972), स्वनचिता: मैथिली कविता संग्रह (1973), हिन्दी संग्रह।

खान (रामती, उपन्यास) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार- मैथिली।



नीरजा रेणु 1945-

जन्म: ११ अक्तूबर १९४७, नाम: कामाख्या देवी, उपनाम: नीरजा रेणु, जन्म स्थान: रतटोल, सरिसवपाही। शिक्षा: बी.ए. (आनर्स) एम.ए., पी-एच.डी., गृहिणी। प्रकाशित रचना : ऋतम्भरा (कविता सि.सि., १९८०) लेखन पर पारिवारिक, सांस्कृतिक परिवेशक प्रभाव। मैथिली कथा धारा साहित्य अकादमी नई दिल्लीसँ स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथाक पन्द्रह टा प्रतिनिधि कथाक सम्पादन। सृजन धार पियासल कथा संग्रह, आगत क्षण ले कविता संग्रह, प्रत्यक्षना कथा संग्रह, प्रतिध्वनि हिन्दी कथा संग्रह, १९८० सँ आइधरि सएसँ अधिक कथा, कविता, शोधनिबन्ध, ललितनिबन्ध, आदि अनेक पत्र-पत्रिका तथा अभिनन्दनग्रन्थमे प्रकाशित। मैथिलीक अतिरिक्त किछु रचना हिन्दी तथा अंग्रेजीमे सेहो। २००३- नीरजा रेणु (प्रत्यक्षना, कथा) लेल साहित्य अकादमी पुरस्कार।



नीरा ठाकुर 1954-

जन्म- रत्नीपुर, पण्डौल (मधुबनी)। पिता श्री श्रीमोहन ठाकुर। प्रकाशित कृति: मैथिली नाटकाब्यक परम्परा, इतिहास-दर्पण (समीक्षा), विद्यापतिक उत्स (समालोचना), रानी (उपन्यास)



ज्ञानसुधा मिश्र

रानाक उच्चतम न्यायालयक वरिष्ठ महिला न्यायाधीश आ पहिल मैथिलानी।



जस्टिस मृदुला मिश्र



नीरा कर्ण 1946-

जन्म 3 नवम्बर 1946, ग्राम- पटानी, पो.पंचगछिया, जिला- सहरसा। सदस्य, मैथिली साहित्य अकादमी परामर्शदातृ



शेफालिका वर्मा 1943-

जन्म:९ अगस्त, १९४३, जन्म स्थान : बंगाली टोला, भागलपुर। शिक्षा: एम., पी-एच.डी.

समिति 1987-1993, सदस्य, भाषा परामर्शदातृ समिति (मैथिली), भारतीय ज्ञानपीठ। अवकाशप्राप्त विश्वविद्यालय आचार्य आ अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय। **प्रकाशित कृति**- अर्गला, भावनाक अस्थियंजन (मैथिली काव्य संग्रह), शंखनाद, तुयमन समर्पय, अनुबन्ध (हिन्दी काव्य संग्रह)।
प्रकाश्य: सप्तपदी (मैथिली निबन्ध संग्रह), चारित्रिक पृष्ठभूमिमे मैथिलीक प्रसिद्ध उपन्यास, मैथिली-उपन्यासक कथा किछु कहैत अछि (मैथिली आलोचना); जिन्दगीनामा (हिन्दी काव्य संग्रह), क्रमशः (हिन्दी आलोचना)।

(पटना विश्वविद्यालय), बी. एन. कालेज, पटना मे हिन्दीक प्राध्यापिका पदसँ सेवानिवृत्त। नारी मनक ग्रन्थिकेँ खोलि:कऽ राखऽ बलासँ सफल अधिकतर रचना। प्रकाशित रचना:झहरैत नोर, बिजुकैत ठोर; विप्रलब्धा (कविता संग्रह), स्मृति रेखा (संस्मरण संग्रह), एकटा आकाश (लघुकथा संग्रह), यायावरी (यात्रा-वृत्तान्त), भावाञ्जलि (काव्य-प्रगीत) , किस्त-किस्त
जीवन (आत्मकथा‌साहित्य अकादमी पुरस्कार)। अर्थयुग (लघुकथा संग्रह)आखर-आखर प्रीत, नागफांस (उपन्यास)। २००४ ई.- डॉ. श्रीमती शेफालिका वर्मा, पटना;यात्री-चेतना पुरस्कार।



नीता झा 1953-

जन्म : २१-०१-१९५३,व्यवसाय:प्राध्यापिका । लेखन पर समाजक परम्परा तथा आधुनिकताक संघात सँ उत्पन्न विसंगतिक प्रभाव। प्रकाशित कृति : हेतिहु, कथा संग्रह १९८४, कथानवनीत १९९०,सामाजिक असन्तोष आ मैथिली साहित्य शोध समीक्षा । बिलाड़ि मौसी (बाल लघुकथा संग्रह)।



आशा मिश्र 1950-

जन्म:६-१-१९५० ई.,प्रकाशित कथा मे मैथिलीक संग हिन्दी मे सेहो। सरसँ पैघ विजय मैथिली कथा संग्रह ।



डॉ. सुनीति झा



प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' 1948-

जन्मस्थान:नहिका,माता:श्रीमती वृद्धा देवी,पिता:पं. दीनानाथ झा,शिक्षा:एम.ए., बी.एड.,प्रसिद्ध अभिनेत्री दू दशकसँ बेसी



डॉ. इन्दिरा झा 1957



मेनका मल्लिक 1966-

नाटकमे रोल लेलनि। रंगिमा (नाट्यमंच) क संस्थापक उपाध्यक्षा, पत्रिकाक सम्पादन, कथालेखन आदिमे कुशल। �अनियन� आदि अनेक संस्था द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।



शारदा सिन्हा मैथिली लोकगीत 1953-



लालपरी देवी



शकुन्तला चौधरी



गोदावरी दत्त, मिथिला चित्रकला



उषा वर्मा 1948-



कमला चौधरी 1953-

कृति- मैथिलीक वेश-भूषा-प्रसाधन सम्बन्धी शब्दावली, प्रकाशनाधीन: चाट बिलायल पानि (कथा संग्रह), पिया मधुमास (कविता संग्रह), आशापूर्णा देवीक बंगला लघु उपन्यास **मन मंजूषा**क मैथिली अनुवाद। मुजफ्फरपुरसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यिक पत्रिका **स्वाती**क सम्पादन (१९८४-८७)।



सीता देवी, मिथिला चित्रकला



सनमती चौधरी, जनकपुर



डॉ. अनुभा चौधरी



निरा नानी 1959-

मैथिली क 3 साहित्य अकादमी युनस्कान निजा लखकक 4 गाट किताव "कन्यादान" (हनिमाहन मा), "नाजा याखन मं किनी मछलियां" (प्रराम कुमान चाउधनी), "विल टलन की तायनी" व "यटाउय" (लिली न) हिन्दीम अनुदिन छहि। 2 गाट लाककथाक युस्क "मिथिला की लाक कथाएं" व "गानू मा क किस्स"। मैथिली कथा संग्रह "खाहसँ निकसैन"।



श्यामना चह्रम 1963-

जन्मनिथि: ११ दिसम्बन, १९६३,जन्मस्थान : मनुआना, सिधिया खुर्द, समस्तीपुन,पिना : श्री मार्कण्डय प्रवासी,माना: श्रीमनी सुशीला मा,अध्यायन ।सुपनिचिन कवयित्री, कथाकान । प्रकाशिन कृति: वानसाह्नी (कविना संग्रह), मिमिनकाना (कथासंग्रह)।



सुस्मिना याठक 1962-

जन्म: सुपौल, विहान । यनिचिनि कविना संग्रह प्रकाशिन । कथानावक, कथासंग्रह प्रकाशनाधीन । नाजनीनि शास्त्रम एम.ए.। संगीन, यँटिंगम नुचि । मैथिलीक याथी यत्रिका यन अनक नखाचित्र प्रकाशिन । समकालीन जीवन, समय, आ नकन स्यंदनक कवयित्री । अनक नाथाम नवनाक अनुवाद प्रकाशिन।



उर्मिला दवी, मिथिला चित्रकला



यमुना दवी, मिथिला चित्रकला



यशोदा दवी, मिथिला चित्रक ला



नमा मा, सम्यादक मिथिला दर्य ण



यन्ना मा

अनुभूनि (लघुकथा संग्रह)।



सुधा कर्ण



नूतन दास

सम्पादिका, मिथिलांगन



राधिका झा, अंग्रेजी लेखिका

हुनकर अंग्रेजी उपन्यास "स्मेल" आ "लैटर्स फ्रॉम द पेन हॉर्स" आ अंग्रेजी लघु कथा संग्रह "द एलीफेन्ट एण्ड द मारुति" प्रकाशित अछि। उपन्यास "स्मेल" लेल हुनका "फ्रेन्च प्रिक्स गुअरलेन" पुरस्कार भेटल छन्हि आ ई पोथी सोलह भाषामे अनुदित भेल अछि। राधिका "एमहर्स्ट कॉलेज"सँ "एन्थ्रोपालाजी" पढ़ने छथि आ "शिकागो विश्वविद्यालय"सँ राजनीति विज्ञानमे मास्टर्स डिग्री लेने छथि। ओ "हिन्दुस्तान टाइम्स" आ "बिजनेस वर्ल्ड"मे काज केने छथि आ संगम "राजीव गांधी फाउन्डेशन, दिल्ली"मे सेहो, जतए ओ आतंकवादसँ पीड़ित बच्चा सभ लेल सम्पर्क कार्यक्रमक प्रारम्भ केने रहथि। आइ काल्हि ओ अपन पति आ बच्चाक संग टोक्योमे रहै छथि।



स्वयंप्रभा झा 1970-



रूपा धीरू 1973-

रूपा धीरू- जन्मस्थान- मधनाकटनी, सप्तरी, श्रीमती पूनम झा आ श्री अनुपकुमार झाक पुत्री। स्थायी पता- अञ्चल- सगरमाथा, जिल्ला- सिरहा। प्रथम प्रकाशित रचना-कोइली कानए, माटिसँ सिनेह (कविता), एगाटा बड़क दश-प्रसंग (करक दीक्षितक पुस्तकक धीरेन्द्र प्रमर्शिसँग मैथिलीमे सह-अनुवाद, संगीतसम्बन्धी कृति- राष्ट्रियगान, गान, नरक लगन, बाना, प्रियतम हमर कतेआ (पहिल मैथिली सीडी), प्रेम रंग



रंजना झा, विद्यापति संगीत गायिका



रश्मि दत्त, गायिका, जनकपुर

गनघूस्कीम, सूनजिग मागृन्न गीगमाला, सूखक सनसा। सम्यादन-यल्लन, मैथिली साहित्यिक मासिक यत्रिका, सम्यादन-सहयाग,हमन मैथिली याथी (कजा १, २, ३, ४ आ ७ आ कजा 9-10 क शैक्षिक मैथिली निषय याथयूस्कक राषा सम्यादन)।		
 कामिनी कामायनी	 मून्नी मा यूना नवनाकान	 कामिनी 1978- यूना कनियत्री
 नूस्काना सिद्दीकी	 कल्यना मिश्र, मैथिली नंगमंच	 श्नागि मा, , मैथिली नंगमंच
 किनण मा, मैथिली नंगमंच	 प्रियंका मा, मैथिली नंगमंच	 मृगु कर्ण, मैथिली नंगमंच
		

श्रान्ति वस, नंगमंव	नहा वर्मा, नंगमंव	सविता
		
अनुप्रिया	मृदुला प्रधान	अनुधा मिश्र, महिला वॉर्किंग
		
नाखी दास, मिथिला चित्रकला	वनानसी यंतिग,मिथिला चित्रकला, धनूषा, नयाल	दवकला दवी कर्ण,मिथिला चित्र कला, नयाल
		
मदनकला कर्ण,मिथिला चित्रक ला, नयाल	महासुन्दनी दवी,मिथिला चित्रकला	निर्मला सा, मिथिला चित्रकला, नयाल
		
रूला साह, मिथिला चित्रकला, म हाफनी, नयाल	नजनी यल्लवी	संगीता कुमानी, मैथिली रूजाना प्राजक्



विद्युल्लनी दास



गौरी सेन



सीमा झा



वाणी मिश्र, कवयित्री १९७३-१९९६

कोइलख, मधुबनी। जन्मस्थान गिलाठी, नेपाल।



मौसमी बनर्जी, कवयित्री



शैल झा



शान्ति देवी



शशिबाला

पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार कण्ठ (बिसफी)। भेना कत्थक आ कृष्ण कुमार कत्थक सहयोगसँ "रागिनी विकास संस्था"क स्थापना। रचना: कृष्ण कुमार कत्थक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद, माछ-राग, मिथिला चित्र-शिक्षा, भाग-१, मिथिला चित्र-ज्ञान, भाग-३।



मुन्नी कामत

सूखल मन नतसल आँखि (कविता संग्रह)।



प्रनधा मा

मिथिला लाक कला



अंशुमाला

मैथिली लाकगीग।



(श्वेगा मा चौधरी, चिप्रकार

गाम सनिसब-पाही, ललिग कला आ गृहविज्ञानम स्नागक। मिथिला चित्रकलाम सर्टिफिकट कोसी कला
प्रदर्शिनी: एक्स.एल.आन.आइ., जमशेदपुनक सांस्कृगिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मला जमशेदपुन, कला मन्दिन जमशेदपुन (एक्जीबीशन आ वर्कशॉप)। कला सम्बन्धी कार्य: एन.आइ.टी. जमशेदपुनम कला प्रगियोगिगाम निर्णायकक नूपम सहभागिगा, २००२-०७ धनि वसना, जमशेदपुनम कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), नूमन कॉलज पुस्कालय आ हॉटल बूलनार्ड लल नाल-पेंटिंग। प्रगिष्ठिग स्पॉन्सन: कॉनपानट कम्यूनिकशन्स, टिस्को; टी.एस.आन.डी.एस, टिस्को; ए.आइ.ए.डी.ए., स्टट बैंक □फ इण्डिया, जमशेदपुन; विभिन्न व्यक्ति, हॉटल, संगठन आ व्यक्तिगग कला संग्राहक।

हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललिग कला, संगीग आ रानस-राग।



(श्वेगा मा

मिथिला चित्रकला, सम्प्रगि सिंगापुनम निवास।



नानी मा



मागी कर्ण

मिथिला चित्रकला







निक्की प्रियदर्शिनी



नीलम चौधरी, कथक नृत्यांगना

प्रज्ञा झा



रूना मल्लिक

पिता स्व. शिवनन्दन मल्लिक, ग्राम- महिसारि, दरभंगा। पति श्री कमलेश
कुमार, एकहट्टी, दरभंगा।

डॉ. नलिनी चौधरी



गुंजन कर्ण

नाँटी मधुबनी, सम्प्रति यू.के.मे रहै छथि। www.madhubaniarts.co.uk पर हिनकर कलाकृति देखि सकै छी।



पूनम मंडल

प्रियंका झाक संग मैथिली ब्लॉग पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन।



प्रियंका झा

पूनम मंडलक संग मैथिली ब्लॉग पोर्टल "समदिया" www.esamaad.blogspot.com क संचालन।



स्फूर्ति नारायण



डॉ. ललिता झा १९४१

जन्म
शनिवार, दरभंगामे। "मैथिलीक राजन सम्बन्धी
शब्दावली" प्रकाशित"।



आरती कुमारी १९६७-

"मैथिली मूकक काव्यम
नारी" प्रकाशित।



मीना झा

वस्तु कौसनक समन्वायन विदेह मे मीना झा कन ७ कटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे वस्तु कौसन पर लिखल गेल। हिन्दी मे सेहो गाथनि ओहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल।



अनुपमा प्रियदर्शिनी

यति डॉ. नगन कर्ध, गाम- उजान (वउकागाम), था. लाहेना नाउ, जिला दनरंगा। सम्प्रति लाजियाना (संयुक्त नाद्य अमनिकाम), शिक्षा- एम.एस.सी. (उंतु विज्ञान), ल.ना. मिथिला वि.वि., दनरंगा; वी.एस.सी. वी.आन. अम्बेडकन वि.वि. मुजफ्फनपुनसँ, हॉवी, मिथिला विचकला, कमप्यूटनाईज्ड विचकला, ललित कला। उपलब्धि: अखिल रानतीय कला आ दम्तकानी प्रतियाेगिताक पुनस्कान 1995 म; संस्कान रानती राव नृत्य प्रतियाेगिता 1989 म सहरागी।



आनाधना मल्लिक

मैथिली नंगमंच।



शिखा

मैथिली नंगमंच।



प्रीति ठाकुन

गाम- उगली, राया गानानगन, पूर्णियाँ। मैथिली वाल साहित्यम "गनू मा आ आन चित्र कथा २००८", "मैथिली चित्रकथा २००९" आ "मिथिलाक लाकदवता २०१०", निष्पायतिक पुनुष पनीजा (वाल साहित्य) २०१४ प्रकाशित।



अनुपमा मा

प्रांसपनंसी इंटननेशनल, रानत।



विनीता मल्लिक



गौरी मिश्र



अनामिका राज



आभा झा



प्रियंवदा राना झा



डॉ अपर्णा



शान्ति लक्ष्मी चौधरी

ग्राम गोविन्दपुर, जिला सुपौल निवासी आ राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा मे कार्यरत पुस्तकालयाध्यक्ष श्री श्यामानन्द झाक ज्येष्ठ सुपुत्री, आ डाक ग्राम महिषी (पुनर्वास आनापट्टी), जिला सहरसा निवासी आ दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनामिक्स सँ एम.फिल अन्वेषक आ समाजशास्त्री श्री अजय कुमार चौधरीक अर्धांगिनी छथि। प्राणीशास्त्र सँ स्नातकोत्तर रहितो शिक्षाशास्त्रक स्नातक शिक्षार्थी आ एकटा समाजशास्त्री सँ सान्निध्यक चलते आम जीवनक सामाजिक विषय-वस्तु आ खास कऽ महिलाजन्य सामाजिक समस्या आ घटनाम हिनक विशेष अभिरुचि रहलनि।



अनुपम मैना



डॉ चित्रलेखा



डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र

पिता डॉ शिव कुमार झा, ग्राम राटी, सासुर- गजहारा। मेडिकल शिक्षा [illegible] हॉस्पीटल/ [illegible] हॉस्पीटलसँ सम्पन्न कय स्त्री-रोग विशेषज्ञ। मूलरूपसँ १९८०-८२ मे प्रकाशित हास्यवला मैथिली पत्रिका "विदेह"क पति डॉ मणिकान्त मिश्र (निर्माता- मैथिली फिल्म- आउ पिया हमर नगरी) संग सम्पादन।

https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब 'भालसरिक गाछ' जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

